मेरा जीवन ही मेरा संदेश है...

My life is my message....

गांधी स्मृति

महात्मा गांधी ने अपने जीवन के अन्तिम 144 दिन अपने अनन्य भक्त तथा महान् उद्योगपति श्री घनश्याम बिड़ला के अल्बुकर्क रोड स्थित निवास पर व्यतीत किये। अल्बुकर्क रोड आज तीस जनवरी मार्ग है और बिड़ला भवन अब गांधी स्मृति के नाम से परिचित है। यह पुण्य–स्थल सत्य और अहिंसा की बलिवेदी पर महात्मा गांधी की शहादत का अमर स्मारक है। गांधी जी ने इस भवन में 9 सितम्बर, 1947 से 30 जनवरी, 1948 तक निवास किया।

भारत सरकार ने 1971 में बिड़ला भवन की कमान अपने हाथ में ली थी और इसे राष्ट्रपिता के राष्ट्रीय स्मारक में परिवर्तित कर दिया। आम जनता के लिए इसे 15 अगस्त, 1973 को खोला गया। संरक्षित स्थलों में हैं– वह कमरा, जिसमें गांधीजी रहते थे, वह मैदान जहां वे जनसमूह को सम्बोधित करते थे तथा उनके साथ भजन गाया करते थे। इसके अलावा वह स्थान भी शामिल है, जहां पर गांधीजी हत्यारे की गोलियां लगने के बाद गिरे थे। भवन और पूरे परिसर को ठीक उसी तरह से संजो कर रखा गया है, जैसा कि वह उन दिनों था।

स्मारक में फोटो, मूर्तियां, कलाकृतियां, भित्ति–चित्र, शिलालेख और गांधीजी के यहां बिताए सालों की कुछ यादगार वस्तुएं रखी गई हैं। गांधीजी का थोड़ा–बहुत निजी सामान भी यहां काफी संभालकर रखा गया है। आगंतुकों को पहले बापू की शहादत के पवित्र स्थान या शहीद स्तंभ ले जाया जाता है ताकि वे राष्ट्रपिता को श्रद्धा सुमन अर्पित कर सकें। जहां राष्ट्रपिता की हत्या हुई उस स्थान पर एक शहीद स्तंभ बनाया गया है जो भारत की लंबी चली स्वतंत्रता की लड़ाई में गांधीजी को तमाम कष्टों और त्याग की प्रतिमूर्ति की तरह प्रस्तुत करता है। यहां आने वाले श्रद्धालुओं की पैदल परिक्रमा के लिए यहां पर फर्श से एक चौड़ा रास्ता तैयार किया गया है। शहीद स्तंभ के सामने काफी जगह है ताकि श्रद्धालु यहां आकर राष्ट्रपिता को नमन कर सकें। मखमली घास बिछे निचले मैदान में शहीद स्तंभ के पास गुरुदेव टैगोर के शब्द उकेरे गए हैं, 'वह हर झोपड़ी के दरवाजे पर रुकते थे...'

प्रार्थना के लिए बने मैदान के बीच भित्ति–चित्रों से सजा एक मंडप है, जिसमें भारत की सांस्कृतिक यात्रा, दुनिया में उसकी विरासत, धरोहर और गांधीजी के एक सामान्य व्यक्ति से विश्व नेता बनने के सफर को चित्रित किया गया है, ठीक वैसा जैसा कि बापू ने कहा था, "अपनी भौतिक जरुरतों के लिए गांव ही मेरी दुनिया है लेकिन आध्यात्मिक जरुरतों के लिए पूरी दुनिया मेरा गांव है। ये चित्र श्री कृपाल सिंह के नेतृत्व में राजस्थानी कलाकारों ने 1958–1959 में बनाये थे।

मंडप के बाहर लाल बलुआ पत्थर से बनी एक बेंच है जिस पर गांधीजी प्रार्थना के वक्त या फिर उन परेशानियों के दिनों, आंखों में चिंताएं लिए, पुराने बिड़ला हाउस के मैदान में आए विशाल जनसमुदाय के मार्गदर्शन के दौरान बैठा करते थे। हरी–भरी मखमली घास का मैदान प्रार्थना स्थल की ख़ासियत है, जिसमें चारों ओर कोनों पर सफेद गुलाब के पौधे हैं। स्मारक के मैदान में दाईं ओर के प्रवेश की जगह लिखा है, "गांधीजी के सपनों का भारत।" प्रार्थना–सभा के गोल घेरे के पास अल्बर्ट आइंस्टीन के शब्द उकेरे गए हैं, "आने वाली अनेक पीढ़ियां मुश्किल से ही यकीन कर सकेंगी...।" गोल घेरे के बीच में मशहूर कलाकार शंखो चौधरी की कांसे में तैयार कलाकृति है, जो गांधी जी के बलिदान द्वारा प्रज्जवलित शाश्वत अग्निशिखा की प्रतीक है।

दर्शक एक गलियारे से लौटते हैं जो प्रदर्शनी गैलरी के तौर पर विकसित हो चुकी है। गलियारे में 1857–1947 के कालखंड को समेटने वाली एक समग्र प्रदर्शनी यहां लगाई गई है। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने 11 सितंबर, 2007 को किया था।

यहां से आगंतुकों को उस कमरे में ले जाया जाता है जहां गांधीजी ने जिंदगी के अंतिम 144 दिन बिताए थे। गांधी स्मृति में गांधीजी का कमरा ठीक वैसा ही रखा गया है जैसा कि उनकी हत्या के दिन था। उनके रोजमर्रा के इस्तेमाल की तमाम वस्तुएं, चश्मा, छड़ी, चाकू, कांटा, चमचा, साबुन की जगह इस्तेमाल किया जाने वाला पत्थर, ज़मीन पर बिछे गद्दे पर सफेद चादर से लगा उनका बिस्तर, बगल में एक छोटी सी कम ऊंचाई की डेस्क। वहां एक पुरानी और कई बार पढ़ी गई श्रीमद्भागवत गीता की प्रति भी रखी हुई है।

जब वे कमरे से बाहर आते हैं तो फोटो प्रदर्शनी के ज़रिये इन 144 दिनों की समूची जानकारी मिल जाती है, क्योंकि वहां पर उन पलों के प्रत्यक्षदर्शियों के, इस बारे में, वक्तव्य भी संक्षेप में दर्ज हैं।

प्रवेश द्वार का अपना अलग ऐतिहासिक महत्व है क्योंकि इसी के ऊपर से प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने दुनिया को महात्मा गांधी के निधन का शोक समाचार सुनाया था, "हमारी जिंदगी से रोशनी चली गई है और हर तरफ बस अंधेरा है..."

प्रदर्शनी दीर्घा की शुरूआत महात्मा के शहीद बनने के अतिंम पलों को जीवन्त करती एक 40 से0 की मल्टी मिडिया ऐनिमेशन फिल्म से होती है।

पूरे भवन को विभिन्न भागों में बांट दिया गया है। भवन के प्रवेश द्वार के दोनों ओर महात्मा गांधी रचित कविता 'एक सेवक की प्रार्थना' और उनके चिरकालीन संदेश 'जंतर' दर्ज हैं। मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा गांधी बनने तक के सफर को, दक्षिणी हिस्से में 35 चित्रों और संक्षिप्त जानकारी के साथ, सजाया गया है। इस हिस्से में एक प्रेक्षागृह और सभागार कक्ष है।

प्रदर्शनी को कुछ इस तरह से तैयार किया गया है कि बालक मोहनदास करमचंद गांधी की जिंदगी के सफर और उसमें बदलाव, उनके 'सत्य के प्रयोग', देश का नेतृत्व थामने और मानवता से दासत्व मुक्ति तक का सफर एक लय में देखने को मिलती है।

उत्तरी हिस्से में पांच हिस्से हैं। पहले खंड में एक गैलरी है जो उस कमरे तक ले जाती है जिसमें गांधीजी ने जीवन के अंतिम 144 दिन बिताए। शांति की यात्रा और शहादत को समर्पित है यह खंड।

इसके तत्काल बाद दूसरा खंड है, जिसमें उनकी जिंदगी के अंतिम 48 घंटों को केन्द्र बनाया गया है, जिसका अंत उनकी शहादत के साथ होता है। इस हिस्से में भी प्रेक्षागृह है जहां महात्मा गांधीजी पर तैयार फिल्में दिखाई जाती हैं। उत्तरी हिस्से का तीसरा खंड 'गांधीजी के सपनों का भारत' जीवंत करता है तथा आने वाली पीढ़ियों के लिये इस स्वप्न को साकार करने के गांधी जी के फार्मूले प्रदर्शित है– 18 बिंदुओं वाला रचनात्मक कार्यक्रम। गांधीजी वैज्ञानिक शुद्धता के साथ दुनिया के सामने भारत को विकास के एक आदर्श के तौर पर पेश करना चाहते थे। वह महान सफर खत्म हो चुका है– राष्ट्रपिता चले गए हैं। लेकिन उनकी विरासत, धरोहर कायम है। इससे भी ज़्यादा, उनका सपना हमारे सामने एक चुनौती की तरह खड़ा है, उनके 'सपनों' का भारत' साकार करने की चुनौती।

सुमना में कुल 27 उपखंड हैं। इस त्रिआयामी हिस्से में महात्मा गांधी के बचपन से शहादत तक की 27 सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं को साकार किया गया है। इसे सुमति मोरारजी की देखरेख में बनाया गया था।

इंडोनेशिया से भेंट में प्राप्त विश्व शांति घंटा तथा थाइलैंड निवासी सैसोंबून द्वारा बनाई गई फाइवर ग्लास की महात्मा गांधी और कस्तूरबा गांधी की मूर्तियां आगंतुकों को विशेष आकर्षित करती हैं।

Gandhi Smriti

Mahatma Gandhi spent the last 144 days of his life as a guest of his ardent follower and the great industrialist Shri G. D. Birla in his house at Albuquerque Road, now known as Tees January Marg. Birla House is now Gandhi Smriti – The site of the Martyrdom of Mahatma Gandhi for truth and non-violence. Mahatma Gandhi had lived in this house from 9 September 1947 to 30 January 1948. Thus, the hallowed house treasures many memories of the last 144 days of his life.

The old Birla House was acquired by the Government of India in 1971 and was converted into a National Memorial of the Father of the Nation and was opened to the public on August 15, 1973. The preserves include the room where Gandhiji lived and the prayer ground where mass congregation used to be held and where Gandhiji was felled by the assassin's bullets. The building and the landscape have been preserved as they were in those days.
On display in the Museum are photographs, sculptures, paintings, frescos, inscriptions on rocks and relics pertaining to the time Gandhiji spent here. The meagre personal belongings of Gandhiji too are carefully preserved.

The visitors are first guided to the sacred spot of Bapu's Martyrdom or the Martyr's column to pay homage to the Father of the Nation.

The Martyr's Column stands at the spot where the Father of the Nation was assassinated, commemorating the Martyrdom of Mahatma Gandhi as the embodiment of all the sufferings and sacrifices that characterised the long struggle for India's Freedom. A broad stone pavement is laid round the Column for devotees to take a reverential Parikrama (walk around). The wide space in front of the Column is made for devotees to offer homage. Close to the Martyr's Column on the lower lawns are the words of Gurudev Tagore, "He stopped at the threshold of every hut…"
In the centre of the Prayer Ground is a Pavilion with frescos made by Shri Kripal Singh and his team from Rajasthan in 1958-1959, depicting the continuity of India's cultural voyage, its interaction across the globe and the emergence of Mahatma Gandhi as a universal Man embodying in his person all that is sublime in human life as he said, 'for my material needs my village is my world but for my spiritual needs the whole world is my village'.

Outside the Pavilion there is a bench, made of red sand stone on which Mahatma Gandhi used to sit during the prayer or in conversation with the vast mass of humanity who would assemble on the lawns of the Old Birla House seeking his counsel and solace in those troubled days.

The green lawns are the main feature of the Prayer Ground with peripheral decorations with white rose beds laid round the lawn. Near the entrance of the memorial on its right lawn is inscribed "India of Gandhi's dream". At the roundabout close to the prayer ground are the words of Albert Einstein, "Generations to come will scarce believe…" In the centre of the roundabout is a creation of the renowned artist Sankho Chowdhury in bronze, symbolising the Eternal Flame lit by Gandhi with his martyrdom.

The visitors, then return through the Pergola which has now been turned into an exhibition gallery.

A comprehensive exhibition covering 1857-1947 has been installed here. The exhibition was inaugurated by the President of India Smt.Pratibha Devisingh Patil on 11 September 2007. The entire pergola is now a walking art gallery, *which* provides an opportunity to the visitors from all parts of the world to witness India's March to Freedom.

From here the visitors are guided into the room where Bapuji spent the last 144 days of his life. Gandhiji's room at Gandhi Smriti has been kept exactly as it was on the day of his assassination. All his possessions are on display: his glasses, walking stick, a knife, fork and spoon, the rough stone he used instead of soap. His bed was a mattress on the floor, plain white, with a low, wooden desk by its side. There is also an old and well-used copy of the *Gita.*

As they come out of this room the visitors are acquainted with history of these 144 days through the Photo Exhibition accompanied by narratives culled out from the accounts of the eye witnesses.

The entrance gate of the exhibition gallery itself is of great historical significance as it was from the top of this gate Prime Minister Jawaharlal Nehru announced to the world about the passing away of Mahatma Gandhi, "… the light has gone out our lives and there is darkness everywhere…"

The exhibition gallery starts with a 40 mins. multimedia animation film depicting the last journey of the Father of the Nation towards his Martyrdom. The entire building is now divided into different sections. On either side of the main entrance of the building a Prayer composed by the Mahatma 'A Servant's Prayer' and his eternal message, His 'Talisman' are on display.

The evolution of Mohandas Karamchand Gandhi to Mahatma Gandhi is depicted in the south wing through 35 panels of photographs accompanied by a simple narrative. The south wing also houses an auditorium and a committee room.

Besides, the exhibition has been so aligned that the south wing gives a simple narration of the journey and evolution of a boy called Mohandas Karamchand Gandhi and how through his 'experiments with truth', he leads India and humanity to its emancipation.

The northern wing has five different sections. The first section, the gallery leading towards the room where Gandhiji spent the last 144 days of his life is devoted to his Peace Pilgrimage and Martyrdom. Next to this is the second section, another room with special focus on the last 48 hours of his life, which culminates with his martyrdom. This section has also an auditorium with facilities to screen films on Mahatma Gandhi.

The third section of the north wing projects the 'India of Gandhi's Dream' and the formulae he has left behind for posterity to realise this dream: the Eighteen Point Constructive Programme. Gandhi wanted to present India as a model of development before the world with scientific precision. The epic journey ends –Father of the Nation is gone. But his legacy lives on. Above all, an unfulfilled dream remains as a challenge before us to build the 'India' of his 'dreams'.

The fourth section *Sumana* has twenty-seven enclosures in all. The three dimensional projections depict twenty-seven important events in the life of Mahatma Gandhi from his boyhood to his martyrdom.

The World Peace Gong from Indonesia and the fibre glass statues made by Mr. Decha Saisomboon and Mrs. Wicha Saisomboon from Thailand particularly attract the visitors.

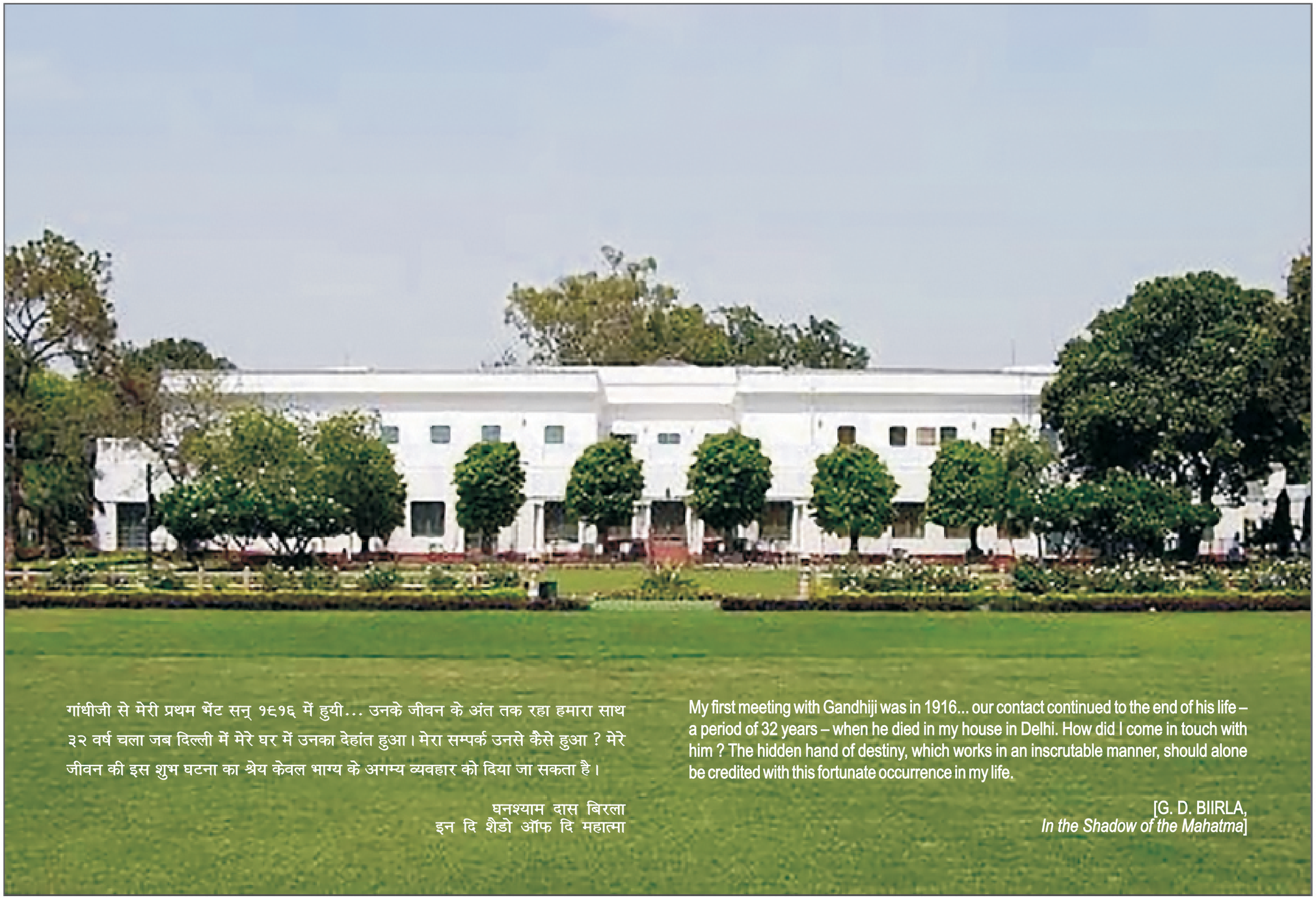

गांधीजी से मेरी प्रथम भेंट सन् १९१६ में हुयी... उनके जीवन के अंत तक रहा हमारा साथ ३२ वर्ष चला जब दिल्ली में मेरे घर में उनका देहांत हुआ। मेरा सम्पर्क उनसे कैसे हुआ ? मेरे जीवन की इस शुभ घटना का श्रेय केवल भाग्य के अगम्य व्यवहार को दिया जा सकता है।

घनश्याम दास बिरला
इन दि शैडो ऑफ दि महात्मा

My first meeting with Gandhiji was in 1916... our contact continued to the end of his life – a period of 32 years – when he died in my house in Delhi. How did I come in touch with him ? The hidden hand of destiny, which works in an inscrutable manner, should alone be credited with this fortunate occurrence in my life.

[G. D. BIIRLA,
In the Shadow of the Mahatma]

CONTENTS

Section - I (Chronology of Gandhiji's Life) 1-40

Section - II (Constructive Programme) 41-77

Section - III (Vaishnav Jan) 78-79

Section - IV (Gandhiji's Literature) 80-82

Section - V (Contemporaries of Gandhi) 83-84

Section - VI (Gandhi in Art) 85-87

Section - VII (Gandhi Speaks) 88-106

Section - VIII (Gandhi In Birla House) 107-123

Section - IX (Glimpses of the last 48 Hours of Gandhiji's Life) 124-137

Section - X (Homage) 138-142





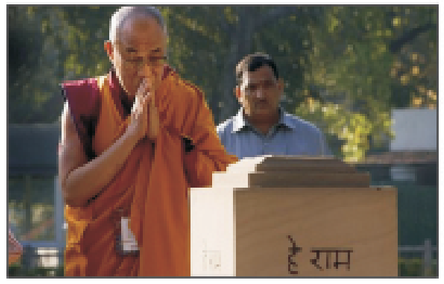
हे राम




हे राम






हे राम



















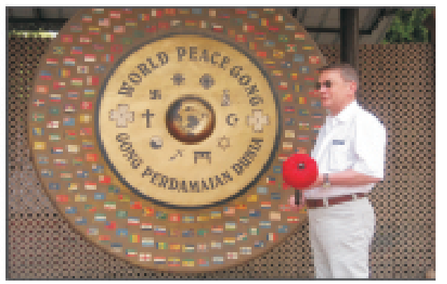
WORLD PEACE GONG
GONG PERDAMAIAN DUNIA















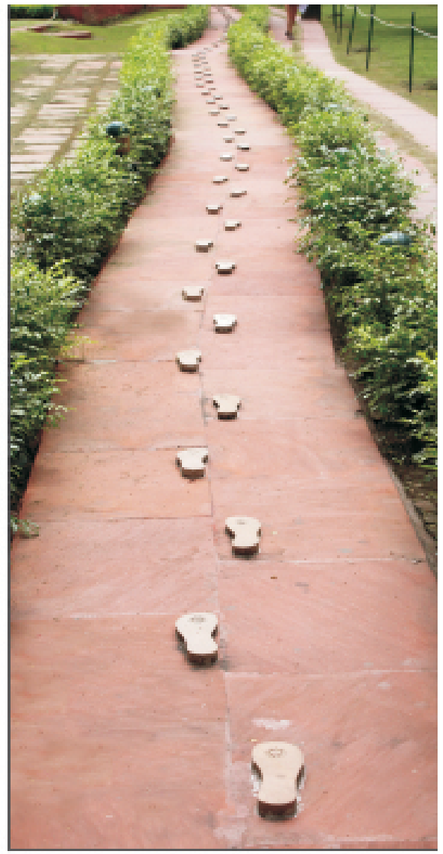





A little beyond, next to the lawns where Gandhiji was assassinated, is a bronze Eternal Flame, sculpted by Sankho Chowdhury to symbolise Ganhiji's continued presence in the politics and imagination of the world.

It is flanked by two large rocks inscribed with Albert Einstein's famous words on the Mahatma, in both Hindi and English:

Generations to come it may be, will scarce believe that such a one as this ever in flesh and blood walked upon this earth.

[ALBERT EINSTEIN]

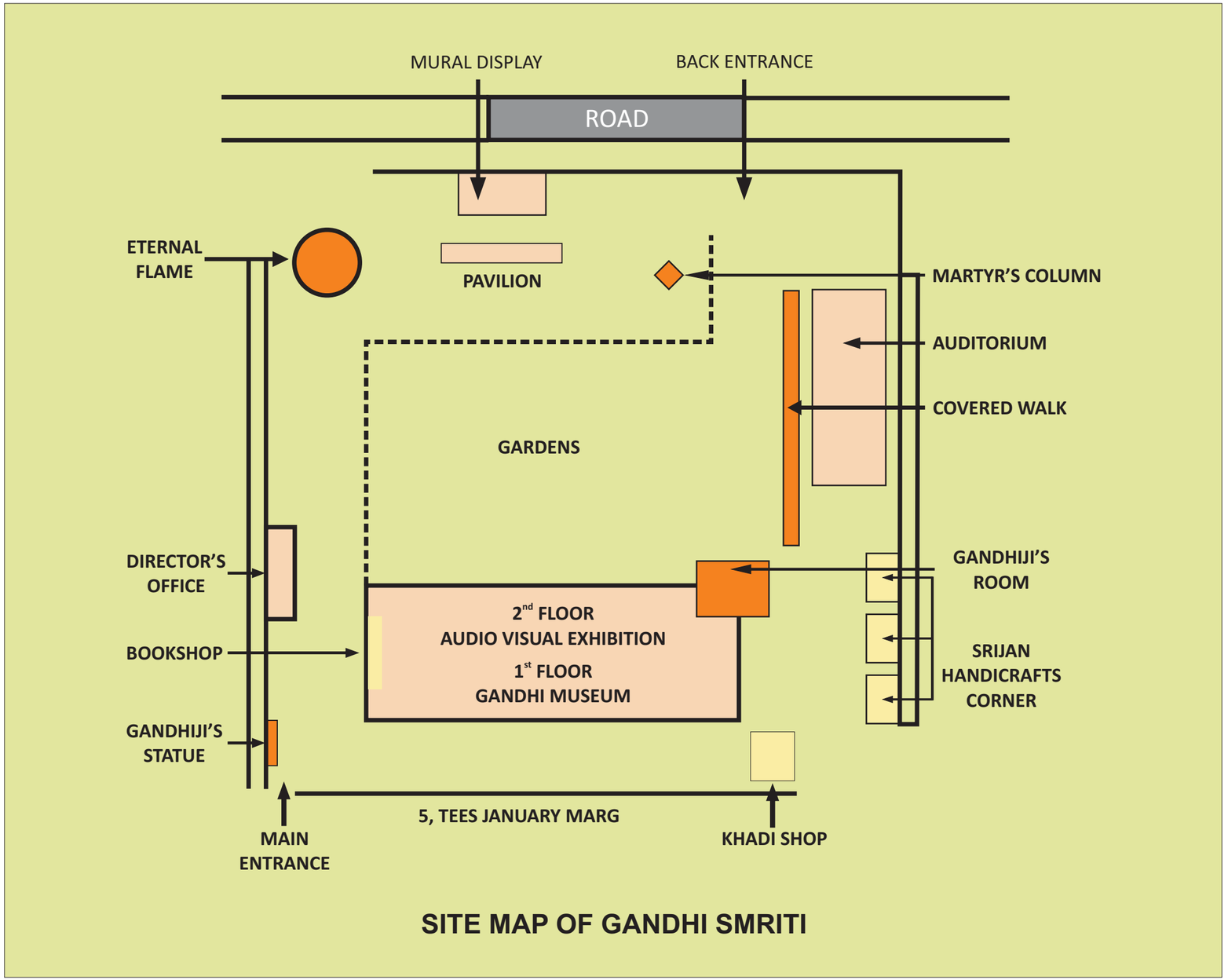

SITE MAP OF GANDHI SMRITI



प्रकाशक :

गांधी स्मृति एंव दर्शन समिति

5, तीस जनवरी मार्ग नई दिल्ली – 110011

Published by:

Gandhi Smriti and Darshan Samiti

5, Tees January Marg, New Delhi - 110011

Ph: 011 - 23012843, 23011480, 23392710, 23392709

e-mail : 2010gsds@gmail.com

Website : http://gandhismriti.gov.in/

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने 'एक व्यक्ति के रुप में' गांधीजी का चित्रण करते हुए लिखा है कि ''गांधीजी के व्यक्तित्व में असामान्य जैसा कुछ भी नहीं है जैसा कि हम किसी महापुरुष के विषय में कल्पना करते हैं, वे वक्ता के रुप में नितान्त सामान्य हैं। जनसमूह के सामने जब भाषण देते हैं तब भी उनकी शैली साधारण संवाद जैसी रहती है। प्रभाव पैदा करने के लिए वे कोई प्रयत्न भी नहीं करते। फिर भी उनमें कुछ ऐसा है कि उनके भाषण का हर शब्द लोगों के दिलों में उतर जाता है''।

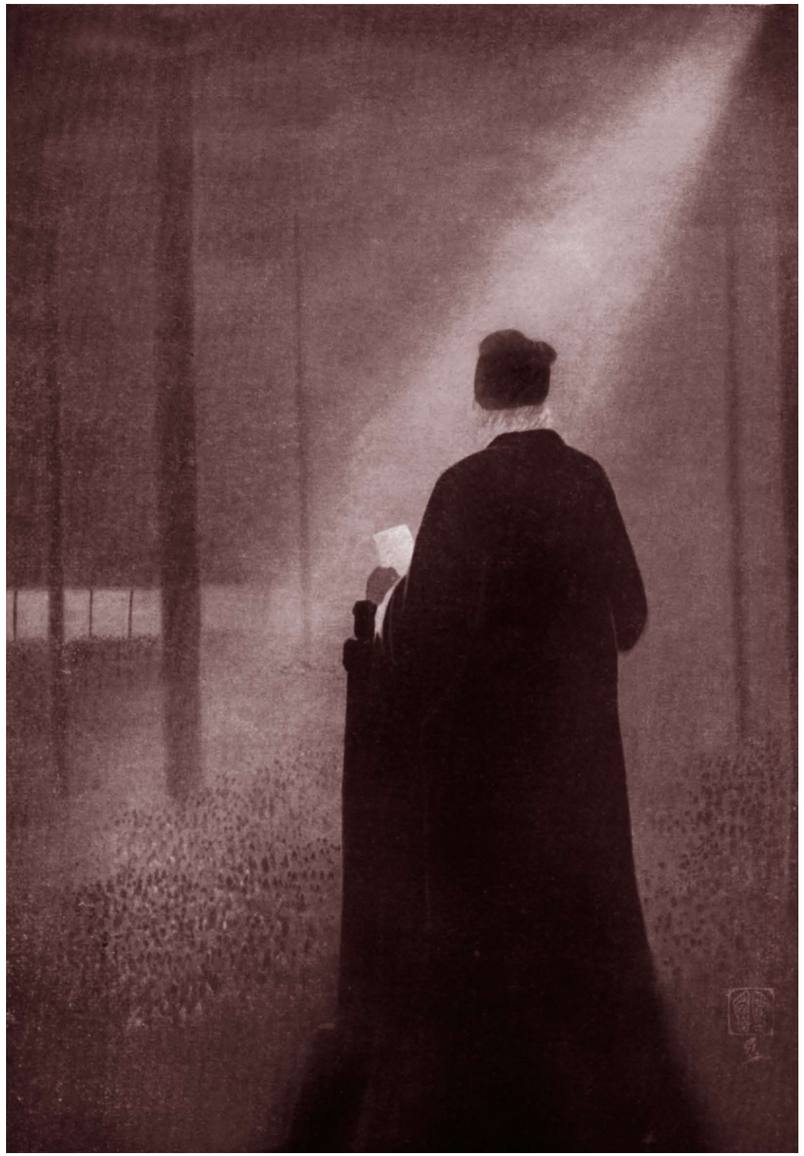

कवि टैगोर 1917 में कलकत्ता कांग्रेस को सम्बोधित करते हुए

''ऐसा शायद इसलिए है क्योंकि उन्हें इस बात का एहसास था कि उनकी वाणी से भारत की स्वतंत्रता ही अपनी बात कहना चाहती है। वह उनकी आखों में और उनके त्याग और कष्टों को सहने की उनकी क्षमता में झलकती है। जिस महान् ध्येय के लिए उन्होंने अपने आप को समर्पित कर दिया है यही उनकी विशिष्टता की पहचान है। जब गांधीजी बोलते हैं, तो लगता है साक्षात् स्वतंत्रता की आत्मा बोल रही है।'' गांधीजी का आत्म विश्वास इतना दृढ़ है कि वे दावे के साथ कह सकते हैं कि ''वे अपने लाखों देशवासियों की भावनाओं को पहचानते हैं''। और यही कारण है कि वे पूरे राष्ट्र को अपने साथ ले कर चलने में सफल हो सके हैं।

Writing about 'Gandhi-the man' Gurudev Tagore says, "taken just as a person, he was not particularly significant. He had no commanding presence such as we associate with greatness…he was no orator, never lifted his voice above the conversational level when talking to a multitude, and there was no attempt at producing an effect. Yet the multitudes hang on every word as upon an oracle".

"It was because he knew that when he spoke, the cause of India's freedom spoke. That cause looked out of his eyes and suffered as he suffered. He had the significance of the cause with which he was identified…In Gandhi, the word of freedom became flesh. When he spoke, freedom spoke." He could claim with conviction, "I know my millions". He could take an entire nation along with him.



SECTION - I

CHRONOLOGY OF GANDHIJI'S LIFE

महात्मा गांधी
(2 अक्तूबर, 1869 – 30 जनवरी, 1948)
(जीवन – क्रम)

1869 : जन्म 2 अक्तूबर, पोरबन्दर, काठियावाड़ में – माता पुतलीबाई, पिता करमचन्द गांधी।

1876 : परिवार राजकोट आ गया, प्राइमरी स्कूल में अध्ययन, कस्तूरबाई से सगाई।

1881 : राजकोट हाईस्कूल में पढ़ाई।

1883 : कस्तूरबाई से विवाह।

1885 : 63 वर्ष की आयु में पिता का निधन।

1887 : मैट्रिक पास की, भावनगर के सामलदास कॉलेज में प्रवेश लिया, एक सत्र बाद छोड़ दिया।

1888 : प्रथम पुत्र सन्तान का जन्म, सितम्बर में वकालत पढ़ने इंग्लैण्ड रवाना।

1891 : पढ़ाई पूरी कर देश लौटे, माता पुतलीबाई का निधन, बम्बई तथा राजकोट में वकालत आरम्भ की।

1893 : भारतीय फर्म के लिये केस लड़ने दक्षिण अफ्रीका रवाना हुए। वहाँ उन्हें सभी प्रकार के रंग भेद का सामना करना पड़ा।

1894 : रंगभेद का सामना, वहीं रहकर समाज कार्य तथा वकालत करने का फैसला – नेटाल इण्डियन कांग्रेस की स्थापना की।

1896 : छः महीने के लिये स्वदेश लौटै तथा पत्नी तथा दो पुत्रों को नेटाल ले गए।

1899 : ब्रिटिश सेना के लिये बोअर युद्ध में भारतीय एम्बुलेन्स सेवा तैयार की।

1901 : सपरिवार स्वदेश रवाना हुए तथा दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों को आश्वासन दिया कि वे जब भी आवश्यकता महसूस करेंगे वे वापस लौट आएंगे।

1901 : –1902 देश का दौरा किया, कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया तथा बम्बई में वकालत का दफ्तर खोला।

1902 : भारतीय समुदाय द्वारा बुलाए जाने पर दक्षिण अफ्रीका पुनः वापस लौटे।

1903 : जोहान्सबर्ग में वकालत का दफ्तर खोला।

1904 : 'इण्डियन ओपिनियन' साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया।

1906: 'जुलू विद्रोह' के दौरान भारतीय एम्बुलेन्स सेवा तैयार की – आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत लिया। एशियाटिक ऑर्डिनेन्स के विरूद्ध जोहान्सबर्ग में प्रथम सत्याग्रह अभियान आरम्भ किया।

1907 : 'ब्लैक एक्ट'–भारतीयों तथा अन्य एशियाई लोगों के ज़बरदस्ती पंजीकरण के विरूद्ध सत्याग्रह।

1908 : सत्याग्रह के लिये जोहान्सबर्ग में प्रथम बार कारावास दण्ड । आन्दोलन जारी रहा तथा द्वितीय सत्याग्रह में पंजीकरण प्रमाणपत्र जलाए गए। पुनः कारावास दण्ड मिला।

1909 : जून – भारतीयों का पक्ष रखने इंग्लैण्ड रवाना
नवम्बर – दक्षिण अफ्रीका वापसी के समय जहाज़ में 'हिन्द–स्वराज'(पुस्तक) लिखी।

1910 : मई – जोहान्सबर्ग के निकट टॉल्स्टॉय फार्म की स्थापना।

1913 : रंगभेद तथा दमनकारी नीतियों के विरूद्ध सत्याग्रह जारी रखा – 'द ग्रेट मार्च' का नेतृत्व किया जिसमें 2000 भारतीय खदान कर्मियों ने न्यूकासल से नेटाल तक की पदयात्रा की।

1914 : स्वदेश वापसी के लिये जुलाई में दक्षिण अफ्रीका से रवानगी।

1915 : 21 वर्षों के प्रवास के बाद जनवरी में स्वदेश लौटे। मई में कोचरब में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की जो 1917 में साबरमती नदी के पास स्थापित हुआ।

1916 : फरवरी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उद्घाटन भाषण।

1917 : बिहार में चम्पारण सत्याग्रह का नेतृत्व।

1918 : फरवरी – अहमदाबाद में मिल मज़दूरों के सत्याग्रह का नेतृत्व तथा मध्यस्थता द्वारा हल निकाला।

1919 : रॉलेट बिल पास हुआ जिसमें भारतीयों के आम अधिकार छीने गए – विरोध में उन्होंने पहला अखिल भारतीय सत्याग्रह छेड़ा, राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान भी सफल हुआ।

अंग्रेज़ी साप्ताहिक पत्र 'यंग इण्डिया' तथा गुजराती साप्ताहिक 'नवजीवन' के संपादक का पद ग्रहण किया।

1920 : अखिल भारतीय होमरूल लीग के अध्यक्ष निर्वाचित हुए – कैसर–ए–हिन्द पदक लौटाया – द्वितीय राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ किया।

1921 : बम्बई में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। साम्प्रदायिक हिंसा के विरुद्ध बम्बई में 5 दिन का उपवास। व्यापक अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया।

1922 : चौरी–चौरा की हिंसक घटना के बाद जन–आन्दोलन स्थगित किया। उन पर राजद्रोह का मुकदमा चला तथा उन्होंने स्वयं को दोषी स्वीकार किया। जज ब्रूमफील्ड ने छः वर्ष कारावास का दण्ड दिया।

1923 : 'दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह' पुस्तक तथा आत्मकथा के कुछ अंश कारावास के दौरान लिखे।

1924 : साम्प्रदायिक एकता के लिये 21 दिन का उपवास रखा – बेलगाम कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष चुने गए।

1925 : एक वर्ष के राजनैतिक मौन का निर्णय।

1927 : सरदार पटेल के नेतृत्व में बारदोली सत्याग्रह ।

1928 : कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया–पूर्ण स्वराज का आह्वान।

1929 : लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस घोषित किया गया – 'पूर्ण स्वराज' के लिये राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ।

1930 : ऐतिहासिक नमक सत्याग्रह – साबरमती से दांडी तक की यात्रा का नेतृत्व।

1931 : गांधी इरविन समझौता – द्वितीय गोलमेज़ अधिवेशन के लिये इंग्लैण्ड यात्रा – वापसी में महान् दार्शनिक रोमां रोलां से भेंट की।

1932 : यरवदा जेल में अस्पृश्यों के लिये अलग चुनावी क्षेत्र के विरोध में उपवास – यरवदा पैक्ट को ब्रिटिश अनुमोदन तथा गुरूदेव की उपस्थिति में उपवास तोड़ा।

1933 : साप्ताहिक पत्र 'हरिजन' आरम्भ किया – साबरमती तट पर बने सत्याग्रह आश्रम का नाम हरिजन आश्रम कर दिया तथा उसे हमेशा के लिए छोड़कर – देशव्यापी अस्पृश्यता विरोधी आन्दोलन छेड़ा।

1934 : अखिल भारतीय ग्रामोद्योग संघ की स्थापना की।

1935 : स्वास्थ्य बिगड़ा – स्वास्थ्य लाभ के लिये बम्बई आए।

1936 : वर्धा के निकट सेगाँव का चयन जो बाद में सेवाग्राम आश्रम बना।

1937 : अस्पृश्यता निवारण अभियान के दौरान दक्षिण भारत की यात्रा।

1938 : बादशाह ख़ान के साथ एन. डब्ल्यू. एफ. पी. का दौरा।

1939 : राजकोट में उपवास – सत्याग्रह अभियान।

1940 : व्यक्तिगत सत्याग्रह की घोषणा – विनोबा भावे को उन्होंने पहला व्यक्तिगत सत्याग्रही चुना।

1942 : –'हरिजन' पत्रिका का पन्द्रह महीने बाद पुनः प्रकाशन – क्रिप्स मिशन की असफलता
– भारत छोड़ो आन्दोलन का राष्ट्रव्यापी आह्वान
– उनके नेतृत्व में अन्तिम राष्ट्रव्यापी सत्याग्रह।
– पूना के आगाखाँ महल में बन्दी जहाँ सचिव एवं मित्र महादेव देसाई का निधन हुआ।

1943 : वाइसरॉय तथा भारतीय नेताओं के बीच टकराव दूर करने के लिये उपवास।

1944 : 22 फरवरी – आग़ा ख़ाँ महल में कस्तूरबा का 62 वर्ष के विवाहित जीवन के पश्चात् 74 वर्ष की आयु में निधन।

1946 : ब्रिटिश कैबिनेट मिशन से भेंट – पूर्वी बंगाल के 49 गाँवों की शान्तियात्रा जहाँ साम्प्रदायिक दंगों की आग भड़की हुई थी।

1947 : – साम्प्रदायिक शान्ति के लिये बिहार यात्रा।
– नई दिल्ली में लार्ड माउन्टबैटन तथा जिन्ना से भेंट
– देश विभाजन का विरोध
– देश के स्वाधीनता दिवस 15 अगस्त 1947 को कलकत्ता में दंगे शान्त करने के लिये उपवास तथा प्रार्थना
– 9 सितम्बर 1947 को दिल्ली में साम्प्रदायिक आग से झुलसे जनमानस को सांत्वना देने पहुँचे।

1948 : – देश में फैली साम्प्रदायिक हिंसा के विरोध में दिल्ली के बिड़ला भवन में 13 जनवरी से 5 दिनों तक चला जीवन का अंतिम उपवास।
– 20 जनवरी 1948 को बिड़ला हाउस में प्रार्थना सभा में विस्फोट।
– 30 जनवरी को नाथूराम गोडसे द्वारा शाम की प्रार्थना के लिये जाते समय बिड़ला हाउस में हत्या।

Chronology of Gandhiji's Life
(October 2, 1869 – January 30, 1948)

1869 : Born on 2nd October at Porbandar, Kathiawad, son of Karamchand (Kaba) and Putlibai Gandhi.

1876 : Attended primary school in Rajkot, where his family moved. Betrothed to Kasturba

1881 : Entered high school in Rajkot.

1883 : Married to Kasturba.

1885 : Father died at the age of 63.

1887 : Passed matriculation examination at Ahmedabad and entered Samaldas College, Bhavnagar, Kathiawad, but found studies difficult and studied only one term.

1888 : First of the four sons born.

1891 : Sailed from Bombay for England to study law.
Returned to India after being called to bar. Began practice of law in Bombay and Rajkot.

1893 : Sailed for South Africa to become a lawyer for an Indian firm.
Found himself subjected to all kinds of color discrimination.

1894 : Prepared to return to India after completing law case, but was persuaded by Indian colony to remain in South Africa and do public work and earn a living as a lawyer. Organised Natal Indian Congress.

1896 : Returned to India for six months to bring back his wife and two children to Natal.

1899 : Organised Indian Ambulance Corps for British in Boer War.

1901 : Embarked with family for India, promising to return to South Africa if the Indian community there needed his services again.

1901-1902 : Travelled extensively in India, attended Indian National Congress meeting in Calcutta, and opened law office in Bombay.

1902 : Returned to South Africa after urgent request from Indian community.

1903 : Opened law office in Johannesburg.

1904 : Established the weekly journal, Indian Opinion.

1906 : Organised Indian Ambulance Corps for Zulu "Rebellion".
Took vow of continence for life.
First satyagraha campaign began with meeting in Johannesburg in protest against proposed Asiatic Ordinance.

1907 : Organised satyagraha against compulsory registration of Asians ("The Black Act").

1908 : Stood trial for instigating satyagraha and was sentenced to two months' imprisonment in Johannesburg jail (his first imprisonment).
Arrested for not having certificate and sentenced to two months' imprisonment in Volksrust jail.

1907 : Sailed for England again to present Indians' case.
Returned to South Africa, writing Hind Swaraj en route.

1910 : Established Tolstoy Farm near Johannesburg.

1913 : Began penitential fast (one meal a day for more than four months) because of moral lapse of two members of Phoenix Settlement.

1914 : Left South Africa forever.

1915: Secured removal of custom harassment of passengers at Viramgam; first incipient satyagraha campaign in India.
Established Satyagraha Ashram at Kochrab, near Ahmedabad, and soon admitted an untouchable family; in 1917 moved ashram to new site near Sabarmati River.

1916 : Gave speech at opening of Hindu University at Benares.

1917 : Led successful satyagraha campaign

1918 : Led strike of millworkers at Ahmedabad. Millowner agreed to arbitration

1919 : Rowlatt Bills (perpetuating withdrawal of civil liberties for seditious crimes) passed, and first all-India satyagraha campaign conceived.
Organised nation-wide hartal - suspension of activity for a day - against Rowlatt Bills.
Assumed editorship of English weekly, Young India, and Gujarati weekly, Navajivan.

1920 : Elected President of All-India Home Rule League.
Second all-India satyagraha campaign began. He gave up Kaisar-i-Hind medal.

1921 : Presided at bonfire of foreign cloth in Bombay.
Gave up wearing shirt and cap and resolved to wear only a loin-cloth in devotion to homespun cotton and simplicity.
Fasted at Bombay for five days because of communal rioting.
Mass civil disobedience, with thousands in jail. Gandhi invested with "sole executive authority" on behalf of Congress.

1922 : Suspended mass disobedience because of violence at Chauri Chaura and undertook five-day fast of penance at Bardoli.
Pleaded guilty in famous statement at the "great trial" in Ahmedabad before Judge Broomfield. Sentenced to six years' imprisonment.

1923 : Wrote 'Satyagraha in South Africa' and part of his autobiography in prison.

1924 : Began 21-day "great fast" against communal rioting.
Presided over Congress session at Belgaum as president.

1925 : Fasted at Sabarmati for seven days because of misbehaviour of members of ashram.
Announced one-year political silence and immobility at Congress session at Cawnpore.

1927 : No-tax satyagraha campaign launched at Bardoli, led by Sardar Patel.

1928 : Moved compromise resolution at Congress session at Calcutta, calling for complete independence within one year, or else the beginning of another all-India satyagraha campaign.

1929 : Arrested for burning foreign cloth in Calcutta and fined one rupee.
Congress session at Lahore declared complete independence and a boycott of the legislature and fixed January 26 as National Independence Day. Third all-India satyagraha campaign began.

1930 : Set out from Sabarmati with 79 volunteers on historic salt march 200 miles to sea at Dandi.
Broke salt law by picking up salt at the seashore as whole world watched.
Arrested by armed policemen at Karadi and imprisoned in Yeravada jail without trial.
One hundred thousand persons were arrested. There was no Congress in December because all leaders were in jail.

1931 : Released unconditionally with 30 other Congress leaders.
Gandhi-Irwin (Viceroy) Pact signed, which ended civil disobedience.
Sailed from Bombay accompanied by Desai, Naidu, Mira, etc., for the second Round Table Conference, arriving in London via Marseilles, where he was met by C.F. Andrews.
Resided at Kingsley Hall in London slums, broadcast to America, visited universities, met celebrities, and attended Round Table Conference sessions.
Left England for Switzerland, where he met Romain Rolland, and also went to Italy, where he met Mussolini.
Arrived in India. He was authorised by Congress to renew satyagraha campaign (fourth nation-wide effort).

1932 : Concluded "epic fast" with historic cell scene in presence of Tagore after British accepted "Yeravada Pact".

1933 : Began weekly publication of Harijan.
Disbanded Sabarmati ashram. Renamed it as Harijan Ashram which became centre for removal of untouchability.
Arrested and imprisoned at Yeravada for four days with 34 members of his ashram. When he refused to leave Yeravada village for Poona, he was sentenced to one year's imprisonment at Yeravada.
Began tour of every province in India to help end untouchability.

1934 : Launched All-India Village Industries Association.

1935 : Health declined; moved to Bombay to recover.

1936 : Visited Seagon, a village near Wardha which eventually became an ashram for his disciples.

1937 : Visited South India for removal of untouchability.

1938 : Tour of Northwest Frontier Province with Khan Abdul Ghaffar Khan.

1939 : Began fast unto death as part of satyagraha campaign in Rajkot.

1940 : Launched limited individual civil-disobedience campaign.

1942 : Publication of Harijan resumed after being suspended for 15 months.
Met Sir Stafford Cripps in New Delhi but called his proposals "a post-dated cheque"; they were ultimately rejected by Congress.
Congress passed "Quit India" resolution - the final nation-wide satyagraha campaign - with Gandhi as leader.
Arrested
Mahadev Desai, Gandhi's secretary and intimate, died in Aga Khan Palace.

1943 : Began 21-day fast at Aga Khan Palace to end deadlock of negotiations between Viceroy and Indian leaders.

1944 : Kasturba died in detention at Aga Khan Palace at the age of seventy-four.

1946 : Conferred with British Cabinet Mission in New Delhi.
Began four-month tour of 49 villages in East Bengal to quell communal rioting over Moslem representation in provisional government.

1947 : Began tour of Bihar to lessen Hindu-Moslem tensions.
Began conferences in New Delhi with Viceroy (Lord Mountbatten) and Jinnah.
Opposed decision to accept division.
Fasted and prayed to combat riots in Calcutta as India was partitioned and granted independence.
came to Delhi and visited environs to stop rioting and also visited camps of refugees (Hindus and Sikhs from the Punjab).

1948 : Fasted for five days in Delhi for communal unity.
Bomb exploded in midst of his prayer meeting at Birla House, Delhi.
Assassinated in 78th year at Birla House by Nathuram Vinayak Godse.

जन्म, माता –पिता, प्रारम्भिक शिक्षा एवं विवाह

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म गुजरात के पोरबंदर शहर में 2 अक्तूबर, 1869 को हुआ। उनके पिता का नाम करमचंद गांधी तथा माता का नाम पुतलीबाई था। पोरबंदर भारत के पश्चिमी छोर पर अरब सागर से घिरा हुआ एक महत्वपूर्ण तटवर्ती शहर है। सदियों तक यह एक महत्वपूर्ण व्यापारिक शहर माना जाता रहा था। जब गांधीजी का जन्म हुआ था तब वह काठियावाड़ की राजधानी थी। गांधी परिवार पीढ़ियों से जिस भवन में रहता था उसी में गांधीजी पैदा हुए। गांधीजी के परदादा हरजीवन गांधी ने सन् 1777 में उसे खरीदा था। जब गांधीजी छः वर्ष के थे तब उनका परिवार राजकोट जा कर बस गया।

छः साल की उम्र में मोहनदास का पोरबंदर के एक प्राइमरी स्कूल में दाखिला हुआ। सन् 1876 के अंत में उनके पिता जी रिसायत के प्रधान मंत्री के रुप में राजकोट चले गये। उनका परिवार भी उनके साथ ही राजकोट आ गया। करमचंद गांधी ने राजकोट के बाहरी इलाके में एक सीधा–सादा एक मंज़िल का मकान लिया। वह 'कबा गांधी का डेरा' कहलाने लगा। सही मायने में मोहनदास की शिक्षा–दीक्षा राजकोट में ही हुई। उन्होंने स्थानीय तालुक स्कूल में पहले और दूसरे दर्जे की पढ़ाई पूरी की और 1879 में वह शहर के मुख्य तालुक स्कूल में भर्ती हुए। वहाँ उन्होंने तीसरे और चौथे दर्जे की पढ़ाई पूरी की।

तालुक स्कूल में प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद मोहनदास ने राजकोट के काठियावाड़ हाईस्कूल में अक्तूबर, 1880 में प्रवेश लिया। उन दिनों यह आंग्लो–वर्नाकुलर शिक्षा कहलाती थी। स्कूल का नाम बाद में अल्फ्रेड हाईस्कूल रखा गया और आजकल वह मोहनदास गांधी विद्यालय कहलाता है। उस स्कूल के प्रधानाचार्य श्री दोराबजी एदुलजी जिमी थे। उनके बारे में गांधीजी ने लिखा है कि वह बहुत ही अनुशासनप्रिय और हर काम को ढंग से करने वाले थे।

तेरह वर्ष की आयु में मोहनदास का विवाह कस्तूरबा से हुआ, जो लगभग उनकी समवयस्क थी। वह पोरबंदर के एक व्यापारी गोकुलदास माकनजी की पुत्री थी। महीनों चले उस समारोह में भाग लेने के लिए मोहनदास को कुछ महीने स्कूल छोड़ना पड़ा। बाल विवाह में बंधी इस जोड़ी ने तुरंत ही अपना दांपत्य जीवन शुरु किया। उस समय मोहनदास का जो आयु प्रमाण–पत्र बना था, जिस पर उनके पिताजी के हस्ताक्षर हैं रोचक है। उस प्रमाण–पत्र में उनके नाम में 'एच' गायब है। उनके पिताजी उन्हें प्यार से 'मोना' कहते थे और संभवतः इसीलिए प्रमाण–पत्र में भी 'एच' छूट गया। मोहनदास जब सत्रह साल के थे और छठे दर्जे में थे करमचंद गांधी की मृत्यु हो गयी। गांधी परिवार की आर्थिक स्थिति में भारी गिरावट आयी। किन्तु उनके भाई लक्ष्मीदासजी का आग्रह था कि मोहनदास कॉलेज में जाएं। निकटस्थ कॉलेज शामलदास कॉलेज था जो 400 कि.मी. दूरी पर भावनगर में था। मोहनदास ने उस कॉलेज में प्रवेश लिया।


Mohandas


Putli Bai


Karamchand Gandhi


Mohandas and a Friend


Karamchand's House, Rajkot


The Primary School, Rajkot

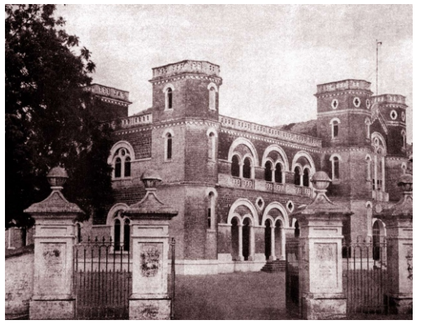
Alferd Hight School, Rajkot

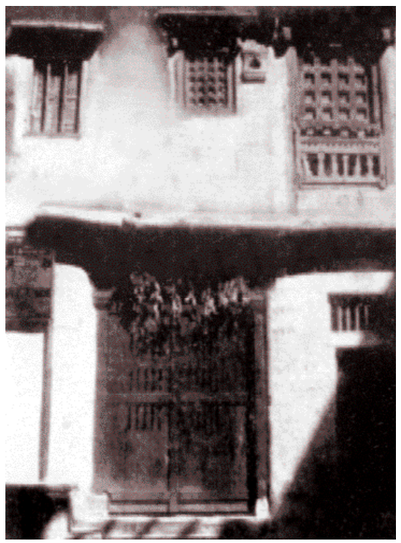
Kastur Ba's father's house, Porbandar


Young Kastur Ba


Dr. Dorabji Edulji Gimi

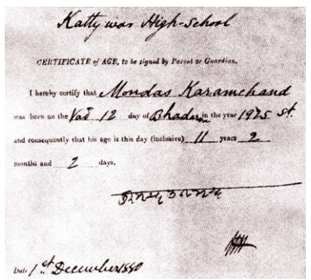
Katty was High-School
CERTIFICATE of AGE, to be signed by Parent or Guardian.
I hereby certify that Mondas Karamchand was born on the Vad 12 day of Bhadrav in the year 1925 St. and consequently that his age is this day (inclusive) 11 years 2 months and 2 days.
Gandhiji's certificate of age signed by his father


Porbandar city

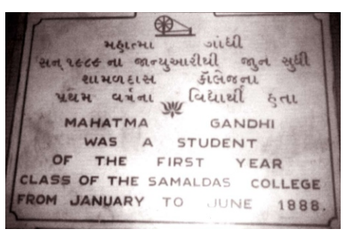
MAHATMA GANDHI WAS A STUDENT OF THE FIRST YEAR CLASS OF THE SAMALDAS COLLEGE FROM JANUARY TO JUNE 1888.
Plaque in Samaldas College

Birth, Parentage, Early Education and Marriage

Mohandas Karamchand Gandhi was born on 2nd October, 1869 in the port town of Porbandar in Gujarat on the western part of India. It is an important coastal town, with its shoreline washed by the Arabian Sea. For centuries it was recognised as an important commercial town. Initially Porbandar was the capital of the principality of Kathiawar. The house where Mohandas was born was the ancestral home of the Gandhis. It was bought in 1777 by Harjivan Gandhi, the Mahatma's great grandfather. Gandhiji was barely six years old when his family shifted to Rajkot.

At the age of six, Mohandas was sent to a primary school at Porbandar. Towards the close of 1876 his father was transferred as Prime Minister of Rajkot and the family shifted to the town of Rajkot. At Rajkot, Karamchand Gandhi took up residence in a relatively modest single-storeyed house on the outskirts of the town. It came to be known as Kaba ka Dera. Mohandas's proper schooling started from then on. He passed the classes I and II at a branch of the local Taluka school; and then in January 1879, shifted to the main school, known as the City Taluka School where he studied upto III and IV.

After completing his primary education at the Taluka School, young Mohandas entered the portals of Kathiyawar High School at Rajkot in October 1880, to commence what was then known as the Anglo-Vernacular phase of his education, in standard I. The name of the school was later changed to Alfred High School, and it is now named Mohandas Gandhi Vidyalaya. Mr. Dorabji Edulji Gimi, the Headmaster, was a disciplinarian, and "a man of method", as Gandhiji remembered him.

When Mohandas was in his thirteenth year he was married to Kasturba who was also of about the same age. She was the daughter of Gokuldas Makanji, a merchant of Porbandar. The wedding ceremonies were performed at Porbandar in great pomp befitting the status of the two families. Mohandas had to discontinue his education for some months to take part in the festivities that extended over a long period. The couple brought together in this child marriage started their married life immediately thereafter.

His certificate of age signed by his father at this time makes for an interesting study. The 'h' is omitted from his name, most probably because the father fondly called his son 'Mona'. When Mohandas was seventeen and in standard VI, Karamchand Gandhi died. The Gandhi family's fortunes touched a low ebb. But his brother Lakshmidas insisted that Mohandas should go to the university. The nearest college was at Bhavnagar, about 400 kilometers away, and Mohandas joined the Samaldas College there.

लंदन में उच्च शिक्षा

अपने परिवार के मित्र एवं सलाहकार श्री मावजी दवे की सलाह पर उनके भाई लक्ष्मीदास ने मोहनदास को बैरिस्टरी करने के लिए इंग्लैंड भेजने का निश्चय किया। मोहनदास जैसे होनहार नौजवान के लिए यह ज़्यादा उपयुक्त था। यह सलाह सबको अच्छी लगी।

जब मोहनदास ने लंदन जाने का निश्चय किया, तब कई बाधाएँ आयीं जिन्हें मोहनदास ने एक एक कर दूर किया। साथ में उनके बड़े भाई लक्ष्मीदास का पूरा समर्थन भी था। परन्तु माँ का एक आक्षेप कठिनाईं में डाल रहा था। उनकी माँ को डर था कि पाश्चात्य देश में रहकर उनका बेटा परंपरागत अपने महान् आचार–विचारों को छोड़ बैठेगा। इस बाधा को गांधीजी ने अपने सुप्रसिद्ध वचन–त्रय से दूर किया – उन्होंने अपने प्रवास में मदिरा–मांस और पर–स्त्री से दूर रहने का वादा किया।

अंत में 4 सितम्बर को गांधीजी एस.एस.क्लाइड नामक जहाज़ से इंग्लैंड के लिए रवाना हुए और पच्चीस दिन बाद इंग्लैंड के साउथाम्प्टन पहुँचे। वहाँ से वे रेलगाड़ी से लंदन पहुँचे। लंदन ग्रेट ब्रिटेन की राजधानी के रूप में पूरे बरतानिया साम्राज्य का केन्द्र बिंदु था। चूँकि बरतानिया साम्राज्य उन दिनों आधी दुनिया में फैला हुआ था, उसे दुनिया की राजधानी कहा जा सकता था। उस शहर की जगमगाहट, मोहक दृश्य और कलात्मक इमारतों के वास्तु–सौंदर्य ने गांधीजी को पहली नज़र में ही मुग्ध कर लिया।

परन्तु लंदन में उन्होंने सादा जीवन अपनाया और अपनी आंतरिक प्रेरणा के अनुरूप विभिन्न धर्मों के पवित्र–ग्रंथों का अध्ययन किया। उच्च विचार रखने वाले कई अंग्रेज़ उनके मित्र बने। वे बैरिस्टरी में उत्तीर्ण हुए और घर लौटे। लंदन प्रवास के दौरान ही गांधीजी की त्र्यंबक राय मजूमदार जो जूनागढ़ के एक वकील थे, तथा डॉ. प्राण जीवन मेहता, जो स्वयं भी एक काठियावाड़ी थे, बड़ी घनिष्ठ मित्रता स्थापित हो गई जो आगे चलकर उनके लिए आशीर्वाद स्वरूप बनी। डॉ. मेहता ने उनके लिए एक अंग्रेज़ विधवा के यहाँ, जो कभी भारत में रह चुकी थीं, निवास की व्यवस्था की। उस घर का पता था – 20, बरोन कोर्ट रोड, पश्चिम केन्सिंग्टन।

लंदन में गांधीजी का यही पहला निवास स्थान माना जाता है। लंदन पहुँचने के कुछ ही दिनों में मोहनदास को पता चल गया कि बैरिस्टरी की परीक्षाओं के लिए ज़्यादा पढ़ने की ज़रुरत नहीं है। पर उनकी कमज़ोर अंग्रेज़ी हमेशा उनको चिंता में डाल रही थी। उनके एक मित्र ने सुझाया कि वे लंदन मेट्रिकुलेशन परीक्षा दे सकते थे जिससे उनकी अंग्रेजी बेहतर हो जाएगी और उनका सामान्य ज्ञान भी बढ़ेगा। उन्होंने वैसा ही किया और उस परीक्षा में उर्त्तीण हुए। बैरिस्टर के प्रशिक्षण के लिए उन्होंने इन्नर टेंपिल कैंपस में प्रवेश लिया, जो विधि विश्वविद्यालय के चार कैंपसों में एक था। वे बैरिस्टरी में उर्त्तीण हुए और अन्य औपचारिकताओं को भी पूरा किया। उन्हें 10 जून, 1891 को बैरिस्टर घोषित किया गया। 11 जून को उन्होंने हाइकोर्ट में अपना नाम दर्ज किया और 12 जून को भारत के लिए निकल पड़े।


The Primary School, Rajkot


Palace of Westminster, London


London Victoria Station


20 Baron's Court Road, West Kensington


The Inner Temple


52, Bayswater


Northumberland Avenue

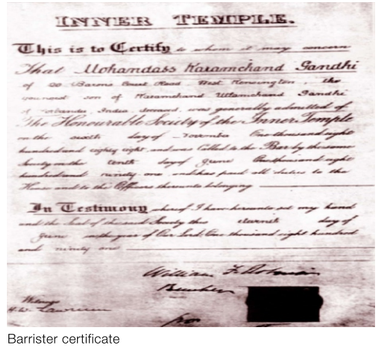

Barrister certificate


Student in London


Tryambakrai Trikumrai Mazmudar


Mavji Dave

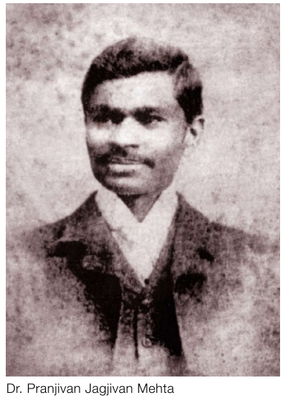
Dr. Pranjivan Jagjivan Mehta

Higher Education In London

On the advice of a friend and adviser of the Gandhi family Mavji Dave, his brother Lakshmidas agreed to send the young Mohan to England, to qualify as a barrister at law – more suited to a bright young man like Mohandas. The idea caught everyone's imagination.

When young Mohandas decided that he would go to London for higher education no hurdle was too big for him to cross. He had full support of his elder brother Lakshmidas. But one objection was raised by his mother who was afraid that her son would abandon the grand moral traditions of the family under the influence of the West. This was overcome with the young Mohandas making the famous 'three promises' to his mother – firm "no" to 'wine', 'women' and 'meat'. He lived up to those promises in the face of all odds.

Mohandas set sail for England by the ship S.S. *Clyde* from Bombay on September 4, 1888 and reached Southampton in England after 25 days' sailing. He took the train to London from there. London, as the capital of Great Britain, was the heart center of the British Empire. Since the British Empire was spread over half the world at that time, London could be said to have been the capital of the world. The glitter and glamour of the city, and the art and architecture of its buildings, simply overwhelmed him as he got his first glimpses of the city. For a short while he played the English gentleman's role, aping the Westerner. But that was a passing phase in overcoming the 'culture shock'. He finally found his moorings.

He devoted the necessary time to his studies, lived a simple life, read the sacred texts of different religions as his innate interest led him, and made friends with some high-minded Englishmen. He passed the bar examinations and returned home. While in London he established close friendship with Tryambakrai Mazumdar, a lawyer from Junagadh and Dr. Pranjivan Mehta, a fellow Kathiawari. This friendship later proved a blessing for him. Dr. Mehta found a room for him in the house of an English widow who had earlier lived in India. The house was at 20 Baron's Court Road, West Kensington. This house is looked upon as Gandhiji's first home in London.

Soon after his arrival in London Mohandas came to know that the Bar examinations (that is, examinations in law subjects) which he was required to pass to become a barrister, did not require much study. His weak English was a perpetual worry to him. A friend suggested that he should take the London Matriculation examinations, which would help improve his English, and his stock of general knowledge. He did accordingly, and passed the examination. For his training for the Bar he joined the Inner Temple, which was one of the four campuses that formed a legal university. He passed the Bar examinations, and also did what was known as 'keeping the terms'. He was declared qualified as a barrister on June 10, 1891. He enrolled in the High Court on 11th and sailed for home on 12th June.

शाकाहारवाद का नैतिक आधार

लंदन में मोहनदास को सिर्फ उबली सब्ज़ियाँ, विलायती रोटी, दलिया, सादा पनीर आदि स्वादहीन खाद्य वस्तुओं पर ही निर्भर रहना पड़ता था। उन्हें हमेशा भूख सताती थी। लोग कहते थे कि लंदन में कुछ शाकाहारी भोजनालय हैं, लेकिन किसी को उनका पता मालूम नहीं था। एक दिन इधर उधर भटकते हुए उन्हें सेंट्रल वेजिटेरियन रेस्तराँ मिल गया, जो फारिंगडन स्ट्रीट के 16 सेंट ब्राइड गली में था। उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और कई दिन बाद उन्होंने पेट भर खाया।

शीघ्र ही उन्हें पता चला कि लंदन वेजिटेरियन सोसाइटी नामक एक शाकाहारी संघ था, जो बहुत ही सक्रिय था। इंग्लैण्ड की यह शाकाहारी सोसाइटी अपनी साप्ताहिक पत्रिका भी छाप रही थी। युवा गांधी न केवल इस सोसाइटी के सदस्य बने बल्कि इसकी कार्यकारी समिति के सदस्य तथा इसके सचिव भी बने। प्रख्यात लेखक सर एडविन आरनल्ड इस सोसाइटी के अध्यक्ष रह चुके थे। गांधीजी तब करीब 18 वर्ष के ही थे, परन्तु इस सच्चाई को समझ गए थे कि ''स्वाद का असली आसन जीभ पर नहीं बल्कि दिमाग में था'' जो एक इतनी कम आयु के युवा के लिये बहुत गहरी बात थी। वे 'शाकाहारी स्तम्भों' के सम्पर्क में आए और यहीं से आहार सम्बन्धी उनके विचारों का आजीवन आधार बना।

इंग्लैण्ड का शाकाहारी आन्दोलन अपने नाम से कहीं अधिक महत्वपूर्ण था। यह आन्दोलन इमरसन, थोरो और वॉल्ट व्हिटमैन के विचारों का मानों साकार प्रतिरुप था। यह आन्दोलन उस दौर के क्रान्तिकारी युग प्रवर्तक सामाजिक, नैतिक विचारों का फल था। जो शाकाहारित्व गांधीजी ने इंग्लैण्ड में पाया वह उस समय के मानवतावादी सामाजिक विचारों का प्रतीक था। प्यारेलाल लिखते हैं–''वे सभी समाजवादी थे क्योंकि वे मानवतावादी थे और इसी कारण से वे शाकाहारी आन्दोलन से जुड़े थे''। वे बताते हैं कि यद्यपि गांधीजी थोरो के विचारों से 1907 से पहले परिचित नहीं हुए थे फिर भी इन विचारों को वे अंग्रेज़ शाकाहारी सदस्यों के माध्यम से जान सके थे। यह विचारों का वह सुन्दर कुँआ था जिसमें से पूर्व और पश्चिम दोनों की ही सभ्यतायें भर रही थी, मिल रहीं थी।



The Moral Basis of Vegetarianism

In England Mohandas had to live on boiled vegetables, bread, porridge, cheese and other insipid food. He was always hungry. He was told that there were some vegetarian restaurants in London, but nobody could tell him where. One day while wandering around, he came across the Central Vegetarian Restaurant at 16 Saint Bride Street, off Farringdon Street. He was overjoyed; and after many days, had a hearty meal.

Soon he came to know that there was an active Vegetarian Society in London. This Vegetarian Society in England published its own weekly journal. The young Gandhi not only joined the Society but was drawn into its executive committee and became the Secretary. Sir Edwin Arnold, eminent among the vegetarians, was the Society's President for a while. Gandhi, barely eighteen years old now, arrived at the truth that "the real seat of taste was not the tongue, but the mind"—a remarkable discovery for a youth of his age. He came into contact with the "pillars of vegetarianism", and this was the starting point of his life-long interest in dietetics.

The Vegetarian Movement in England was something more than its name implied. It was a kind of backwash of the ideas expressed in the Transcendentalism of Emerson, Thoreau and Walt Whitman. Thoreau Societies and Walt Whitman Groups had sprung up in England. Along with them were such organizations as the Socialist League and the Fellowship of New Life. The Vegetarian Society had close links with those organizations. So it happened that the vegetarianism that Gandhi discovered in England was rooted in the current humanitarian and socialist ideals. As Pyarelal writes: "They were Socialists because they were humanitarians and because they were humanitarians they were drawn into the ferment of the Vegetarian Movement." He points out that though Gandhi did not become acquainted with Thoreau's works till 1907, Thoreau's thoughts percolated down to him indirectly through the English vegetarians. The well from which he imbibed was thus the one in which the civilization of both the East and the West had often dipped and grated together.

दक्षिण अफ्रीका और गांधी



जब मोहनदास करमचंद गांधी राजकोट के अपने पारिवारिक मित्र दादा अब्दुल्ला शेठ के निमंत्रण पर सुदूर दक्षिण अफ्रीका के डरबन शहर के लिए रवाना हुए तो उनका ध्येय केवल जीविकोपार्जन था। परन्तु मई 1893 में वे जिस दक्षिण अफ्रीका में पहुंचे वह हर तरह रंगभेद, धर्म और व्यवसाय के आधार पर एक विभाजित समाज था। यहाँ भारतीयों को 'कुली' या 'सामी' कहकर सम्बोधित किया जाता था।

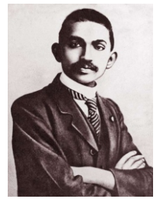

उनके साथ हुई आरम्भिक दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं ने महात्मा गांधी के संवेदनशील मस्तिष्क को दक्षिण अफ्रीका में बसे एशिया वासियों की दयनीय दशा से परिचित कराया। गांधीजी बाल्यकाल से ही किसी भी भेदभाव पूर्ण स्थिति का–जो जाति, धर्म या जन्म पर आधारित हो–उस का प्रतिरोध करते थे। यहां तक कि एकबार जब उनकी माताजी ने अपने हमउम्र 'अछूत' बालकों के साथ उन्हें खेलने से रोका तो उन्होंने लम्बे समय से चली आ रही इस कुरीति का भी विरोध किया। दक्षिण अफ्रीका में भी उन्होंने काले लोगों के प्रति गोरे लोगों की क्रूरता के विरोध में आवाज़ उठाई।



South Africa and Gandhi

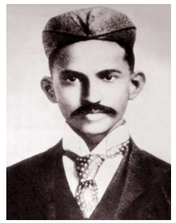

When Mohandas Karamchand Gandhi left for Durban, South Africa at the invitation of an old family acquaintance from Rajkot, Dada Abdullah Sheth, his "mission was simply to win a lawsuit, earn some money, start a career, As he wrote later "I went there only to try my luck in South Africa". But the South Africa to which he arrived in May 1893 was a sharply divided society, by colour, religion, and profession. Englishmen called all Indians as 'coolies' or 'samis'.



The early unfortunate incidents involving himself vividly revealed to the sensitive mind of young Gandhi the abjectness and degradation of the Asian people in South Africa. Even as a child Gandhiji had shown the courage of conviction to protest against any kind of discrimination between man and man on the basis of his birth, creed, and colour. Even when his mother forbade him to play with a boy of his own age because he was an "untouchable", he revolted against this age old taboo. Once again in South Africa he launched a determined revolt against the tyranny of the white races.

पीटरमारित्सबर्ग रेलवे स्टेशन : एक सत्याग्रही की जन्मस्थली

गांधीजी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उनके जीवन की सबसे बड़ी घटना जिसने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी वह थी, दक्षिण अफ्रीका में वह रेल यात्रा जिसके दौरान उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया और उन्हें अपमानित करके 7 जून 1893 की सर्दी की रात को पीटरमारित्सबर्ग रेलवे स्टेशन पर धक्का देकर ट्रेन से उतार दिया गया। उसका कसूर यह था कि उसने गोरों के लिये आरक्षित डिब्बे से उतर जाने से मना कर दिया था। बाद में उन्होंने लिखा:–

"मैं स्वयं अपने जीवन के बारे में भयभीत था। जब मैं एक अंधेरे प्रतीक्षा गृह में गया तो उस कक्ष में एक गोरा आदमी था। मुझे उससे डर लगा। मेरा अब क्या कर्तव्य था ? मैंने अपने आप से पूछा। क्या मैं वापस भारत चला जाऊँ या भगवान को साक्षी मानकर आगे बढ़ूं और मेरे साथ जो होना है उसका सामना करूँ ? लम्बे आन्तरिक सोच–विचार के पश्चात् मैंने वहीं रहने और तकलीफ सहने का निर्णय लिया। और इसके साथ ही उसी दिन से अन्याय के विरुद्ध मेरा सक्रिय अहिंसक असहयोग प्रारम्भ हो गया।" और यहीं उस रात को जन्म हुआ एक सत्याग्रही का।

एक शताब्दी बाद उसी रेलवे स्टेशन पर गांधीजी के पौत्र ने रंगभेद के विरूद्ध संघर्ष के जीवन्त प्रतीक राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला से उसी पीटरमारिट्सबर्ग शहर की स्वतंत्रता की प्रतीक एक चाबी प्राप्त की। अपने स्वीकृति भाषण में श्री गोपाल कृष्ण गांधी ने महात्मा गांधी को श्रद्धांजलि देते हुए कहा :

आज पीटरमारित्सबर्ग के इस रेलवे स्टेशन पर एक प्रश्न सदा पूछा जा सकता है : वह आदमी कौन था जिसे बाहर फेंका गया और वह कौन था जो गिरा?वह कौन था जो अपमानित होकर फिर से यहीं कहीं अपने दो अलग अलग पैरों से उठा। इस प्रश्न का उत्तर इस प्रकार दिया जा सकता है; जब गांधी जी को रेलगाड़ी से गिराया गया तो दक्षिण अफ्रीका आने वाला एक भारतीय गिरा किन्तु जब वो उठा तो पूरे भारत और दक्षिण अफ्रीका की जनता उठी ..... । गांधीजी रेलवे टिकट के साथ गिरे जिसे किसी ने मान्यता नहीं दी। वे उठे तो ऐसी इच्छा शक्ति के साथ कि कोई उसकी उपेक्षा नहीं कर सका, वे गिरे एक यात्री के रूप में और उठे एक देश भक्त के रूप में; गिरे बैरिस्टर के रूप में और उठे क्रांतिकारी के रूप में; उनका संक्षिप्त वकील जीवन एक राजनैतिक आंदोलन बन गया; उनकी मानव शिष्टाचार की अनुभूति मानवाधिकार के लिये उत्कंठा में बदल गई। उनका व्यक्तिगत जीवन उसी समय समाप्त हो गया और उसकी जगह सार्वजनिक जीवन प्रारम्भ हुआ; 'मेरा' 'तुम्हारा' हो गया। वास्तव में मोहनदास गांधी को यहाँ गिराया नहीं गया बल्कि यहाँ से उनका उत्थान आरम्भ हुआ था।



Pietermaritzburg Railway Station: Place of the Birth of a Satyagrahi

In his Autobiography Gandhiji has mentioned the incident that took place in South Africa during a train journey when he was humiliated, assaulted and forced out of the train compartment on the winter night of 7th June 1893 at Pietermaritzburg Railway Station – as the turning point of his life. His fault; he had refused to move from a 'whites-only' compartment. Gandhiji later wrote: -

"I was afraid for my very Life. I entered the dark waiting-room. There was a white man in the room. I was afraid of him. What was my duty? I asked myself. Should I go back to India, or should I go forward with God as my helper, and face, whatever was in store for me? I decided to stay and suffer. My active non-violence began from that date". A Satyagrahi was born on that cold night.

At the same railway station, a hundred years later a grandson received the conferment of Freedom of the city of Pietermaritzburg on Mahatma Gandhi from the President Nelson Mandela, the great symbol of struggle against Apartheid. In his acceptance speech Shri Gopal Krishan Gandhi while paying tributes to Mahatma Gandhi said,

"Here in Pietermaritzburg today, here at this railway station the question may well be asked : Who was the man that was flung out; who was it that fell? Again, who was it that rose from his humiliation – somewhere here-on two very different feet? The question may be answered thus; When Gandhi was evicted from the train, an Indian visiting South Africa fell; but when Gandhi rose an India and South Africa rose .....Gandhi fell with a railway ticket no one honoured; he rose with a testament none could ignore; he fell as a passenger but rose as a patriot; fell as a barrister but rose as a revolutionary; his legal brief became a political cause; his sense of human decency transformed itself into a passion for human justice. The personal died with him that moment and turned public; 'mine' became 'thine'. In fact, Your Worship Mohandas Gandhi was not flung here, he was launched."



वकील गांधी

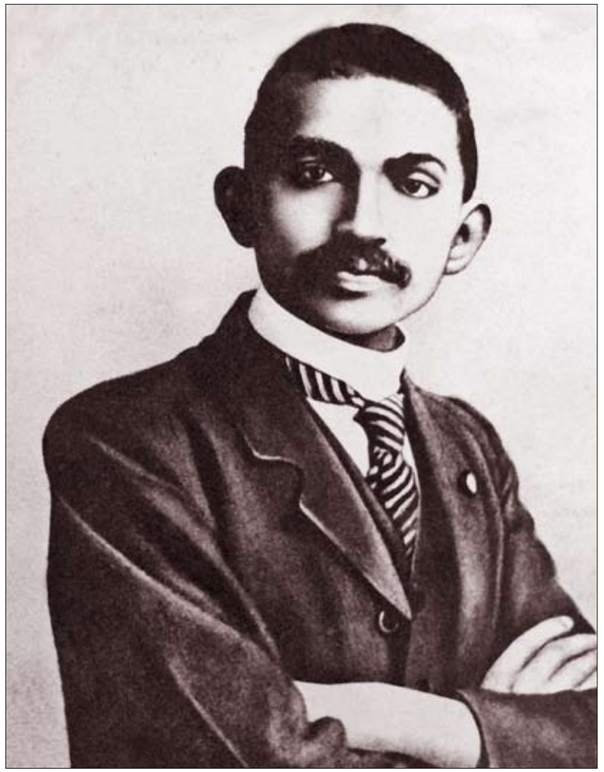

दक्षिण अफ्रीका में युवा गांधी एक सफल वकील के रुप में उभरे। उन्होंने यहां पर एक नित फलती–फूलती वकालत की कम्पनी भी स्थापित की। किन्तु जैसे जैसे उनका राजनैतिक एवं सार्वजनिक जीवन फैलता गया वकालत सिमटती चली गयी।

एक समय था कि पूरे जोहान्सबर्ग में मात्र गांधीजी ही एक सफल भारतीय वकील थे और उनकी सेवाएं सबको अपेक्षित थीं। कितने ही बड़े भारतीय व्यापारी उनके मुवक्किल थे। परन्तु उन्होंने समाज के ग़रीब वर्ग या भारतीय मज़दूरों की कभी उपेक्षा नहीं की। सरकार द्वारा कई भारत विरोधी अध्यादेश जारी करने के चलते उनके पास बहुत सारे लोग अपना केस लेकर आते। उनकी एक अच्छी आमदनी देने वाली वकालत चल रही थी। अपने शिखर पर गांधीजी सलाना 5000 पाउण्ड से भी अधिक धन अर्जित कर रहे थे। परन्तु 22 अगस्त 1906 को पारित अध्यादेश का विरोध करने के कारण उन्हें अन्य छब्बीस सहयोगियों के साथ 10 जनवरी 1908 को बन्दी बना लिया गया। उस समय कचहरी में सैकड़ों हमवतन साथी तथा वकील मित्र उपस्थित थे।

The Lawyer Gandhi

Young advocate M.K. Gandhi emerged as a successful lawyer in South Africa. He ran a flourishing law firm, but political preoccupations eventually brought his legal work to a standstill.

As Johannesburg's only successful Indian attorney, as well as one of the most prominent Indians in the country, Gandhi's services were in great demand. He held retainers from leading Indian traders, but his office also served poorer sections of the community. A series of anti-Indian laws brought him many clients. He built a lucrative practice which, at its peak, brought him £5000 a year, but as passive resistance intensified, he was increasingly drawn into the political arena, to the detriment of the practice.

Having refused to register under the Transvaal Asiatic Registration Act, Gandhi and twenty-six of his comrades were summoned to appear before the magistrate, Mr H. H. Jordan. The court ordered Gandhi to leave Transvaal within forty-eight hours.

He did not do so and on 10 January 1908, he was arrested and again brought before Mr Jordan. Inside the crowded courtroom were hundreds of Indian as well as fellow legal practitioners.

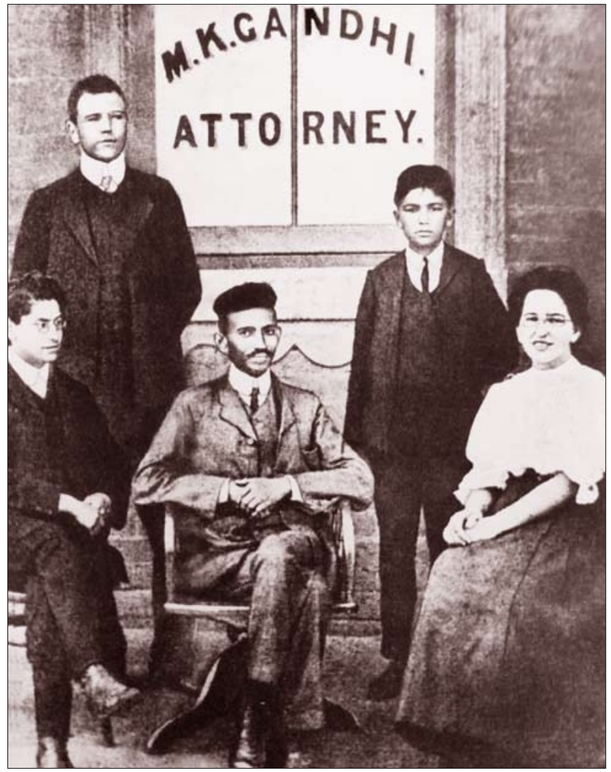

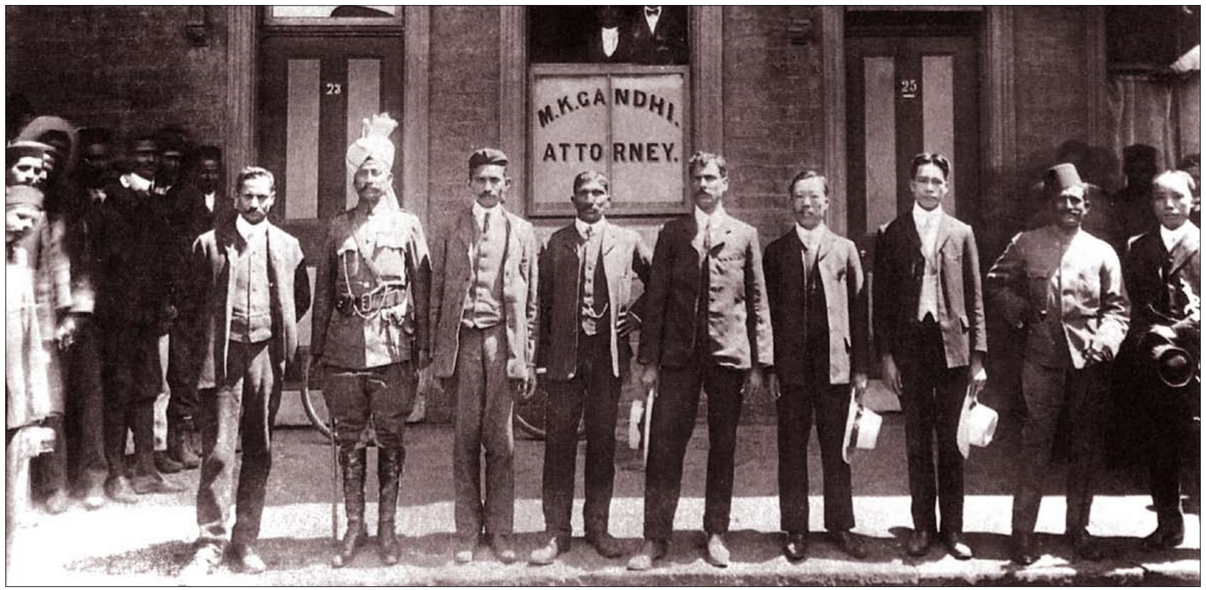





Genesis

The genesis of the Birth of *Satyagraha* can be traced to the Ordinance which was published in Transvaal Government Gazzette of 22 August 1906 and which the Apartheid regime in South Africa sought to impose upon the Indian immigrants. The proposed Ordinance required all Indian men and women, and children over eight, to register with the Authorities, submit to finger-printing and accept a certificate which they were to carry with them at all times. An Indian who failed to register and give the fingerprints was liable to lose the right of residence and could be imprisoned, fined, or deported from Transvaal. If apprehended on the street or anywhere without certificate could likewise be imprisoned, fined or deported, even though he owned valuable property or engaged in important commercial transactions.



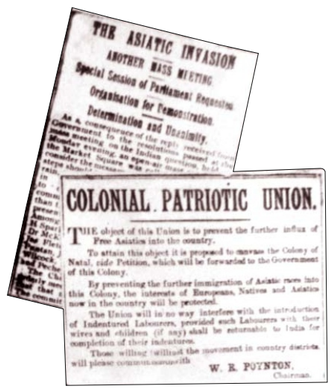

प्रारम्भ

सत्याग्रह की उत्पत्ति का सूत्र उस अध्यादेश में पाया जा सकता है जिसका प्रारुप 22 अगस्त 1906 के ट्रांसवाल गवर्नमेंट गज़ट में छपा था और जिसे दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का पालन करने वाली सरकार भारतीय प्रवासियों पर लागू करना चाहती थी। प्रस्तावित अध्यादेश में प्रावधान था कि सभी भारतीय स्त्री पुरूष तथा आठ वर्ष की आयु से अधिक के बच्चे अधिकारियों के यहाँ अपना पंजीकरण करवाएँ, अपनी अंगुलि–छाप दें और एक प्रमाणपत्र हासिल करें जिसे वे हमेशा अपने साथ रखें। अपने को पंजीकृत न कराने वाले तथा अंगुलि–छाप न देने वाले भारतीय को वहाँ रहने के अधिकार से वंचित होना पड़ सकता था और जेल में डाला जा सकता था, आर्थिक दण्ड दिया जा सकता था या ट्रांसवाल से बाहर निकाला जा सकता था। प्रमाणपत्र के बिना सड़क पर या कहीं पर भी पकड़े जाने पर उसे बंदी बनाया जा सकता था या बाहर निकाला जा सकता था, भले ही उसके पास मूल्यवान चल या अचल सम्पत्ति हो या वह महत्वपूर्ण वाणिज्यिक कार्य में संलग्न हो।



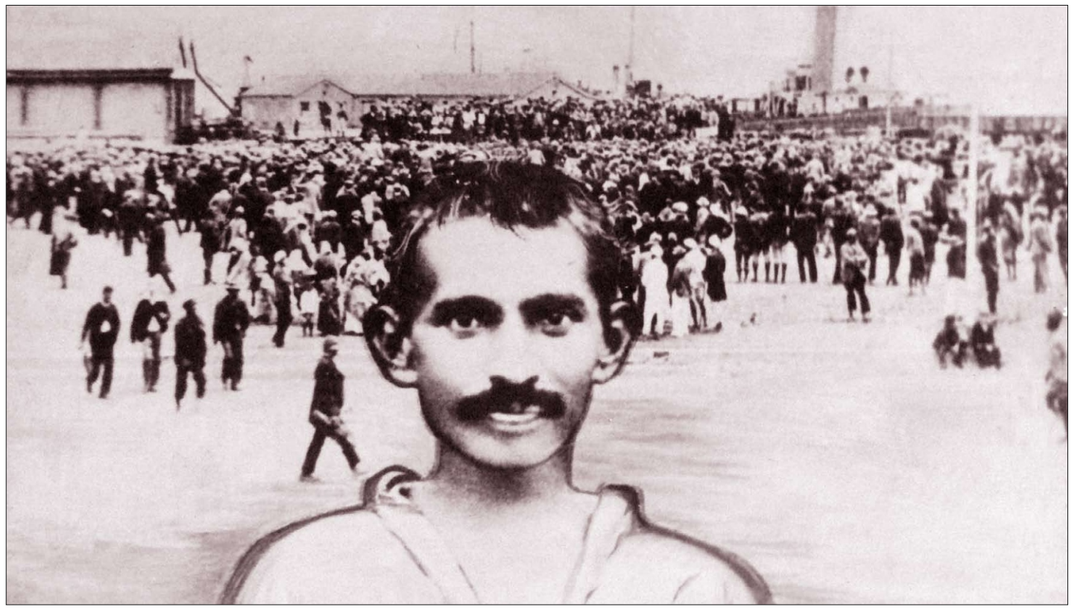

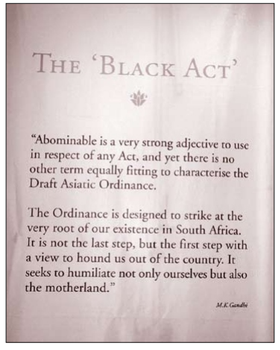

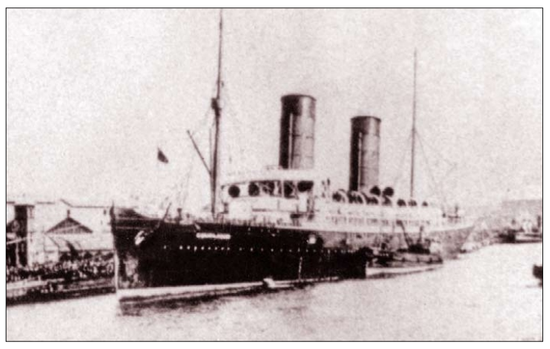

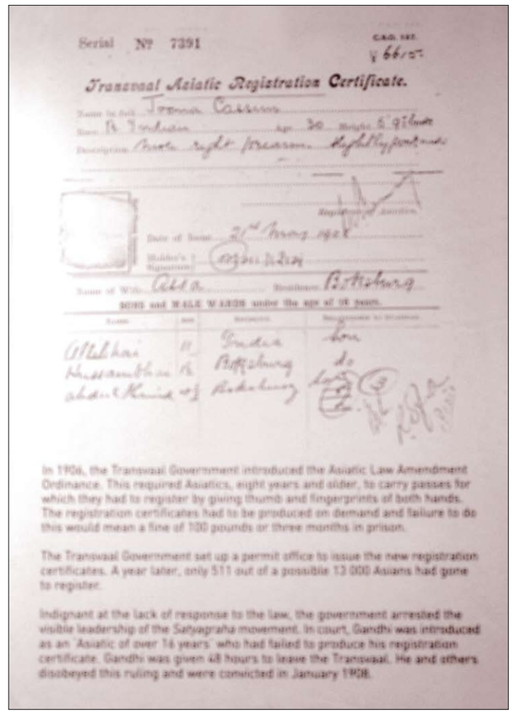

सत्याग्रह : एक अनन्त यात्रा

11 सितम्बर 1906 – 11 सितम्बर 2006

वर्ष 1906 को सही अर्थों में मोहनदास करमचन्द गांधी के जीवन की दिशा बदल देने वाला कहा जा सकता है। वह दौर था जब गांधीजी ने अपने अन्दर गहन आध्यात्मिक जागृति का अनुभव किया, ब्रह्मचर्य का संकल्प लिया तथा संकुचित पारिवारिक परिधि से मुक्त होकर समग्र मानवता को अपनाकर 'वसुधैव कुटुम्बकम' के चिरंतन मंत्र को साकार रुप प्रदान किया। उन्नीस सौ छह या संक्षेप में कहें, तो 11 सितम्बर के दिन उन्होंने अपने सत्य और अहिंसा के दृढ़ता से अनुपालन में पीड़ा ग्रस्त मानवता के लिए उद्धार का मार्ग ढूंढ़ निकाला। मोहनदास करमचन्द्र गांधी ने इस मार्ग को 'सत्याग्रह' की संज्ञा दी।

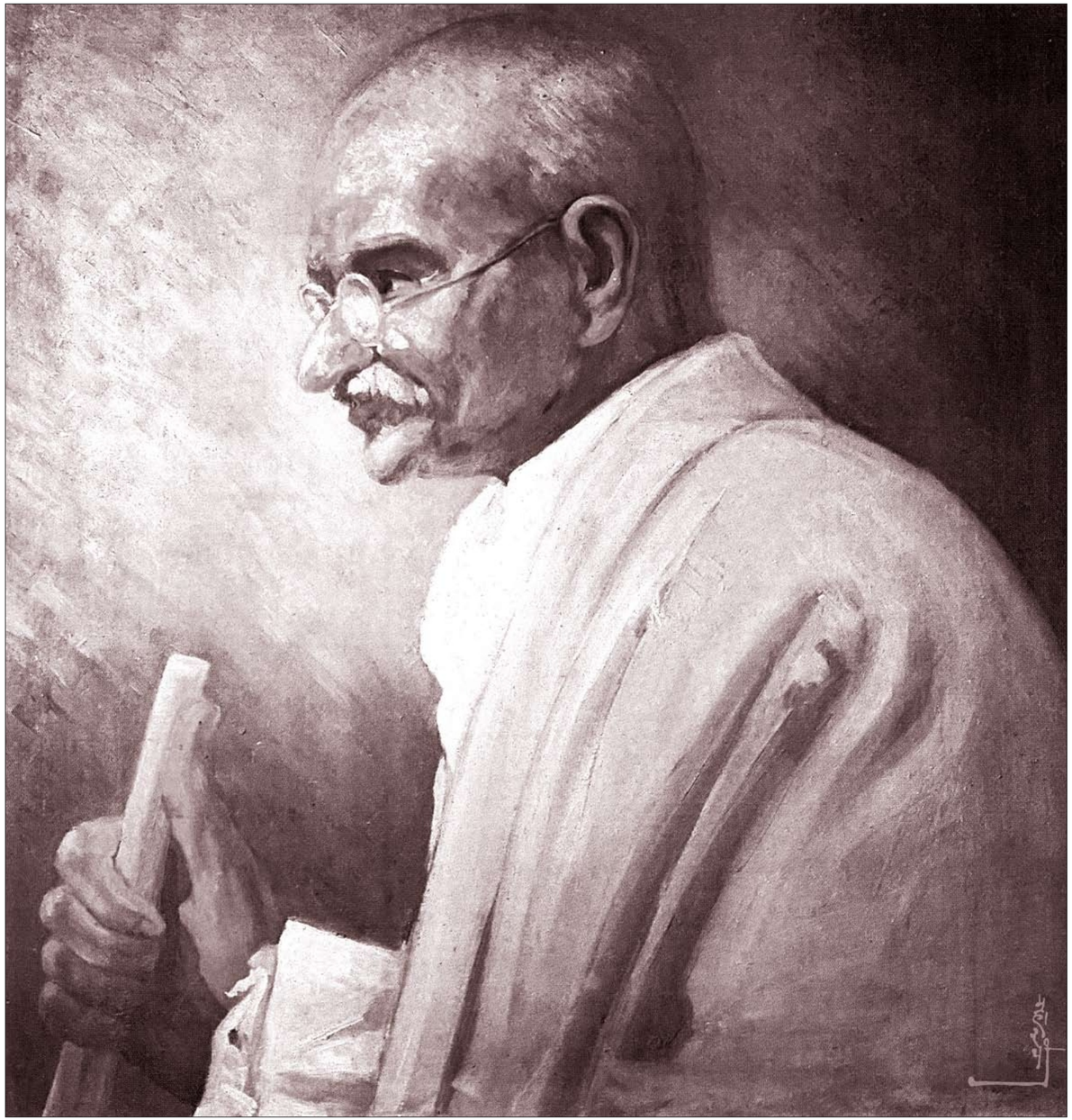

Satyagraha : an eternal journey

11 September 1906 – 11 September 2006

The year 1906 may rightly be described as a turning point in the life of Mohandas Karamchand Gandhi. It was in this year when he experienced a deep spiritual awakening within and dedicated himself to the service of humanity. He took the vow of celibacy and stepped out of the narrow confines of the biological family to embrace the entire humankind as his own. It was also in the year 1906, on 11th September to be precise, he opened the path of emancipation for the suffering humanity with his firm adherence to Truth and Non-violence. Mohandas Karamchand Gandhi described this path as *Satyagraha*.

सत्याग्रह का उद्गम

11 सितम्बर, 1906 की बैठक मुख्यतः इस बात पर चर्चा करने के लिए बुलाई गई थी कि इस अध्यादेश का प्रतिरोध कैसे किया जाए। एक बात स्पष्ट थी कि यह ''करो या मरो'' की स्थिति बन गई थी। एक अर्थ में यह 1942 में गांधी जी द्वारा अपने देशवासियों को दिए गए मंत्र की पूर्व कल्पना थी। लेकिन गांधी जी के समक्ष एक गम्भीर चिन्ता थी कि ''कैसे मरा जाए''। वे अंधेरे में हाथ पाँव मार रहे थे और अपने अंदर से एक आवाज़ सुनने के लिए बैचेन थे। उस विशाल बैठक के कई दिन बाद तक गांधीजी को कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था। उन्हें केवल एक बात समझ में आती थी कि ''अध्यादेश का विरोध अवश्य किया जाए। उनका विश्वास था कि संसार में कहीं पर भी मानवता के साथ इस प्रकार का अपमानजनक अध्यादेश नहीं लागू किया गया है।

यह कानून भारतीयों के विरूद्ध तैयार किया गया था अतः यह उनके और भारत के विरूद्ध था। यदि यह पारित हो जाता तो दक्षिण अफ्रीका के अन्य भागों में भी इसी प्रकार के कानून बनाने की शुरूआत होगी और कोई भी भारतीय दक्षिण अफ्रीका में नहीं रह सकता। इसके अतिरिक्त यह कानून किसी भी पुलिस अधिकारी को यह अधिकार देगा कि वह किसी भी औरत को सड़क पर या उसके घर में घुस कर उसका पंजीकरण पत्र मांग लेता। महिलाएँ चूँकि अकेली ही रहती थीं अतः यह व्यवस्था हिन्दू और मुसलमान दोनों के लिए आपत्तिजनक थी। गांधीजी द्वारा भाग ली गई एक बैठक में एक भारतीय ने कहा कि, "यदि कोई व्यक्ति मेरी पत्नी से प्रमाणपत्र मांगने आता है तो मैं उसे गोली मार दूँगा और परिणाम भोगने को तैयार हो जाऊँगा।"

गांधीजी ने प्रवासी भारतीयों के समक्ष इस गम्भीर मामले को रखते हुए उन्हें समझाया "सामुदायिक मामलों में यदि कोई संकट हो सकता है तो वह अब आया है।'' शपथ के परिणाम स्वरूप उन्हें बन्दी बनाया जा सकता हैं। कारागार में उन्हें पीटा और अपमानित किया जा सकता है। उन्हें भूखा रहना पड़ सकता है। उनकी नौकरी और धन सम्पत्ति छीनी जा सकती है। उन्हें समुद्रपार भेजा जा सकता है। संघर्ष लम्बे समय तक चल सकता है। गांधीजी ने कहा, "परन्तु मैं साहस और निश्चय के साथ घोषित कर सकता हूँ कि जब इने गिने लोग भी अपने संकल्प का पालन करेंगे वे निश्चित रूप से अंत तक पहुँचेंगे और वह विजय है।" भारतीय उत्साह से परिपूर्ण थे। अध्यक्ष द्वारा कार्यवाही आरम्भ करने के पहले ही आर्केस्ट्रा, बालकनी और गैलरी भरी हुई थी। उत्तेजित श्रोताओं के समक्ष चार भाषाओं में उग्र भाषण दिए गए और फिर गांधीजी की सहायता से तैयार किया गया भाषण सेठ हाजी हबीब द्वारा पढ़ा गया जिसमें पंजीकरण के प्रावधानों को न मानने की माँग की गई थीं। उन्होंने कहा, "ईश्वर को हाज़िर नाज़िर मान कर मत दें।"

11 सितम्बर, 1906 को दक्षिण अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में एम्पायर थियेटर की जनसभा में इस प्रकार की भावना थी। संवेदनशील अंतरात्मा ने मोहनदास करमचन्द गांधी से कहा कि यह एक असाधारण घटना थी। एक इतिहास बन रहा है। एक ऐसा कार्य हो रहा है जिसका गवाह ईश्वर है। यह एक धार्मिक शपथ थी जिसे तोड़ा नहीं जा सकता। सार्वजनिक सभा में हाथ उठा कर कोई साधारण शपथ नहीं ली गई थी जिसे कुछ क्षण बाद भुला दिया जाए।

अगले दिन 12 सितम्बर को एम्पायर थियेटर आग में पूरी तरह जल कर राख हो गया। अनेक भारतीयों को लगा कि अध्यादेश की भी यही दशा होगी। गांधीजी के लिए यह मात्र एक संयोग था। वे किसी शकुन अपशकुन में विश्वास नहीं करते थे। किसी मूक संकेत के साथ गांधी को भविष्य का संकेत नहीं मिला। उस भयावह घटना से उनके मन में भविष्य का आभास हुआ। गांधीजी को उस बैठक में जिस आश्वासन की प्रबल अनुभूति हुई और अंतिम क्षण तक जो उनके मन में रही उससे स्पष्ट हो गया कि उन्हें अकेले ही आगे बढ़ना है।

11 सितम्बर 1906 को मोहनदास करमचन्द गांधी ने सचमुच इतिहास रचा था।



The Empire Theatre in Johannesburg, South Africa..... where Satyagraha announced its arival on 11 September 1906



Birth of Satyagraha

The meeting on September 11, 1906 was called precisely for the reason to discuss and debate on the manner of protest. One thing was clear: it had to be in a spirit of **'do or die'.** It was as if anticipating the mantra which Gandhiji gave to his countrymen and women in 1942. **'But how are we to die!'** Gandhiji wondered. He was groping in the dark, straining hard to hear the 'small voice' within. For days preceding the 'big meeting' Gandhiji had no clue as what to do. He only knew that the Ordinance must be resisted. "Nowhere in the world", he believed, "had free men been subjected to such humiliating, restrictive legislation".

This Act was directed specifically against Indians and was, therefore, an affront to them and to India. If passed it would be the beginning of similar laws in other parts of South Africa; in the end, no Indian could remain in South Africa. Moreover, the Ordinance would permit a police officer to accost an Indian woman on the street or enter her home and ask for her registration document. In view of the complete or partial aloofness in which Indian women lived, this feature of the measure was highly offensive both to Moslems and Hindus. 'If anyone came forward to demand a certificate from my wife,' exclaimed an irate Indian at a preliminary committee meeting attended by Gandhiji, 'I would shoot him on the spot and face the consequences.'

Gandhiji counselled the Indian community. "If ever a crisis in community affair warranted a vow, now was the time." In consequences of the vow, they might be jailed; in prison they might be beaten and insulted. They might go hungry and be exposed to heat and cold. They might lose their jobs, their wealth. They might be deported. The struggle might last a long time, may be years. "But I can boldly declare and with certainty," Gandhi exclaimed, "that so long as there is even a handful of men true to their pledge, there can be only one end to the struggle—and that is victory". The Indians were incensed. Orchestra, balcony and gallery were crowded long before the Chairman opened the proceedings. Angry speeches in four languages stirred the volatile audience to a high emotional pitch and then Sheth Haji Habib read a resolution, which Gandhiji had helped to prepare, demanding non-compliance with the registration provisions. Haji Habib called on the assembly to adopt it, but not in the usual manner. They must vote, he urged, 'with God as their witness'.

That was the mood of the mass meeting in the Empire Theatre in Johannesburg in South Africa on September 11, 1906. A sensitive ear and a keen intuition quickly told Mohandas Karmachand Gandhi that this was an extraordinary event. History is in the making. An action with God as witness. It was a religious vow which could not be broken. It was not the ordinary motion passed by a show of hands at a public function and immediately forgotten.

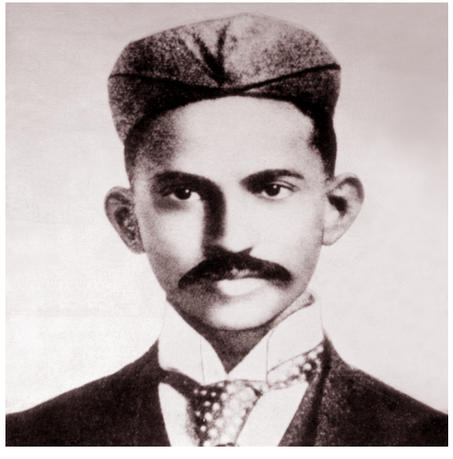

The next day, on September 12, the Empire Theatre was completely destroyed by fire. Many Indians regarded it as an omen that the Ordinance would meet a similar fate. To Gandhiji, it was merely a coincidence. He did not believe in such omens. Fate did not beckon to Gandhi with mute signs. The future spoke to him through that awesome, Himalayan self-assurance which he displayed at the meeting and in all the subsequent events till his last breath proved beyond any shadow of doubt that he knew he could walk alone.



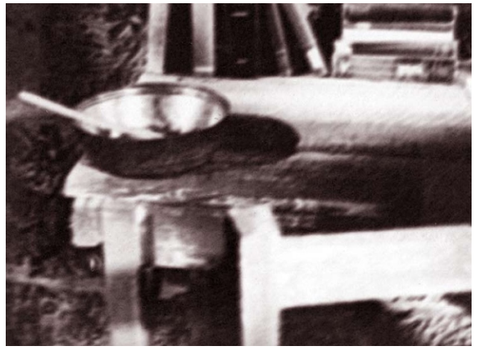

आन्दोलन ज़ोरों से चलता रहा। गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन का आदेश दिया। बैरिस्टर गांधी ने वकालत की बजाय सियासी क़ैदी की हैसियत से गुनाहग़ार बनने में अधिक गौरव माना। 10 जनवरी, 1908 को सविनय कानून–भंग के लिये गांधीजी पहली बार जेल गये। परन्तु महान् चिंतक थोरो की तरह गांधीजी भी यह महसूस नहीं करते थे कि वे बंदी हैं। वे क़ैदी के कपड़े पहनते और जेल का खाना खाते। वे अपना समय पढ़ने में बिताते। सुकरात की पुस्तक पढ़ने पर उनको लगा कि हिन्दुस्तानियों को सत्यवीर सुकरात की तरह जीना और मरना सीखना चाहिये। जेल की दीवारें उनको चूने और पत्थर की बर्बादी लगती थीं। उनको इस बात का विश्वास था कि अन्यायी कानूनों का प्रतिकार और राष्ट्रहित के लिए कठिनाइयों का सामना करना ही स्वतंत्रता प्रप्ति का सच्चा मार्ग है। जेल से अपने बेटे को लिखे एक पत्र में गांधीजी ने ब्रह्मचर्य, ग़रीबी और श्रम की महिमा समझायी क्योंकि वे मानते थे कि शिक्षा का अर्थ केवल अक्षरज्ञान नहीं अपितु चरित्र निर्माण और कर्तव्यपालन है।

करीब छह हफ्ते के कारावास के बाद, गांधीजी बिना शर्त रिहा कर दिये गये। सरकार से समझौता होने के कारण सविनय अवज्ञा और जातीय समानता के सिद्धांन्तों का समर्थन करनेवाला भारतीय राहत बिल पास हुआ।

सत्याग्रह के शहीदों के तर्पण के रूप में त्याग और सादगी का व्रत लेकर गांधीजी ने तपस्वी का सा जीवन अपनाया।

सत्याग्रह के सफल होने पर गांधीजी ने कहा, "सत्याग्रह अनमोल शस्त्र है। सत्याग्रही न कभी हार से डरते हैं, न निराश होते हैं"।

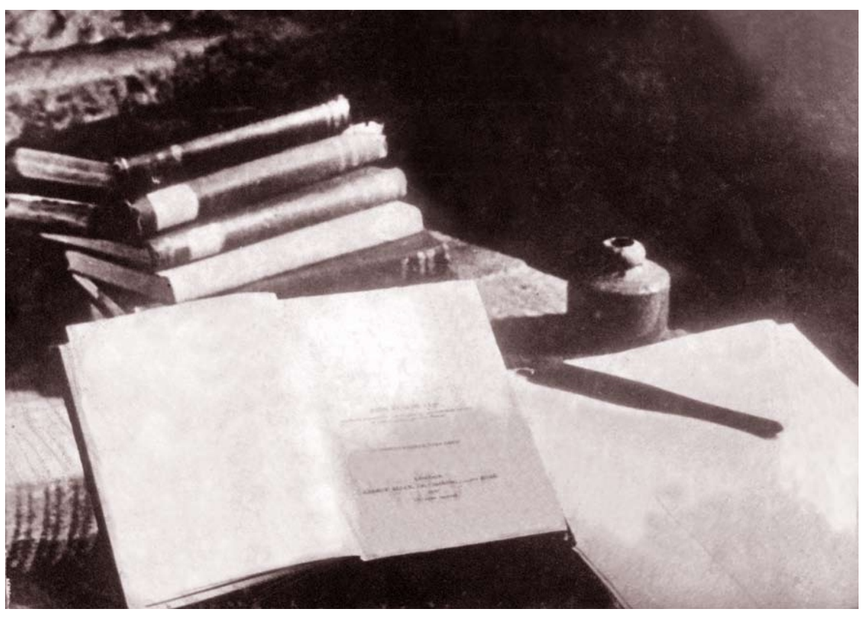

The struggle continued with unabated vigour. Gandhi gave a signal for the passive resistance movement. Attorney Gandhi stood in the dock considering the role of a political prisoner far more honourable than that of a lawyer. On January 10, 1908 Gandhi entered the prison-gate for the first time for civil disobedience. But like Thoreau, Gandhiji too did not feel for a moment confined and the prison walls seemed to him to be a great waste of stone and mortar. He donned the convict's clothes and ate jail rations. He spent his time in reading. On reading Socrates, he felt the Indians should learn to live and die like Socrates, the great Satyagrahi. He was convinced that the real road to freedom lay in resisting unjust laws and undergoing suffering in the interest of one's country. In a letter from prison to his son, Gandhiji emphasized the importance of chastity, poverty and hard work; for education to him, did not mean knowledge of letters only but also character-building and knowledge of duty.

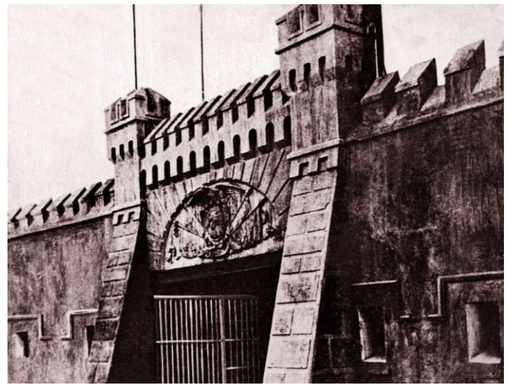

After an incarceration of hardly six weeks he was released unconditionally. Consequent upon a truce with the Government, the Indian Relief Bill vindicating the principle of civil resistance and racial equality was passed.

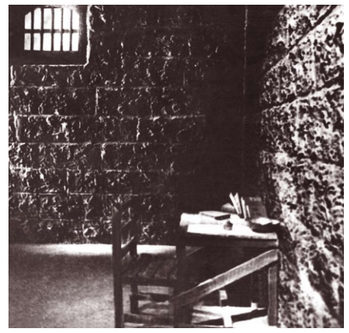

As a penance for loss of lives in the struggle, imposing a vow of self-suffering on himself, Gandhi adopted an ascetic mode of life.

On the triumphant end of the Satyagraha struggle, Gandhi observed, "Satyagraha is a priceless weapon and those who wield it are strangers to disappointment or defeat."

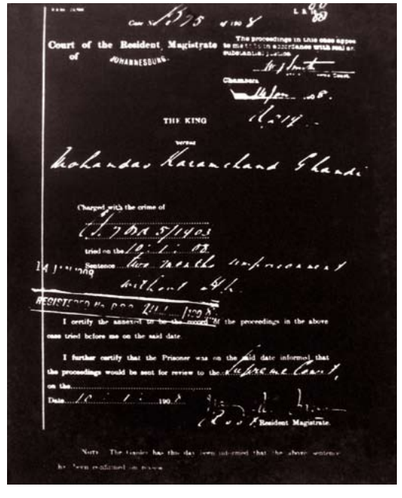

Court of the Resident Magistrate of JOHANNESBURG.

THE KING

versus

Mohandas Karamchand Ghandi

Charged with the crime of

tried on the

Sentence two months imprisonment without H.L.

I certify the annexed to be the record of the proceedings in the above case tried before me on the said date.

I further certify that the Prisoner was on the said date informed that the proceedings would be sent for review to the Supreme Court, on the

Date 10 1 1908

Resident Magistrate.

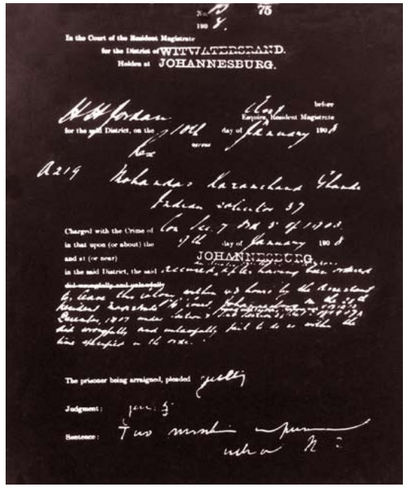

In the Court of the Resident Magistrate for the District of WITWATERSRAND.

Holden at JOHANNESBURG.

before Esquire, Resident Magistrate

for the said District, on the 10th day of January 1908

versus

A219 Mohandas Karamchand Ghandi

Indian solicitor 37

Charged with the Crime of Con. Sec. 7 Ord. 8 of 1903.

in that upon (or about) the 9th day of January 1908

and at (or near) JOHANNESBURG

in the said District, the said accused, after having been ordered

The prisoner being arraigned, pleaded guilty

Judgment:

Sentence: Two months imprisonment without H.L.

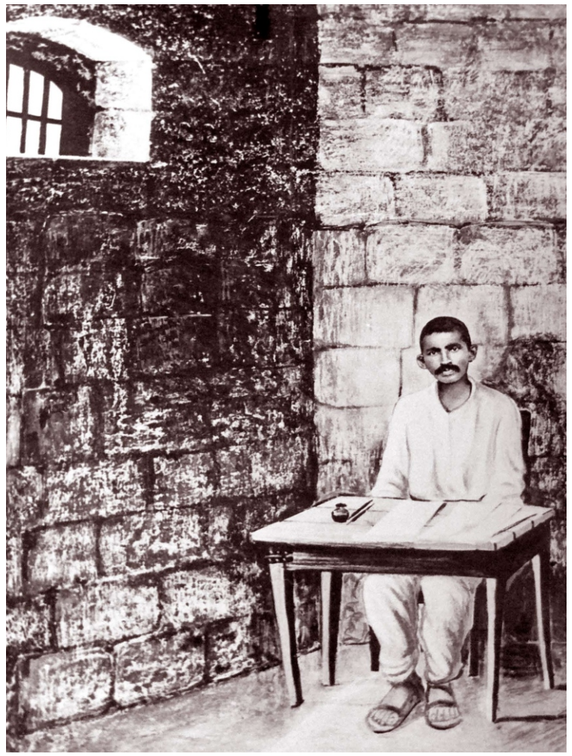

गांधीजी को दो महीनों की सख़्त क़ैद की सज़ा मिली। 'यातनायें सहना हमारा धर्म है, हमारी विजय निश्चित है' यह था लोगों के लिये उनका संदेश। जेल में गांधीजी ने सफाई का काम स्वेच्छा से संभाला।

अपनी पत्नी की बीमारी की खबर मिलने पर गांधीजी ने लिखा, 'मैं बहुत चिंतातुर हूं पर तुम्हारी देखभाल करने आ नहीं सकता क्योंकि मैने अपना सब कुछ सत्याग्रह आंदोलन को समर्पित कर दिया है। कहीं ऐसा हो कि तुम चल बसो तो ईश्वर में श्रद्धा रखकर प्राण त्यागना क्योंकि सत्याग्रही के लिये जीवन–मरण एक समान है।

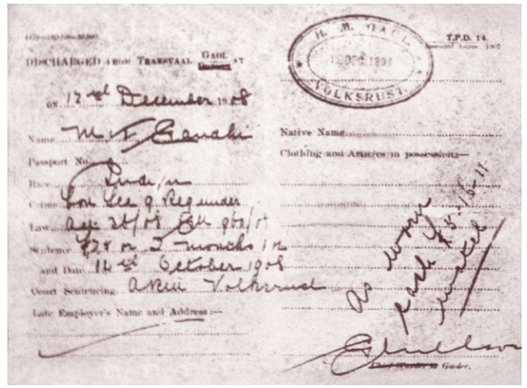





Gandhi was sentenced to two months' hard labour. "Suffering is our remedy, victory is certain" was his message to the people. In prison, he volunteered to do scavenging.

On hearing the news of his wife's illness, Gandhi wrote to her, "I am very much grieved but I am not in a position to nurse you. I have offered my all to the Satyagraha struggle.

"If death comes to you, you should depart with faith in God, as in "Satyagraha life or death does not make any difference".







सत्याग्रह और सर्वोदय

सत्याग्रह और सर्वोदय एक ही सिक्के के दो पहलू हैं जिसे समकालिक राजनीतिक तथा सामाजिक आर्थिक विचारों में महात्मा गांधी का अत्याधिक महत्वपूर्ण एवं क्रांतिकारी योगदान माना जाता है। एक के बिना दूसरा अधूरा है। सत्य एवं अहिंसा की मूलभूत अवधारणाएँ विश्व के प्रमुख धर्मों एवं दार्शनिक परम्पराओं मे पाई जा सकती हैं। गांधी की मौलिकता इस बात में है कि उन्होंने उसे सिद्धांत और व्यवहार दोनों में अपनाया। महात्मा गांधी का सत्याग्रह अर्थात् अहिसंक प्रतिरोध, तथा सर्वोदय अर्थात् विश्व–कल्याण का सिद्धांत मानवीय सम्पूर्णता के विषय में उनके राजनैतिक तथा सामाजिक सुधार की गतिविधियों के निरन्तर प्रयोगों के अकाट्य प्रमाण भी थे।



देहाती वातावरण में सादा, सामूहिक जीवन बिताते हुये सत्याग्रहियों की बस्ती बसाने का गांधीजी का स्वप्न, जोहान्सबर्ग के पास एक खेत में साकार हुआ जिसको टॉल्स्टॉय आश्रम नाम दिया गया।





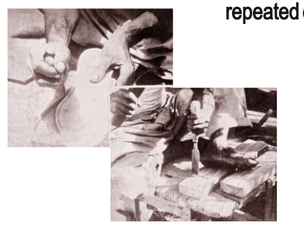

गांधीजी ने ग़रीबी को अपनाकर अपने रहन – सहन में और भी परिवर्तन किये।

खुराक से लेकर आश्रमवासियों के अनुशासन के अलावा उनकी आर्थिक, शिक्षा विषयक, नैतिक और आध्यात्मिक समस्यायें हल करने के लिये इस आश्रम में अनेक छोटे–बड़े प्रयोग किये गये।







यहां निर्बल सबल बने और परिश्रम सबके लिये संजीवनी समान साबित हुआ।

इसके अतिरिक्त सत्य के साथ अपने प्रयोगों के द्वारा वैज्ञानिक गांधी ने अपरिहार्य सकारात्मक तत्व के रूप में सृजनात्मक कार्यक्रम तैयार किया जिसमें सत्याग्रह तथा सर्वोदय दोनों की झलक थी–वह चाहे सामुदायिक रहन सहन था, हिन्दू–मुस्लिम एकता थी, बुनियादी शिक्षा थी, महिलाओं का पुनरूत्थान था, अस्पृश्यता उन्मूलन थी, और कुटीर उद्योग था और न्यासिता थी। एक प्रबुद्ध संसार के विचारों के ये मूल आधार थे जिन्हें गांधीजी ने स्वरूप एवं शक्ति दी। 1903 में 'इंडियन ओपिनियन' के आरम्भ करने के साथ रचनात्मक पत्रकारिता के साथ उनका जुड़ाव भी उनके रचनात्मक कार्यक्रम का अंग था। फीनिक्स आश्रम और टॉलस्टॉय फार्म भी इन क्षेत्रों में बड़े प्रयोग थे। संक्षेप में सत्याग्रह तभी सार्थक होगा जब सर्वोदय के उद्देश्य उसके पीछे हों और यह तभी संभव है जब रचनात्मक कार्यक्रम को व्यापक रूप से अपनाया जाए।





सत्याग्रह के बिना सामाजिक पुनर्जागरण का दर्शन केवल एक ऐसा आदर्श बन जाएगा जिसे कभी भी साकार नहीं किया जा सकता। ये सभी महत्वपूर्ण तत्व एक दूसरे से जुड़े हैं और जब इन्हें जोड़ कर अपनाया जाएगा तभी इतिहास में गांधीवादी क्रांति का सच्चा स्वरूप सामने आएगा।





Satyagraha and Sarvodaya

For Mahatma Gandhi *Satyagraha* and *Sarvodaya* were the two sides of the same coin and rightly regarded as the most significant and revolutionary contributions to contemporary political and socio-economic thought. One is incomplete without the other. The fundamental concepts of *Satya* and *Ahimsa*, truth and non-violence, can be found in the world's major religious and philosophical traditions; Gandhi's originality lay in the way he fused them in both theory and practice. His doctrines of *Satyagraha* or non-violent resistance and *Sarvodaya* or universal welfare were the logical corollaries of his fundamental premise about human perfectibility, and the mature fruit of his repeated experiments with political action and social reform.





Gandhi's dream of developing a community of Satyagrahis living a simple life, in rural surroundings took final shape on a farm near Johannesburg named after Tolstoy.

Gandhi espoused poverty and made further changes in his mode of living.

Every little experiment—from dietetics to the discipline of the inmates, to meet their economic, educational, moral and spiritual problems was conducted on the farm.

The weak became strong and labour proved to be a tonic for all.



Further more, Gandhi, the scientist, through his experiments with truth envisaged the Constructive Programme as the indispensable positive component leading towards the realisation of both *Satyagraha* and *Sarvodaya*, whether it was his experiments in community living, hindu-muslim unity, basic education, emancipation of women, elimination of untouchability, cottage industries and trusteeship. These are all basic to an enlightened world view, which found form and strength in Gandhiji. His foray into journalism with the launch of 'Indian Opinion' in 1903 too was a part of his constructive programme. Phoenix Ashram and Tolstoy Farm too were great experiments in these spheres. In a nutshell, *Satyagraha* will have meaning only if backed by the objective of Sarvodaya, which in turn can be realized only through a vigorous and sincere adoption of the constructive programme. It is a comprehensive, all embracing philosophy of social regeneration without which *Satyagraha* remains only an ideal that will never realize its ultimate goal. Each of these vital components is linked to the other and only if taken together provides dynamism to the Gandhian revolution unique in history. It is essential to understand that in Gandhi's scheme of things, revolution and reconstruction must run parallel.



ऐतिहासिक कूच



आप्रवास कानून पास होने पर एक नयी मुसीबत पैदा हुई। गांधीजी ने अपने साथियों से कहा, "मेरे साथियों, एक बार फिर से विश्वासघात हुआ।

अक्टूबर, 1913 में हाथ में बच्चे ली हुई कई हिन्दुस्तानी स्त्रियां और पुरुष उन पर लादे हुए तीन पौंड के कर के खिलाफ़ ट्रान्सवाल में विरोध–कूच करने, न्युकासल में जमा हुए। उनके पास और कुछ न था–सिवाय ऊपर आकाश की छत और अपने नेता में पूरा विश्वास।

गांधीजी उनकी कठिनाइयों में साथ देते, मरीज़ों की देखभाल करते और भूखों को खाना खिलाते थे।

गांधीजी चार दिन में तीन बार गिरफ़्तार किये गये। फिर भी सत्याग्रही दृढ़ विश्वास और लगन के साथ आगे बढ़ते ही रहे।



28 अक्तूबर, 1913 को गांधीजी ने न्यू कैसल से वाक्सरस्ट तक की लगभग तीन हज़ार लोगों की ऐतिहासिक यात्रा का नेतृत्व किया जो ऐतिहासिक डांडी यात्रा की पूर्वपीठिका थी। यह 3 पौण्ड टैक्स के खिलाफ़ था जो करारबद्ध भारतीय मज़दूरों को अदा करना पड़ता था। अंततः जनरल स्मट्स को 21 जनवरी 1914 को सत्याग्रहियों के प्रतिरोध के समक्ष झुकना पड़ा और उसने गांधीजी के प्रस्ताव को स्वीकार किया।





The Epic March

On the passing of the Immigration Bill, a fresh grievance arose and Gandhi said, "Once more into the breach, my friends".

In October, 1913 hundreds of Indians, men and women with children in their arms, thronged Newcastle to march to Transvaal as a protest against the £ 3 tax levied on their freedom.

They possessed no worldly goods. They had only the sky as their roof and faith in their leader. Gandhi shared their daily hardships, nursed the sick and fed the hungry.

Gandhi was arrested three times in four days but the march continued proclaiming the

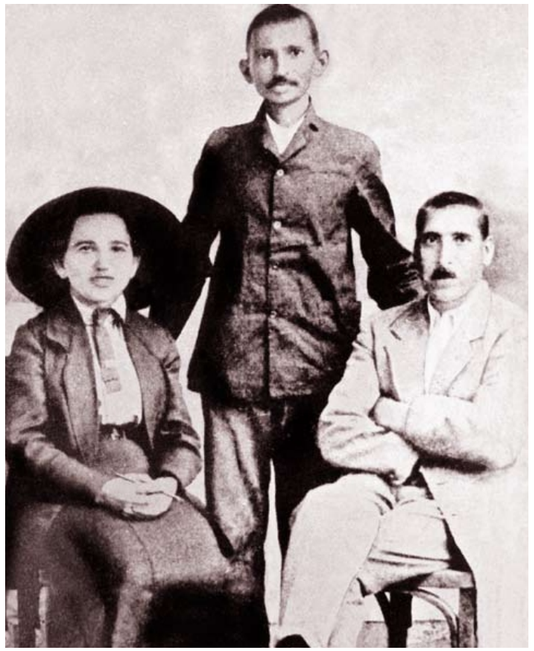

grim tenacity and stern determination of the marchers.

Gandhi was sentenced to twelve months' rigorous imprisonment on four counts.

On October 28, 1913 Gandhiji led the historic march, from New Castle to Volksrust, of nearly three thousand people, as if anticipating the Epic Dandi March. The protest was against £ 3 tax which Indian indentured labourers were made to pay. Eventually, General Smuts had to acquiesce to the *Satyagrahi's* resistance and on January 21, 1914 the *Satyagraha* was suspended when General Smuts accepted Gandhiji's proposals.

सत्याग्रह की भावात्मक विजय



महात्मा गांधी को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए जनरल स्मट्स ने कहा ''यह मेरी नियति थी कि मैं उस व्यक्ति का विरोधी बना जिसके लिए तब भी मेरे हृदय में असीम श्रद्धा थी ... वे कभी किसी भी परिस्थिति में मानवीय पृष्ठभूमि को नहीं भूले। कभी भी क्रोध और घृणा के वशीभूत नहीं हुए और कठिन से कठिन अवसरों पर भी उन्होंने अपना सौम्य हास्य बोध नहीं भुलाया। उनका व्यवहार तथा आन्तरिक शक्ति तब भी तथा बाद में भी, उस युग की क्रूर–हिंसक प्रवृतियों से पूर्णतः सर्वथा विपरीत थीं...''। वे आगे कहते हैं, ''मैं यह स्वीकार करता हूँ कि उस समय की उनकी गतिविधियों ने मेरे लिए मुश्किलें खड़ी कर दी थीं...गांधी ...ने एक नई तकनीक ढूंढी...उनकी तकनीक यह थी कि वे जानबूझकर कानून तोड़ते थे और फिर अपने अनुयायियों को संगठित करके उसे एक जन–आन्दोलन बना देते थे...दोनों प्रान्तों में स्थिति तनावग्रस्त हो गई, ग़ैरक़ानूनी बर्ताव के कारण अनेक भारतीयों को बन्दी बनाया गया और स्वयं गांधीजी – जैसा कि निःसन्देह वे चाहते थे – जेल गये और वहाँ उन्होंने शान्ति और विश्राम पाया। उनके लिये तो सब कुछ योजना के अनुसार ही हुआ। मेरे लिये, क़ानून तथा व्यवस्था के रक्षक के लिये – तो यह बड़ी परेशानी वाली स्थिति थी – एक ऐसे क़ानून को लागू करने का कलंक जिसे जन–मानस का अंश मात्र भी समर्थन प्राप्त नहीं था, और अन्त में उस क़ानून को समाप्त करने के बाद की असमंजस की स्थिति।''



महात्मा गांधी के विरोध के तरीकों की पवित्रता ने जनरल स्मट्स के लिये उनका सतत् विरोध करना हर मायने में जटिल कर दिया था। गांधीजी विजयी तब हुए जब जनरल स्मट्स में उनके विरोध की शक्ति नहीं रही और विरोध करने की इच्छा भी समाप्त हो गई।

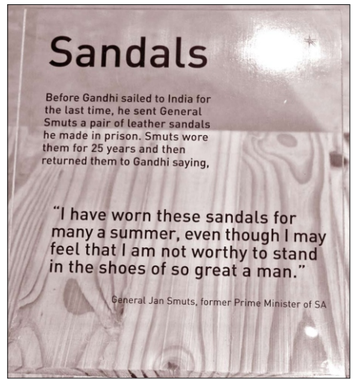

दक्षिण अफ्रीका प्रवास की समाप्ति पर, गांधीजी ने मिस श्लेसिन तथा पोलाक को जेल में अपने हाथों से बनाई एक जोड़ी चप्पल जनरल स्मट्स को भेंट देने के लिये दी, जिन्हें जनरल ने प्रिटोरिया के निकट आइरिन में अपने डूर्नक्लूफ फार्म में बड़े सहज के साथ धारण किया। महात्मा की इस भेंट के विषय में उन्होंने कहा, ''मैंने कई ग्रीष्म ऋतुओं में इन चप्पलों को पहना है, यद्यपि मैं यह महसूस करता हूँ कि मैं इतने महान् व्यक्ति की इस भेंट के कदापि योग्य नहीं हूँ।'' स्वभाव के इन्हीं सच्चे गुणों के कारण वे गांधी के मित्र कहलाने योग्य बने। वर्ष 1939 में, गांधीजी की सत्तरवीं वर्षगांठ पर जनरल ने गांधीजी को प्रेमपूर्वक वह भेंट लौटाई।

उसी अवसर पर गांधीजी के लिये उन्होंने – जो स्वयं अब विश्वप्रसिद्ध नेता बन चुके थे, कहा कि 'एक पीढ़ी पहले मैं गांधी का विरोधी था' परन्तु आज महात्मा जैसे लोग ही हैं जो ''हमें तुच्छता और निरर्थकता से मुक्त कर के हमें प्रायश्चित करने का अवसर प्रदान कर हमें और प्रेरित करते है कि हम कभी भी दूसरों की भलाई करने से न थकें...''

महात्मा गांधी का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव यह था कि वे अपने विरोधी के भीतर भी गांधीवादी भावनाओं को संचारित कर देते थे।

The Triumph of the Spirit of Satyagraha



While paying his tribute to Mahatma Gandhi, Gen. Jan Smuts said, "It was my fate to be the antagonist of a man for whom, even then, I had the highest respect...He never forgot the human background of the situation, never lost his temper or succumbed to hate, and preserved his gentle humour even in the most trying situations. His manner and spirit even then, as well as later, contrasted markedly with the ruthless and brutal forcefulness which was in the vogue in those days..." "I must frankly admit', 'that his activities at that time were very trying to me...Gandhi....showed a new technique...His method was deliberately to break the law and to organize his followers into a mass movement...In both provinces a wild and disconcerting commotion was created, large number of Indians had to be imprisoned for lawless behaviour and Gandhi himself received – what no doubt he desired – a period of rest and quiet in jail. For him everything went according to plan. For me – the defender of law and order – there was the usual trying situation, the odium of carrying out a law which had no strong public support, and finally the discomfiture when the law was repealed."

The purity of Mahatma Gandhi's methods made it difficult for Gen.Smuts to oppose him. Victory came to Gandhi, not when Gen.Smuts had no more strength to fight him but when he had no more heart to fight him.



Just before leaving South Africa for ever, Gandhiji gave Miss Schlesin and Polak - a pair of sandals he had made in prison and asked that they be delivered to General Smuts as a gift, which he wore them every summer at his own Doornkloof farm at Irene, near Pretoria. Speaking of Mahatma Gandhi's present, Gen. Smuts remarked, 'I have worn these sandals for many a summer since then, even though I may feel that I am not worthy to stand in the shoes of so great a man'. Such humour and generosity proved him worthy of Gandhi's mettle. In 1939, on Mahatma Gandhi's seventieth birthday, Gen.Smuts returned them to Gandhiji in a gesture of friendship.

Again, when invited to contribute to a Gandhi memorial volume on that occasion, Gen. Smuts, by then a world-famous statesman and a war leader, complied and, graciously calling himself 'an opponent of Gandhi, a generation ago', declared that men like the Mahatma 'redeem us from a sense of commonplace and futility and are an inspiration to us not to weary in well-doing... Part of Mahatma Gandhi's effectiveness lay in evoking the best Gandhian impulses of his adversary.

तपःस्थली दक्षिण अफ्रीका से विदाई



इस प्रकार आठ वर्ष के अंत में सत्याग्रह की यह महान् लड़ाई पूरी हुई और यह माना गया कि संपूर्ण दक्षिण अफ्रीका में बसे हुए हिन्दुस्तानियों को शान्ति मिली। 18 जुलाई, 1914 को दुःख और हर्ष के साथ मैं इंग्लैण्ड में गोखले से मिलकर वहां से हिन्दुस्तान जाने के लिए दक्षिण अफ्रीका से रवाना हो गया। जिस दक्षिण अफ्रीका में मैंने 21 वर्ष निवास किया और असंख्य कड़वे और मीठे अनुभव प्राप्त किये तथा जहां मैं अपने जीवन के लक्ष्य को समझ सका, उस देश को छोड़ना मुझे बहुत कठिन मालूम हुआ और मैं दुःखी हुआ। हर्ष मुझे यह सोचकर हुआ कि अनेक वर्षों के बाद हिन्दुस्तान जाकर मुझे गोखले के नेतृत्व में देश की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रह की लड़ाई इतने सुन्दर अंत के साथ वहाँ के हिन्दुस्तानियों की वर्तमान स्थिति की तुलना करने पर एक क्षण के लिए ऐसा प्रश्न मन में उठता है कि उन्होंने इतने बड़े बड़े दुःख किसलिए भोगे? अथवा मानव–जाति की समस्यायें हल करने में सत्याग्रह के शस्त्र की उत्तमता कहां सिद्ध हुई ? इस प्रश्न के उत्तर का हमें यहां विचार करना चाहिये। सृष्टि का ऐसा नियम है कि जो वस्तु जिस साधन से प्राप्त होती है, उसकी रक्षा भी उसी साधन से की जा सकती है। हिंसा से प्राप्त हुई वस्तु की रक्षा हिंसा ही कर सकती है; सत्य से प्राप्त हुई वस्तु की रक्षा सत्य के द्वारा ही की जा सकती है। इसलिए दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानी यदि आज भी सत्याग्रह के शस्त्र का उपयोग कर सकें, तो वे वहां सुरक्षित रह सकते हैं। सत्याग्रह में यह विशेषता तो नहीं है कि सत्य से प्राप्त हुई वस्तु की रक्षा सत्य का त्याग करने पर भी हो सके। यदि ऐसा परिणाम संभव हो, तो भी वह वांछनीय नहीं माना जा सकता। इसलिए यदि दक्षिण अफ्रीका के हिन्दुस्तानियों की स्थिति आज कमज़ोर पड़ गई है, तो हमें समझ लेना चाहिये कि इसका कारण उनके बीच सत्याग्रहियों का अभाव है। मेरा यह कथन दक्षिण अफ्रीका के वर्तमान हिन्दुस्तानियों के दोष का सूचक नहीं, परन्तु वहां की वस्तुस्थिति का द्योतक है। व्यक्ति अथवा व्यक्तियों के समुदाय–जो गुण उनके भीतर नहीं हैं, उन्हें बाहर से कैसे ला सकते हैं?वहां के सत्याग्रही सेवक एक के बाद एक भगवान के पास चले गये। सोराबजी, काछलिया, थंबी नायडू, पारसी रूस्तमजी इत्यादि का स्वर्गवास हो जाने से वहां के हिन्दुस्तानियों में अब बहुत कम अनुभवी सत्याग्रही बच रहे हैं; जो सत्याग्रही जीवित हैं, वे आज भी वहां की सरकार से लड़ रहे हैं। और इस विषय में मुझे कोई शंका नहीं है कि वे लोग समय आने पर – यदि उनमें सत्य का आग्रह हुआ तो – हिन्दुस्तानी क़ौम की रक्षा कर लेंगे।



अंत में यदि सत्याग्रह की यह महान् लड़ाई न लड़ी गई होती और अनेक हिन्दुस्तानियों ने जो बड़े बड़े दुःख सहन किये वे न किये होते, तो आज दक्षिण अफ्रीका में हिन्दुस्तानियों का नाम–निशान न रह जाता। इतना ही नहीं, दक्षिण अफ्रीका में हिन्दुस्तानियों को जो विजय मिली, उसकी वजह से ब्रिटिश साम्राज्य के दूसरे उपनिवेशों में बसे हुए हिन्दुस्तानी भी कम या ज़्यादा मात्रा में बच गये। दूसरे कुछ हिन्दुस्तानी यदि न बच सके, तो इसमें दोष सत्याग्रह का नहीं है; बल्कि इससे यह सिद्ध होता है कि उन उपनिवेशों में बसे हुए हिन्दुस्तानियों में सत्याग्रह का अभाव है और हिन्दुस्तान में उनकी रक्षा करने की शक्ति नहीं है। सत्याग्रह एक अमूल्य शस्त्र है, उसमें निराशा या पराजय के लिए कोई स्थान नहीं है – ऐसा यदि कुछ अंशों में भी इस इतिहास से सिद्ध हो, तो मैं स्वयं को कृतार्थ हुआ मानूंगा।



मो. क. गांधी

Farewell to South Africa

Thus, the great Satyagraha struggle ended after eight years, and it appeared that the Indians in South Africa were now at peace. On July 18, 1914, I sailed for England, to meet Gokhale, on my way back to India, with mixed feelings of pleasure and regret,—pleasure because I was returning home after many years and eagerly looked forward to serving the country under Gokhale's guidance, regret because it was a great wrench for me to leave South Africa, where I had passed twenty-one years of my life, sharing to the full in the sweets and bitters of human experience, and where I had realized my vocation in life.

When one considers the painful contrast between the happy ending of the Satyagraha struggle and the present condition of the Indians in South Africa, one feels for a moment as if all this suffering had gone for nothing, or is inclined to question the efficacy of Satyagraha as a solution of the problems of mankind. Let us here consider this point for a little while. There is a law of nature that a thing can be retained by the same means by which it has been acquired. A thing acquired by violence can be retained by violence alone, while one acquired by truth can be retained only by truth. The Indians in South Africa, therefore, can ensure their safety today if they can wield the weapon of Satyagraha. There are no such miraculous properties in Satyagraha, that a thing acquired by truth could be retained even when truth was given up. It would not be desirable even if it was possible. If, therefore, the position of Indians in South Africa has now suffered deterioration, that signifies the absence of Satyagrahis among them. There is no question here of finding fault with the present generation of South African Indians, but of merely stating the facts of the case. Individuals or bodies of individuals cannot borrow from others the qualities which they themselves do not possess. The Satyagrahi veterans passed away one after another. Sorabji, Kachhalia, Thambi Naidoo, Parsi Rustomji and others are no more, and there are very few now who passed through the fire of Satyagraha. The few that remain are still in the fighting line, and I have not a shadow of a doubt that they will be the saviors of the Indian community on the day of its trial if the light of Satyagraha is burning bright within them.



Finally, had it not been for this great struggle and for the untold sufferings which many Indians invited upon their devoted heads, the Indians today would have been hounded out of South Africa. Nay, the victory achieved by Indians in South Africa more or less served as a shield for Indian emigrants in other parts of the British Empire, who, if they are suppressed, will be suppressed thanks to the absence of Satyagraha among themselves, and to India's inability to protect them, and not because of any flaw in the weapon of Satyagraha. I will consider myself amply repaid if I have in these pages demonstrated with some success that Satyagraha is a priceless and matchless weapon, and that those who wield it are strangers to disappointment or defeat.

M. K. Gandhi

जेल में स्त्रियां : एक श्रद्धांजलि

स्त्रियों की वीरता का वर्णन भला किन शब्दों में किया जाय ! सभी को नेटाल की राजधानी मारित्सबर्ग की जेल में रखा गया था। वहां उन्हें काफी कष्ट दिये गये। उनके भोजन के बारे में ज़रा भी ध्यान नहीं रखा गया। मेहनत में उन्हें धोबी का काम सौंपा गया। सरकार ने लगभग सज़ा खत्म होने तक बाहर से भोजन पहुंचाने पर कड़ा प्रतिबन्ध लगा रखा था। एक बहन का एक विशेष प्रकार का भोजन करने का व्रत था। बड़ी कठिनाई के बाद जेल–अधिकारियों ने उसे विशेष भोजन की इजाज़त दी, लेकिन जो भोजन दिया जाता था वह इतना ख़राब होता था कि खाया नहीं जाता था। जैतून के तेल की उस बहन को बड़ी ज़रूरत थी। पहले तो वह नहीं दिया गया; कुछ दिन बाद दिया गया, लेकिन वह पुराना था और उतरा हुआ था। जब उस बहन ने अपने पैसे से यह तेल मंगाने की प्रार्थना की, तो उत्तर में कहा गयाः "यह कोई होटल नहीं है। जो भोजन दिया जाये वही तुम्हें खाना होगा।" वह बहन जब जेल से बाहर निकली तब हाड़–पिंजर मात्र रह गई थी। बड़े प्रयत्न से ही वह बची।



दूसरी एक बहन जानलेवा बुखार लेकर जेल से रिहा हुई। उसके इस बुख़ार ने उसे जेल से रिहा होने के कुछ ही दिन बाद भगवान के पास पहुंचा दिया (22 फरवरी, 1914)। उसे मैं कैसे भुला सकता हूं ? उसका नाम वलियाम्मा था। वह 16 वर्ष की बाला थी। मैं उससे मिलने गया तब वह रोग–शय्या पर पड़ी थी। वह कद में ऊंची थी, इसीलिए उसका लकड़ी जैसा कृश शरीर भयंकर दिखाई देता था।



मैंने पूछा : "वलियाम्मा, जेल जाने का तुम्हें पश्चात्ताप तो नहीं है ?"

"पश्चात्ताप क्यों होगा?मुझे फिर से पकड़ा जाय तो मैं फिर जेल जाने को तैयार हूँ।"

"लेकिन इसका परिणाम तुम्हारी मौत में आये तो?" मैंने पूछा। "भले ही आये। देश के ख़ातिर मरना कौन पसंद नही करेगा?"



हमारी इस बातचीत के बाद कुछ ही दिनों में वलियम्मा मर गई। उसके शरीर का नाश हो गया, परन्तु वह बाला अपना नाम अमर कर गई। वलियम्मा की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए जगह जगह शोक सभायें हुईं और क़ौम ने इस पवित्र बाला के स्मरणार्थ 'वलियम्मा हॉल' बनाने का निर्णय किया। यह हॉल बनाने का धर्म अभी तक क़ौम ने पूरा नहीं किया है। उसमें अनेक विघ्न पैदा हो गये। क़ौम में फूट फैल गई। मुख्य कार्यकर्ता एक के बाद एक चल बसे। लेकिन पत्थर और चूने का हॉल बनाया जाय या न बनाया जाय, वलियम्मा की सेवा का कभी नाश नहीं होगा। इस सेवा का हॉल तो वह अपने ही हाथों से बना कर गई है। उसकी मूर्ति आज भी अनेक लोगों के हृदय–मंदिर में बिराज रही है। और जब तक इस दुनिया में भारतवर्ष का नाम जीवित रहेगा तब तक दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में वलियम्मा भी जीवित रहेगी।

मो. क. गांधी

Women in Jail : a tribute

The women's bravery was beyond words. They were all kept in Maritzburg jail, where they were considerably harassed. Their food was of the worst quality and they were given laundry work as their task. No food was permitted to be given to them from outside nearly till the end of their term. One sister was under a religious vow to restrict herself to a particular diet. After great difficulty the jail authorities allowed her that diet, but the food supplied was unfit for human consumption. The sister badly needed olive oil. She did not get it at first, and when she got it, it was old and rancid. She offered to get it at her own expense but was told that jail was no hotel, and she must take what food was given to her. When this sister was released she was a mere skeleton and her life was saved only by a great effort.

Another sister returned from jail with a fatal fever to which she succumbed within a few days of her release (February 22, 1914). How can I forget her? Valliamma R. Munuswami Mudaliar was a young girl of Johannesburg, only sixteen years of age. She was confined to bed when I saw her. As she was a tall girl, her emaciated body was a terrible thing to behold.

"Valliamma, you do not repent of your having gone to jail?" I asked.

"Repent? I am even now ready to go to jail again if I am arrested," said Valliamma.

"But what if it results in your death?" I pursued.

"I do not mind it. Who would not love to die for one's motherland?" was the reply.



Within a few days after this conversation Valliamma was no more with us in the flesh, but she left us the heritage of an immortal name. Condolence meetings were held at various places, and the Indians resolved to erect "Valliamma Hall", to commemorate the supreme sacrifice of this daughter of India. Unfortunately the resolution has not still been translated into action. There were many difficulties. The community was torn by internal dissensions; the principal workers left one after another. But whether or not a hall is built in stone and mortar, Valliamma's service is imperishable. She built her temple of service with her own hands, and her glorious image has a niche even now reserved for it in many a heart. And the name of Valliamma will live in the history of South African Satyagraha as long as India lives.

M. K. Gandhi

लन्दन में गांधीजी – एक मध्यान्तर

30 जून 1914 का स्मट्स और गांधी समझौता इंडियन रिलीफ़ बिल बना जो जुलाई 1914 में दक्षिण अफ़्रीकी कानून बन गया। गांधीजी ने इस समझौते को दक्षिण अफ़्रीकी भारतीयों का महाधिकार पत्र माना। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस कानून में निहित मूलभूत बातों के अतिरिक्त इससे अमूर्त जातीय समानता के सिद्धान्त और जातीय विकृति समाप्त करने की भावना की पुष्टि हुई। गांधीजी ने इंडियन ओपिनियन में लिखा है कि ''यह एक ऐसी शक्ति है यदि यह सार्वभौमिक हो जाये तो सामाजिक आदर्शों में क्रान्ति आ जायेगी, तानाशाही और निरन्तर बढ़ता सैन्यवाद समाप्त हो जाएगा, जिसकी छत्र–छाया में पश्चिमी देश पनप रहे हैं और कुचले जाते हुये मृत्यु प्राप्त कर रहे हैं, यह पूर्व के देशों पर भी हावी हो रहा है।''



यह लड़ाई जीतने के बाद महात्मा गांधी ने यह निश्चय किया कि 21 साल प्रवास के बाद दक्षिण अफ़्रीका को छोड़ने का यह उपयुक्त समय था। वे अपने परिवार एवं एक मित्र हर्मन् कैलनबेक के साथ 14 जुलाई 1914 को इंग्लैंड के लिये रवाना हो गये। जब तक वे इंग्लैंड पहुँचे तब तक प्रथम विश्व युद्ध शुरू हो गया था।



गांधीजी ने महसूस किया कि भारतीयों को भी ब्रिटेन के लिये कुछ करना चाहिये। तदनुसार उन्होंने अपने नेतृत्व में एक एम्बुलेंस दस्ता बनाने की इच्छा जताई। अस्सी भारतीय जिसमें अधिकतर यूनाइटेड किंग्डम के विश्वविद्यालय के छात्र थे, सामने आये। गांधीजी को इस बारे में कोई भ्रान्ति नहीं थी कि जो लोग युद्ध में घायलों की सेवा तक ही अपने आपको सीमित रख रहे है उन्हें भी युद्ध के अपराध से मुक्त नहीं किया जा सकता। उसके बाद गांधीजी के मित्रों ने विरोध किया कि अंहिसा का कोई पुजारी युद्ध में भाग कैसे ले सकता है। उन्होंने आगे स्पष्ट किया कि



''मुझे ब्रितानिया सरकार से एक नागरिक के नाते अपने सभी अधिकार प्राप्त हैं। मैंने कभी भी इस व्यवस्था को समाप्त करने का प्रयत्न नहीं किया है। हम जब तक अपने अन्दर शान्ति के दौरान ही सरकार से युद्ध के विरुद्ध असहयोग करने की आत्मिक शक्ति नहीं जुटा लेते हम युद्ध के समय इसका विरोध करके केवल अपनी आत्मा को थोड़ा संतोष भर ही देते हैं। हम 'क्यों' कर देते है जिससे केवल युद्ध के हथियार बनाए जाते हैं। हम उन अधिकारियों के हुक्म को क्यों स्वीकार करते हैं जो सरकार को युद्ध की ओर ले जाते हैं। जब तक हम शान्ति के समय में ही युद्ध का प्रतिकार करके अपनी नागरिकता समर्पित कर जेल नहीं चले जाते हमें यह स्वीकार करना होगा कि युद्ध की घोषणा के साथ ही पूरा देश रणभूमि और हम सब एक योद्धा हैं।''



An English Interlude

The historic Smuts and Gandhi agreement on June 30th 1914 translated into the Indian Relief Bill which became South African law in July 1914. Gandhiji regarded the agreement as the 'Magna Carta' of South African Indians. The gain, he explained, was not 'the intrinsic things' in the law but the vindication of the abstract principle of racial equality and the removal of the racial taint'. Above all 'the victory was a vindication of civil resistance.' "It is a force which", Gandhiji wrote in the Indian Opinion, "if it became universal, would revolutionise social ideals and do away with despotisms and the ever groaning militarism under which the nations of the West are grooming and are being almost crushed to death, and which fairly promises to overwhelm even the nations of the East".



Having won the battle Gandhiji decided that it was time to say farewell to South Africa after twenty one year's sojourn. He sailed for England with his family and friend Hermann Kallenbach on 14 July 1914. By the time he reached England First World War broke out.

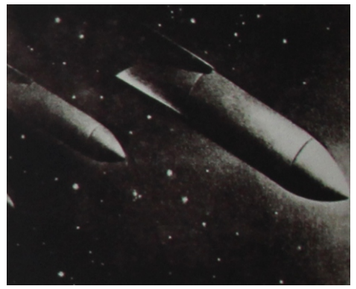

Gandhiji felt that Indians ought to do their bit for Britain. He accordingly volunteered to raise an ambulance corps headed by himself. Eighty Indians, most of them university students in the United Kingdom, volunteered. Gandhiji had no delusions: 'Those who confine themselves to attending to the wounded in battle cannot be absolved from the guilt of war'. Then how, Gandhiji's friends protested, could he, the man of non-violence, participate in a war? Gandhiji's thought provoking answer calls for serious introspection;

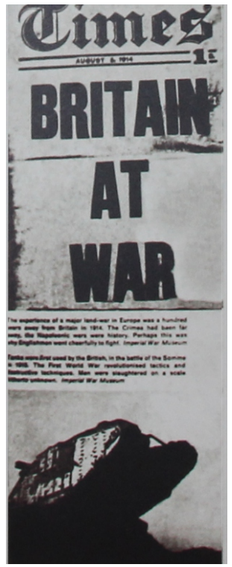



"I accept the benefits and protection of the British Empire; I have not tried to destroy it; why should I allow it to be destroyed?" He further explains, "A modern nation is only quantitatively less violent in peace-time than in war-time and unless one non-collaborates in peace-time one is merely salving one's conscience by non-collaboration in war-time. Why pay taxes to make the arms which kill? Why obey the kind of officials who will make a war? Unless you surrender citizenship or go to jail before the war, you belong in the army during the war."

उज्जवल भविष्य की ओर.....

मोहनदास करमचंद गांधी के स्वदेश लौटने से पहले ही उनकी प्रसिद्धि यहाँ पहुँच गई थी। गांधीजी एक स्वनामधन्य लोकनेता के रूप में प्रतिष्ठित हो गए थे जिसका एक प्रमाण यह भी था कि 12 जनवरी 1915 को उनके सम्मान में आयोजित स्वागत सभा में वरिष्ठ कांग्रेसी नेताओं ने भाग लिया तथा प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता सर फिरोज़शाह मेहता ने स्वागत समारोह की अध्यक्षता की।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में सर मेहता ने दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी के नेतृत्व में चलाए गए आन्दोलन की चर्चा करते हुए बताया कि किस प्रकार दक्षिण अफ्रीका में उनके साहसिक कारनामे देश में चर्चा का विषय बन गए थे।

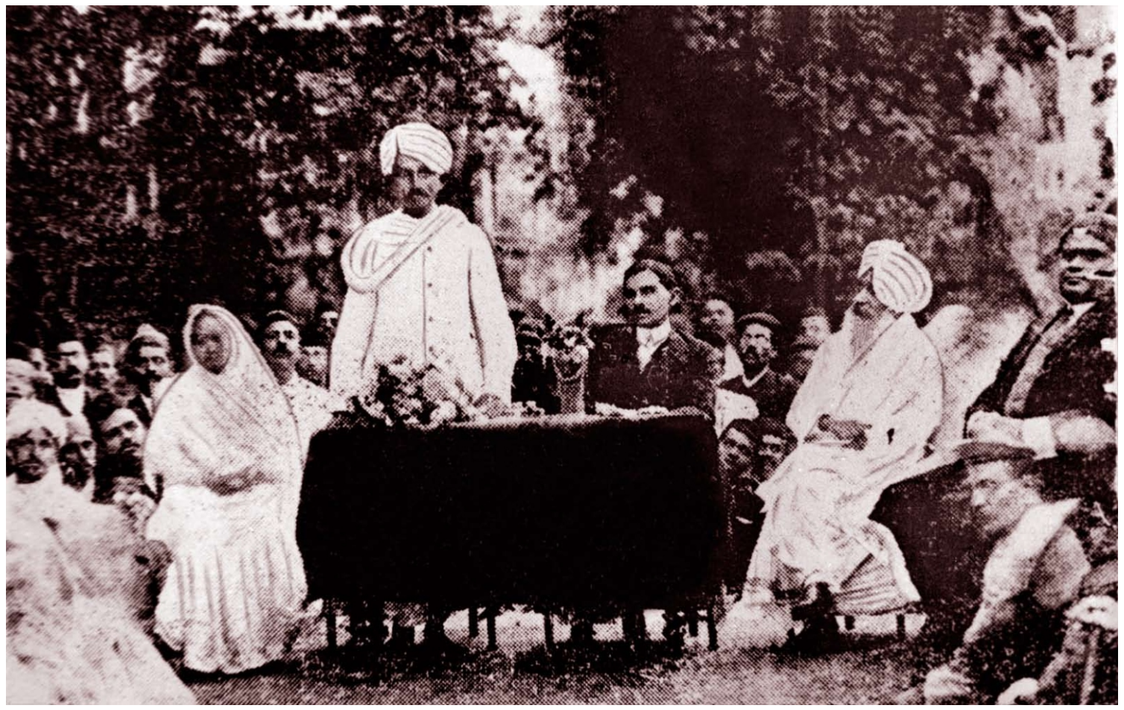

"दक्षिण अफ्रीका में बसे भारतीयों के स्वाभिमान की रक्षा के लिये मि. गांधी ने अनेकों कष्ट सहे। यही कारण था कि वे अत्यन्त जनप्रिय नेता थे जिनपर सभी भारतीयों को गर्व था। कस्तूरबा पर तो उन्हें और भी गर्व था जिन्होंने इस पूरे आन्दोलन में गांधीजी का कन्धे से कन्धा मिलाकर योगदान दिया और अनेक यातनाएँ सहीं। मि. गांधी ने वहाँ बसे भारतीयों से यह स्पष्ट कर दिया था कि वे अपने जीवन के कार्य को उनकी बेहतरी के लिये समर्पित करेंगे। मि. गांधी ने अपने अदम्य साहस और वीरता से यह परिस्थिति पैदा कर दी थी जिसमें दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतीय भी वहाँ स्वाभिमान और सम्मान का जीवन जी सकें और उनके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर ब्रिटिश साम्राज्य से वफ़ादारी निभा सकें।"

Towards a Great Future.....

That Mohandas Karamchand Gandhi's fame had preceded him in India become very evident by the reception he received on his return. That a powerful Gandhi legend was already in existence here is further strengthened by the fact as Sir Pherozeshah Mehta who was then amongst the most prominent Congress leaders, presided over the reception held in Gandhiji's honour on 12 January 1915. His observations are an indication of the high esteem Gandhiji was held by Sir Mehta.

In his address, Sir Mehta dwells on Gandhiji's years in South Africa and how during the preceding years the whole country had been resounding with the tale of "Gandhi's great deeds".

"His sufferings in the cause of the Indians in South Africa, in enabling them to assert and maintain their self-respect and their honour. They were, therefore, all proud of Mr. Gandhi. They were prouder still of Mrs. Gandhi. Kasturbai insisted upon standing shoulder to shoulder with him in the fight and the sufferings and privations he was prepared to undergo. Mr. Gandhi had already told them that he meant to devote the rest of his life to work for the betterment of Indian working here. Mr. Gandhi had shown that he would combine the greatest qualities of courage and heroism with the greatest loyalty and at this time, it was no small thing that his exertions had brought about such a state of things that the **Indians in South Africa could stand side by side with them**, in their expressions of enthusiastic and devoted loyalty to the British crown."

और तब गांधीजी आए....

और तब गांधी आए! वे एक ताज़ी हवा के उस प्रबल प्रवाह की तरह थे, जिसने हमारे लिए पूरी तरह फैलना और गहरी सांस लेना संभव बनाया। वे रोशनी की उस किरण की तरह थे, जो अंधकार में पैठ गई और जिसने हमारी आंखों के सामने से परदे को हटा दिया। वह उस बवंडर की तरह थे, जिसने बहुत–सी चीज़ों को, ख़ासतौर से लोगों के दिमाग़ को उलट–पुलट दिया। वे कहीं आसमान से नहीं टपके थे। बल्कि भारत के करोड़ों लोगों के बीच से ही उभर कर सामने आए थे। वे हम में ही से एक थे। आम लोगों की भाषा बोलते हुए वे सतत् हमारा ध्यान जनता की भयावह और दयनीय अवस्था की ओर आकर्षित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि तुम लोग, जो किसानों और मज़दूरों के शोषण पर गुज़र करते हो, उनकी पीठ से उतर जाओ; उस व्यवस्था को, जो ग़रीबी और तकलीफ़ की जड़ है, दूर करो। तब राजनैतिक आज़ादी की एक नई शक़्ल सामने आई और उसमें एक नया अर्थ पैदा हुआ। उनकी ज़्यादातर बातों को हमने आंशिक रुप में माना और कभी–कभी तो बिल्कुल ही नहीं माना। लेकिन यह सब एक गौण बात थी। उनकी सीख का सार था निर्भयता और सत्य; और इन दोनों के साथ सक्रियता मिली हुई थी और उसमें हमेशा आम लोगों की बेहतरी का ख़्याल था। हमारी प्राचीन पुस्तकों में यह कहा गया था कि किसी आदमी या किसी राष्ट्र के लिए सबसे बड़ा उपहार है अभय – निर्भयता; सिर्फ़ शारीरिक हिम्मत ही नहीं, बल्कि दिमाग़ से डर का हट जाना। हमारे इतिहास के ही प्रभात में जनक और याज्ञवल्क्य ने कहा था कि जनता के नेताओं का काम उसको (जनता को) निर्भय बनाना है। लेकिन ब्रिटिश राज्य के अंदर हिंदुस्तान में जो सबसे अहम लहर थी, उसमें डर – कुचलने वाला, दम घोटनेवाला, मिटा देनेवाला–डर था–फ़ौज का, पुलिस का, चारों तरफ़ फैले हुए खुफ़िया विभाग का डर था; अफ़सरों की जमात का डर था; कुचलने वाले क़ानूनों और जेल का डर था; ज़मींदार के कारिंदे का डर था; साहूकार का डर था; बेकारी और भूखे मरने का डर था, जो हमेशा ही नज़दीक बने रहते थे। चारों तरफ़ समाये हुए इस डर के ही ख़िलाफ़ गांधी की शांत, किंतु दृढ़ आवाज उठी–"डरो मत!" क्या यह ऐसी आसान बात थी ? नहीं। फिर भी डर के अपने कल्पना–चित्र होते हैं और वे असलियत से भी ज़्यादा डरावने रहते हैं और अगर ठंडे दिमाग़ से असलियत का विश्लेषण किया जाये तो उसके नतीजों को खुशी से भुगतने को तैयार रहा जाये, तो उसका बहुत–सा आतंक अपने आप ख़त्म हो जाता है।

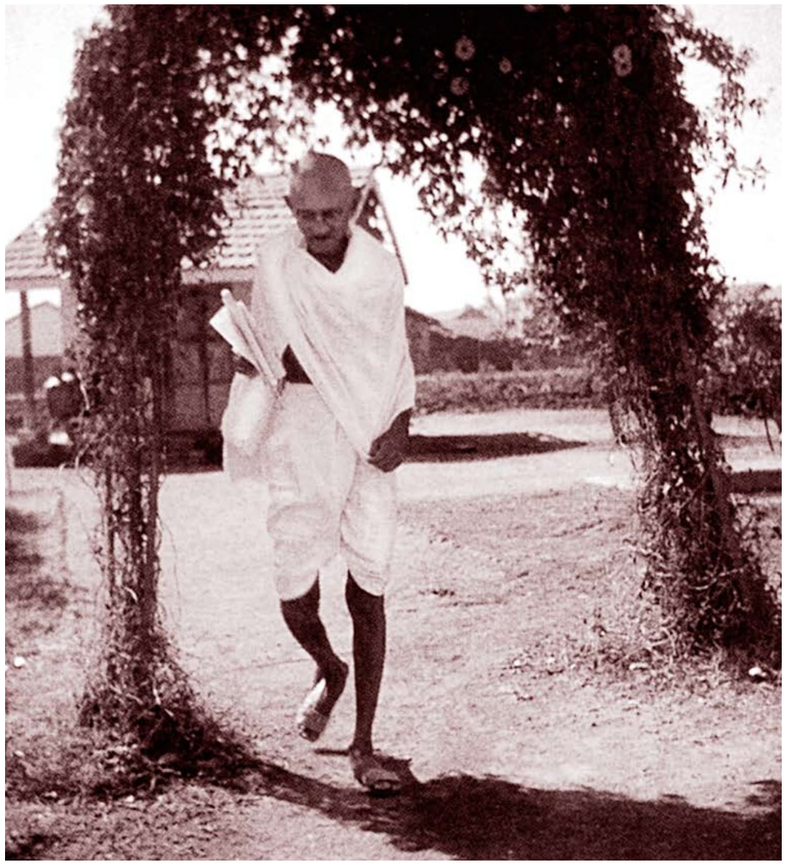

इस तरह मानो अचानक ही लोगों के ऊपर से डर का काला साया छट गया; यह नहीं कि वह पूरी तरह हटा दिया गया, लेकिन फिर भी एक बहुत बड़ी, एक हैरत–अंगेज़ हद तक तो हटा ही दिया गया। चूंकि डर झूठ का क़रीबी दोस्त है, इसलिए निडरता के साथ सच आता ही है। हिंदुस्तान की जनता जैसी भी थी, उससे कोई बहुत ज़्यादा सच बोलनेवाली नहीं बन गई; और न उस जनता ने रातों–रात अपने बुनियादी स्वभाव को ही बदल लिया। फिर भी एक बड़ी तब्दीली दिखाई पड़ी, क्योंकि झूठ और लुक–छिपकर काम करने की ज़रुरत कम हो गई। यह तब्दीली मनो वैज्ञानिक थी–ठीक इस ढंग से, मानो कोई मनोविश्लेषक प्रक्रिया का विशेषज्ञ रोगी के भूतकाल में गहरा घुस गया हो और उसने उस रोगी की मानसिक विकृति के कारण को जानकर उसे रोगी के सामने खोल दिया हो और इस तरह उसको उसके बोझ से छुटकारा दिला दिया हो।

साथ ही वह मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया भी थी, जिसमें उस विदेशी राज्य के सामने लंबे अरसे से सिर झुकाये रखने पर शर्म महसूस हुई, जिसने हमें गिरा दिया था और जिसने हमारी बेइज़्ज़ती की थी। इसमें यह इरादा भी मिला हुआ था कि चाहे नतीजा कुछ भी हो, अब आगे सिर न झुकाया जाये।

पहले के मुक़ाबले हम कोई ज़्यादा सत्यवादी नहीं बन गये, लेकिन अब अटल सत्य के प्रतीक गांधीजी बराबर हमारे सामने थे, जो हमको ऊपर खींचते थे और जो सत्य पर डटे रहने का हमें वास्ता दिलाते थे। सत्य क्या है ? पक्के तौर पर मैं यह नहीं जानता और शायद हमारे सत्य सापेक्षिक हैं और पूरे–के–पूरे हमारी पहुंच के परे हैं। अलग–अलग आदमी सत्य को अलग–अलग तरह से लेते हैं और हर आदमी पर अपनी–अपनी पृष्ठभूमि, शिक्षा और प्रवृतियों का बड़ा असर होता है। वही बात गांधीजी के साथ लागू है। लेकिन आदमी के लिए कम–से–कम वह तो सत्य है ही, जो वह खुद महसूस करता है और जो वह खुद समझता है। इस परिभाषा के अनुसार गांधीजी की तरह सत्य की धारणा रखनेवाले किसी भी शख़्स को मैं नहीं जानता। राजनीतिज्ञ के लिए यह गुण बहुत ख़तरनाक है, क्योंकि इस तरह तो वह अपने दिमाग़ को खोलकर सामने रख देता है और जनता को भी उस के बदलते हुए पहलुओं को देखने देता है।

जवाहरलाल नेहरु

And then Gandhi Came....

And then Gandhi came. He was like a powerful current of fresh air that made us stretch ourselves and take deep breaths; like a beam of light that pierced the darkness and removed the scales from our eyes; like a whirlwind that upset many things, but most of all working of people's minds. He did not descend from the top; he seemed to emerge from the millions of India, speaking their language, and incessantly drawing attention to them and their appalling condition. Get off the backs of these peasants and workers, he told us, all you who-live by their exploitation; get rid of the system that produces this poverty and misery. Political freedom took new shape, then, and acquired a new content. Much that he said we only partially accepted or sometimes did not accept at all. But all this was secondary. The essence of his teaching was fearlessness and truth, and action allied to these, always keeping the welfare of the masses in view. The greatest gift for an individual or a nation, so we had been told in our ancient books, was Abhaya (fearlessness), not merely bodily courage but the absence of fear from the mind. Janaka and Yajnavalkya had said, at the dawn of our history, that it was the function of the leaders of a people to make them fearless. But the dominant impulse in India under British rule was that of fear – pervasive, oppressing, strangling fear; of the official class; fear of laws meant to suppress and of prison; fear of the moneylender; fear of unemployment and starvation, which were always on the threshold. It was against this all-pervading fear that Gandhi's quiet and determined voice was raised: Be not afraid. Was it so simple as all that? Not quite. And yet fear builds its phantoms which are more fearsome than reality itself, and reality, when calmly analysed and its consequences willingly accepted, loses much of its terror.

So, suddenly, as it were, that black pall of fear was lifted from the people's shoulders, not wholly of course, but to an amazing degree. As fear is close companion to falsehood, so truth follows fearlessness. The Indian people did not become much more truthful than they were, nor did they change their essential nature overnight; nevertheless a sea-change was visible as the need for falsehood and furtive behaviour lessened. It was a psychological change, almost as if some expert in psycho-analytical methods had probed deep into the patient's past, found out the origins of his complexes, exposed them to his view, and thus rid him of that burden.

There was that psychological reaction also, a feeling of shame at our long submission to an alien rule that had degraded and humiliated us, and a desire to submit no longer whatever the consequences might be.

We did not grow much more truthful perhaps than we had been previously, but Gandhi was always there as a symbol of uncompromising truth to pull us up and shame us into truth. What is truth? I do not know for certain, and perhaps our truths are relative and absolute truth is beyond us. Different persons may and do take different views of truth, and each individual is powerfully influenced by his own background, training, and impulses. So also Gandhi. But truth is at least for an individual what he himself feels and knows to be truth. According to this definition I do not know of any person who holds to the truth as Gandhi does. That is a dangerous quality in a politician, for he speaks out his mind and even lets the public see its changing phases.

Jawaharlal Nehru

मोहनदास करमचन्द गांधी का स्वदेश आगमन

वर्ष 1915 की 9 जनवरी को मोहनदास करमचन्द गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आए। वे साथ में कोई सम्पत्ति नहीं लाए थे, साथ थी केवल एक प्रबल इच्छा – अपने देशवासियों की सेवा। यद्यपि बुद्धिजीवी वर्ग दक्षिण अफ्रीका में उनके काम और उपलब्धियों से परिचित था फिर भी देश में गुजरात तथा बम्बई क्षेत्रों के बाहर उन्हें बहुत कम ही लोग जानते थे। आश्चर्य नहीं कि गुजरात, बम्बई तथा कराची में उनका भव्य अभिनन्दन किया गया। मद्रास में उनके मित्रों में जी.ए.नटेसन ने उनकी आवभगत की। वे उनकी महत्वपूर्ण पुस्तक 'हिन्द स्वराज' के प्रकाशक भी थे। अपने राजनैतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर गांधीजी अपने देश को भली भाँति जानने समझने के लिये भारत दर्शन पर निकल पड़े। उस समय गांधीजी शान्तिनिकेतन में गुरुदेव के पास थे जब उन्हें अपने गुरु की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ।





भारत में गांधीजी का पहला जनसम्बोधन फरवरी 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में था। इसी वर्ष दिसम्बर में वे कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन में लखनऊ भी गए थे। आधुनिक भारत के इतिहास का यह निर्णायक बिन्दु था। गांधीजी अपनी आत्मकथा में लिखते हैं –

'मेरे कार्य मेरी नियति निर्धारित करती है। मैं कभी उन्हें ढूंढ़ने नहीं जाता। वे सभी काम स्वयं ही मुझे मिल जाते हैं। दक्षिण अफ्रीका और अब लौटने पर भारत में भी मेरे साथ यही हो रहा है।'"



अगर दक्षिण अफ्रीका में वह एक रेलवे टिकट कलक्टर था जिसने एक सत्याग्रही के जन्म का रास्ता बनाया तो भारत में चम्पारण का वह एक निर्धन किसान था, राजकुमार शुक्ल जिसने उन्हें भारत की धरती पर सत्याग्रह को परखने का सुअवसर दिया।



राजकुमार शुक्ल से अपनी भेंट के बारे में वे लिखते हैं– 'मुझ तक वह किसान आया जो भारत के किसी भी किसान जितना ही दरिद्र और निर्बल दिखता था, और बोला मैं चम्पारण से आया हूँ आप मेरे ज़िले में आएं।' गांधीजी ने इससे पहले कभी इस जगह का नाम नहीं सुना था जो हिमालय की तलहटी में नेपाल राज्य के पास बिहार का एक छोटा सा गांव था।

सदियों से चम्पारण के किसान खेती बाड़ी करते थे और राजकुमार शुक्ल भी उन्हीं में से एक था। वह अशिक्षित था परन्तु दृढ़ निश्चयी था। वह कांग्रेस अधिवेशन में अपने प्रान्त की 'तिन कठिया' प्रथा के विरोध में अपनी बात रखने आया था और वहीं शायद किसी ने उससे कहा था 'गांधी से बात करो'।



इस निर्भीक किसान से प्रभावित हो गांधीजी चम्पारण जाने को तैयार हो गए।



वर्ष 1917 की 18 अप्रैल को गांधीजी ने भारत में बिहार के चम्पारण में किसानों के लिये अपना प्रथम सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ किया। और 1918 में अहमदाबाद के कपड़ा मिल के मज़दूरों के हित के लिये पहली बार मिल मालिकों के विवेक को जगाने के लिये 'उपवास' के नैतिक अस्त्र का प्रयोग किया। इसके बाद किसानों के लिये खेड़ा सत्याग्रह का नेतृत्व किया।

यह तीन आन्दोलन गांधीजी को भारतीय राजनीति के केन्द्र में ले आए और पहली बार ग्रामीण भारत की समस्याएँ राष्ट्रीय आन्दोलन का प्रमुख मुद्दा बनीं।



गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने उन्हें महान् आत्मा बताते हुए 'महात्मा' की उपाधि दी।

चम्पारण सत्याग्रह के दौरान गांधीजी के अनेक मित्र बने जिनमें आचार्य कृपालानी, प्रो. एन.आर.मलकानी, डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिंह तथा अन्य अनेक वे लोग थे जो बाद में स्वाधीनता आन्दोलन में उनके सहयोगी और अनुयायी बने। चम्पारण सत्याग्रह गांधीजी के जीवन में असाधारण मोड़ ले आई। उनके शब्दों में, ''मैंने वास्तव में जो काम किया वह एक बहुत ही साधारण सी बात थी। मैंने यह साबित कर दिया कि अपने ही देश में अंग्रेज़ मुझे हुक्म नहीं दे सकते''।



चम्पारण जीवन भर महात्माजी के लिये विशेष रहा। जब भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान 1942 में गांधीजी के जीवनी लेखक लुई फिशर उनके आश्रम में उनसे मिले तो गांधीजी ने उनसे कहा, ''मैं आपको बताता हूँ 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' का बीज मंत्र मुझे कब और कहां मिला था। यह 1917 में चम्पारण में हुआ और मैं इसका श्रेय राजकुमार शुक्ल को देता हूँ।''

Mohandas Karamchand Gandhi returns home

On 9 January 1915 Mohandas Karamchand Gandhi arrived in India from South Africa, with no possessions and with only one ambition – to serve his people. Though the intelligentsia had heard of his feat in South Africa, he was not much known outside Gujarat and Bombay residency. In Gujarat, Bombay and Karachi he was accorded big reception. He had his friends in Madras – the family of G.A. Natesan, the publisher of his seminal work Hind Swaraj. On the advice of his political Guru Gopal Krishan Gokhale, Gandhiji set out on a countrywide pilgrimage to know his country and her people. Gandhiji was in Bengal to pay his respects to the Bard of Shantiniketan in 1915, when he heard about the sad demise of his Guru.



Gandhiji's first public address in India was on the occasion of the opening ceremony of the Banaras Hindu University in February 1916. In December, the same year he went to Lucknow to attend the Annual Convention of the Congress. This turned out to be a turning point in the history of modern India. Gandhiji had written in his Autobiography,

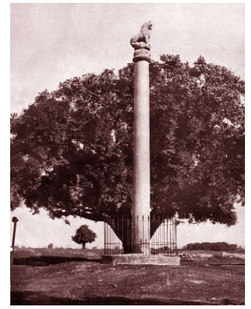

"Fate decides my undertakings for me. I never go to seek them. They come to me almost inspite of me. That has been my lot all my life long, in South Africa as well as ever since my return to India."

If in South Africa it was the Railway ticket collector who paved the way for the birth of a Satyagrahi, in India it was a poor peasant from Champaran, Rajkumar Shukla, who provided him a platform to test the power of Satyagraha on the Indian soil.



About his meeting with Rajkumar Shukla, Gandhiji recounted, 'a peasant came up to me looking like any other peasant in India, poor and emaciated', and said, "I am Rajkumar Shukla. I am from Champaran, and I want you to come to my district!" Gandhiji had never heard of the place. It was in the foothills of the towering Himalays, near the kingdom of Nepal.



Under an ancient arrangement, the Champaran peasants were share-croppers. Rajkumar Shukla was one of them. He was illiterate but resolute. He had come to the Congress Session to complain about the injustice of the landlord system in Bihar, and somebody had probably said 'Speak to Gandhi'.

Impressed by the share-cropper's tenacity, perseverance and honesty Gandhiji agreed to look into their grievances.



On 18 April 1917, Gandhiji launched the first Satyagraha in India in Champaran, Bihar on behalf of the peasants and in 1918 he took up the cause of the textile mill workers of Ahmedabad where for the first time he used 'fast' as a moral force to rouse the conscience of the mill owners. This was followed by Kheda Satyagraha on behalf of the peasants.



These three events brought Gandhiji to the centrestage of Indian politics and for the first time problems of rural India became the focal point of our National struggle.

And Gurudev Rabindranath Tagore honoured him with the title of 'Mahatma' the great soul.



During Chamapran Satyagraha Gandhiji made friends with Acharya Kriplani, Prof. N.R. Malkani, Dr. Rajendra Prasad. Anugraha Narain Singh and several other important leaders who joined him in the struggle for freedom. The Champaran episode was a turning point in Gandhi's life. **'What I did', he explained, 'was a very ordinary thing. I declared that the British could not order me about in my own country'.**



Champaran, remained very special for the Mahatma for the rest of his life. When Louis Fischer, his biographer met him at his Sevagram Ashram in 1942, just before the launch of the Quit India Movement, Gandhiji told him "I will tell you how it happened, and when did I really decide to urge the British to Quit India. It was in 1917 at Champaran and I owe it to Rajkumar Shukla."

भारतीय राजनीति में गांधी युग का प्रारम्भ

यह समय था जब भारतवर्ष अंग्रेज़ी साम्राज्य के बड़े ही दमनकारी दौर से गुज़र रहा था। 'रॉलेट एक्ट', पंजाब में मार्शल लॉ और जलियांवाला बाग़ हत्याकाण्ड इसके प्रत्यक्ष उदाहरण थे।



यही वह दौर था जो साक्षी बना अंग्रेज़ी हुकूमत के 'वफादार नागरिक' गांधी जी के अग्रणी विद्रोही के रुप में परिवर्तन का। गांधी जी ने खिलाफ़त एवं पंजाब में दमनकारी अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध असहयोग आन्दोलन छेड़ दिया और भारत के सामने स्वराज का लक्ष्य रखा। इसके लिए उन्होंने भारतवासियों से विशेषकर मध्यवर्गी जनता से अंग्रेज़ी शिक्षा संस्थानों का, कचहरियों का एवं विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने की अपील की। ये तीन स्तम्भ थे जिस पर टिका था ब्रितानिया साम्राज्य और राष्ट्र को जागृत करने के लिए लाए पांच सूत्रीय रचनात्मक कार्यक्रम जिसमें हिन्दू–मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता निवारण, नारी–उत्थान, खादी एवं स्वदेशी को मुख्य स्थान दिया।



किन्तु चौरी–चौरा की हिंसात्मक घटना ने गांधी जी को फरवरी 1922 में असहयोग आन्दोलन स्थगित करने पर बाध्य कर दिया और 10 मार्च 1922 को सरकार के विरुद्ध जनता को उकसाने के आरोप में उन्हें 6 वर्ष की कड़ी सज़ा सुनाई गई।

महात्मा गांधी ने अपना अपराध स्वीकार किया। मुक़दमे के जज श्री ब्रूमफील्ड ने उनको छः वर्ष के कारावास की सज़ा सुनाई।

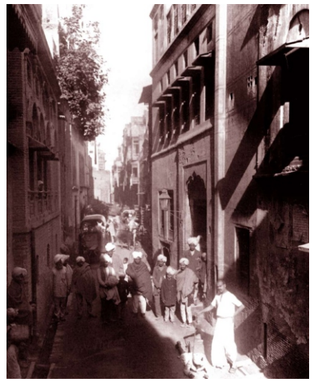

सज़ा सुनाए जाने से पहले गांधीजी ने अपना वक्तव्य पढ़ा। इस वक्तव्य का मसौदा और गद्य दोनों ही काव्यमय थे। इतने वर्षों बाद भी आज वे शब्द मानों प्रतिध्वनित होते हैं :

''अहिंसा मेरी आस्था की पहली कसौटी है। यही मेरी निष्ठा की अन्तिम कसौटी भी है ... .मैं किसी प्रकार की क्षमा की आशा नहीं रखता। मैं इसलिये यहाँ हूँ कि खुशी के साथ अधिकतम सज़ा पाऊँ, उस कारण से, जिसे कानून तो अपराध समझता है मगर जो मेरी नज़र में एक नागरिक का सर्वोच्च कर्तव्य है। जज महोदय, आपके सामने केवल यही रास्ता है कि आप या तो पदत्याग करें या मुझे कठिन से कठिन सज़ा दें, यदि आपको विश्वास है कि जिस व्यवस्था और कानून के पालन में आप सहायक हैं वह लोगों की भलाई के लिये है। मैं इस प्रकार के बदलाव की उम्मीद नहीं रखता, परन्तु जब मैं अपना वक्तव्य समाप्त करुंगा तब आप शायद मेरे भीतर धधकती आग की झलक देख पाएंगे....। मेरा सार्वजनिक जीवन प्रतिकूल परिस्थितियों में १८९३ में दक्षिण अफ्रीका में आरम्भ हुआ था। ब्रिटिश प्रशासकों से उस देश में मेरा पहला परिचय बिल्कुल भी आनन्ददायक नहीं था। मैंने देखा कि एक मनुष्य तथा एक भारतीय होने के नाते मेरे कोई अधिकार नहीं थे। सही तो यह है कि एक मनुष्य होने के नाते मेरे कोई अधिकार इसलिये नहीं थे क्योंकि मैं एक भारतीय था.....।''



मो. क. गांधी

जज ब्रूमफील्ड भी एक संवेदनशील व्यक्ति थे और उन्होंने कहा, ''.....राजनीति में जो आप से मतभेद भी रखते हैं वे भी आपके उच्च आदर्शों, निर्मल चरित्र तथा सन्तों के समान जीवन को श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं .... मैं सोचता हूं कि आप श्री तिलक की श्रेणी के बन्दी माने जायें और दो–दो वर्ष की साधारण सज़ा तीनों आरोपों के लिये, अर्थात् कुल छः वर्ष का कारावास पाये। यदि परिस्थितिवश सरकार के लिये आपकी सज़ा कम करना सम्भव हो सके तो मुझसे अधिक प्रसन्न कोई न होगा।''



और यहीं से हुआ भारत की स्वतन्त्रता संग्राम में गांधी–युग का सूत्रपात।



5 फरवरी 1924 को जब गांधी जी रिहा होकर आए तो हिन्दू–मुस्लिम के बीच बढ़ती दूरी को देखअत्यन्त दुःखी हुए। हिन्दू–मुस्लिम एकता का अर्थ है स्वराज। अतः आपने 18 सितम्बर 1924 से 21 दिन का व्रत करने का निश्चय किया। उसके पश्चात् उसी वर्ष बेलगाम अधिवेशन में महात्मा गांधी वर्ष 1925 के लिए राष्ट्रीय कॉंग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। पूरे वर्ष गांधीजी ने भारत के एक छोर से दूसरे छोर तक भ्रमण किया। वर्ष 1926 को गांधी जी ने ''राजनीति से मौन का वर्ष'' घोषित किया।

The Beginning of the Gandhi Era in Indian Politics

India was passing through a period of extreme repression. "Rowlatt Act, Marshal Law in the Punjab and a national humiliation culminating in the Jallianwala Bagh massacre were its outward manifestations.



The period was witness to the transformation of Mahatma Gandhi "from a loyal citizen of the empire into an extreme rebel". In 1921 Gandhiji launched the non-cooperation movement with the twin objective of redressal of the Punjab and khilafat wrongs and the establishment of Swaraj through Swadeshi, Charkha and Khadi, Hindu-Muslim unity, removal of untouchability and the emancipation of women. He regarded these programmes as the pillars of Swaraj Gandhiji gave a nationwide call for the boycott of foreign goods, English courts and educational institutions, which were patronized by the middle class, who were the backbone of British imperialism in India.



People's violence in Chauri-Chaura in February 1922 cast a dark shadow all over India. Gandhiji suspended the mass-movement and was arrested on March 10, 1922.





Gandhiji was charged with preaching "disaffection" towards His Majesty's Government. Mahatma Gandhi pleaded guilty. The judge, Mr. Broomfield sentenced him to six years' imprisonment. Before the sentence was announced, the Mahatma read out a statement. The drafting was masterly. So was the prose. It resonates even after so many years:

"Non-violence is the first article of my faith. It is also the last article of my creed... I do not ask for mercy. I do not plead any extenuating act. I am here, therefore, to invite and cheerfully submit to the highest penalty that can be inflicted upon me for what in law is a deliberate crime and what appears to me to be the highest duty of a citizen. The only course open to you, Your Lordship, is either to resign your post or inflict on me the severest penalty, if you believe that the system and law you are assisting to administer-are good for the people. I do not expect that kind of conversion, but by the time I have finished with my statement, you will perhaps have a glimpse of what is raging in my heart... My public life began in 1893 in South Africa, in troubled weather. My first contact with British authority in that country was not of a happy character. I discovered that as a man and an Indian I had no rights. More correctly, I discovered that I had no rights as a man because I was an Indian..."





M. K. Gandhi

Justice Broomfield also rose to the occasion and concluded thus: "...Even those who differ from you in politics look upon you as a man of high ideals and of noble character and even saintly life... You will not consider it unreasonable, I think that you should be classed with Mr Tilak, i.e., two years' simple imprisonment on each count, six years in all... If the course of events should make it possible for the government to reduce the period and release you, no one will be more pleased than I."

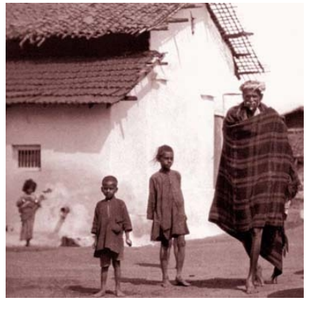



He was sentenced to 6 year rigorous imprisonment for spreading disaffection against the government. On his release on February 5, 1924, Gandhiji was pained to find the hindus and muslims drifting apart. Hindu-Muslim unity means swaraj. Hence from 18 September 1924 he went on a 21 day fast for self purification. The same year at the Belgam Convention he was elected president of the Indian National Congress for the year 1925. Throughout the year 1925 Gandhiji extensively travelled through the length and breadth of India. The year 1926 was declared as the "year of political silence" by Gandhiji.

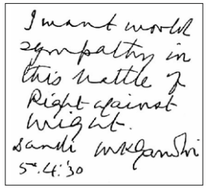

26 जनवरी 1930 को पूर्णस्वराज की शपथ के साथ ही गांधी जी ने सक्रिय राजनीति से संक्षिप्त अवकाश समाप्त कर फिर से राष्ट्रीय आन्दोलन की बागडोर संभाली एवं 12 मार्च 1930 को नमक कानून भंग करने की घोषणा कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन का सूत्रपात किया।





12 मार्च 1930 प्रातः साढ़े छः बजे महात्मा गांधीजी ने 79 स्वयं सेवकों के साथ 'मार्च प्रारम्भ किया। ये स्वयंसेवक भारत के विभिन्न धर्मों और पथों के विद्वानों, समाचार पत्रों के संपादक, जुलाहे और अस्पृश्य लोगों में से लिये गये थे। उनका अन्तिम गन्तव्य दो सौ इकतालीस मील से अधिक दूरी पर स्थित दांडी समुद्र तट था। 'बा' ने उनके माथे पर मांगलिक तिलक लगाया और खादी की सूत की माला पहना कर उन्हें एक लाठी पकड़ाई जो यात्रा के दौरान उनका 'ट्रेड मार्क' बन गई।





गांधीजी इस विशाल अहिंसक सेना के प्रमुख सेनानायक थे। मार्च के दौरान गांधीजी के बारे में नेहरुजी ने लिखा है 'सत्य की तलाश में वह एक अत्यन्त शान्त, दृढ़निश्चयी एवं निडर तीर्थ यात्री था जो परिणामों की चिन्ता किये बिना अपनी मंज़िल की ओर बढ़ता गया'।

उस महान् 'यात्रा' को देख कर नेहरू इतना अधिक प्रभावित हो गए कि उसके तुरन्त बाद उन्होंने युवाओं को अपने घरों और विश्वविद्यालयों से बाहर आने का आह्वान किया। "आज़ादी और इन्क़लाब का गगन भेदी नारा लगाने वाले तुम पुरूष और महिलाए कहाँ हो?" युद्ध का मैदान तुम्हारे सामने है, भारत का झंडा तुम्हें संकेत दे रहा है, भारत की स्वाधीनता की देवी स्वयं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है। यदि भारत मरता है तो कौन जिएगा और यदि भारत जीता है तो कौन मरेगा"?





इस आन्दोलन की एक अद्भुत उपलब्धि जो राष्ट्रवादी प्रेस में और सरकार की रिपोर्टों में एक समान दिखलाई पड़ी—वह यह थी कि गांधी जी के स्वागत में महिलाएँ भारी संख्या में आती थीं और इस अभियान में बहुत अधिक रूचि ले रही थीं। नमक सत्याग्रह का अनोखा और अत्यन्त प्रभावशाली पक्ष यह था कि महिलाएँ आगे आ रही थीं।

यात्रा के दौरान अनेक भारतीय तथा अमरीकी पत्र पत्रिकाओं के द्वारा गांधीजी ने सारे संसार का ध्यान आकर्षित किए रखा। बड़े अमरीकी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में यात्रा को प्रमुख स्थान मिला। अमरीकी मीडिया ने इस घटना के सामाचारिक मूल्य की सराहना की। उनकी टिप्पणियाँ थीं, "विद्रोह के 'बास्टन—टी—पार्टी तरीके का प्रयोग', 'लाइक ए मास्टर शो मैन', सेरेमोनियसली डिफाइज़ द ब्रिटिश गवर्नमेंटस साल्ट मॉनोपली एंड इट्स रिसेंटेड टैक्स ऑन साल्ट" इस परिदृश्य ने टाइम मैगज़ीन को महात्मा गांधी को वर्ष 1930 के लिए "मैन ऑफ द इयर" घोषित करने को प्रेरित किया और टिप्पणी की कि महात्माजी स्टालिन या हिटलर से अधिक इसके पात्र थे। भूरे आदमी के लिए 1930 में मिला यह सम्मान विश्व के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।



5 अप्रैल को महात्मा गांधी अपनी तीर्थयात्रा के लिए विश्व समुदाय द्वारा उनकी यात्रा के समर्थन को नहीं भुला सके। रेवरेंड होम्स का न्यूयार्क से एक संदेश था "ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।" जर्मनी के डाक्टर ने लिखा "एक विनम्र सह—यात्री आपके लिए प्रार्थना करता है।" पूरी यात्रा के दौरान गांधी जी ने मीडिया के माध्यम से सहानुभूति की अपील की थी और अब वे अपने श्रोताओं को विशेष ध्यान दे रहे थे। अमरीका को एक संदेश में उन्होंने कहा "सहानुभूति का स्वागत है पर यह पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि हमारे स्वाधीनता के अधिकार के लिए वहाँ का पूरा जनसमर्थन मिले। भारत यदि अहिंसा के रास्ते पर चल कर अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता है तो यह संसार के लिए एक संदेश होगा।" अंत में 5 अप्रैल, नमक कानून तोड़ने की पूर्वसंध्या पर डांडी से गांधी जी ने लिखा, "ताकत के विरुद्ध सत्य की इस लड़ाई में मुझे विश्व की सहानुभूति चाहिए।"



5 अप्रैल की संध्या को डांडी के छोटे से गाँव की जनसंख्या (460) बढ़ कर 12,000 हो गई। गांधी जी ने डांडी यात्रा की अंतिम प्रार्थना सभा को सम्बोधित करते हुए कहा, "पिछले चौबीस दिनों तक लक्ष्य "डांडी" का था परन्तु अब हमारा वास्तविक लक्ष्य स्वराज की देवी का मंदिर है।"



6 अप्रैल को प्रातःकाल जिन लोगों ने समुद्र तट का दृश्य देखा उन्होंने एक चमत्कार के दर्शन किए। प्रार्थना के बाद गांधीजी ने घोषणा की "सविनय अवज्ञा का यह धर्म युद्ध नमकीन जल में स्नान करने के बाद आरंभ किया जाना चाहिए।" एक विवरण के अनुसार 6.30 बजे गांधीजी समुद्रतट पर रूके और प्रतीकात्मक रूप से नमक उठाया और नमक कानून की सविनय अवज्ञा की। काम पूरा हो गया। उन्होंने कहा, "इसके साथ मैं ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिला रहा हूँ।"



वर्ष के अंत तक इस प्रकार के कार्य करते हुए 60,000 से अधिक महिला—पुरुष (सरकारी अनुमान के अनुसार) जेलों में गए।

गांधीजी जानते थे कि जैसे ही वे नमक कानून तोड़ेंगे वे गिरफ्तार कर लिये जायेंगे। अतः उन्होंने अपने घनिष्ठ विश्वासपात्रों सरोजनी नायडू और अब्बास तय्यबजी को नमक सत्याग्रह का नेतृत्व करने के लिए अपना उत्तराधिकारी नामित किया। सत्याग्रह के बारे में उन्होंने सही भविष्यवाणी की थी कि वह सारे भारत में फैल जायेगा।



सरकार द्वारा गम्भीर कार्रवाई मई के प्रारम्भ में शुरु हुई। साठ हज़ार भारतीयों के साथ पकड़े गये महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से मदन मोहन मालवीय एक थे।



सारे देश में नमक कानून की अवज्ञा और विभिन्न प्रकार के विरोधों के बावजूद सरकार ने



अप्रत्याशित रुप से गांधीजी को तत्काल गिरफ्तार नहीं किया। प्रतिक्रिया गांधीजी के उम्मीदों से भी कहीं अधिक थी क्योंकि उन्होंने अत्यन्त अनुशासित एवं अहिंसक आन्दोलन के लिये अनुदेश दिये थे। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार हुआ, तथा वस्त्रों को सार्वजनिक रुप से जलाया गया और स्थानीय अधिकारियों और विधायकों ने इस्तीफे दिये।





अन्त में सरकार ने महात्मा गांधी को दांडी के निकट एक गांव कराडी में 5 मई 1930 को गिरफ्तार किया।

गांधीजी की गिरफ्तारी से देशवासी क्षोधित हो गये और सब जगह असंतोष भड़क उठा। मिल मज़दूरों, दुकानदारों और रेलवे कर्मचारियों ने काम बंद कर दिया। देश के कुछ भागों में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया। दूसरी तरफ विवाद को शांतिपूर्वक हल करने के लिये ब्रिटेन में सरकार पर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बढ़ने लगा। बम्बई में कुछ अत्यन्त दमनकारी कार्यवाईयाँ हुईं।

गांधीजी के साथ नमक अभियान पर चले 79 स्वयं सेवकों में से कोई भी महिला नहीं थी



किन्तु बाद में चले सत्याग्रह के दौरान गांधीजी द्वारा उत्साहित किये जाने पर कस्तूरबा सहित अप्रत्याशित संख्या में महिलाओं ने भाग लिया।

21 मई 1930 को गुजरात के धरसाना नमक डिपो पर एक बड़ा धावा बोला गया। अपनी गिरफ्तारी से पहले गांधीजी ने एक अधिक आक्रामक, अहिंसक प्रतिरोध की योजना बनाई थी जिसमें धरसाना के नमक डिपो पर कब्ज़ा करना शामिल था। धावे का नेतृत्व सरोजनी नायडू के द्वारा किया जाना था। अमरीकी रिपोर्टर वेब मिलर जिसने धावे को देखा, स्वयं सेवकों के साहस और पुलिस की बर्बर कार्रवाई का बहुत अच्छा विवरण दिया; "मैंने अपने 18 वर्ष के कार्यकाल में ऐसे कष्टदायक दृश्य नहीं देखे....इतने दर्दनाक कि मुझे थोड़ी देर के लिये दूर जाना पड़ा। एक आश्चर्य जनक विशेषता थी स्वयंसेवकों का अनुशासन .....वे पूरी तरह से गांधीजी के अहिंसक सिद्धान्त से पूरी तरह ओतप्रोत थे।"







सत्याग्रहियों ने 3 जून 1930 को बम्बई में एक और नमक डिपो वडाला पर धावा बोला। वडाला में पुलिस ने फिर वही बर्बरतापूर्व कृत्य दोहराया हालांकि स्वयंसेवक अपनी अहिंसा के प्रति वचनबद्धता पर अडिग रहे। प्रत्यक्षदर्शियों ने यह रिर्पोट व्यापक रुप से प्रचारित की जिससे सारे विश्व में सहानुभूति एवं प्रंशसा मिली।



9 जुलाई 1930 को बम्बई में भीषण पुलिस कार्रवाई हुई। 1930 की गर्मियाँ आने तक अहिंसक प्रतिरोध अपने चरम पर पहुंच गया लेकिन सरकार का दमन भी वैसा ही था। यद्यपि सत्याग्रहियों ने बम्बई जैसे कुछ शहरों को वास्तव में शासन के अयोग्य बना दिया था। एक लाख से अधिक भारतीय एवं अनेक प्रमुख कांग्रेसी नेता जेल में थे। जून में कांग्रेस को भी गैर कानूनी घोषित कर दिया गया था।

इस बीच अधिकारीगण चिंता और आश्चर्य के साथ आंदोलन पर नजर रखे हुए थे। ब्रिटिश सरकार अपने भारतीय साम्राज्य को समाप्त होते नहीं देखना चाहती थी। भारत के लिए अवर सचिव अर्ल रसेल ने पूर्ण स्वतंत्रता की कांग्रेस की मांग पर टिप्पणी की "भारतीयों के अलावा बेहतर ढंग से और कौन समझ सकता है कि पूर्ण स्वतंत्रता की बात करना कितना मूर्खतापूर्ण है। स्वतंत्र उपनिवेश स्तर इस समय संभव नहीं है और आंदोलन ज़्यादा दिन नहीं चलेगा।"



लार्ड इरविन ने भी यही भावना व्यक्त की थी जब उन्होंने कहा कि "लक्ष्य का अनुमान कर लेना ही इसे प्राप्त करना नहीं है।" शासक वर्ग सत्य से कितना दूर थे इसका अनुमान बाद की घटनाओं से लगाया जा सकता है। क्योंकि नमक सत्याग्रह भारत के स्वाधीनता संग्राम में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। देश भर में यह जंगल की आग के समान फैला। उत्तर—पश्चिम सीमा प्रान्त में भी लालकुर्ती या खुदाई खिदमतग़ार के नाम से



विख्यात बादशाह ख़ान के अनुयायियों द्वारा चलाया गया अहिंसक सत्याग्रह जैसा उदाहरण पराक्रमी समाज की लोक कथाओं में ही पाया जा सकता है।

हिमालय की चोटियों से दूर दक्षिण में कन्याकुमारी तक केवल एक ही आवाज़ उठ रही थी "नमक कानून तोड़ो।"

The epic march and the Salt Satyagraha

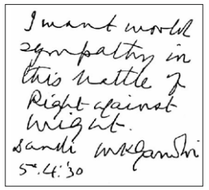

Gandhiji resumed the leadership of the national movement after a brief retirement from active politics. With the adoption of the pledge of Poorna Swaraj on January 26, 1930, and the announcement of the civil disobedience movement by breaking the Salt Act on 12 March 1930.





On 12 March, 1930 at 6.30 p.m. in the morning Mahatma Gandhi set out with seventy-nine volunteers, drawn from different parts of India and faiths and included scholars, newspaper editors, weavers and untouchables. Their ultimate destination was the seashore at Dandi, more than two hundred forty one miles away. Ba applied the benedictory tilak on his forehead and garlanded him, not with flowers but with khadi, and handed to him the walking stick that became his trademark on the march.





The march had all the appearance of an epic journey, with Gandhiji at the head of a vast non-violent army. Nehru later observed of Gandhi during the march that he 'was the pilgrim in the quest of truth, peaceful, determined and fearless, who would continue that quiet pilgrimage regardless of the consequences'.



This was the satyagrahi on the pilgrimage to swaraj. So moved was Nehru at the epic sight of Gandhiji leading the march that in his public address soon after he gave a call to the youth of India to come out of their homes and universities. "And whither go you, young men and women of India who shouted so loudly and so lately of independence and inquilab ? Whither go you? .....The field of battle lies before you, the flag of India beckons to you, and freedom herself awaits your coming. Who lives if India dies, who dies if India lives?"



A particular phenomenon, noted by the nationalist press and in government dispatches alike, was that "women assembled in thousands' to applaud Gandhiji and were taking an uncommon interest in the campaign. This was the most fascinating and unique feature of the Salt Satyagraha that saw the women power to the fore. A novel feature of the Salt Satyagraha was the media attention Gandhiji received.



The world attention was sustained in the coming months by numerous Indian and American journalists. The march received prominent coverage in major U.S. newspapers and periodicals throughout 24 days – and also days preceding the event and beyond. The American media appreciated the newsworthy quality of the event, commenting on how the Mahatma "reversing the 'Boston-tea-party' method of revolt," "like a master showman" "ceremoniously defies the British Government's salt monopoly and its resented tax on salt." It was this kind of drama that led Time Magazine to name Gandhi "Man of the Year" for 1930 and conclude that more than Stalin or Hitler, the Mahatma deserved the award, "the little brown man whose 1930 mark on world history will undoubtedly look largest of all."



On 5th April, Mahatma Gandhi did not forget the support his pilgrimage had received from the world community. "God Guard you," said a New York message from Rev. Holmes, A doctor from Germany sent a note saying "a humble fellow pilgrim is praying for him". Throughout the march, Gandhiji had made appeals to world opinion through the media: now, he gave special attention to this audience. In a "message to America" he insisted that sympathy was welcome but not sufficient: "What is wanted is concrete expression of public opinion in favour of India's inherent right to independence....if we attain our end through non-violent means India will have delivered a message for the world". Finally, Gandhiji summed up in a sentence his appeal to the world from Dandi: "I want world sympathy in this battle of Right against Might."





Many of those who watched on the shore that early morning of April 6 did indeed believe that they were witnessing a miracle. The deed was done. "With this," he said, "I am shaking the foundations of the British Empire."



Gandhi believed that he would be arrested once he broke the salt law and thus had nominated his close confidants, Sarojini Naidu and Abbas Tyabji, to succeed him as leaders of the Salt Satyagraha, which he correctly predicted would spread throughout India.

The government's crackdown began in earnest in early May. Madan Mohan Malaviya was one of several prominent officials arrested and jailed along with more than sixty thousand Indians.



Unexpectedly, the government did not arrest Gandhi immediately, even though mass violations of the salt law and various forms of protests occurred across the country. The response exceeded all Gandhi's expectations and was, as he had instructed,



highl y disciplined and non-violent. British goods were boycotted, foreign cloth was burnt, and local officials and legislators resigned.



The government finally detained Mahatma Gandhi on 5 May 1930 at Karadi, a village near Dandi.





Mahatma Gandhi's arrest stirred the wrath of the nation and everywhere unrest escalated. Mill workers, shopkeepers and railway workers stopped work. In some parts of the country Martial law was implemented, while in Britain the government faced growing international pressure to resolve the dispute peacefully. Bombay was the scene of some of the worst oppression.

None of the seventy-nine volunteers who set out with Gandhiji on the Salt March were women. But during the Satyagraha that followed, unprecedented numbers of women throughout India including Kasturba joined the struggle upon Mahatma Gandhi's encouragement.



On 21 May 1930 there was mass raid on Dharasana salt depot, Gujarat. In the days prior to his arrest Gandhiji planned a more aggressive phase of non-violent resistance, which involved raiding and taking possession of the salt depot at Dharasana. The raid was led by Sarojini Naidu. Webb Miller, an American reporter who observed the raid, famously documented the courage of the volunteers, as well as the savage response by police: "In eighteen years of reporting I have never witnessed such harrowing scenes...so painful that I had to turn away momentarily. One surprising feature was the discipline of the volunteers...they were thoroughly imbued with Gandhi's non-violent creed."

The Satyagrahis led another raid on the Wadala salt depots in Bombay on 3 June







1930. Police at Wadala repeated the same barbarous acts, yet the volunteers' commitment to non-violence held firm. The eyewitness reports were widely circulated which aroused both sympathy and admiration around the world.



On 9 July 1930, the Police unleashed brutal crackdown in Bombay. By the summer of 1930, non-violent resistance was at its height, but, so too, was government oppression. Though satyagrahis had rendered some cities, such as Bombay, virtually ungovernable, more than a hundred thousand Indians and many prominent Congress leaders were in prison. In June, Congress itself was outlawed.

The authorities had been watching the movement with mingled anxiety and bewilderment. The British had no intention to liquidate their Indian Empire. "Over a pinch of Salt"- Earl Russell, the Under-Secretary of State for India, had commented on the Congress demand for complete independence: 'None knows better than the Indians themselves how foolish it is to talk of complete independence. Dominion status is not possible at the moment and would not be for a long time'. "The Salt Satyagraha is but an amusing interlude". Lord Irwin had expressed the same opinion when he said that the assertion of a goal



was not the same thing as its attainment. How far removed they were from the ground realities the subsequent developments were to prove. For the Salt Satyagraha proved to be a turning point in India's struggle for freedom. It spread like wild fire across the country. The non-violent Satyagraha offered by Badshah Khan's followers known as the 'Red Shirts' or Khudai Khidmatgars in the North-West Frontier Province are the stuff found only in the legends and folklores of valiant societies.



From the Himalayan Peaks to the southernmost tip of Kanyakumari there was only one chant – break the salt law.



लंदन में गोलमेज़ अधिवेशन में महात्मा गांधी



जून 1930 के अन्त तक वायसराय लार्ड इरविन को यह विश्वास हो गया कि भारतीयों द्वारा ब्रिटिश राज्य के विरुद्ध खड़ा किया गया खतरा निष्प्रभाव हो गया था। 26 जनवरी 1931 को गांधीजी को यर्वदा जेल से छोड़ दिया गया।

गांधीजी के नेतृत्व में एक बार फिर स्वतंत्रता संघर्ष के अगले चरण में और यह निर्णय करने के लिए कि क्या सरकार के साथ संवैधानिक चर्चा की जाये, कांग्रेसी नेता फरवरी 1931 में इलाहाबाद में एकत्रित हुए।



इसके बाद 10 मार्च 1931 को साबरमती नदी के तट पर नागरिकों की सभा हुई। कई सप्ताह के नाजुक विचार विमर्श के बाद 5 मार्च को गांधीजी और लार्ड इरविन के बीच एक समझौते पर सहमति हुई। तथाकथित गांधी–इरविन समझौते में सभी प्रकार के भारतीय प्रतिरोध की समाप्ति का प्रावधान था। ब्रितानिया सरकार ने लन्दन में भारत के भविष्य से सम्बन्धित संवैधानिक समस्याओं पर विचार करने के उद्देश्य से गोलमेज़ अधिवेशन की घोषणा की। गांधी जी ने पहले दौर में भाग नहीं लिया। इससे भारत के लिए नये संविधान पर चर्चा के लिये आयोजित होने वाले द्वितीय गोलमेज़ सम्मेलन में कांग्रेस द्वारा भाग लेने का रास्ता साफ हो गया। गांधीजी ने 29 अगस्त 1931 को लंदन के लिये प्रस्थान किया और लंदन में वे किंगस्ले हाल में ठहरे। उन्होंने चार्ल्स चेपलिन से भी मुलाकात की।







26 सितम्बर 1931 को उन्होंने लंकाशायर स्थित कपड़ा मिल का दौरा किया और कामगारों से मुलाकात की। उनकी यात्रा का सबसे सुखद आश्चर्य था उत्तरी इंग्लैंड में मिल मज़दूरों से मिला जोशीला और प्यार भरा स्वागत। यद्यपि वे गांधीजी के विदेशी कपड़ों के बहिष्कार से बुरी तरह प्रभावित थे किन्तु फिर भी उन्होंने गांधीजी का साथ दिया और भारतीय मज़दूरों की दुर्दशा पर सहानुभूति दर्शायी।





गांधीजी बकिंघम पैलेस में अपनी ट्रेडमार्क धोती पहन कर मिले। यह पूछे जाने पर कि क्या उन्हें ऐसा नहीं लगा कि उन्होंने कम कपड़े पहन रखे थे, उन्होंने जवाब दिया कि उनके मेज़बान ने 'हम दोनों के लिये पर्याप्त कपड़े' पहन रखे थे।



इस सम्मेलन में गांधीजी ने अपने सपनों के भारत की रुप रेखा विश्व पटल पर रखी। "मैं एक ऐसे संविधान के लिएप्रयत्न करूँगा जो भारत को सभी प्रकार की दासताओं और संरक्षणों से मुक्त कराएगा और यदि आवश्यक हुआ तो इसे मैं गुनाह करने का अधिकार तक दूँगा। मैं ऐसे भारत के लिए काम करूँगा जिसमें सबसे निर्धन आदमी भी यह महसूस करेगा कि यह उसका देश है जिसके निर्माण में उसकी प्रभावी भूमिका हैं एक ऐसा भारत जिसमें कोई उच्च वर्ग का और निम्न वर्ग का नहीं होगा, एक ऐसा भारत जिसमें सभी समुदायों के लोग मिलकर रहेंगे। अस्पृश्यता की बुराई से बचा जाएगा और मेरे भारत में इसका कोई स्थान नहीं होगा। शराब या नशीले पदार्थों का वहाँ सेवन नहीं हो रहा होगा। महिलाओं को पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त होंगे। चूँकि संसार में सब के साथ शान्ति होगी, चूँकि शोषक और शोषित नहीं होंगे, हमारे पास सेना बहुत थोड़ी होगी। करोड़ों मूक लोगों के हितों के साथ टकराव न रखने वाले हितों का सम्मान किया जाएगा, चाहे कोई स्वदेशी हो या परदेशी। मैं स्वदेशी और विदेशी के भेदभाव से नफरत करता हूँ। ऐसा होगा मेरे सपनों का भारत। इससे कम पर मैं संतुष्ट नहीं हूँगा।"

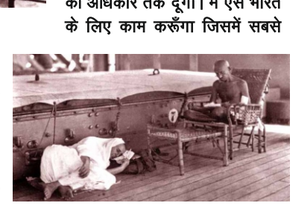







अपनी भारत वापसी के दौरान गांधीजी ने रोमां रोला से मिलने के लिये स्विट्ज़रलैंड एवं इटली की संक्षिप्त यात्रा का निर्णय लिया।



स्विट्ज़रलैंड में गांधीजी के आगमन का उत्सुकता से इन्तज़ार हो रहा था। उन्हें जेनेवा और लासेन में विभिन्न जन सभाओं में भाषण–करने के लिये आमंत्रित किया गया।

16 दिसम्बर 1931 को उन्होंने रोम का संक्षिप्त दौरा किया। एक दिन पहले गांधीजी थोड़ी देर के लिए मुसोलिनी से भी मिले थे। यह तानाशाह उन पर कोई प्रभाव नहीं डाल सका यद्यपि गांधीजी ने बाद में लिखा कि उसकी शक्ल एक 'जल्लाद' जैसी थी। वे रोम में सिसटीनी चैपल भी गए जहां पर प्रभु यीशू को क्रास पर लटकाये जाने के दृश्य ने उन्हें बहुत विचलित किया।



Mahatma Gandhi in London : the Round Table Conference



By the end of 1930 the Viceroy Lord Irwin, believed that the menace posed to British rule by the protests had been neutralized. On 26 January 1931, Gandhiji was released from Yervada prison.

In February 1931, Congress leaders gathered at Allahabad under the leadership of Gandhiji to plan the next phase of the independence struggle and to decide whether to begin constitutional negotiations with the government.



This was followed by citizen's meeting on the sands of Sabarmati river, Ahmedabad on 10 March 1931. After weeks of delicate negotiations, Gandhiji and Lord Irwin agreed to a settlement on 5 March. The so-called Gandhi-Irwin Pact provided for the immediate end to all forms of Indian resistance. British government announced a Round Table Conference in London to deliberate upon the constitutional problems concerning India's future status. Gandhiji's boycotted the first round and secured Congress participation in the Second Round Table Conference in London to discuss a new constitution for India. Gandhiji departed for London on 29 August 1931. In England he stayed at Kingsley Hall. He also met Charles Chaplin.

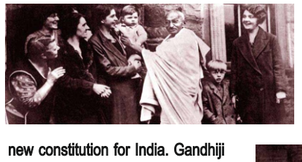





On 26 September 1931, he also visited a textile mill and met the workers at Darwen, Lancashire. For Gandhiji one of the most pleasant surprises of his trip was the warm and affectionate reception he received from textile workers in northern England. Although hardest hit by his boycott of foreign cloth, they revelled in Gandhi's company and showed great sympathy when told of the desperate plight of workers in India.



Gandhi met the King at Buckingham Palace wearing his trademark *dhoti*. Asked if he felt underdressed he was quoted as saying that his host 'had enough on for both of us'.



In this conference Gandhiji placed the outline of the India of his dreams before the world. "*I shall strive for a constitution which will release India from all thraldom and patronage and give her, if need be, the right to sin. I shall work for an India in which the poorest shall feel that it is their country, in whose making they have an effective voice, an India in which there shall be no high class and low class of people; an India in which all communities shall live in perfect harmony. There can be NO room in such an India for the curse of untouchability, or the curse of intoxicating drinks and drugs. Women will enjoy the same*







right as men. Since, we shall be at peace with the rest of the world, since neither exploiting nor being exploited, we should have the smallest army inarguably. All interests not in conflict with the interest of the dumb millions will be scrupulously respected, whether foreign or indigenous. I hate the distinction between foreign and indigenous. This is the India of my dreams; I shall be satisfied with nothing less."

During this trip Gandhiji decided to pay a short visit to Switzerland and Italy *en route* to India especially to meet Romain Rolland.



Mahatma Gandhi's visit was eagerly awaited in Switzerland and he was invited to speak at various public meetings in Geneva and Lausanne.

On 16 December, 1931 Gandhiji paid a brief visit to Rome. He had a brief meeting with Mussolini the day before. The dictator made no significant impression on him, though Gandhiji later noted that he had the appearance of an 'executioner'. In Rome he was spellbound by a visit to the Cistine Chapel.



The Pope would not see Gandhi but the Vatican galleries were opened for him specially. Their art treasure greatly interested him. The Cistine Chapel held him rapt in awe and wonder. Tears sprang to his eyes as he gazed at the figure of Christ. He could not tear himself away.



महाव्रत

1932 में ब्रितानिया सरकार ने ''साम्प्रदायिक पुरस्कार'' के अर्न्तगत दलित वर्ग के लिए 'अलग निर्वाचक मण्डल' की घोषणा की। यह जानबूझ कर हिन्दू स्वराज को कमज़ोर करने के उद्देश्य से ही किया था।

गांधी जी को हिन्दू समाज का विघटन स्वीकार नहीं था। उन्होंने एक सत्याग्रही की दृढ़ता से इस घोषणा का विरोध करते हुए कहा ''मैं हृदय से यह चाहूँगा कि चाहे हिन्दू धर्म नष्ट हो जाए परन्तु अस्पृश्यता को अवश्य मिटना होगा। इस घोषणा का विरोध मैं अपने जीवन को दांव पर लगाकर करूंगा'' और इसी के साथ गांधीजी ने यरवदा जेल के भीतर ही 'आमरण अनशन' आरम्भ किया। गांधीजी ने प्रत्येक हिन्दू को अपने प्राणों के लिए ज़िम्मेदार माना। 15 सितम्बर को दिए अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा ''मुझे कोई भी बेमन से किया हुआ समझौता स्वीकार नहीं होगा''।

The Epic Fast

In 1932 the British government announced the "communal award" granting separate electorate to the depressed classes.

Gandhiji could never accept the vivisection of the Hindu society. He protested with the firmness of a Satyagrahi and said.

"I would far rather wish that Hinduism died than that untouchability lived…I would resist it with my life" and went on a fast unto death. Gandhiji had made each Hindu responsible for his life. On 15 September, in a statement widely disseminated, he said, 'No patched up agreement between Caste Hindus and Depressed Class leaders would be acceptable to him.



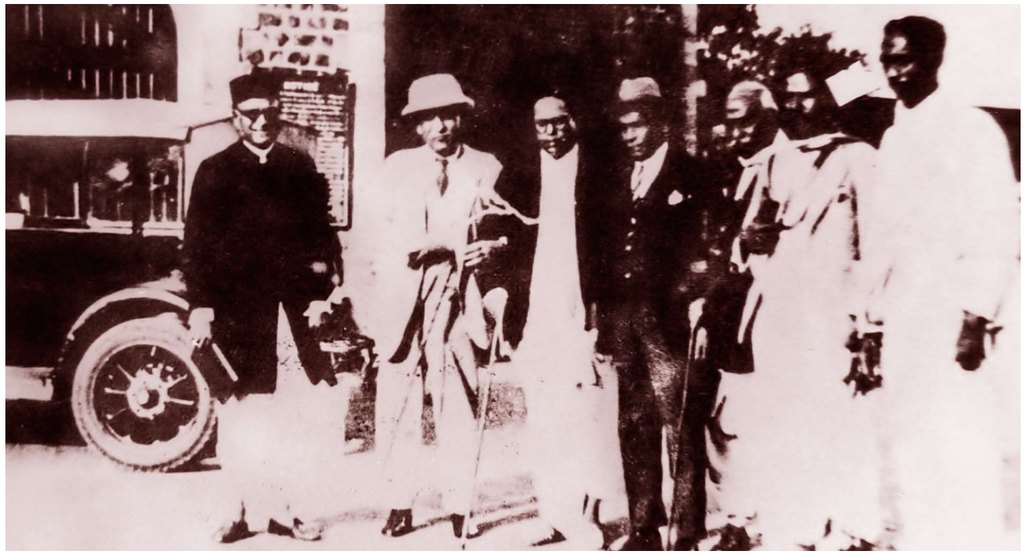

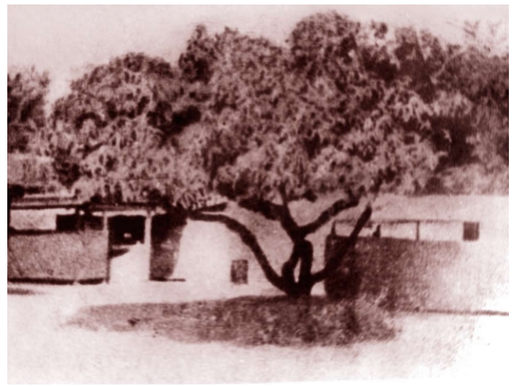

गांधीजी के इस महाव्रत ने पूरे भारतवर्ष के हृदय को छू लिया। डॉ. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा स्वीकृत ''यरवदा समझौते'' के अर्न्तगत ''अलग निर्वाचक मण्डल'' को अस्वीकार कर दिया गया तथा गांधीजी ने अपना 'महाव्रत' समाप्त किया। उन्होंने अस्पृश्यता उन्मूलन के लिये अपने आप को अधिक दृढ़ता से समर्पित किया। फरवरी 1933 में जेल प्रवास के दौरान उन्होंने हरिजनों की मदद के लिये हरिजन सेवक संघ की स्थापना की और जेल से छूटने के पश्चात् हरिजनों के उद्धार के लिये देशव्यापी आन्दोलन चलाया।

Gandhiji's fast touched India's heart and the proposal for "separate electorate" was rejected under the Yervada pact signed and accepted by Dr. B. R. Ambedkar. Mahatma ended his 'epic fast' but continued with even greater dedication his mission of eradication of untouchability. In February 1933, while still in the prison Gandhiji started the Harijan Sevak Sangh committed to help Harijans. On his release in 1933 he set out on a countrywide campaign to raise funds for Harijan relief.

बापू और हरिजन–प्रभु की संतान

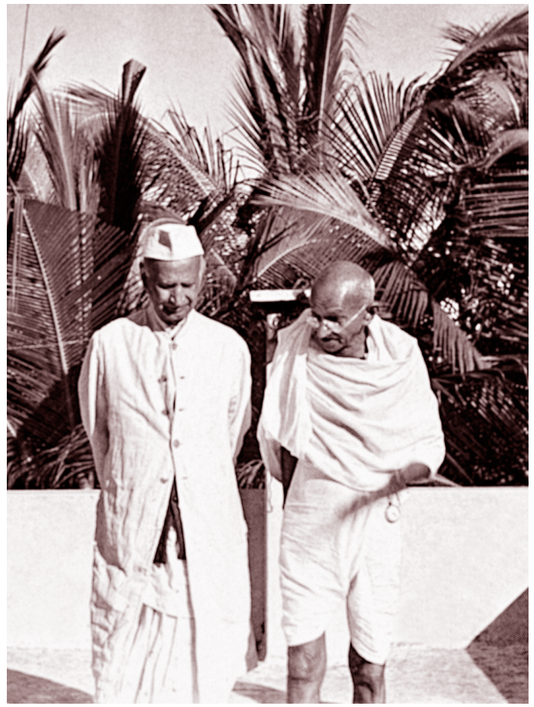

गांधीजी एक बार फिर राजनीति की मुख्य धारा से निकल गाँवों के पुनर्निर्माण के माध्यम से अछूतोद्धार के महायज्ञ में कूद पड़े। इस घोषणा के साथ ही बापू को यरवदा जेल से रिहा कर दिया गया। बापू ने अछूतोद्धार के लिए अब तक के इतिहास में हुए सबसे शक्तिशाली अभियान का सूत्रपात किया, उनके लिए जिन्हें उन्होंने 'हरिजन' माना। उस महात्मा का हरिजन अभियान, जिसने कभी पख़ाना साफ किया तो कभी मन्दिर का द्वार खोला, आधुनिक भारत के इतिहास का महानतम अध्याय है क्योंकि इसने अछूत कहलाने वालों के लिए मुक्ति मार्ग को प्रशस्त किया। राजनीति की मुख्य धारा को छोड़कर गांधीजी ने स्वराज–प्राप्ति के लिये सामाजिक पुनरूत्थान





की दिशा में अपनी शक्ति केन्द्रित कर दी। उनकी दृष्टि में हरिजनोद्धार, ग्रामीण भारत का पुनर्निर्माण स्वराज के लिये सर्वोपरि ध्येय थे। इस निर्णय के बाद ही गांधीजी यरवदा जेल से रिहा कर दिये गए। उन्होंने हरिजन–उत्थान के लिये अपना देशव्यापी अभियान आरम्भ किया। उनके अनुसार हरिजन का अर्थ था ईश्वर की संतान, और महात्मा गांधी ने उनके लिये पाख़ाने साफ करने से मन्दिर के द्वार खुलवाने के काम किये। आधुनिक भारत के इतिहास का यह एक महान् अध्याय है जिसमें सदियों से चले आ रहे छुआछूत के पाप को मिटाने की कोशिश हुई ताकि उनको समाज सहजता से अपनाए।

Bapu and "the Children of God"

Gandhiji once again decided to step out of the main stream politics and concentrate on social regeneration as a pathway to Swaraj the cause of Harijan upliftment and the all round revival of rural India were uppermost in his mind. Following this decision Gandhiji was released from the Yervada Jail. He then launched the most vigorous campaign ever, for the uplift of those whom he called



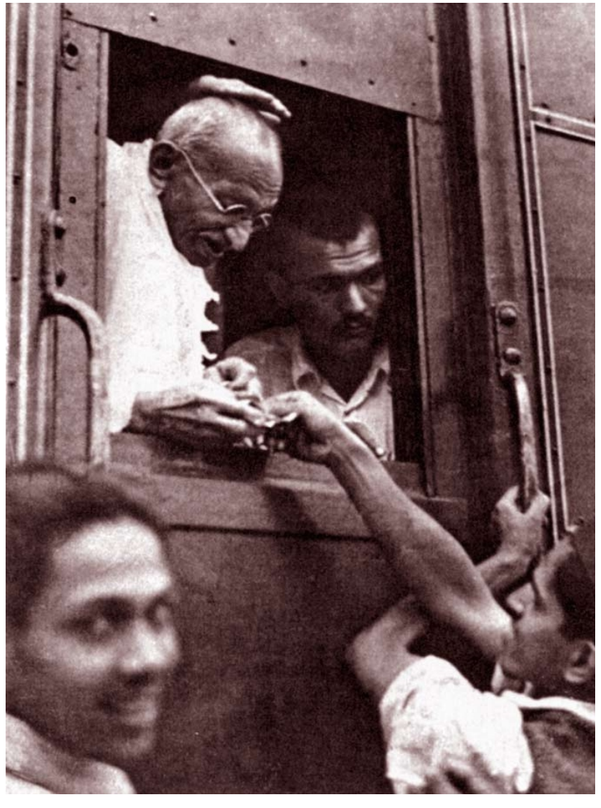

'Harijan' 'The children of god'. The Harijan campaign of the Mahatma who cleaned latrines one day and opened the door of the temples for the Harijans next, is one of the noblest chapters of modern Indian history as it opened the road to freedom for those whom we called "untouchables". A sin we are collectively guilty of for ages.

भारत छोड़ो आन्दोलन

वर्ष 1939 के प्रारम्भ से ही पूरे विश्व पर युद्ध के बादल मंडराने लगे थे। इसी वर्ष अप्रैल माह से ही महात्मा गांधी भी देशव्यापी सत्याग्रह के अगले दौर पर गम्भीरता से विचार कर रहे थे। वे इस सत्याग्रह के प्रारूप पर चिन्तन में लीन थे। जैसे–जैसे विश्व दूसरे महायुद्ध की कगार पर पहुँचने लगा, वैसे ही भारत भी दुविधाग्रस्त स्थिति में आ गया।



गांधी जी की लेखनी तथा वाणी दोनों में ही एक नया ओज, एक नई ऊर्जा प्रतीत होने लगी थी। "भारत छोड़ो" आन्दोलन के विषय में वे 'हरिजन पत्रिका' में पाठकों तथा पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर के माध्यम से देशवासियों को अगले दौर के संघर्ष के लिए तैयार कर रहे थे। उनसे कुछ पाठकों ने पूछा "क्या आप ब्रिटिश शासकों को जाने के लिये कहकर जापान को भारत पर आक्रमण करने के लिये नहीं उकसा रहे हैं।"



गांधीजी 'हरिजन' के 3 मई अंक में अपने उत्तर में स्पष्ट कहते हैं: "नहीं, मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ। मेरा यह दृढ़ मत है कि यहाँ पर ब्रिटिश मौजूदगी ही जापानी आक्रमण को उकसा रही है। यदि ब्रिटिश समझदारी के साथ भारत छोड़ दें ताकि भारत अपने मामले खुद सुलझा सके तो जापान अपनी युद्ध योजना पर पुनः विचार कर सकता है। ब्रिटेन के इस क़दम से जापानी अचम्भित रह जाएंगे, ब्रिटेन के प्रति उनकी दबी घृणा भी कम हो जाएगी तथा भारतीय जन जीवन को भी इस दमघोंटू परिस्थिति से मुक्ति मिलेगी।"

बहुत पहले जब किसी ने गांधीजी से कहा था कि इतिहास में पहले कभी सत्य और अहिंसा पर आधारित जन आन्दोलन का कोई उदाहरण नहीं है– तो उन्होंने कहा कि इस बात से उन्हें "कोई फ़र्क नहीं पड़ता"। 1942 के आन्दोलन के पूर्व जब वे कर्नाटक से बम्बई आये तब कार्यकर्ताओं में से एक ने कहा कि "इतिहास में एक भी उदाहरण नहीं है जहाँ अहिंसा द्वारा स्वराज–प्राप्ति हुई हो।"



गांधी जी मुस्कुराए और बोले: "हम नया इतिहास लिख रहे हैं।" इससे यह स्पष्ट होता है कि न केवल जन संघर्षों में सत्याग्रह का प्रयोग करने वाले वे सर्वप्रथम थे बल्कि वे यह भली–भांति जानते थे कि यह एक मौलिक क्रान्तिकारी कदम है।

दिसम्बर 1941 में जापान ने पर्लहार्बर पर हमला किया। इसी दौरान भारत में सर स्टैफर्ड क्रिप्स का आगमन हुआ जो देश के नेताओं के साथ मिल कर स्थिति का समाधान करना चाहते थे। सर क्रिप्स के प्रयासों से ही रूस अन्ततः युद्ध में शामिल होने को राज़ी हुआ था। इन्हें चर्चिल के उत्तराधिकारी के रुप में देखा जा रहा था। परन्तु भारत में उनके प्रस्तावों में स्वीकार की जाने वाली कोई बात नहीं थी और गांधी जी ने इन्हें 'पोस्ट डेटेड चैक' की उपाधि दी। सर स्टैफर्ड क्रिप्स की यात्रा विफल रही।

ऐसा ही मनोवैज्ञानिक क्षण में गांधी जी ने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन छेड़ा। 'करो या मरो' के मन्त्र से उन्होंने देश में एक बार फिर नयी चेतना भर दी।



एक प्रश्न जो अधिकतर पूछा जाता है वह है कि कैसे गांधीजी ने ऐसा आन्दोलन छेड़ा जिसमें विरोधी किसी भी प्रकार से किसी झेंप का शिकार हो।

महात्मा गांधी का कहना था "मैं केवल कांग्रेस ही नहीं बल्कि उन सभी की ओर से कह रहा हूँ जो देश की विशुद्ध स्वतंत्रता में विश्वास रखते हैं कि यदि मैं अभी यह कहूँ कि ब्रिटेन के लिए कोई झेंप नहीं है। ... अतः यदि मैं इस समय इस विचार को दबा देता तो वह शायद आत्मघाती होगा।"

कुछ ऐसी ही परिस्थितियों में 'भारत छोड़ो' आन्दोलन की पृष्ठभूमि तैयार हो रही थी। मांग यह थी कि ब्रिटेन यह घोषणा करे कि भारत अहिंसक तरीके से युद्ध के विरूद्ध प्रचार प्रसार करने के लिए स्वतन्त्र है और तब युद्ध के खिलाफ तो असहयोग आन्दोलन होगा किन्तु सरकार के विरुद्ध सविनय अवज्ञा आन्दोलन नहीं होगा। यदि यह मांग अस्वीकार हुई तो कांग्रेस के समक्ष ठोस क़दम उठाने के अतिरिक्त और कोई विकल्प नहीं है।

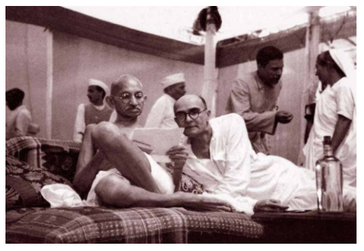

गांधी जी की दलील यह थी कि ब्रिटेन में भी युद्ध विरोधी लोगों को जबरन सेना में भर्ती नहीं किया जाता है, और उन्हें अपनी बात खुलकर कहने की आज़ादी भी प्राप्त थी। हां, उन्हें यह अधिकार कदापि नहीं था कि वे युद्ध में विश्वास रखने वालों को किसी भी प्रकार रोक सकें। परन्तु भारत की स्थिति अलग थी। गांधी जी ने वाइसरॉय को स्पष्ट बता दिया था कि उनके द्वारा भारत को दी गईं रियायतें या आश्वासन पर्याप्त नहीं थे। यदि कांग्रेस को मरना ही है तो उसके लिए शान्तिपूर्ण तरीक़ों पर अपनी पूरी आस्था का ऐलान करते हुऐ मरना अधिक सराहनीय होगा।

इस ऐलान के साथ ही हुआ देशव्यापी सत्याग्रह अभियान का उद्घाटन। जो प्रारम्भ में सांकेतिक मात्र ही था, यानि व्यक्तिगत सत्याग्रह। गांधी जी ने इसके लिये कड़े नियम बनाए तथा एक शपथ भी तैयार की। वे इस बार के अभियान में उत्कृष्टता देखना चाहते थे। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे स्वयं सविनय अवज्ञा में भाग नही लेंगे ताकि ब्रिटिश सरकार को असमंजस मे न पड़ना पड़े। प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही के रूप मे उन्होंने विनोबा भावे का चयन किया।



परन्तु बहुत ही जल्दी व्यक्तिगत सत्याग्रह ने एक विशाल जन आन्दोलन का स्वरुप ले लिया। ऐसे में गांधीजी ने इसे तुरन्त स्थगित करने का निर्णय लिया। चौरी–चौरा काण्ड के बाद ऐसा उन्होंने दूसरी बार किया था। उस समय असहयोग आन्दोलन को समाप्त कर देने के गांधीजी के निर्णय को जवाहरलाल नेहरू तथा कई नेताओं ने सही नहीं माना था। परन्तु गांधीजी ने इसे एक 'हिमालय जितनी बड़ी भूल' की संज्ञा दी थी।

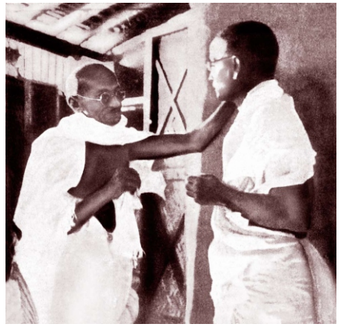

वर्ष 1942 के 8 अगस्त को कांग्रेस द्वारा भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित किया गया और गांधी जी ने कहा "हमें दुनिया का सामना निर्भीक होकर शान्ति से करना है भले ही आज खुद दुनिया की नज़रें रक्तरंजित हैं।" उन्होंने देशवासियों से कहा कि वे आगे बढ़ें और स्वाधीनता की बलिवेदी पर प्राणों को न्यौछावर कर दें।



8 अगस्त 1942 को कांग्रेस ने बम्बई में अपनी बैठक में कार्यकारी समिति के प्रस्तावों पर विचार विमर्श कर उनका अनुमोदन दिया। कांग्रेस ने अपने वक्तव्य में कहा "कांग्रेस कमेटी यह निर्णय लेती है कि भारत की स्वाधीनता के अधिकार प्राप्ति के लिये अहिंसक पद्धति पर आधारित जन–आन्दोलन आरम्भ किया जाए, उस अहिंसक शक्ति को आधार बनाकर जो पिछले बाइस वर्षों के शान्तिपूर्ण संघर्ष को संचालित कर रही है। स्वाभाविक है कि यह संघर्ष महात्मा गांधी के नेतृत्व में ही संचालित होगा।"



गांधीजी ने अपने सम्बोधन में कहा कि उन्हें कोई जल्दी नहीं हैं और वे वाइसरॉय से मिलकर स्थिति का हल ढूंढ़ना चाहेंगे। परन्तु अगले ही दिन 9 अगस्त की भोर में गांधीजी और कार्यकारी समिति के सभी सदस्य गिरफ्तार कर लिये गये। एक सप्ताह के भीतर कांग्रेस के प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति को बन्दी बना लिया गया। इसके बाद शुरू हुआ दमन–चक्र जिसमें निरीह, शान्तिपूर्ण संघर्ष में लगे जन–मानस पर अत्याचारों की झड़ी लग गई। इसमें महिलाएं भी हज़ारों की संख्या में कूद पड़ीं। एक नाम जो सबकी जुबां पर था वह है अरुणा आसफ अली का। आँकड़ों के अनुसार इस दौरान लगभग 2000 लोगों ने प्राण गँवाए, 600 घायल हुए और क़रीब 15 लाख रूपये जुर्माना किये गए। घरों को जलाने, लूटने, पुलिस तथा सेना के क्रूर अत्याचारों का तो कोई दस्तावेज़ है ही नहीं। परन्तु इसके बावजूद पूरा देश "अंग्रेज़ों भारत छोड़ो" के नारों से गूंजता रहा।



पूरे भारत में जन–जागृति और जन विद्रोह की अहिंसक लहर ने "भारत छोड़ो" आन्दोलन को विश्व इतिहास में अनोखा स्थान दिला दिया। जिस प्रकार देश की जनता ने क्रूर अत्याचार के सामने भी अहिंसा का साथ नहीं छोड़ा, देश के हर बड़े नेता के बन्दी बनाए जाने के बावजूद शान्तिपूर्ण तरीक़े से आन्दोलन जारी रखा यह बात वास्तव में अभूतपूर्व है। सत्याग्रह के, देश के स्वाधीनता संग्राम के इतिहास के एक अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में भारत छोड़ो आन्दोलन सदा अविस्मरणीय रहेगा।

Quit India Movement

From the beginning of the year 1939 the war clouds had started gathering on the horizon. And from the end of April in 1939 onwards, Mahatma Gandhi had started thinking of the next mass Satyagraha. He was deeply reflecting on its form and agenda. As the world drew closer to the Second World War, India found herself on the crossroads.



Suddenly, there was a new urgency and passion in Gandhiji's speeches and writings. While writing about the "Quit India" programme in the 'Harijan' he answers some of the questions raised by journalists. Many of his readers asked him, "Are you not inviting the Japanese to attack India by asking the British rulers to withdraw?"

Gandhiji replied in the Harijan on May 3 : "I am not. I feel convinced that the British presence is the incentive for the Japanese attack. If the British wisely decided to withdraw and leave India to manage her own affairs in the best way she could, the Japanese would be bound to reconsider their plans. The very novelty of the British stroke will confound the Japanese, dissolve the subdued hatred against the British, and the atmosphere will be set up for the ending of an unnatural state of things that has dominated and choked Indian life."



"When even the 'enemy' is in dire distress, should he not be given some quarter?" asked an Englishman. "In asking us to withdraw, are you not inviting your own people to bend the knee to Japan, knowing full well that you have not the non-violent strength as a country to resist any foreign aggression or domination?" Gandhiji replied.



One of the questions often asked is how Gandhiji, the advocate of non-embarrassment of the opponent, sponsored a movement, which involved at least some embarrassment.

Gandhiji said: 'I am not only speaking for the Congress but for all who stand for national freedom, unadulterated independence. I should tell all of them that if I said now: "No embarrassment to the British…"; therefore, if I exercised that self-suppression at this critical moment it would be suicidal.'

It was in such an atmosphere that the idea of 'Quit India' Movement was taking shape. The demand was: 'simply declare that India is free to carry on non-violently and openly the anti-war propaganda. That India is free to preach non –cooperation with the Government in their war effort, and we will have no civil disobedience.' If even this was not accepted then the Congress could not but act.

Gandhiji's argument was that in Britain, conscientious objectors of war were exempted from conscription and were even allowed to profess their faith in public but were not permitted to carry their opposition to the length of endeavouring to persuade others to abandon their allegiance to war or to discontinue their war-effort. But the situation in India was different, and Gandhiji told the Viceroy frankly that his concessions were not sufficient in the present condition of India. He declared that if the Congress was to die, it should die in the act of defending its faith in the principle of peaceful methods.

Then followed the inauguration of the Satyagraha campaign. Gandhi laid down very strict rules and drew up a pledge. He wanted 'quality' this time. He said he would not offer civil disobedience himself, as that would cause much embarrassment. He chose Vinoba Bhave, an ideal choice, as the first Satyagrahi.

When the movement overgrew its frames, becoming a form of mass struggle, Gandhiji decided to cancel this action. He did so a second time. Earlier when the impetus of the awakened masses had almost, during the non-cooperation movement, brought them to the brink of a countrywide anti-colonial uprising, and then it took a violent turn at Chauri Chaura.' Jawaharlal Nehru had resented Gandhiji's decision to withdraw the non-cooperation movement on this occasion, the launch of which he described as a 'Himalayan Blunder'.



Long ago when somebody said to Gandhi that there were no examples of mass satyagraha in history, he replied that that need not deter him. On the eve of the 1942 movement Gandhi was amidst the Karnataka workers in Bombay, one of the workers said that there was not a single instance in history where swaraj had been won by non-violence.

Gandhiji simply smiled and said: "We are writing a new history".

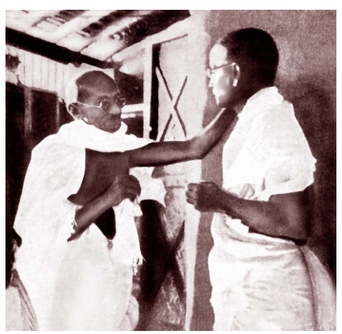

That shows that Gandhiji was not only original in the application of Satyagraha to mass conflicts but also he was intensely conscious of the fact that it was an original method.

In December 1941, Japanese planes swooped on Pearl Harbour.



It was at this time that Sir Stafford Cripps, the man who was reputed to have brought Russia into the war and was considered the likely successor to Winston Churchill, flew to India with his scheme of political reform. Sir Stafford began his work in auspicious circumstances. He was a good friend of Jawaharlal Nehru. His views on Indian problem breathed an air of freshness and his radicalism was in sympathy with the aspirations of Young India.

But what a disappointment! The Churchillian impression was stamped indelibly on the Cripps proposals. Gandhi promptly described it as a 'post-dated cheque'. Cripps, however, in his last statement maintained that he never agreed to any major departure from the present constitution and said that that the National Government proposed by the Congress would put in power an irresponsible Executive irremovable for all practical purposes. Sir Stafford left India in a huff.

At this psychological moment, Gandhi began the 'Quit India' campaign. He infused new life amongst the masses with the mantra of 'Do' or 'die'.

On the evening of August 8, when what is known as the "Quit India" resolution was passed by the all-India Congress Committee, Gandhi said: "We must look the world in the face with calm and clear eyes, even though the eyes of the world are bloodshot to-day. He told his countrymen and women to go ahead and offer yourself on the altar of ultimate sacrifice to win freedom for India.

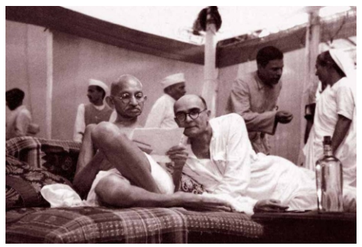

On 8 August 1942, the All India Congress Committee held its meeting in Bombay and after giving due consideration to all points of view endorsed the Working Committee's resolution. The operative part of the A.I.C.C. resolution said: "The Committee resolves, therefore, to sanction for the vindication of India's right to freedom and independence, the starting of a mass struggle on nonviolent lines on the nonviolent strength it has gathered during the last twenty two years of peaceful struggle. Such a struggle must inevitably be under the leadership of Mahatma Gandhi".



Gandhiji in his speech mentioned that he was in no hurry and that he would seek an opportunity to see the Viceroy and negotiate with him. But before the next day dawned, on 9 August Gandhiji and all the Working Committee members were arrested. Within a week every one who mattered in the organization was arrested and locked up without trial. Then followed the rule by ordinances, firings, lathi charges, and even bombings from aeroplanes were reported from some places. At some centers, people, driven to desperation, attacked railways and the police. The Government states that on the whole about 56 people succumbed to the fury of the mob.



It is estimated that more than 2000 unarmed and innocent people were shot down and about 6000 injured by the police and the military; tens of thousands wounded by lathis; about 1,50,000 were jailed and about 15 lakhs of rupees were imposed as collective fines; there is no record of tortures, burning of houses, looting and other atrocities by the police and the military.

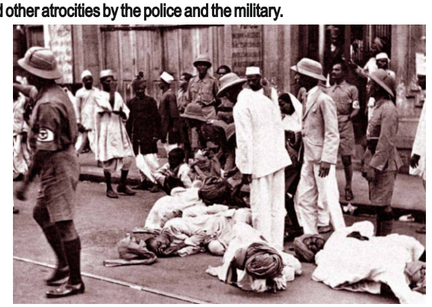

The mass awakening and mass revolt witnessed throughout India and the predominantly nonviolent way the vast masses conducted themselves during the "Quit India Movement":, apart from a few acts of unorganized violence, was something remarkable and incomparable with anything anywhere in the world. What shape the movement would have taken had Gandhiji's hands not been on the lever is another matter. The way in which people including a large number of women, a prominent name amongst them being that of Aruna Asaf Ali faced brutal violence even without his guidance and without the guidance of any important leader, and carried on the struggle for months during the Quit India movement is worth studying from the point of view of social dynamics. It will ever remain an important chapter in the history of nonviolent resistance if not of pure and unadulterated Satyagraha.

बढ़ता हुआ साम्प्रदायिक विद्वेष

कांग्रेस कार्य समिति द्वारा स्वीकार किये गये 'भारत छोड़ो' संकल्प का मुस्लिम लीग द्वारा चेतावनी एवं विरोध द्वारा स्वागत किया गया। एम.ए. जिन्ना ने कहा कि ''यह ब्रिटिश सरकार को कांग्रेस राज के समक्ष समर्पण करने के लिये मजबूर करने का एक प्रयास है''। उन्होंने 'भारत छोड़ो' अभियान को क्रुद्ध एवं

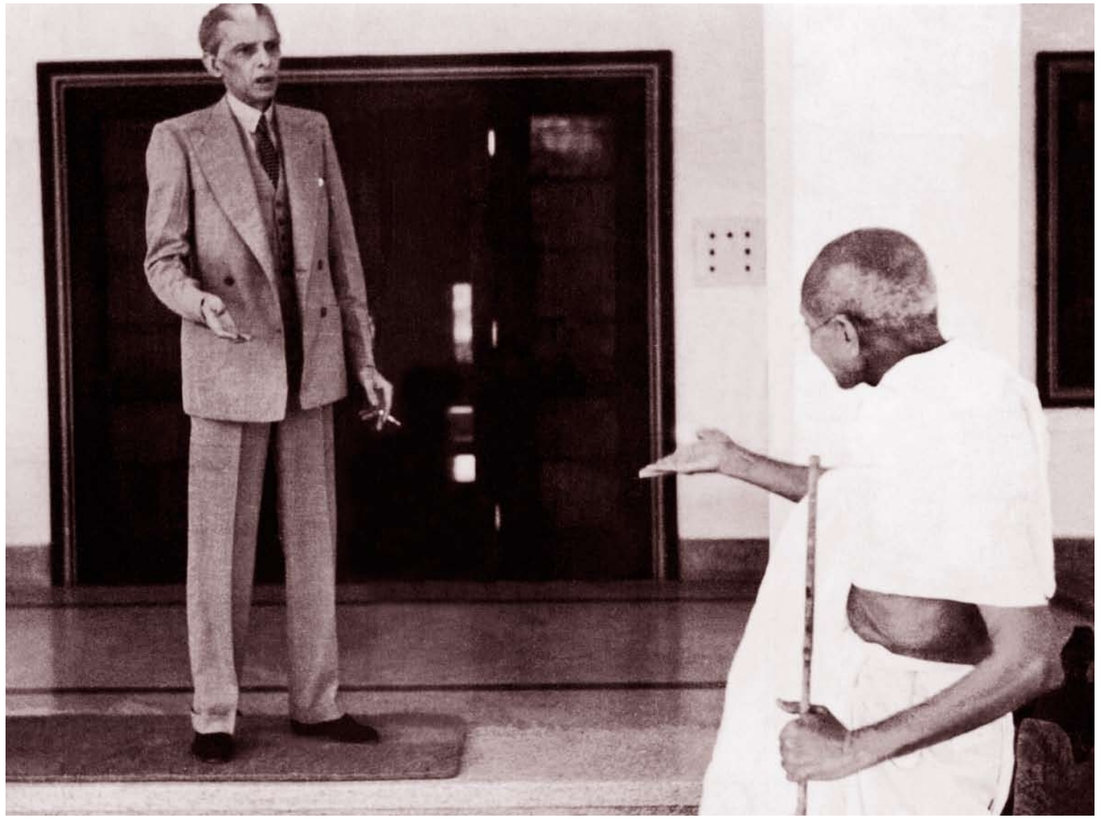

निराश मानसिकता का द्योतक बताया उन्होंने प्रश्न किया कि गांधी द्वारा ब्रिटिश सरकार और मुस्लिम भारत को दी गई चुनौती से उत्पन्न ''सर्वाधिक खतरनाक एवं गभीर स्थिति'' पर चर्चा के लिये मुस्लिम लीग की बैठक की पूर्वसंध्या पर क्या यही उनका सर्वोत्तम योगदान है ?

Growing Communal Divide

The 'Quit India' resolution adopted by the Congress Working Committee was greeted with a chorus of alarm and protest by the Muslim League. This was an attempt, said M.A.Jinnah, "to coerce the British Government to surrender to a Congress raj." He described the "Quit India" campaign as "a manifestation of an angered and desperate mentality", and asked if this was the



best contribution that Gandhi could make to India on the eve of the meeting of the Muslim League to discuss the "most dangerous and serious situation" created by Gandhi's challenge to the British Government and to the Muslim India ?



'बा' को बापू की श्रद्धांजलि

मैं यह विश्वास से कह सकता हूँ कि जनमानस का कस्तूरबा के प्रति गहरे आकर्षण का मूल कारण उनका मेरे जीवन में (कार्य में) ताने–बाने की तरह पूर्णतः समा जाना है। मैंने कभी भी उन पर इसके लिए दबाव नहीं डाला। उन्होंने स्वतः ही अपने अन्दर यह गुण विकसित कर लिया। आरम्भ में तो मैं यह जान ही नहीं पाया। अपने प्रारम्भिक वर्षों में तो मैं उन्हें एक बड़ी ही हठीली महिला के रूप में पाता था। मेरे हर आग्रह के बावजूद वे वही करती थीं जो वे चाहती थीं। इस कारण हमारे बीच कभी छोटे कभी बड़े अन्तराल तक तनाव रहता था। परन्तु जैसे–जैसे मेरा सार्वजनिक जीवन फैलता गया वैसे–वैसे मेरी पत्नी भी उसमें समाती गई। शायद भारतवर्ष की माटी पत्नी धर्म में इसी विशेषता को सर्वाधिक सम्मान देती है। चाहे जो भी अन्य कारण रहा हो मेरे विचार में यही सर्वोच्च कारण था बा की जनप्रियता का।



बा को अपने को आत्म सात करने में हमारे ब्रह्मचर्य व्रत ने विशेष सहयोग दिया। ब्रह्मचर्य व्रत बा में मेरी बनिस्पत अधिक सहज ढंग से विकसित हुआ। वह आरम्भ में तो मेरी प्रतिज्ञा से अवगत भी नहीं थीं। मैंने व्रत लिया और बा ने उसे अपना व्रत मान कर अपना लिया। इसके पश्चात् हम सच्चे मित्र के समान हो गए। जब भी मैंने अपने हठ से अपनी पत्नी को झुकाना चाहा उन्होंने अपनी दृढ़ता से मुझे सद्मार्ग दिखाया। अहिंसा की शिक्षा मैंने अपनी पत्नी से पाई। महिलाओं में सहज व्याप्त स्त्री शक्ति को भी मैंने बा से सीखा। यदि बा की प्रेरणा एवं साथ न होता तो मैं कभी भी आन्तरिक शक्ति की बुलन्दियों को नहीं छू सकता था। मेरी पत्नी मेरे अर्न्तमन को जिस प्रकार स्पन्दित करती थी उस प्रकार दुनिया की दूसरी कोई स्त्री नहीं कर पाई। वह मेरा अनमोल रत्न थी।

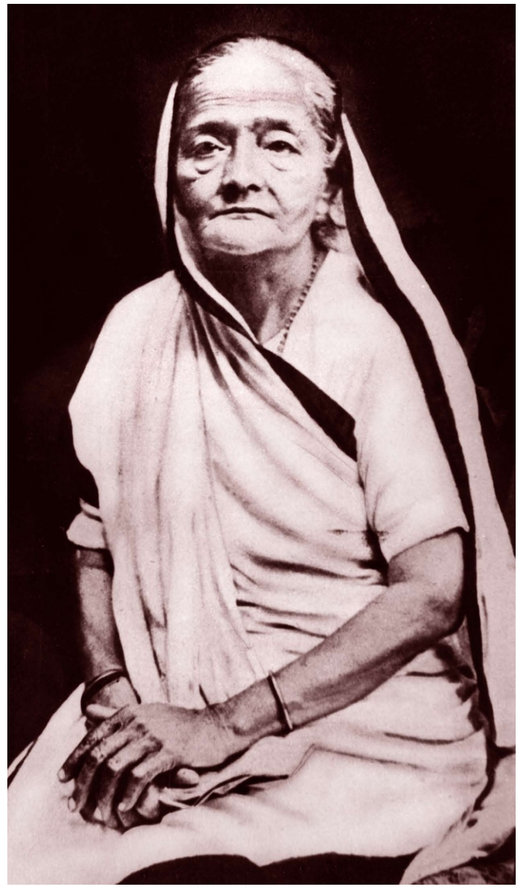



Mahatma Gandhi's Homage to Kasturba

It seems to me that the root cause, which attracted the public to Kasturba, was her ability to lose herself in me. I never insisted on this self-abnegation, she developed this quality on her own. At first I did not even know that she had it in her. According to my earlier experience, she was very obstinate. In spite of all my pressure she would do as she wished. This led to short to long periods of estrangement between us. But as my public life expanded my wife bloomed forth and deliberately lost herself in my activities…be it as it may to me this seems to be the foremost reason for her popularity.





I learnt the lesson of non-violence from my wife. When I tried to bend her to my will she resisted it with firmness and guided me on to the path of righteousness. I discovered the peculiar power *Stri-Shakti*, the distinctive virtues and capabilities of women, only through Ba. From the day when I decided to take the vow of celibacy Ba offered her complete support to me. It evolved in a more natural way in her. After this we became true friends. No other woman had attraction for me in the manner that my wife had. She was my priceless jewel.

महात्मा गांधी को 'राष्ट्रपिता' के रुप में पहली बार नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द रेडियो, रंगून से 4 जून 1944 को सम्बोधित किया

'.....यदि हमारे देशवासी अपने ही प्रयत्नों द्वारा स्वतंत्रता हासिल कर लें, अथवा ब्रिटिश सरकार आपके 'भारत छोड़ो' आन्दोलन प्रस्तावना पर अमल कर ले तो हमसे अधिक प्रसन्न कोई नहीं होगा। परन्तु हम इस आधार पर आगे बढ़ रहे हैं कि उपरोक्त दोनों ही बातें असम्भव हैं, अतएव संघर्ष अवश्यम्भावी है।

हे राष्ट्रपिता, भारतीय स्वतंत्रता के इस पवित्र युद्ध में हम आपके आशीर्वाद तथा शुभकामनाओं के प्रार्थी हैं।

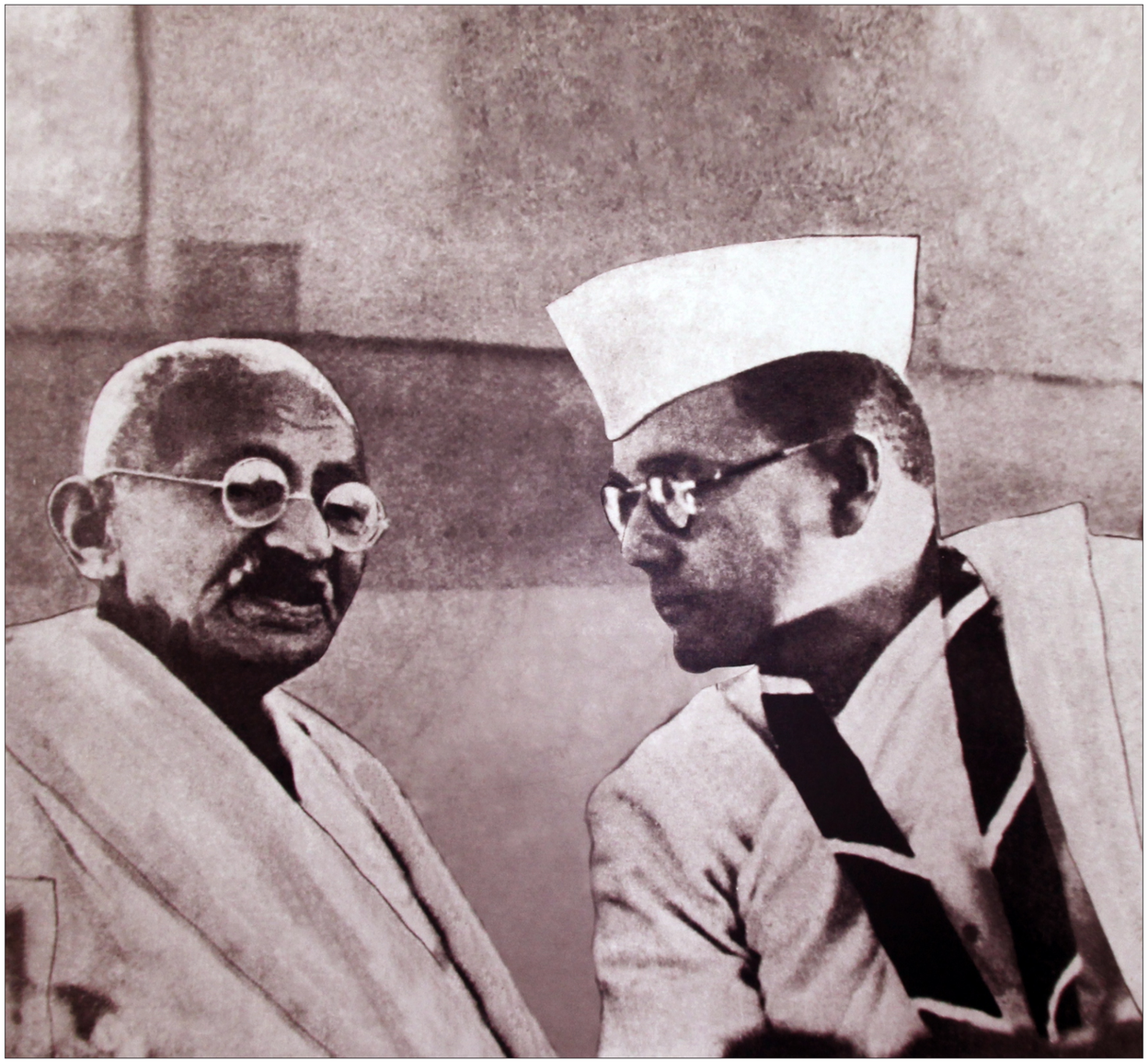

For the first time Mahatma Gandhi is addressed as the 'Father of the Nation' by Netaji Subhas Chandra Bose in his message to the Mahatma on Azad Hind Radio,Rangoon on 4th June 1944

".....Nobody would be more happy than ourselves if by any chance our countrymen at home should succeed in liberating themselves through their own efforts or by any chance, the British Government accepts your `Quit India' resolution and gives effect to it. We are, however proceeding on the assumption that neither of the above is possible and that a struggle is inevitable.

Father of our nation, in this holy war for India's liberation, we ask for your blessings and good wishes".



बा! तुम आत्म दर्शन हो

परिचित मातृ शक्ति तुम,

अपरिचित दिव्य शक्ति तुम,

व्यक्त तुम, अव्यक्त तुम,

सृष्टि रचित

चक्रित बिन्दु सूत्र तुम

जिसमें खादी वस्त्र

समझा मैने,

जिसमें शून्य विस्तार

खोजा मैंने।

खादी के आंचल में,

माटी की सुगन्ध में,

थके मानस की लोरी तुम।

सत्य सौन्दर्य की

ज्ञान बोध की

कर्म बोध की

सरल सूक्ष्म मुक्त धारा,

ज्ञात अज्ञात जननी,

बा! तुम आत्म दर्शन हो।



तारा भट्टाचार्य

शान्तिदूत

महात्मा गांधी का सम्पूर्ण जीवन करुणा और त्याग की महागाथा है। परन्तु अन्तिम कुछ वर्ष शायद उनके जीवन के सबसे उत्कृष्ट पल थे। महात्मा गांधी की वह अशान्त छवि आज भी गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की वह कविता ''यदि तुम्हारी पुकार सुन कोई भी तुम्हारा हमराही बन तुम्हारे साथ नहीं चलता, तो तुम अकेले चलो, अकेले चलो'' को मानों चरितार्थ करती है। अपने आंसुओं से बिहार और नोआखाली में साम्प्रदायिक घृणा की आग को शान्त करते बापू की वह छवि आज भी मानव हृदय पर अंकित है। उनकी उपस्थिति अज्ञान, घृणा एवं द्वेष से संतप्त विश्व हृदय को अहिंसा एवं मैत्री का संदेश देती है।



शान्तिदूत अपूर्व श्रद्धा के साथ नोआखली आए और लोगों के दिलों से द्वेष की भावना को दूर करने के लिए उन्होंने उजड़े हुए वीराने में पड़ाव डाला। गांधीजी अपनी कुटिया के द्वार पर खड़े हो गये और अपनी भावी मंज़िल की जाँच की। शान्ति यात्रा के दौरान उन्होंने हताश लोगों से बातें कीं। अहिंसा के तकनीक की यहां अग्नि परीक्षा हो रही थी। धार्मिक सहिष्णुता पर ज़ोर देते हुए गांधीजी ने कहा, 'हर प्रान्त में हर आदमी हिन्दुस्तानी है।' उन्होंने बहुसंख्यकों से यह आशा की कि वे अल्पसंख्यकों के रक्षक बनें। गांधीजी के वहां जाने से लोग निर्भय बने और धार्मिक असहिष्णुता के कारण फैला हुआ आतंक कम होता गया।

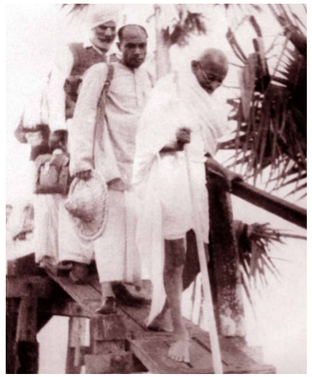

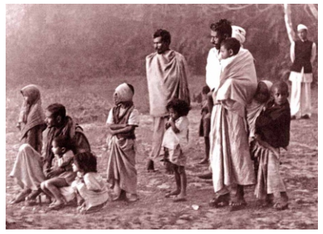

जनवरी 7, 1947 की सुबह इस यात्री ने नंगे पैर चांदीपुर से 'एक रात में एक गांव' का ऐतिहासिक यात्रा शुरु की।

राह अंधेरी थी और कठिन पथ को प्रकाशित करने के लिये उनके पास सिवाय सत्य और अहिंसा के और कुछ न था।

गांधीजी हिन्दू और मुसलमान दोनों क़ौमों को मिलाते हुए और एकता और शान्ति का संदेश फैलाते हुए गांवों की पगडंडियों पर आगे बढ़ते जाते थे।







मीलों लंबा मुश्किल रास्ता तय करते हुए गांधीजी ने 28 दिनों में अपनी यात्रा की पहली मंज़िल पार की। 5 फरवरी की सुबह उनकी यात्रा का दूसरा अध्याय शुरु हुआ। नित्य प्रतिदिन क़ौमी एकता का अथक यात्री गंगा के बीहड़ प्रदेशों को पार करता चला जा रहा था। 'तेरी पुकार सुनकर अगर कोई न आये तो अकेले ही चलते जाना... तूफ़ानी अंधेरी रात में कोई दिया न दिखाये तो दिल का दिया जलाकर अपनी राह रोशन करते जाना'...

सात सप्ताह में 116 मील चल कर गांधीजी 47 गांवों में गए और वहाँ उन्होंने साम्प्रदायिक हिंसा को करुणा से शान्त किया। 2 मार्च 1947 को गांधीजी की नोआखाली की यह महायात्रा सम्पन्न हुई और उन्होंने चांदीपुर से बिहार में हो रहे दंगों को समाप्त करने के लिए स्टीमर से प्रस्थान किया।



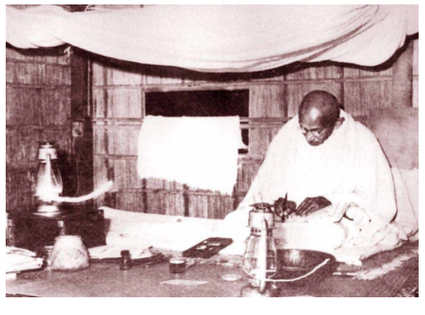

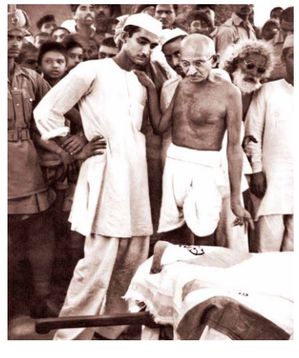

Apostle of Peace

Mahatma Gandhi's whole life is a saga of sacrifice, but the last few years of his life were, perhaps his "finest hours." A lingering image of a forlorn figure of the Mahatma personifying poet Tagore's favourite hymn "if there is none to heed your call walk alone, walk alone", remains eternally etched in the hearts of humanity. He tried to extinguish the flames of intolerance and communal violence with his tears in Bihar and Noakhali and incurred the wrath of those who loved his religion not wisely but too well. But his inspiring presence instilled sanity in the hearts and minds of the people gone insane with hatred and ignorance.



In Noakhali the pilgrim of peace ventured in faith...and buried himself in the devastated areas to purge the hearts of the people of hatred.... Mahatma Gandhi stood at the door of his hut and probed his future path. He set out on his peace plan and talked to the downhearted. His technique of non-violence was on trail....



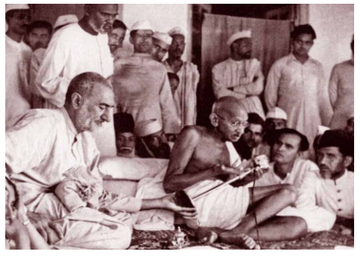

On the morning of January 7, 1947, the barefoot pilgrim commenced his historic one-night, one village march from Chandipur...the way was dark and he had naught but the twin stars of truth and non-violence to light his perilous trail.

He strolled on the narrow village-roads mingling freely with the Hindus and Muslims and expounding his gospel of communal unity and peace...to reinforce the human bond between the two communities and bring the shattered villages to sanity and composure. Emphasising the need of complete religious tolerance he maintained, "In every province, everyone is an Indian." He expected the majority to constitute itself into the guardian of the minority. In Gandhi's presence fear fled and the hold of fanatical terror loosened.

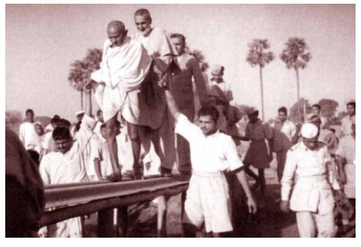



Touring through miles of difficult terrain, Gandhi finished the first stage of his tour after 28 days. On the morning of February 5, the second part of his tour commenced. Tireless in his pursuit of communal harmony, the pilgrim progressed making his way through the inaccessible delta of the 'Ganga... "If they answer not thy call, walk alone..." "If they do not hold up the light when the night is troubled with storm, with the thunder-flame of pain, ignite thine own heart and let it burn alone..."



After seven weeks' pilgrimage of about 116 miles through forty-seven villages, the epic march of Noakhali ended when Gandhi boarded the steamer at Chandipur on March, 2 on way to Bihar to still the raging fury...



"कोई यह न कहे कि
भारत के विभाजन में गांधी की सहमति थी"

अब मेरी चेष्टाओं की पवित्रता की परीक्षा की घड़ी है। राजनैतिक स्थिति का मेरा अध्ययन.... यह कहता है कि यदि विभाजन होता ही है तो वह ब्रिटिश दख़लअन्दाज़ी या ब्रिटिश राज में न हो। आज मैं ख़ुद को बिल्कुल अकेला पाता हूँ.... फिर भी, मैं जो महसूस करता हूँ वह मुझे ज़रूर कहना चाहिये.... इसके बावजूद कि मेरी सलाह का महत्व हो या न हो। मुझे साफ दिखाई दे रहा है कि हम इस मसले को ग़लत तरीके से सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं। हम शायद अभी इसके पूरे असर को महसूस नहीं करेंगे, लेकिन मुझे साफ दिखाई दे रहा है कि इस क़ीमत पर पाई गई आज़ादी का भविष्य अंधकारपूर्ण ही होगा। मेरी प्रार्थना है, कि भगवान मुझे यह दिन देखने के लिये जीवित न रखे। ईश्वर मुझे सम्पूर्ण विरोध के माहौल में भी सच बोलने की मेरी क्षमता को अडिग रखे, मुझे पवित्रता से प्राप्त पूरी शक्ति की ज़रूरत है.... ।

परन्तु, शायद अन्य सभी सही हैं और मैं ही अकेला अंधकार में भटक रहा हूँ.... मैं, शायद, यह देखने के लिये जीवित न बचूँ, पर यदि भारत और उसकी आज़ादी पर वह ख़तरा आए जिसका मुझे डर है, तो आनेवाली पीढ़ियाँ यह जान लें कि इस विचारमात्र से भी इस बूढ़ी आत्मा को कितना कष्ट हुआ था। यह कभी न कहा जाए कि गांधी की भारत के बंटवारे में सहमति थी। पर आज हर व्यक्ति आज़ादी पाने के लिये उतावला है और इसीलिये कहीं कोई दूसरी मदद भी नहीं है।

मो. क. गांधी
1 जून, 1947



Let it not be said that
Gandhi was party to India's vivisection

The purity of my striving will be put to the test only now. My reading of the political situation.....is that even if there was to be partition, it should not be through British intervention or under the British rule. Today, I find myself all alone. Nevertheless, I must speak as I feel .....regardless of whether my advice is appreciated or not. I see clearly that we are settling about this business the wrong way. We may not feel the full effect immediately, but I can see clearly that the future of independence gained at this price is going to be dark. I pray, the God may not keep me alive to witness it. In order that He may give me the strength and wisdom to remain firm in the midst of universal opposition and to utter the full truth, I need all the strength that purity can give.....

But may be, all are right and I, alone, am floundering in darkness...I shall, perhaps, not be alive to witness it, but should the evil I apprehend overtakes India and her independence be imperilled, let posterity know what agony this old soul went through thinking of it. Let it not be said that Gandhi was party to India's vivisection. But everybody is today impatient for independence. Therefore, there is no other help.

M. K. Gandhi
1 June, 1947

उप–महाद्वीप का विभाजन और स्वाधीन भारत का जन्म

बापू की वेदना का अन्त नहीं था। 5 मई 1944 को बापू ने जेल से रिहा होकर आने पर अपने ही सामने अपने जीवन भर की अर्जित पूंजी, हिन्दू–मुस्लिम एकता को बिखरते पाया। भारतवर्ष ज्वालामुखी के कग़ार पर बैठा था, तो दूसरी ओर ब्रितानिया सरकार। कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग़ के मध्य जटिल वार्ताओं का दौर चल रहा था।

22 मार्च, 1947 को लार्ड माउन्टबैटेन भारत पहुँचे और दो दिन बाद देश के नए वाइसरॉय पद की शपथ ली। उनके आते ही राजनैतिक गतिविधियों ने तेज़ी पकड़ ली। उनके लिये निर्धारित आदेश स्पष्ट था–उन्हें भारत में ब्रिटिश शासन के अन्त की व्यवस्था करनी थी। जवाहरलाल नेहरु के साथ अपनी पहली मुलाकात में उन्होंने कहा – "मैं चाहता हूँ कि आप मुझे अन्तिम वाइसरॉय न समझें .....बल्कि नए भारत की राह दिखाने वाला प्रथम व्यक्ति समझें।" 2 अप्रैल 1947 को लन्दन अपनी पहली रिर्पोट भेजते हुए उन्होंने लिखा – "यहां पर बहुत दुःख छाया हुआ है ...कैबिनेट में भयानक साम्प्रदायिक मतभेद हैं और हर पार्टी की अपनी–अपनी सोच है।"

परन्तु महात्मा गांधी ने वाइसरॉय के साथ अपनी पहली भेंट में ही यह स्पष्ट कर दिया था कि वे भारत के विभाजन के विरुद्ध हैं और यह सुझाव भी दिया कि श्री जिन्ना को स्वाधीन भारत का प्रमुख नेता बनाया जाए। इस सुझाव को कांग्रेस ने ही नहीं श्री जिन्ना ने भी यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि "इसमें अधिकारों के बिना उत्तरदायित्व का बोझ है।" वे चाहते थे कि "शीध्र ही निर्णय लिया जाए जो शल्य चिकित्सा के समान हो।"

मई का गरम महीना राजनैतिक कूटनीति से और भी तप रहा था। माह के अन्त तक ब्रिटिश सरकार ने स्वाधीनता और विभाजन की योजना को अपनी स्वीकृति दे दी। इस योजना के अनुसार भारत और पाकिस्तान को सत्ता सौंपने का प्रावधान था और 1935 का भारत सरकार विधान उनके संविधान का काम करेगा। भविष्य के प्रति सभी के मन में अनेकों आशंकाएं थीं।

इसी बीच गांधीजी 25 मई को फिर दिल्ली वापस आ गए थे और बड़े कड़े शब्दों में विभाजन का विरोध कर रहे थे। 2 जून को नयी ड्राफ्ट योजना देश के नेताओं को दे दी गई। नेहरुजी ने कहा कि कांग्रेस से इस ड्राफ्ट को पूरा समर्थन मिलना तो मुश्किल है – फिर भी इसे स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं है। कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने वाइसरॉय को 3 जून की मध्यरात्रि को इस योजना की सहमति दे दी।

4 जून 1947 को लार्ड माउन्टबैटन ने पहला संकेत दिया कि 15 अगस्त को दोनों देशों को सत्ता सौंपी जाएगी। उस दिन प्रार्थना सभा में गांधीजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि "उन्हें भारत के विभाजन का बहुत गहरा दुःख है।"

जैसे–जैसे 15 अगस्त नज़दीक आने लगा वे हतोत्साहित और अपने को बहुत अकेला महसूस करने लगे। अतः उन्होंने सेवाग्राम ही लौट जाना अधिक उचित समझा। परन्तु शीध्र ही उन्हें कलकत्ता आना पड़ा। 15 अगस्त 1947 को वे कलकत्ता में घृणा और हिंसा की साम्प्रदायिक आग को अपने आँसुओं से बुझाने पहुंचे। जीवन के अन्तिम क्षण तक वे देश और प्रान्तों के विभाजन का विरोध करते रहे, जो अपने साथ लाया, धर्म का, देश का और मानवता का बंटवारा।









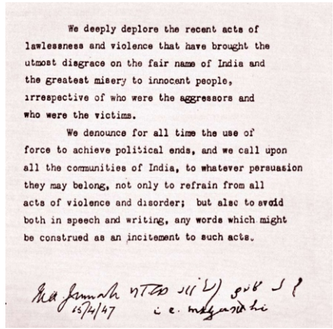

We deeply deplore the recent acts of lawlessness and violence that have brought the utmost disgrace on the fair name of India and the greatest misery to innocent people, irrespective of who were the aggressors and who were the victims.

We denounce for all time the use of force to achieve political ends, and we call upon all the communities of India, to whatever persuasion they may belong, not only to refrain from all acts of violence and disorder; but also to avoid both in speech and writing, any words which might be construed as an incitement to such acts.









The Statesman

NDIA BILL PRESENTED IN PARLIAMENT

READING LASTS ONLY A SECOND

BRITISH RESPONSIBILITY TO CEASE ON AUG. 15

KING CANNOT DISALLOW ANY PROVINCIAL ACT

SECRETARY OF STATE'S FUNCTIONS TO CONTINUE TEMPORARILY

BALKANS TEST CASE FOR U.N.O.

TASK OF RESTORING PEACE IN S. E. EUROPE





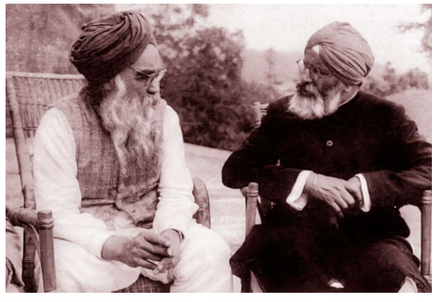






Founder: Pherozeshah Mehta Editor: Syed Abdullah Brelvi

VOL. XXVII NO. 239 BOMBAY: TUESDAY, OCTOBER 10, 1939 PRICE: ONE ANNA

Declare India As Independent Nation

Congress Call To Britain

FORTIFICATION ON NEW REICH BORDER

SOVIET PROPOSALS TO LITHUANIA

Repatriation Of Germans From Baltic And Balkan Countries






The Times of India

BIRTH OF INDIA'S FREEDOM

NATION WAKES TO NEW LIFE

Mr. Nehru Calls For Big Effort From People

"INCESSANT STRIVING TASK OF FUTURE"

Assembly Members Take Solemn Pledge

WILD SCENES OF JUBILATION IN DELHI

ENTIRE DELHI KEPT AWAKE TO WITNESS THE HISTORIC EVENT OF USHERING IN THE FREEDOM OF INDIA AT THE HOUR OF MIDNIGHT.

STATE VISIT TO KARACHI

LORD MOUNTBATTEN GREETS PAKISTAN

Mr. Jinnah Re-Affirms Firm Friendship With Britain

FRENZIED ENTHUSIASM IN BOMBAY

Crowds In Festive Mood

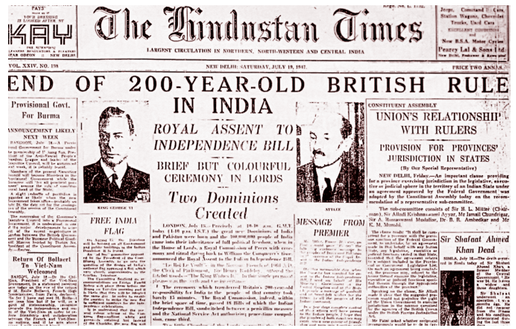
The Hindustan Times

END OF 200-YEAR-OLD BRITISH RULE IN INDIA

ROYAL ASSENT TO INDEPENDENCE BILL

BRIEF BUT COLOURFUL CEREMONY IN LORDS

Two Dominions Created

UNION'S RELATIONSHIP WITH RULERS

PROVISION FOR PROVINCES' JURISDICTION IN STATES

FREE INDIA FLAG

MESSAGE FROM PREMIER

Sir Shafaat Ahmed Khan Dead


The Hindustan Times

DIVISION OF ARMED FORCES ON COMMUNAL LINES

INDIA GETS 32 NAVAL VESSELS, PAKISTAN 16

NO DECISION YET ON AIR FORCE

MOLOTOV'S PLAN TO FORM EASTERN BLOC

PRO-SOVIET NATIONS SUSPICIOUS OF ANGLO-FRENCH MOVE

INDIA ACT OF 1935 BEING REMODELLED

CHINESE REDS FACING TOTAL WAR











Partition of the Subcontinent and the Birth of Independent India

On his release on May 5, 1944, Gandhiji found his life-long dream of communal unity lying in shambles and India sitting on the edge of a volcano in the midst of tortuous negotiations between the British, Congress and the Muslim League.

On 22nd March, 1947 Lord Mountbatten arrived in India and two days later sworn in as the new Viceroy. His arrival intensified the moves and countermoves. He had an extraordinary assignment and his brief appeared to be clear-**to arrange the termination of British rule in India.** During his first meeting with Jawaharlal Nehru, the Viceroy Mountbatten said – "I want you to regard me not as the last Viceroy…but as the first to lead the way to new India". The Viceroy in his very first personal report sent to London on 2nd of April wrote—"The scene here is one of unrelenting gloom…the Cabinet is fiercely divided on communal lines and each party has its own solution".

Mahatma Gandhi in his very first meeting with the Viceroy made it clear **he was against the breakup of India** and suggested that M.A. Jinnah head the government after independence. This, neither found the approval of the Congress, nor M.A. Jinnah "who rejected Gandhiji's proposal saying that it entailed responsibility without authority." He favoured a "quick decision with a surgical precision."

The hot month of May was made more tortuous by the ongoing meetings and negotiations. The month ended with the British Government giving its approval for the new plan for independence and partition. The plan provided that power would be transferred to India and Pakistan as Dominions and that the Government of India Act of 1935 would serve as their respective Constitution. Everyone was apprehensive about the future.

In the meanwhile, Mahatma Gandhi was back in Delhi on 25th May and protested against the proposed division of the motherland. On 2nd June, copies of the new Draft Plan were given to the leaders. Jawaharlal Nehru said that while there could never be "complete approval" of the plan by Congress, on balance the party accepted it. Congress Working Committee's acceptance of the plan was communicated to the Viceroy at quarter past midnight on the 3rd of June.

On 4th June Lord Mountbatten gave the first informal indication that the 15th August would be the likely date for the actual transfer of power to the two new Dominions. Mahatma Gandhi in his prayer meeting on June 4, said, **"he regretted the partition of India."**

As the day of reckoning grew closer, Gandhiji felt defeated and forsaken. He decided to return to Sevagram. On 15 August 1947, he was in Calcutta fighting "fire of hatred and violence with his tears." But soon he had to leave for Delhi. Till the end he remained opposed to both the partition of India as well as the provinces, which brought in its wake breakup of geographical boundaries, religion and humanity.

भारत की स्वतंत्रता के सूत्रधार

आज के दिन हमारा ध्यान इस स्वतंत्रता के सूत्रधार हमारे राष्ट्रपिता की ओर जाता है जिन्होंने स्वयं में भारत की प्राचीन भावनाओं का समावेश करते हुए स्वतंत्रता की मशाल को ऊपर उठाया और उसे प्रज्जवलित कर हमारे चारों ओर व्याप्त अंधकार को दूर भगाया। हम प्रायः उनके अयोग्य अनुयायी रहे हैं और उनके द्वारा दिये गये संदेश से



भटक गये हैं। किन्तु केवल हम ही नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियाँ इस संदेश को याद रखेंगी और अपने हृदय पटल पर भारत के इस महान् सपूत के विश्वास, शक्ति, साहस और विनम्रता से ओत प्रोत छवि को सहेज कर रखेंगी।

जवाहरलाल नेहरु,
15 अगस्त 1947

Architect of India's Freedom

On this day, our first thoughts go to the architect of this freedom, the Father of our Nation, who, embodying the old spirit of India, held aloft the torch of freedom and lighted up the darkness that surrounded us. We have often been unworthy followers of his and have strayed from his message, but not only we, but succeeding generations will remember this message and bear the imprint in their hearts of this great son of India, magnificent in his faith and strength and courage and humility.

Jawaharlal Nehru,
August 15, 1947



भारत का विभाजन

सुविख्यात अमरीकी छायाकार मार्गरेट बोर्क व्हाइट का जन्म 1904 में न्यू यार्क के ब्रौंक्स शहर में हुआ। बचपन से ही छायाकारिता में उनकी विशेष रुचि स्पष्ट झलकती थी। वे सिगार के खाली डब्बों को कैमरा बना कर तस्वीरें खींचने का खेल खेला करती थीं। उन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय में क्लैरेंस व्हाइट को गुरु मानकर छायाकारिता का विधिवत् अध्ययन किया और फिर क्लीवलैंड में अपना स्टूडियो बनाया। यहां उन्होंने "आर्कीटेक्चरल फोटोग्राफी" में विशेषता प्राप्त की। 1929 में बोर्क व्हाइट टाइम पत्रिका से जुड़ीं। बोर्क व्हाइट ने मोहम्मद अली जिन्ना और महात्मा गांधी, दोनों के छाया चित्र कई बार लिए थे। गांधी की हत्या के कुछ ही घण्टों पहले बोर्क व्हाइट ने उनकी आखिरी तस्वीर खींची थी। मार्गरेट बोर्क व्हाइट के रोमांचक जीवन का अंत 1971 में हुआ। विश्व उन्हें 20 वीं सदी की एक महत्वपूर्ण छायाकार के रुप में ही नहीं बल्कि छाया पत्रकारिता की प्रणेता के रुप में भी याद











करता है।

ये सभी चित्र फोटोग्राफर मार्गरेट बोर्क व्हाइट द्वारा लिये गये हैं। ये चित्र 'लाइफ' पत्रिका में छापे गए थे। वर्ष 1946–47 में वे भारत में ही थीं तथा उन दुःखदायी, त्रासदी भरे दिनों को उन्होंने अपने कैमरे में उतारा था। शरणार्थियों की तकलीफ, बंटवारे की हिंसक गतिविधियाँ, हत्याएँ, बलात्कार सभी कुछ का साक्षी था उनका कैमरा। उन सुलगते पलों के विषय में उन्होंने लिखा

"इतिहास में यह एक अविस्मरणीय घटना थी – जुड़वां देशों – भारत तथा पाकिस्तान का जन्म। यह एक ऐसा जन्म था जो अपने साथ लाया संघर्ष, दुःख, हिंसा, रक्तपात और एक ऐसा बंटवारा जिसमें लाखों लोग बेघर हो गए, लाखों इतिहास के पलक झपकते ही क्रूरता से कत्ल कर दिये गए।"

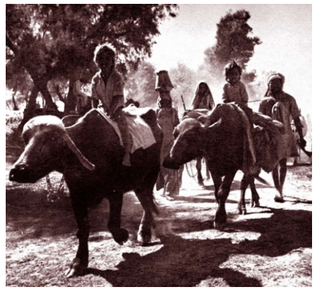

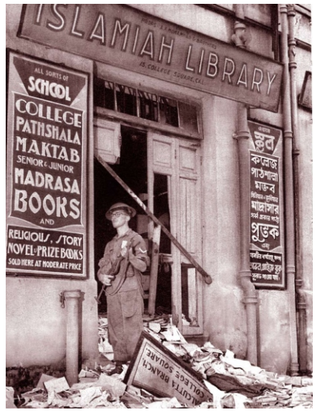

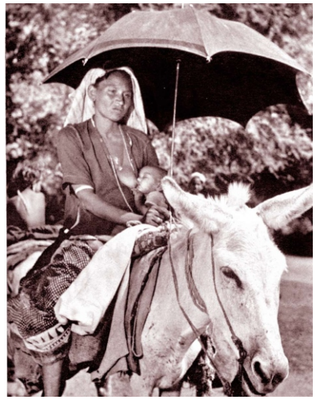



Partition of India

The celebrated American photographer Margaret Bourke-White – was born in 1904, in the Bronx, New York. Her interest in photography began as a young girl, when she would pretend to take photographs with an empty cigar box. After studying photography under Clarence White at Columbia University, she opened a studio in Cleveland where she specialized in architectural photography. In 1929, Bourke-White was recruited by *Time* magazine. She photographed both Muhammed Ali Jinnah and Mahatma Gandhi several times, taking her last picture of Gandhi hours before he was assassinated. She died in 1971, after a life full of adventure, pioneering a





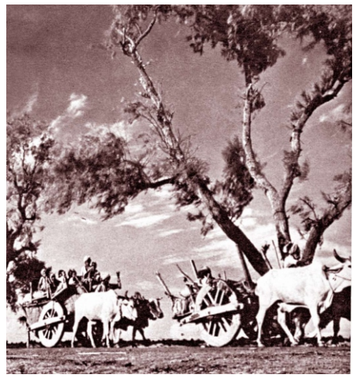





new art form: photo journalism. She remains one of the most important photographers of the 20th century.

These photographs were taken by the Margaret Bourke-White. These images appeared in *Life* magazine. She travelled through India in 1946-47, recording those horrific days of slaughter, mass rape and millions who became refugees overnight. As one who recorded those searing images, she writes,

"It was a rare event in the history of nations: the birth of twins—India and Pakistan. It was a birth accompanied by strife and suffering, the bloodiest, most traumatic parting ever recorded, 10 million refugees, nearly a million butchered in a blink of history's eye."

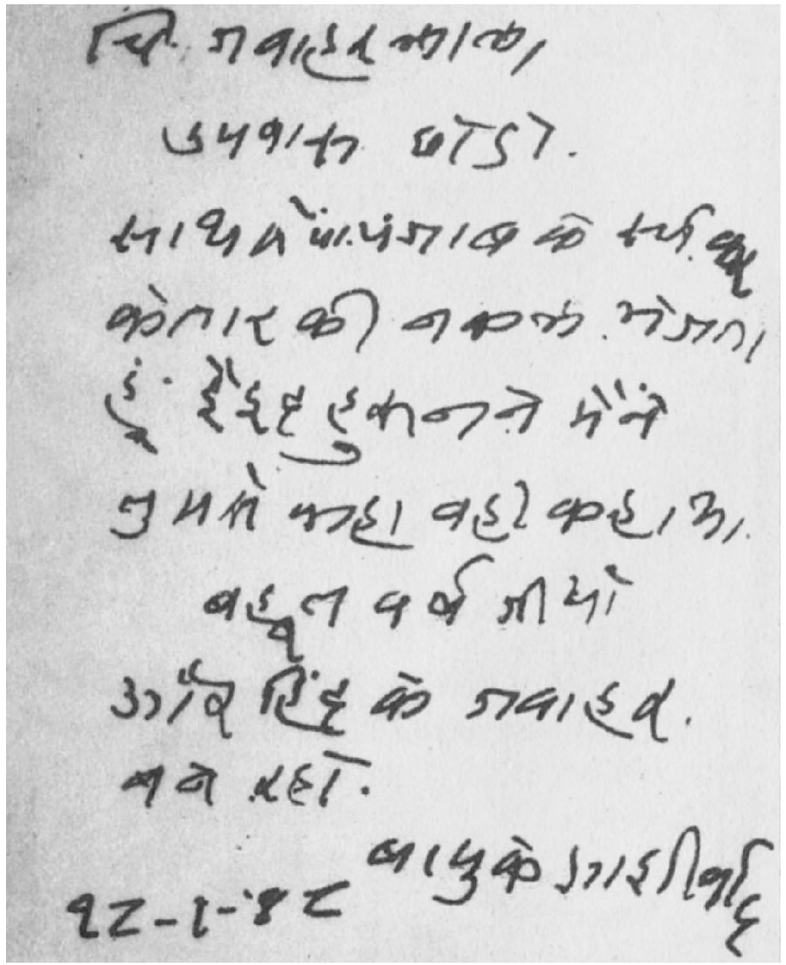

MY DEAR JAWAHARLAL,

Give up your fast.

I am sending herewith a copy of the telegram received from the Speaker of Pakistan Punjab. Sayeed Harun had said exactly what I had told you.

May you live long and continue to be the jewel of India!

Blessings from

BAPU
18.1.48

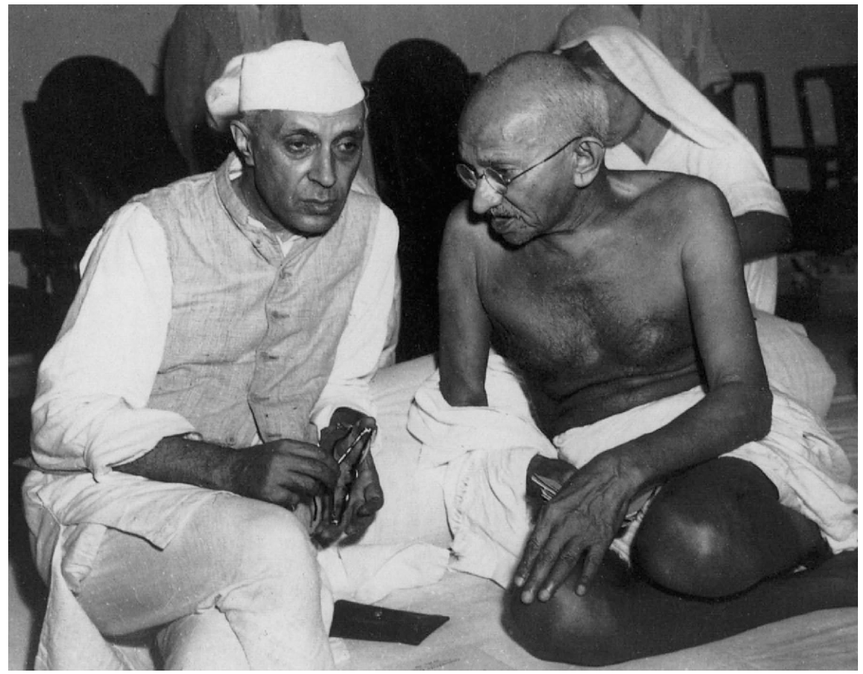

SECTION - II

CONSTRUCTIVE PROGRAMME

रचनात्मक कार्यक्रम : इसका अर्थ एवं महत्व

गांधीजी प्रतीक थे भारत की शाश्वत, चिरन्तन आत्मा के। अपने 'रचनात्मक कार्यक्रम' द्वारा उन्होंने भारत तथा पूरी मानवता के लिये एक क्रान्तिकारी मसौदा तैयार किया। इस कार्यक्रम के द्वारा उन्होंने एक आदर्श समाज की परिपूर्ण कल्पना तथा निर्माण की प्रक्रिया हमें दी। यही वह आधार था जो व्यक्ति के भीतर परिवर्तन द्वारा सामाजिक परिवर्तन की दिशा में हमें राह दिखाता है। इस प्रक्रिया में व्यक्तिगत तथा सामाजिक बदलाव साथ–साथ घटित होते हैं तथा एक दूसरे के प्रतिपूरक होते हैं। 'रचनात्मक कार्यक्रम' द्वारा गांधीजी जनता को स्वाधीनता प्राप्ति के बाद के भारत–निर्माण के लिये तैयार कर रहे थे। इस परिकल्पना के बीज उनके जीवन में बहुत पहले जॉन रस्किन की पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' से ही पड़ गए थे जिन के क्रान्तिकारी विचारों ने उनके हृदय में 'सर्वोदय' को जन्म दिया। इस ध्येय को पाने के लिये समाज के सम्पूर्ण ढांचे को बदलना होगा। अहिंसक समाज का अन्य कोई आदर्श हो ही नहीं सकता, अतः सामाजिक बदलाव सुनियोजित विकास द्वारा सम्भव होगा, हिंसापूर्ण गतिविधियों से नहीं। वे मानते थे कि सामाजिक संस्थान "व्यक्तियों के विचारों को नैतिक मूल्य प्रदान करने की अभिव्यक्ति है।" महात्मा गांधी जानते थे कि उनके विचार तथा आदर्शों का पालन उनकी सहजतापूर्ण सादगी के कारण ही कई बार कठिन हो जाता था। "यह मेरा सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य है कि मैं विश्व को आश्चर्यचकित करता रहा हूँ। कई बार नए प्रयोग अथवा नए तरीके से किये जा रहे प्रयोग भ्रान्तियाँ भी पैदा कर देते हैं।"

''रचनात्मक कार्यक्रम को सत्य एवं अहिंसा के माध्यम से ''पूर्ण स्वराज'' की रचना का आधार कहा जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। आप मेरा विश्वास करें हम रचनात्मक कार्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं को अंजाम देने में जितना विलम्ब करेंगें या अनमने भाव से अपनाएंगे स्वराज हमसे उतना ही दूर होता जायेगा। पूर्ण स्वराज की स्थापना अहिंसा एवं आत्म–शुद्धि के बिना असम्भव है। इसके लिए निम्नलिखित मुद्दों पर आस्था अनिवार्य है :

साम्प्रदायिक एकता

अस्पृश्यता निवारण

नशाबन्दी

खादी

अन्य ग्रामोद्योग

सफाई अभियान

बुनियादी तालीम

प्रौढ़ शिक्षा

महिलाओं का उत्थान





स्वास्थ्य एवं सफाई की शिक्षा

प्रादेशिक भाषाएं

राष्ट्रीय भाषा

आर्थिक समानता

किसान

मज़दूर

आदिवासी

कुष्ठ रोगी

विद्यार्थी

















Constructive Programme: Its Meaning and Place

Mahatma Gandhi symbolized the eternal soul of India. Through the "Constructive Programme" he set an agenda for a revolution in India and subsequently for the entire mankind. Through this programme he presented a fairly comprehensive vision of the kind of society he had in his mind. It was the blue-print for inner change in the individual, which would subsequently bring about social change. It was a process in which individual change and social change run parallel to each other, a simultaneous process and not independent of each other. Through the 'Constructive Programme' Gandhiji was preparing the masses for the post independence India. The seed of this vision was sown early in his life when he came in contact with the views of John Ruskin, through the book 'Unto this Last'. To actualise this ideal into practice requires the reconstruction of the entire social order. A society based on non-violence cannot nurture any other ideal. Social change must be evolutionary and not violent or disruptive. Social institutions are "the visible expression of moral values that mould the minds of individuals." Mahatma Gandhi knew that his ideas and ideals are difficult to follow because of their inherent simplicity and rightly said, "It has been my misfortune or good fortune to take the world by surprise. New experiments, or old experiments in new style must sometimes engender misunderstanding".

The Constructive Programme may otherwise and more fittingly be called construction of "poorna swaraj" or complete independence by truthful and non-violent means. Believe me that swaraj will be delayed in proportion to our failure and half-heartedness in carrying out the different items of the Constructive Programme. It is impossible to attain swaraj non-violently unless there is self-purification. *This requires faith in the following items:*

Communal unity

Removal of untouchability

Prohibition

Khadi

Other village industries

Village sanitation

Basic education

Adult education

Emancipation of women

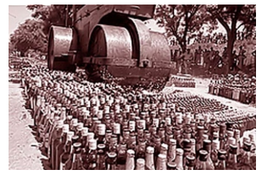

Education in health & hygiene

Provincial languages

National languages

Economic equality





Peasants

Labour

Tribals

Leprosy patients

Students



भारत का स्वराज

यह कहा गया है कि भारत का स्वराज बहुसंख्यकों अर्थात् हिंदुओं का शासन होगा। इससे बड़ी भ्रांति और कोई नहीं हो सकती। यदि ऐसा हो तो मैं उसे स्वराज मानने से इंकार कर दूंगा और अपनी पूरी शक्ति के साथ उसका विरोध करूंगा....क्योंकि मेरी दृष्टि से हिंद के स्वराज का अर्थ है सब लोगों का शासन, न्याय का शासन। इस शासन में मंत्री चाहे हिंदू हों, मुसलमान हों या सिख हों और विधान सभाओं के सदस्य चाहे केवल हिंदू हों, केवल मुसलमान हों अथवा किसी अन्य समुदाय के हों, सबको निष्पक्ष न्याय करना होगा।

मो. क. गांधी

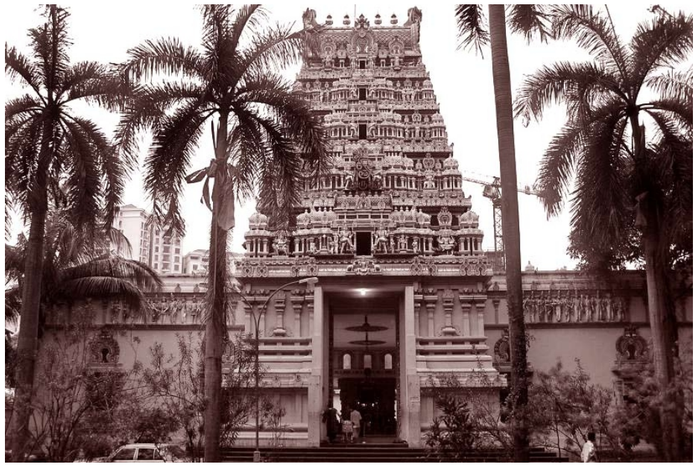



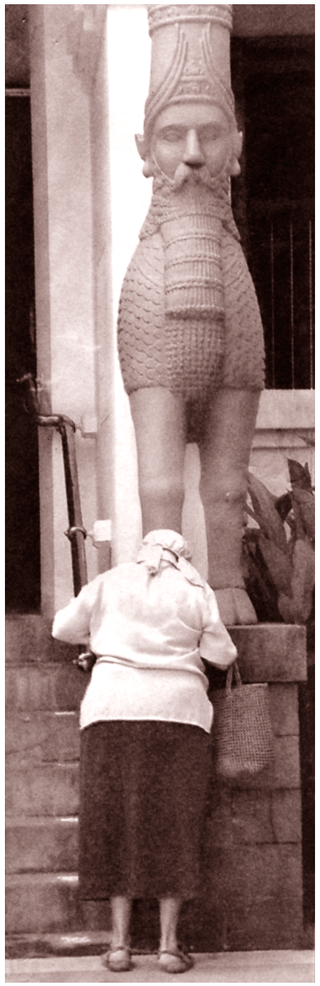









Indian Swaraj

It has been said that Indian Swaraj will be the rule of the majority community, i.e., the Hindus. There could not be a greater mistake than that. If it were to be true, I, for one, would refuse to call it Swaraj and would fight it with all the strength at my command, for to me, Hind Swaraj is the rule of all people, is the rule of justice. Whether, under rule, the ministers were Hindus or Mussalmans or Sikhs and whether legislatures were exclusively filled by the Hindus or Mussalmans or any other community, they would have to do even-handed justice.

M. K. Gandhi

स्वच्छता

हमने राष्ट्रीय या सामाजिक सफाई को न तो ज़रूरी गुण माना और न ही उसका विकास किया। इस बुरी आदत के कारण हम अपने ढंग से नहा–भर तो लेते हैं, मगर जिस नदी, तालाब या कुँए के किनारे हम श्राद्ध या वैसी ही दूसरी कोई धार्मिक क्रिया करते हैं, और जिन जलाशयों में पवित्र होने के विचार से हम नहाते हैं, उनके पानी को बिगाड़ने या गन्दा करने में हमें कोई हिचक नहीं होती। हमारी इस कमज़ोरी को मैं एक बड़ा दुर्गुण मानता हूं। इस दुर्गुण का ही यह नतीजा है कि हमारे गांवों और शहरों की, हमारी पवित्र नदियों के पवित्र तटों की आज लज्जाजनक दुर्दशा है और गन्दगी से पैदा होने वाली बीमारियां हमें भोगनी पड़ती हैं।

मो. क. गांधी





Sanitation

A sense of national or social sanitation is not a virtue among us. We may take a kind of a bath, but we do not mind dirtying the well or the tank or the river by whose side or in which we perform ablutions. I regard this defect as a great vice which is responsible for the diseases that spring from insanitation, because of the disgraceful state of our villages, our towns and the banks of the sacred rivers.

M. K. Gandhi

स्वदेशी और ग्राम स्वराज

स्वदेशी का प्रण महात्मा गांधी के ग्राम–स्वराज की परिकल्पना को साकार स्वरूप देने के लिसे अत्यन्त महत्वपूर्ण था। उनका कहना था "स्वदेशी का प्रण नितान्त आवश्यक है। मैं आपसे कहता हूँ कि आप अपने अस्तित्व के एक पवित्र नियम को तोड़ते हैं जब आप अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अपने पड़ोसी को छोड़कर अन्यत्र जाते हैं ..... यदि हम स्वदेशी विचारधारा को अपनाएँ तो यह हमारा, आपका कर्तव्य होगा कि हम उन पड़ोसियों को ढूंढें जो हमारी आवश्यकताएँ पूरी कर सकें और हम इस दिशा में उनकी सहायता कर सकें। इस प्रकार भारत का प्रत्येक ग्राम आत्म–निर्भर इकाई बन जाएगा तथा केवल उन्हीं वस्तुओं का विनिमय करेगा जो स्थानीय रूप से उपलब्ध न हो सकें।"

इसमें सन्देह नहीं है कि लघु उद्योग राष्ट्रीय सम्पदा में वृद्धि का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। मुझे इसमें भी सन्देह नहीं है कि सच्ची स्वदेशी भावना अपने देश के लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देने में निहित है। यही एक मात्र साधन है जिससे करोड़ों बेरोज़गार युवाओं के भीतर छुपी हुई रचनात्मक योग्यता को बढ़ावा मिलेगा तथा उन्हें रोज़गार भी मुहैया होगा। इससे उस ऊर्जा की भी बचत होगी जो आज व्यर्थ जा रही है। यह अन्धेरे तथा लाचारी में बसे गांवों की झोंपड़ियों में आशा की किरण का सन्देश पहुंचाएगा। यह एक विनाशकारी नहीं, रचनात्मक कार्यक्रम होगा।

मो. क. गांधी









Swadeshi and Gram Swaraj

The adoption of the vow of Swadeshi was integral to Mahatma Gandhi's strategy for the revival of Gram Swaraj. He said, vow of Swadeshi is a necessary vow. I suggest to you we are departing from one of the sacred laws of our being when we leave our neighbour and go out somewhere else in order to satisfy our wants…If we follow the Swadeshi doctrine, it would be your duty and mine to find out neighbours who can supply our wants and to teach them to supply them where they do not know how to proceed, assuming that there are neighbours who are in want of healthy occupation. Then, every village of India will almost be a self-supporting and self-contained unit, exchanging only such necessary commodities with other villages as are not locally productive.

I have no doubt in my mind that we add to the national wealth if we help the small-scale industries. I have no doubt also that true Swadeshi consists in encouraging and reviving these small-scale industries. That alone can help the dumb millions. It also provides an outlet for the creative faculties and resourcefulness of the people. It means direct employment for the unemployed millions. It may harness all the energy that at present runs to waste. It holds the hope to bring a ray of light into the dark dungeons, miscalled cottages of the villagers. This is a constructive, not a destructive programme.

M. K. Gandhi







प्रदूषित पर्यावरण

आज शुद्ध जल, शुद्ध माटी और शुद्ध वायु हमारे लिए प्रायः अपरिचित हो गए हैं। हम आकाश और सूर्य के अपरिमेय मूल्य को नहीं पहचानते। अगर हम पंच तत्वों का बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग करें और सही तथा संतुलित भोजन करें तो हम युगों का काम पूरा कर सकेंगे। इस ज्ञान के अर्जन के लिए न डिग्रियों की आवश्यकता है, न करोड़ों रूपयों की। इसके लिए केवल ईश्वर में अटूट आस्था चाहिए, सेवा करने का उत्साह चाहिए, पंचतत्वों से परिचय चाहिए और आहारविज्ञान की जानकारी चाहिए। इन्हें विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में समय बर्बाद किए बिना भी अर्जित किया जा सकता है।

मो. क. गांधी







Environmental Pollution

Today, pure water, good earth, fresh air are unknown to us. We do not know the inestimable value of ether and the sun. If we make wise use of these five powers and if we eat the proper and the balanced diet, we shall have done the work of the ages. For acquiring this knowledge, we need neither degrees nor crores of money. What we need is a living faith in God, a zeal for service, an acquaintance with the five powers of nature and knowledge of dietetics. All this can be acquired without wasting time in schools and colleges.

M. K. Gandhi

''यदि गांव नष्ट होते हैं तो भारत का भी विनाश हो जाएगा''





भारत अपने सात लाख गांवों में बसता है–इन दीन–हीन, छोटे–छोटे और दूर–दराज़ के गांवों की आबादी मुश्किल से सैकड़ों में और कभी–कभी तो सिर्फ सौ–पचास में होती है। मैं ऐसे ही किसी गांव में जाकर बसना चाहूंगा। असली भारत, मेरा भारत, वही है। हम एक ग्रामीण सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं। अतः हमें एक आदर्श नागरिक से पहले एक आदर्श ग्रामवासी बनना होगा।

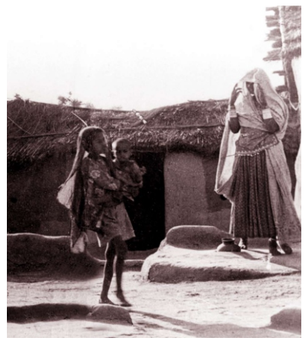

मान लीजिए, मैं एक कोल्हू लेकर गांव में जाकर बस जाता हूँ तो मैं 15–20 रूपये माहवार कमाने वाला कोई साधारण तेली नहीं होऊंगा। मैं तो एक महात्मा तेली होऊंगा। मैंने यहां 'महात्मा' शब्द का प्रयोग विनोद के लिए किया है; मेरा असली आशय तो है कि तेली के रूप में मैं ग्रामवासियों के अनुकरण के लिए एक आदर्श बन जाऊंगा। मैं ऐसा तेली होऊंगा जिसे गीता और कुरान की जानकारी है। मैं इतना पढ़ा–लिखा होऊंगा कि उनके बच्चों को शिक्षा दे सकूं । मैं उन्हें कताई सिखाऊंगा और जब वे मुझ से किसी बुनकर को लाने के लिए आग्रह करेंगे तो मैं उन्हें उसी प्रकार बुनकर लाकर दूंगा जिस प्रकार मैंने उन्हें शिक्षक लाकर दिया है। यह बुनकर उन्हें सिखायेगा कि वे अपना कपड़ा किस प्रकार बुन सकते हैं।

मेरी शिक्षा पद्धति बुद्धि, शरीर और आत्मा, तीनों का विकास करती है। इसकी तुलना में, सामान्य शिक्षा पद्धति केवल बुद्धि की ओर ध्यान देती है। वहां के साधारण लोगों तक आप उच्च योग्यता–प्राप्त चिकित्सक और अस्पताली साज–सामान नहीं पहुंचा सकते। उनकी आशा का आधार तो सरल प्राकृतिक उपचार और रामनाम ही होता है। मैं उन्हें स्वास्थ्य–रक्षा और सफाई के महत्व के प्रति जागरूक करूंगा और जब वे मुझ से कहेंगे कि मैं उनके लिए एक मेहतर की व्यवस्था कर दूं तो मैं कहूंगा, "मैं आपका मेहतर हूँ और आपको इस काम की शिक्षा मैं दूंगा।"





मेरी भौतिक आवश्यकताओं के लिए मेरा गांव ही मेरी दुनिया है, परन्तु मेरी आध्यात्मिक आवश्यकताओं के लिए पूरा विश्व मेरा गांव है।

मो. क. गांधी

"If Villages perish, India will perish too"

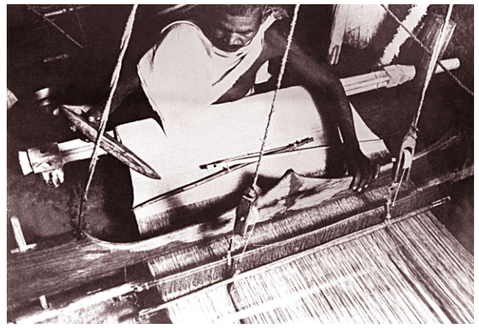

India lives in her seven lakhs of villages-obscure, tiny, out-of-the-way villages, where the population in some cases hardly exceeds a few hundred, very often not even a few score. I would like to go and settle down in some such village. That is real India, my India. We are the inheritors of a rural civilisation. We must become ideal villagers before we become ideal citizens.



Supposing I go and settle down in a village with a GHANI (village oil press), I won't be an ordinary GHANCHI (oil presser) earning 15-20 rupees a month. I will be a Mahatma GHANCHI. I have used the word 'Mahatma' in fun, but what I mean to say is that as a GHANCHI I will become a model for the villagers to follow. I will be a GHANCHI who knows the Gita and the Quran. I will be learned enough to teach their children. I will teach them spinning and when they come and ask me for the services of a weaver, I will find them a weaver on the same terms as I found them a teacher. And the weaver will teach them how to weave their own cloth.





My system of education leads to the development of the mind, body and soul. The ordinary system cares only for the mind. You cannot take to these humble people the paraphernalia of highly qualified doctors and hospital equipment. In simple, natural remedies and Ramanama lies their only hope. I will inculcate in them the importance of hygiene and sanitation, and when they come and ask me for a sweeper, I will tell them: "I will be your sweeper and I will train you all in the job."

For my material needs village is my world, but for my spiritual needs the whole world is my village.





M. K. Gandhi

गरिमामय जीवन के लिए जितनी भूमि की आवश्यकता है, उससे अधिक किसी के पास नहीं होनी चाहिए। इस तथ्य से कौन असहमत हो सकता है कि आम लोगों की घोर दरिद्रता का कारण यह है कि उनके पास अपनी कहने के लिए कोई ज़मीन नहीं है ?

मो. क. गांधी



No man should have more land than he needs for dignified sustenance. Who can dispute the fact that the grinding poverty of the masses is due to their having no land that they can call their own?

M. K. Gandhi

मैं अपने इन लाखों–करोड़ों दरिद्र भारतवासियों को जानने का दावा करता हूं। मैं दिन के चौबीसों घंटे उनके साथ हूँ। उनकी देखभाल मेरा प्रथम और अंतिम कर्तव्य है, क्योंकि मैं उन मूक लाखों–करोड़ों के हृदय में वास करने वाले भगवान के अलावा और किसी भगवान को नहीं पहचानता। वे उस ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव नहीं करते, मैं करता हूँ। और मैं इन्हीं लाखों–करोड़ों दरिद्र लोगों की सेवा के ज़रिए ईश्वर जो सत्य है अथवा सत्य जो ईश्वर है, उसकी पूजा करता हूँ।

मो. क. गांधी



I claim to know the millions of poor Indians. I am with them all the twenty four hours of the day. They are my first and last care because I recognize no God except that God that is to be found in the hearts of the dumb millions. They do not recognize His presence, I do. And I worship the God that is Truth or Truth which is God through the service of these millions.

M. K. Gandhi

आप भारतीय किसान से बात करना शुरू कीजिए; जैसे ही वह अपना मुंह खोलता है, उससे बुद्धिमत्तापूर्ण बातें निकलनी आरंभ हो जाती हैं। ऊपर से गंवार दिखाई देने पर भी उसके अंदर आप आध्यात्मिकता का गहरा सागर पाएंगे। मैं इसी को संस्कृति कहता हूँ।

मो. क. गांधी



The moment you talk to the Indian peasant and they begin to speak, you will find wisdom drops from their lips. Behind the crude exterior you will find a deep reservoir of spirituality. I call this culture.

M. K. Gandhi

गांवों का पुनर्निर्माण



ग्रामवासियों को अपने कौशल में इतनी वृद्धि कर लेनी चाहिए कि उनके द्वारा तैयार की गई चीज़ें बाहर जाते ही हाथों–हाथ बिक जाएं। जब हमारे गांवों का पूर्ण विकास हो जाएगा तो वहां ऊंचे दर्जे के कौशल और कलात्मक प्रतिभा वाले लोगों की कमी नहीं रहेगी। तब गांवों के अपने कवि भी होंगे, कलाकार होंगे, वास्तुशिल्पी होंगे, भाषाविद् होंगे और अनुसंधानकर्ता भी होंगे। संक्षेप में, जीवन में जो कुछ भी प्राप्य है, वह सब गांवों में उपलब्ध होगा।





आज हमारे गांव गोबर के ढेर मात्र हैं। कल वे सुंदर–सुंदर वाटिकाओं का रूप लेंगे जिनमें इतनी प्रख़र बुद्धि के लोग निवास करेंगे जिन्हें न कोई धोखा दे सकेगा और न उनका शोषण कर सकेगा। ऊपर बताई गई पद्धति के अनुसार गांवों के पुनर्निर्माण का कार्य तत्काल शुरू कर देना चाहिए....गांवों का पुनर्निर्माण अस्थायी नहीं, स्थायी आधार पर किया जाना चाहिए।





मो. क. गांधी







Regeneration of Rural India



The villagers should develop such a high degree of skill that articles prepared by them should command a ready market outside. When our villages are fully developed, there will be no dearth in them of men with a high degree of skill and artistic talent. There will be village poets, village artists, village architects, linguists and research workers. In short, there will be nothing in life worth having, which will not be available in the villages.



Today the villages are dung heaps. Tomorrow they will be like tiny gardens of Eden where dwell highly

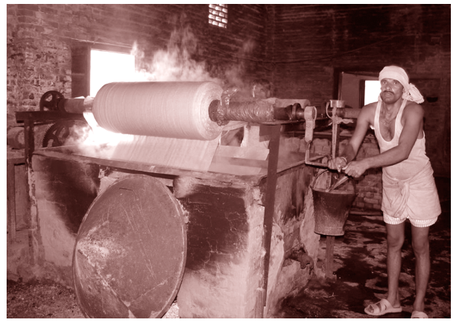

intelligent folk whom no one can deceive or exploit. The reconstruction of the villages along these lines should begin right now….. The reconstruction of the villages should not be organized on a temporary but permanent basis.

M. K. Gandhi







पर्दा

स्त्री के चरित्र की निर्मलता को लेकर इतनी विकृत चिंता करने की क्या ज़रुरत है ? क्या पुरुष के चरित्र की निर्मलता के मामले में स्त्री को बोलने दिया जाता है ? पुरुष की पाकीज़गी के बारे में स्त्री की चिंता की बात कभी सुनाई नहीं देती। स्त्री के चरित्र की निर्मलता को विनियमित करने का अधिकार पुरुष के हाथों में क्यों रहे ? यह चीज़ ऊपर से नहीं थोपी जा सकती। यह अंदर से पैदा होने वाली चीज़ है, इसलिए यह व्यक्ति के अपने प्रयास पर छोड़नी होगी।

मो. क. गांधी



Purdah

And why is there all this morbid anxiety about female purity? Have women any say in the matter of male purity? We hear nothing of women's anxiety about men's chastity. Why should men arrogate to themselves the right to regulate female purity? It cannot be superimposed from without. It is a matter of evolution from within and, therefore, of individual self-effort.

M. K. Gandhi

यौन शिक्षा

जिस यौन शिक्षा का समर्थन मैं कर रहा हूँ, उसका ध्येय काम के आवेग को जीतना और उसका उदात्तीकरण होना चाहिए। इस शिक्षा से बच्चों के मन में अपने आप यह बात घर कर जानी चाहिए कि मनुष्य और पशु के बीच में एक मौलिक भेद है और वह यह कि प्रकृति ने मनुष्य को सोचने और महसूस करने, दोनों की योग्यताएं देकर विशेष रुप से उपकृत किया है।

मो. क. गांधी

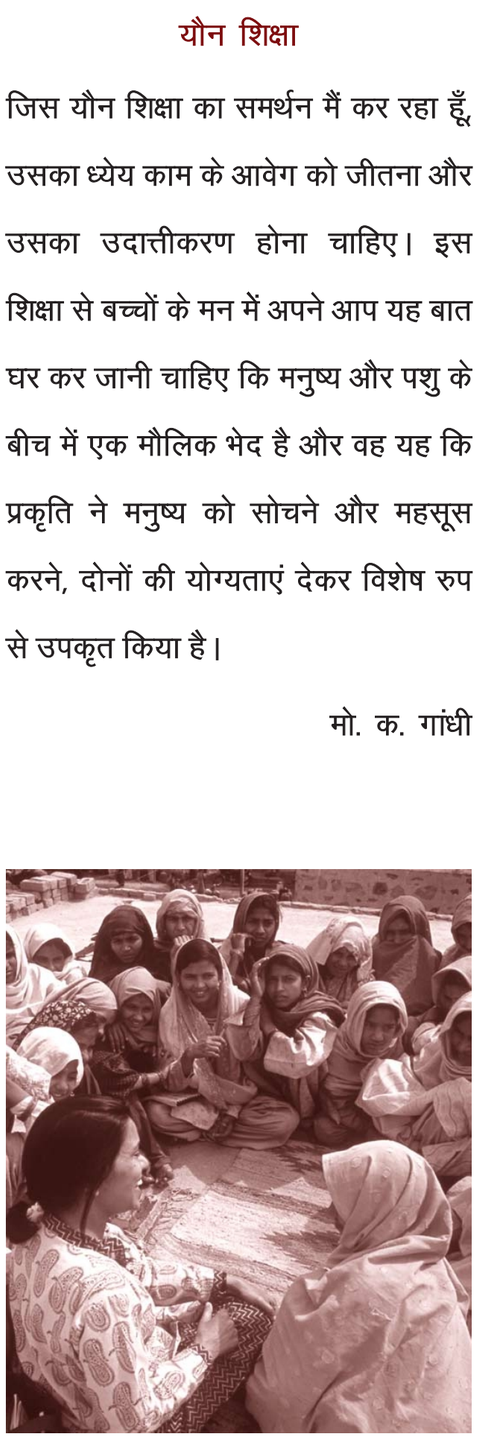

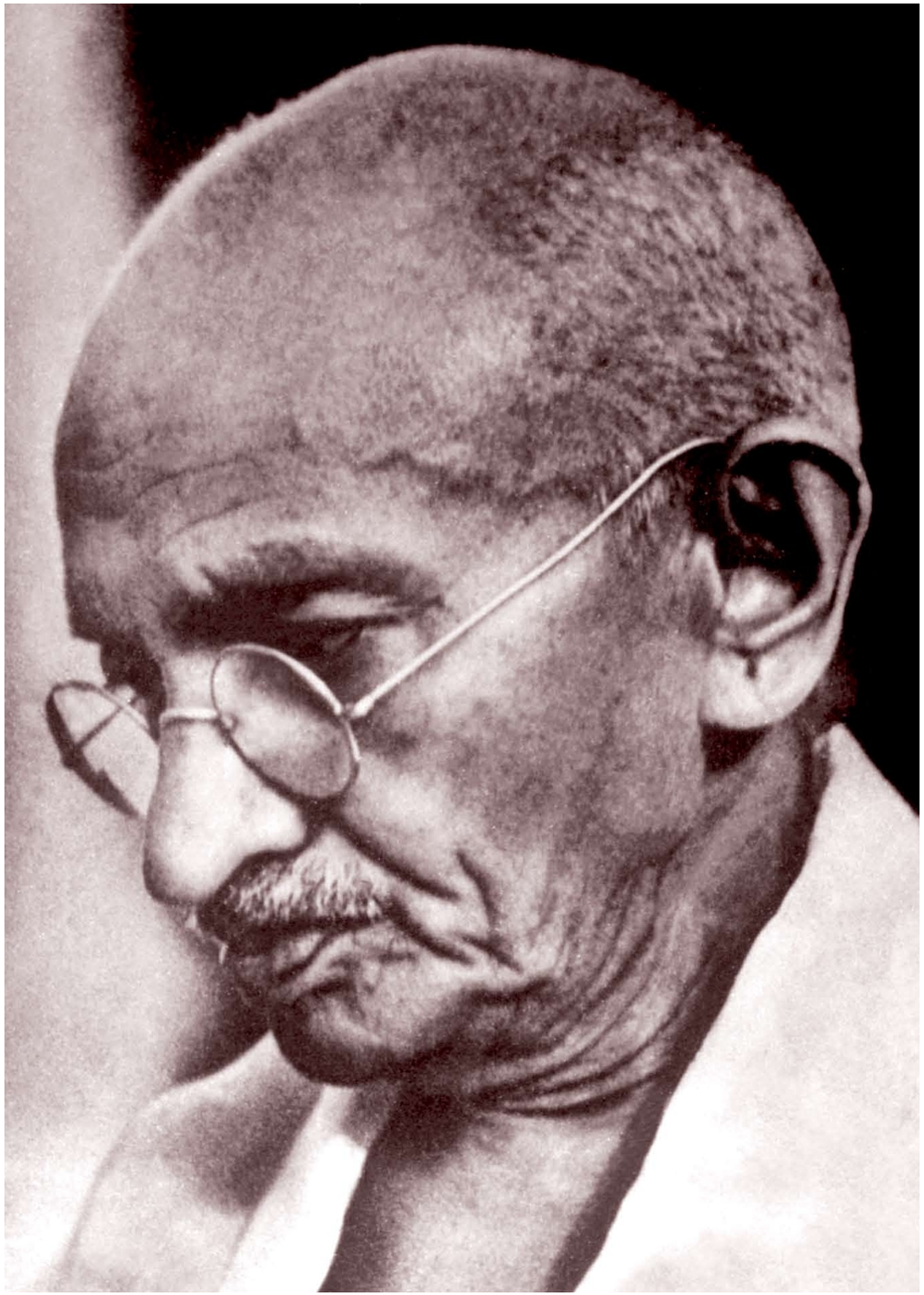

Sex Education

The sex education that I stand for must have for its object the conquest and sublimation of the sex passion. Such education should automatically serve to bring home to children the essential distinction between man and brute, to make them realize that it is man's special privilege and pride to be gifted with the faculties of head and heart both.

M. K. Gandhi



शिल्प कला एवं सम्पूर्ण शिक्षा



आज हमारे सामने खतरा यह है कि कहीं हम अपने हाथों का इस्तेमाल करना न भूल जाएं। यदि हम यह भूल गए कि ज़मीन कैसे खोदी जाती है और मिट्टी की देखभाल किस तरह की जाती है तो समझिए हम स्वयं को भूल गए। यदि आप यह समझते हैं कि केवल शहरों की सेवा करके ही आप मंत्री–पद को सफल सिद्ध कर सकते हैं तो आप यह भूलते हैं कि भारत वस्तुतः अपने 7 लाख गांवों में बसता है। आदमी को सारी दुनिया मिल जाए, लेकिन बदले में उसे अपनी आत्मा दे देनी पड़े तो उसके पास बचा ही क्या ?



मो. क. गांधी

शिल्प, कला, स्वास्थ्य और शिक्षा, सभी को एक योजना में समन्वित कर देना चाहिए। नयी तालीम इन चारों का एक सुंदर मिश्रण है और गर्भ–धारण से लेकर मृत्यु के क्षण तक मनुष्य की संपूर्ण शिक्षा को अपने में समाहित करती है....शिल्प और उद्योग को शिक्षा से भिन्न मानने के बजाए मैं उन्हें शिक्षा का माध्यम मानता हूँ।



मो. क. गांधी

Education Through Crafts

We stand today in danger of forgetting how to use our hands. To forget how to dig the earth and tend the soil is to forget ourselves. To think that your occupation of the Ministerial chair will be vindicated if you serve the cities only would be to forget that India really resides in her 7,00,000 village units. What would it profit a man if he gained the world but lost his soul into the bargain.



M. K. Gandhi

Craft, art, health and education should all be integrated into one scheme. NAI TALIM is a beautiful blend of all the four and covers the whole education of the individual from the time of conception to the moment of death..... Instead of regarding craft and industry as different from education, I will regard the former as the medium for the latter.

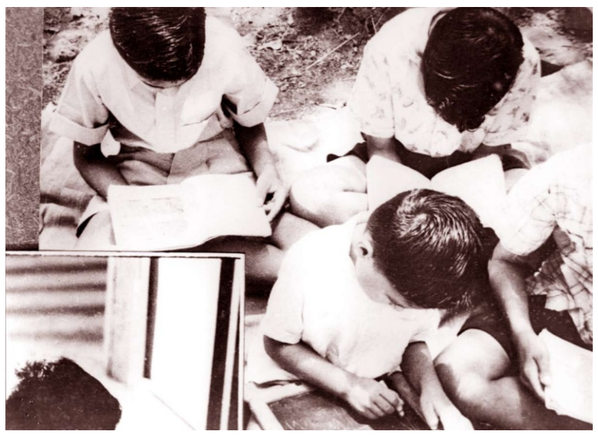

M. K. Gandhi

निःशुल्क अनिवार्य बुनियादी शिक्षा

भारत के लिए निःशुल्क अनिवार्य बुनियादी शिक्षा के सिद्धान्त में मेरा दृढ़ विश्वास है। मैं यह भी मानता हूँ कि इस लक्ष्य को सिद्ध करने का एकमात्र मार्ग यह है कि हम बालकों को कोई उपयोगी उद्योग सिखायें और उसके द्वारा उनकी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास साधें।

मो. क. गांधी



Compulsory Primary Education

I am a firm believer in the principle of free and compulsory primary education for India. I also hold that we shall realize this only by teaching the children a useful vocation and utilizing it as a means for cultivating their mental, physical and spiritual faculties.

M. K. Gandhi

गांधी और मशीन



यद्यपि महात्मा गांधी नकारते रहे कि वे मशीनों के ख़िलाफ नहीं थे बल्कि उनके प्रति आसक्ति के विरुद्ध थे, फिर भी आजीवन उनपर यही आरोप रहा कि वे मशीनों के विरोधी थे। जब उनसे पूछा गया कि क्या वे मशीनों के ख़िलाफ हैं उनका स्पष्ट उत्तर होता था–नहीं। परन्तु मैं इसकी अव्यावहारिक वृद्धि के विरुद्ध हूँ। मैं मशीनी विजय की चमक–दमक के नितान्त विरुद्ध हूँ..मैं विरोध करता हूँ मशीनों के प्रति दीवानगी का, मशीनों का नहीं। इन्सान 'परिश्रम बचाने' में लगा है, परन्तु हज़ारों हाथ बेकार हो जाते हैं और लोग भूख से मरने के लिए सड़कों पर आ जाते हैं। मैं समय और परिश्रम बचाना चाहता हूँ, कुछ थोड़े व्यक्तियों के लिये नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिये। मैं धन–संचय चाहता हूँ परन्तु कुछ थोड़े लोगों के लिये नहीं बल्कि सबके लिये। आज मशीनों की सहायता से कुछ थोड़े लोग लाखों लोगों के ऊपर राज कर रहे हैं। इस सबके पीछे मानवता की नहीं, लोभ की भावना प्रधान है। मैं अपनी पूरी ताकत से इस व्यवस्था का विरोध कर रहा हूँ।

मैं मशीनों के विरुद्ध कैसे हो सकता हूँ ? मैं तो मानव शरीर को एक 'सुपर मशीन' समझता हूँ। चरखा भी तो एक यन्त्र ही है और सिलाई मशीनें भी तो यन्त्र हैं। ये यन्त्र मनुष्य को गुलाम नहीं बनाते हैं। जहाँ मशीन मानव की क्षति करें, शोषण करें, मेरी उसमें आपत्ति है।''

गांधीजी व्यावहारिक आदर्शवादी थे अतः मशीनों का उचित स्थान समझते थे। वे मानते थे कि मशीनें अब यहाँ स्थायी रुप से रहेंगी। उन्होंने मनुष्य के कामों का बोझ घटाने हेतु मशीनों के सुधार के लिये हमेशा सुझावों का स्वागत किया और निश्चित रुप से विरोध किया अन्धाधुन्ध मशीनीकरण का। वे मानते थे कि ''वैज्ञानिक सत्य तथा आविष्कार को सर्वप्रथम लोभ का साधन बनने से बचना होगा''।

Gandhi and Machines

In spite of vehement protestations from Mahatma Gandhi that he was not against machinery *per se* but was against the craze for machinery, somehow the label of being him as antimachines remained stuck with him. When asked if he was against all machinery ? Gandhiji said, "My answer is emphatically 'No'. But, I am against its indiscriminate multiplication. I refuse to be dazzled by the seeming triumph of machinery…What I object to, is the craze for machinery, not machinery as such. The craze is for what they call labour-saving machinery. Men go on 'saving labour', till thousands are without work and thrown on the open streets to die of starvation. I want to save time and labour, not for a fraction of mankind, but for all, I want the concentration of wealth, not in the hands of few, but in the hands of all. Today machinery merely helps a few to ride on the back of millions. The impetus behind it all is not the philanthropy to save labour, but greed. It is against this constitution of things that I am fighting with all my might.

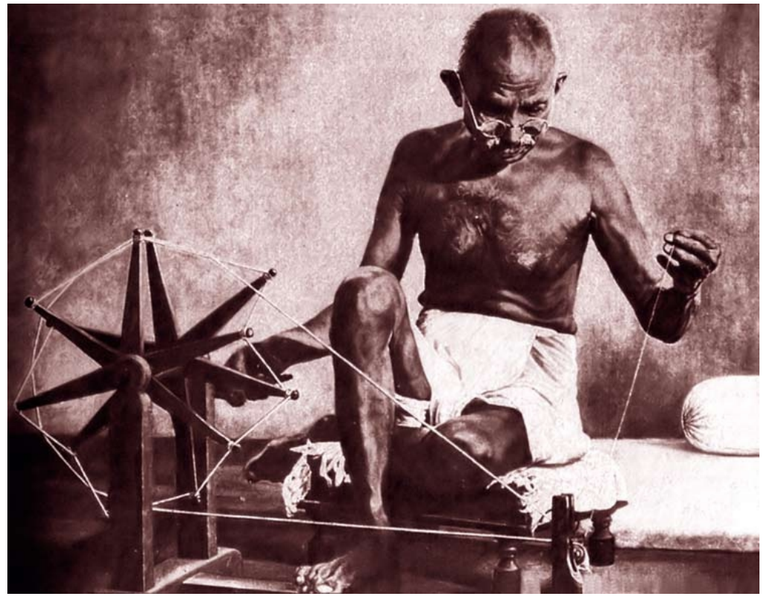

How can I be against machines? I regard human body as a super machine. A charkha is machine, or for that matter sewing machine. But these machines are exploited by men. Where machines exploited men, my objections are to them."

Practical idealist that he was, Gandhi recognised the place of machinery, "it has come to stay." He invited suggestion to every improvement in the machines that would lighten the burden of millions and was definitely against its 'indiscriminate multiplication'. He firmly held "that scientific truths and discoveries should first of all cease to be mere instruments of greed".





अहिंसक समाज

जब तक धनवानों और लाखों–करोड़ों भूखे लोगों की खाई नहीं पटती तब तक अहिंसक किस्म की सरकार की स्थापना करना नितांत असंभव है। नयी दिल्ली के आलीशान भवनों और उनके पास ही मज़दूरों की टूटी–फूटी झोपड़ियों का अंतर स्वतंत्र भारत में एक दिन भी नहीं चल सकता, जिसमें देश के ग़रीब लोगों के हाथों में भी उतनी ही शक्ति होगी जितनी कि सर्वाधिक धनी लोगों के हाथों में।

मो. क. गांधी



Non-violent Society

A non-violent system of government is clearly an impossibility, so long as the wide gulf between the rich and the hungry millions persists. The contrast between the palaces of New Delhi and the miserable hovels of the poor, labouring class nearby cannot last one day in a free India in which the poor will enjoy the same power as the richest in the land.

M. K. Gandhi



भारतीय समाज में महिलाएं

हमारे देश में स्त्रियों की परवरिश इस विचार से की जाती है कि उसका स्थान केवल अपने पति के साथ अथवा उसकी चिता पर है। मैं तो यह चाहूँगा कि भारत की महिलाएँ स्वयं को अबला न समझकर शस्त्र चलाने में भी स्वयं को निपुण करें।

स्त्री को पुरूष की अर्धांगिनी कहा जाता है। जब तक कानून द्वारा उसे पुरूषों के समान सारे अधिकार नहीं प्राप्त होंगे, जब तक बालिका के जन्म का भी पुत्र जन्म जितना ही आनन्द नहीं मनाया जाएगा तब तक हमें स्वीकार करना होगा कि भारत की दशा लकवे के रोगी समान है। महिलाओं का शोषण अहिंसा की शक्ति को नकारना है।

मो. क. गांधी



दहेज की कुत्सित प्रथा

....दहेज की कुत्सित प्रथा के विरूद्ध जबर्दस्त जनमत तैयार किया जाना चाहिए और जो युवक इस पाप के पैसे से अपने हाथ काले करें, उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया जाना चाहिए। लड़कियों के माता–पिता को अंग्रेज़ी उपाधियों की चकाचौंध में नहीं आना चाहिए और अपनी लड़कियों के लिए सच्चे वीर युवक ढूंढने के लिए अपनी जात अथवा प्रांत से बाहर जाने में संकोच नहीं करना चाहिए।



मो. क. गांधी



जब स्त्री पर आक्रमण हो ...

जब स्त्री पर आक्रमण हो तो उसे हिंसा, अहिंसा की बात नहीं सोचनी चाहिए। उसका प्रमुख कर्तव्य अपनी रक्षा करना है। अपनी आबरू को बचाने के लिए जो भी उपाय उसको सूझे, वह उसे अपनाए। ईश्वर ने उसे नाख़ून और दाँत दिए हैं। उसे अपनी पूरी ताकत के साथ उनका इस्तेमाल करना चाहिए और ज़रूरी हो तो इस प्रयास में जान दे देनी चाहिए।

मो. क. गांधी





Women in Indian Society

Women in our country is brought up to think that she is well only with her husband or on the funeral pyre. I would far rather see India's women trained to wield arms than that they should feel helpless.

Women is described as man's better half. As long as she has not the same rights in law as man, as long as the birth of a girl does not receive the same welcome as that of a boy, so long we should know that India is suffering from partial paralysis. Suppression of woman is a denial of Ahimsa.

M. K. Gandhi



Degrading practice of Dowry

.....A strong public opinion should be created in condemnation of the degrading practice of dowry and young men who soil their fingers with such ill-gotten gold should be ex-communicated from society. Parents of girls should cease to be dazzled by English degrees and should not hesitate to travel outside their little castes and provinces to secure true gallant young men for their daughters.

M. K. Gandhi





When a woman is assaulted...

When a woman is assaulted she should not stoop to think in terms of himsa or ahimsa. Her primary duty is self-protection. She is at liberty to employ every method or means that come to her mind in order to defend her honour. God has given her nails and teeth. She must use them with all her strength and, if need be, die in the effort.

M. K. Gandhi



महिलाओं को शिक्षा का अधिकार

मैं महिलाओं की सही शिक्षा में विश्वास रखता हूँ। परन्तु मैं यह भी मानता हूँ कि महिलाओं को मात्र पुरुष की नकल करने से कुछ भी हासिल नहीं होगा। महिलाओं को दौड़ जीतनी है पर पुरुषों की नकल की दौड़ नहीं, इससे वे उन बुलन्दियों पर नहीं पहुँचेंगीं जिसकी योग्यता वे रखती हैं। उन्हें पुरुष का पूरक बनना है।

मो. क. गांधी





Women's Right to Education

I believe in the proper education of women. But I do believe that woman will not make her contribution to the world by mimicking or running a race with man. She can run the race, but she will not rise to the great heights she is capable of by mimicking man. She has to be the complement of man.

M. K. Gandhi

अनुभव ने मुझे सिखाया है कि मौन, सत्यव्रती के आध्यात्मिक अनुशासन का एक अंग है। मनुष्य की यह एक स्वाभाविक दुर्बलता है कि वह जाने–अनजाने अतिशयोक्ति करता है और सत्य को दबाता या संशोधित करता है; इस दुर्बलता पर विजय पाने के लिए मौन आवश्यक है। अल्पभाषी व्यक्ति अपनी वाणी में शायद ही कभी विवेकहीन होता हो; वह तो अपना हर शब्द तोल कर बोलेगा।

मो. क. गांधी

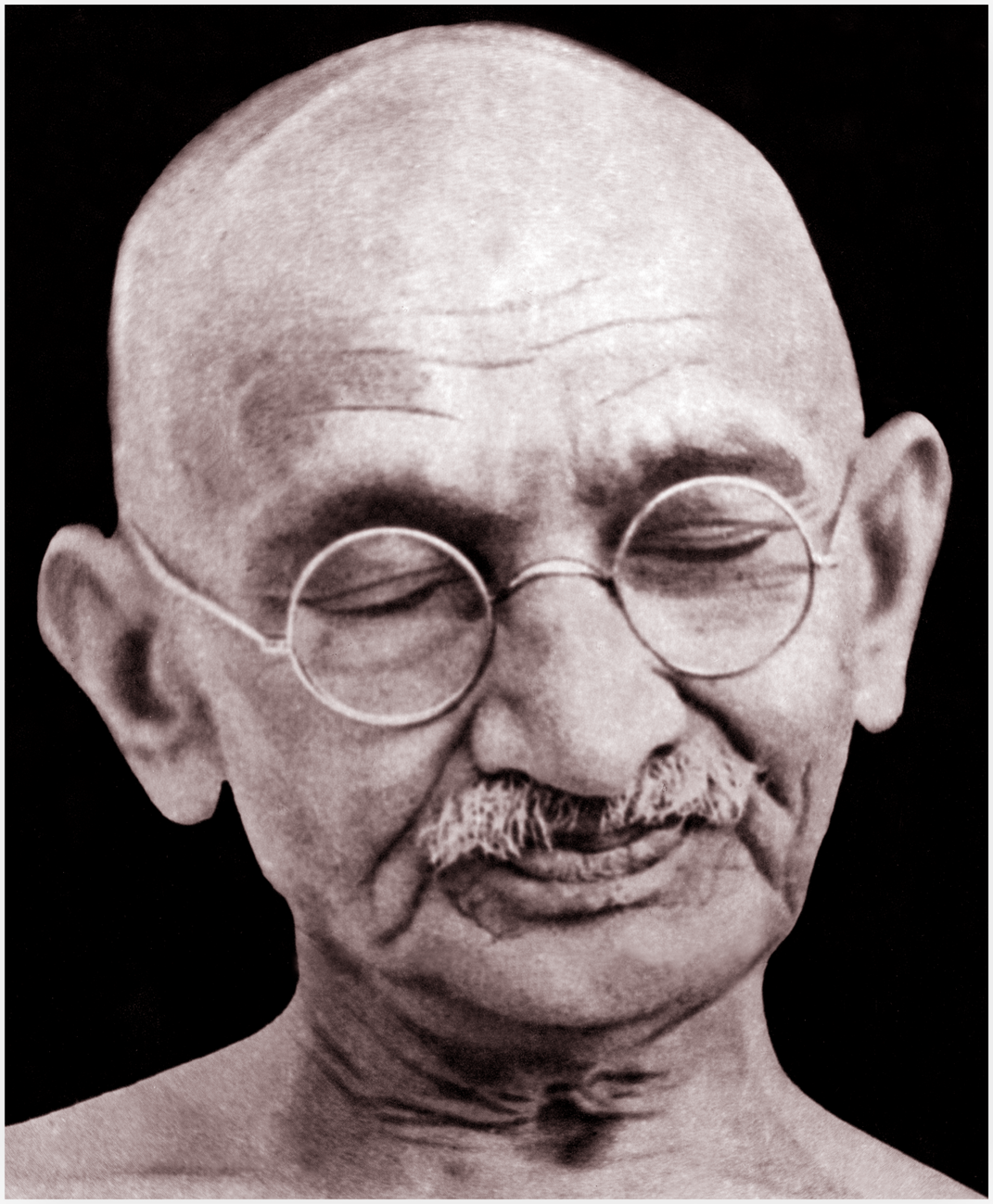

Experience has taught me that silence is a part of the spiritual discipline of a votary of truth. Proneness to exaggerate, to suppress or modify the truth, wittingly or unwittingly, is a natural weakness of man, and silence is necessary in order to surmount it. A man of few words will rarely be thoughtless in his speech; he will measure every word.

M. K. Gandhi

ग्राम – आन्दोलन क्यों ?

ग्राम–आन्दोलन जितना शहरवासियों के लिए शिक्षाप्रद है, उतना ही ग्रामवासियों के लिए। गांव की सेवा स्वराज की स्थापना का माध्यम है। बाकी सब कुछ दिवा– स्वप्न के समान है।

मो. क. गांधी

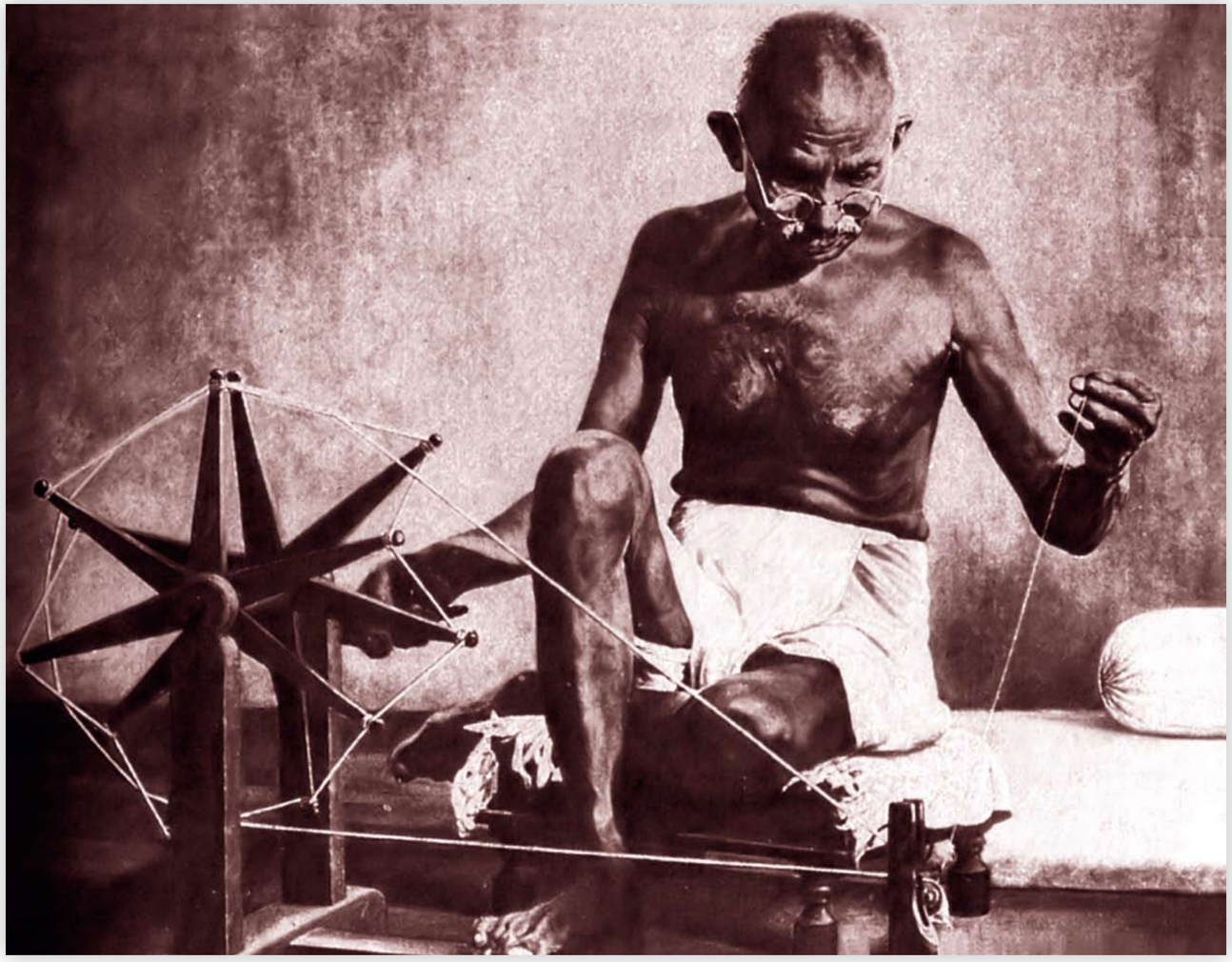

Why the Village Movement?

The village movement is as much an education of the city people as the villagers. To serve our villages is to establish swaraj. Everything else is but an idle dream.

M. K. Gandhi

स्थायित्व की अर्थव्यवस्था



महात्मा गांधी की आर्थिक विकास की परिकल्पना में विशेष व्यवहार शैली पर ज़ोर दिया गया है। स्वैच्छिक निर्धनता जिसमें ईर्ष्या, लोभ तथा हिंसा का कोई स्थान न हो–वही गांधी के आर्थिक सिद्धान्त का मूल आधार है। इसमें 'यहाँ से वहाँ' तक की यात्रा पर ज़ोर है। आज के भौतिक युग में गांधीवादी अर्थशास्त्र शायद सटीक न लगे परन्तु यही वह अर्थव्यवस्था है जो विशाल बरगद वृक्ष की तरह सौ वर्षों में पनपती है और हज़ारों वर्षों तक स्थायी रहती है। महात्मा गांधी कुटीर उद्योगों में बहुत विश्वास रखते थे। चरखा तथा खादी का उनका मन्त्र मूलतः ग्रामीण पुनरूत्थान के लिये विचार था। उनकी सोच को शायद हम लोग समझने में असमर्थ रहे हैं। उन्होंने कभी नहीं कहा कि चरखा ही ग्रामोद्धार के लिये सबसे आवश्यक है। वे ग्राम विकास के लिये नई–नई तकनीकों के प्रयोग के हिमायती थे।

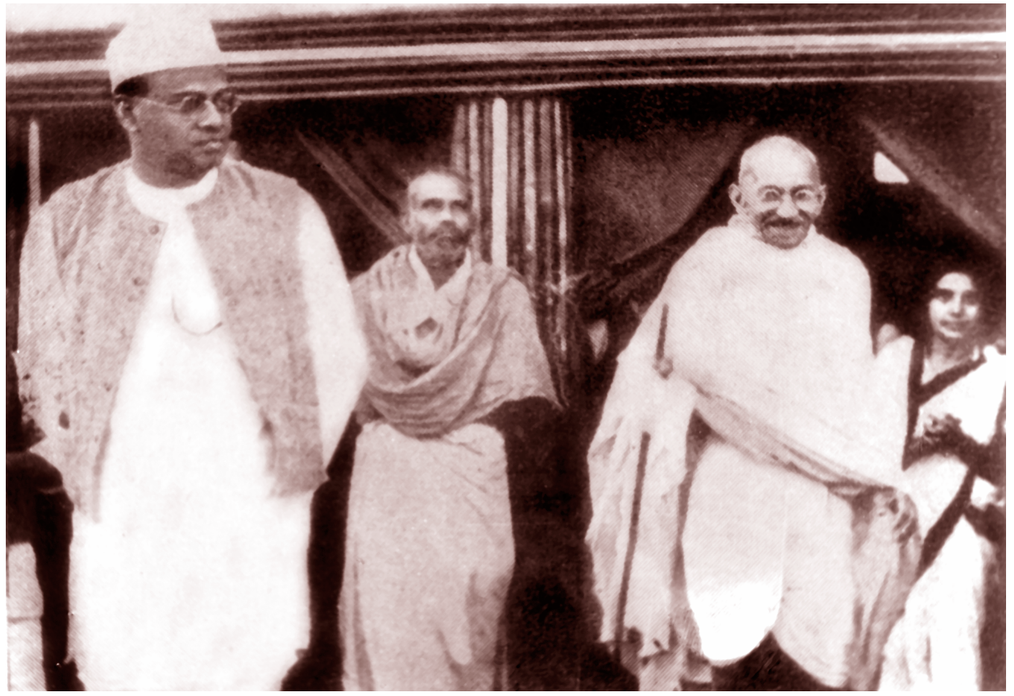

महात्मा गांधी के घनिष्ट सहयोगी तथा अनुयायी डॉ. जे. सी. कुमारप्पा ने उनके आध्यात्मिक तथा सामाजिक विचारों के आर्थिक पक्ष को अपने लेखों द्वारा स्पष्ट किया। डॉ. कुमारप्पा ने कुटीर उद्योगों के विकास तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में उनकी उपयोगिता का विस्तृत अध्ययन किया तथा यह सिद्ध किया कि गांधीजी के विचार केवल यूरोपियन अथवा आदर्शवादी नहीं थे बल्कि अत्यन्त सरल तथा व्यावहारिक थे। गांधीजी की सलाह पर डॉ. कुमारप्पा ने 1934 में खादी ग्रामोद्योग की नींव रखी। महात्मा गांधी ने उन्हें 'ग्रामोद्योग डॉक्टर' की उपाधि से सम्मानित किया। उन्होंने कहा ''ग्रामोद्योगों का यह डॉक्टर यह प्रदर्शित करता है कि हम केवल ग्रामोद्यागों के द्वारा ही स्थायित्व की अर्थव्यवस्था प्राप्त कर सकते हैं...यही सादा जीवन और उच्च विचार है।'' वे मानते थे कि मनुष्य को प्रकृति के साथ विवेकपूर्ण एवं सावधानी पूर्वक तालमेल बिठाकर अर्थव्यवस्था को स्थायित्व देना चाहिए।

Economy of Permanence

Gandhi's vision of economic development places strict observance of certain code of conduct. Voluntary poverty ending envy, greed and violence are basic to Gandhian economic principle. Its focus is on the process of going from 'here' to 'there'. To a world caught up by the craze for 'instant-culture', Gandhian economics may seem cumbersome. It is an economy which grows in hundred years like the Banyan Tree and sustains itself for one thousand years. Mahatma Gandhi was a votary of village industries. His advocacy of 'Charkha' and 'Khadi' was central to the theme of rural regeneration. His perspective has not been understood. He never said that charkha is the sole alternative. He was prepared to burn the charkha. He was for the application of better technology for rural development.

Mahatma Gandhi's close associate and disciple Dr. J.C. Kumarappa worked out the economic implications of Gandhi's spiritual and social thinking in his writings. Dr. Kumarappa's relentless study of the cottage industries and its viability for rural regeneration convinced him of the need to combine business with ethics. He strongly maintained that it was by no means as utopian, as some cynics who try to pass off as pragmatists, make it out to be. Dr. Kumarappa on Gandhiji's advice laid the foundation of the Khadi and Village Industries in 1934. Mahatma Gandhi decorated him with the title of "Doctor of Village Industries", "This doctor (Kumarappa) of village industries shows that only through them we shall arrive at the economy of permanence in the place of that of the fleeting nature we see around us at present...This is plain living and high thinking." He held that the task of Man was to cooperate judiciously and caringly with 'Nature's economy of permanence'.



महात्मा गांधी के आश्रम : नई विश्वव्यवस्था की रुप रेखा

आश्रम शब्द का महात्मा गांधी के जीवन में अहम् स्थान रहा है। उनके सत्य और अहिंसा की अनन्त खोज और प्रयोगों को इन्हीं आश्रमों में आकार और दिशा प्राप्त हुई और यहीं से गांधीजी ने आधुनिक विश्व के समक्ष उभरती हुई नई विश्व व्यवस्था की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम एक व्यापक रणनीति रखी। इस रणनीति के अर्न्तगत उन्होंने वर्तमान सामाजिक–राजनैतिक और आर्थिक ढांचे को पूर्णतः बदल देने की आवश्यकता पर बल दिया। उनके अनुसार ढांचा छोटी–छोटी ईकाइयों पर आधारित तथा सामूहिक जीवन पर केन्द्रित पूर्णतः स्वावलम्बी व्यवस्था हो और जिसकी स्वस्थ सम्पूर्ण जीवन में आस्था हो।

वास्तव में गांधीजी ने आश्रम शब्द का प्रयोग 1915 में स्वदेश आगमन के पश्चात् अहमदाबाद में साबरमती नदी के तट पर बने 'सत्याग्रह आश्रम' के लिए ही सर्वप्रथम किया।

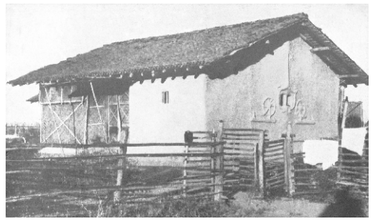

गांधीजी ने औरों से कहीं पहले यह निष्कर्ष ढूंढ निकाला था कि 'लघुता में ही अधिक सौन्दर्य होता है'।

आश्रम–शैली की जीवन पद्धति का प्रयोग महात्मा गांधी ने सर्वप्रथम दक्षिण अफ्रीका में किया जब उन्होंने वहाँ क्रमशः 'फीनिक्स सेटलमेन्ट' तथा 'टॉलस्टॉय फार्म' की स्थापना की। जॉन रस्किन की प्रसिद्ध पुस्तक 'अन्टू दिस लास्ट' गांधीजी के लिये प्रेरणास्त्रोत बनी तथा उन्होंने इन्ही आदर्शों पर आधारित फीनिक्स सेटलमेन्ट की स्थापना की। इस पुस्तक में गांधीजी को जो तीन बातें बहुत प्रमुख लगीं वे इस प्रकार हैं :

1. व्यक्ति की भलाई सबकी भलाई में निहित है (सर्वोदय सिद्धान्त)
2. एक वकील के कार्य का महत्व एक नाई के काम के बराबर ही है, क्योंकि दोनों को ही आजीविका का समान अधिकार है। (शरीरश्रम का महत्व)
3. मज़दूर अर्थात् खेतिहर तथा हस्तशिल्पकार का जीवन ही सबसे श्रेष्ठ है (स्वैच्छिक निर्धनता)

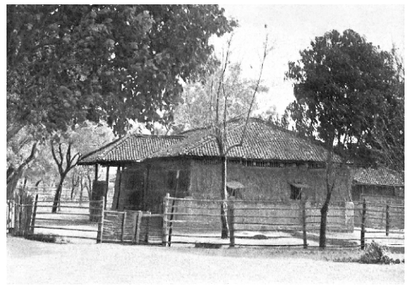

फीनिक्स सेटलमेन्ट में रहते हुए ही गांधीजी ने अपरिग्रह के सिद्धान्त को अपनाने के लिये पहला महत्वपूर्ण कदम उठाया। फीनिक्स सेटलमेन्ट से ही उनके द्वारा आरम्भ किया पत्र "इण्डियन ओपिनियन" जो कि उनके सत्याग्रह आन्दोलन का एक प्रमुख अस्त्र था, कई दशकों तक वहां से उनके प्रस्थान के पश्चात् भी छपता रहा। उनके द्वितीय पुत्र मणिलाल ने इसे छापने का दायित्व निभाया।

इस दौरान ही वर्ष 1910 में गांधीजी के प्रिय मित्र तथा टॉल्स्टॉय के परम भक्त, श्री हरमन कैलनबैक ने जोहान्सबर्ग के नज़दीक लगभग ग्यारह सौ एकड़ ज़मीन ख़रीदी और सत्याग्रहियों को निःशुल्क रहने के लिये भेंट कर दी। अपने प्रिय मित्र तथा अनन्य सत्याग्रही की इस प्रेमपूर्ण भेंट को गांधीजी ने सहर्ष स्वीकार किया तथा इस आश्रम का नाम उन्होंने टॉल्स्टॉय फार्म रखा।



इस आश्रम में गांधीजी, उनके परिवार के सदस्य सहयोगी, कैलनबैक सभी रहने लगे तथा सभी ने स्वैच्छिक निर्धनता को सहर्ष अपनाया और सादगीपूर्ण, कर्मनिष्ठ जीवन–यापन के प्रण को निभाया। आश्रम में विभिन्न धर्मों के लोग मिलजुलकर रहते थे।

गांधीजी ने आश्रम की सभी गतिविधियों की विस्तृत जानकारी टॉल्स्टॉय को पत्र द्वारा दी (पत्र–15 अगस्त, 1910)। यद्यपि उस समय टॉल्स्टॉय बहुत बीमार तथा अवसादग्रस्त थे, फिर भी उन्होंने लिखा कि "गांधी के आन्दोलनों की सबको और अधिक जानकारी मिलनी चाहिये"।

भारत में महात्मा गांधी ने दो आश्रमों की स्थापना की, 1915 में साबरमती आश्रम तथा 1936 में सेवाग्राम आश्रम। इन आश्रम–प्रयोगों में हम उनके निरन्तर व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया को स्पष्टतः देख पाते हैं। यदि साबरमती आश्रम में उनके प्रयोगों में व्यक्ति के विकास की प्रधानता रही तो सेवाग्राम आश्रम में उन्होंने मानवता के सर्वांगीण विकास के सफल प्रयोग किये।

साबरमती नदी के किनारे स्थित आश्रम का नाम गांधीजी ने सत्याग्रह आश्रम रखा। यह आश्रम सत्याग्रहियों का प्रशिक्षण केन्द्र बना जहाँ गांधीजी ने उन्हें अहिंसक क्रान्ति के लिये तैयार किया। कालान्तर में ये दोनों आश्रम देश की राजनैतिक, सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र बिन्दु बने क्योंकि गांधीजी यहीं से अपने क्रान्तिदर्शी विचारों का प्रतिपादन करते थे।

Mahatma Gandhi's Ashrams : a blue print for new world order

The word Ashram is one of the key words in Mahatma Gandhi's life. His unending quest and experiments with Truth and Nonviolence found shape in these Ashrams. And it was also from these Ashrams he had placed before the modern world a comprehensive strategy to challenge the emerging New World Order. It asked for a drastic reorientation of the socio-political and economic structures. The new structures according to Gandhi should be based on small self-sufficient communities affirming faith in healthy wholeness of life.

But the word Ashram was first applied by Mahatma Gandhi to his famous settlement at Sabarmati, in Ahmedabad, which he set up on his return to India in 1915.

Gandhiji had, thus, discovered long before others turned their attention to it that 'Small is beautiful'.

The Ashram way of life or the community settlements was for the first time tried out in South-Africa which led to the setting up of his Ashrams then known as Phoenix Settlement and Tolstoy Farm. The Phoenix Settlement was a direct result of his reading of John Ruskin's 'Unto this last', which drove home to Mahatma Gandhi the following three lessons.

1. That the good of the individual is contained in the good of all. (Sarvodaya)
2. That a lawyer's work has the same value as the barber's, in as much as all have an equal right to earn a livelihood from their work (Dignity of Labour)
3. That the life of a labour, i.e. the life of the tiller of the soil and of the handicraftsman is the life worth living (voluntary poverty)

The Phoenix Settlement marked the first decisive step in Mahatma Gandhi's progress towards his doctrine of Aparigraha (non-possession) or voluntary poverty. At the Phoenix Settlement he also launched a paper titled 'Indian Opinion' on 4th June 1903-a vehicle to propagate his views on Satyagraha and educate the masses. It became a powerful weapon in his hands. Even after he moved out of the Phoenix Settlement, the Indian Opinion continued to be published from there by his second son, Manilal, till his last days.

In 1910 Herman Kallenbach, Gandhiji's rich and idealist friend and a great admirer of Tolstoy, purchased eleven hundred acres of land near Lawley, Johannesburg, and gave it to the passive resisters for their use free of rent. Accepting this gift from the person who was second in command in the Satyagraha movement, Gandhiji set up another settlement and named the farm after Tolstoy—Tolstoy Farm.



With his family and co-workers as also Kallenbach, Gandhiji came to live here in extreme simplicity verging on poverty. The inmates included men and women of several religions and a variety of languages were spoken. Gandhiji kept Tolstoy informed of this new experiment in community living (letter dated August 15, 1910) and Tolstoy, though ill and severely depressed at the time, proclaimed, "More should be known about Gandhi's movements".

Mahatma Gandhi had set up two Ashrams in India the Sabarmati Ashram (1915) and the Sevagram Ashram (1936). The experiments that he carried out in these ashrams provide an insight into his ever evolving self. If at Sabarmati Ashram his experiments were at the micro-level (the individual) at Sevagram he was striving to put them in practice at the macro-level (the entire humanity).

The Ashram on the banks of river Sabarmati was named Satyagraha Ashram by Gandhiji. It served as a training camp for the inmates of this ashram and became the nerve centre of India's nonviolent revolution. Gandhiji trained an army of nonviolent soldiers here.

12 मार्च, 1930 को महात्मा गांधी ने इसी साबरमती आश्रम से अपनी ऐतिहासिक दाण्डी यात्रा आरम्भ की और फिर वे वहाँ कभी नहीं लौटे। यह यात्रा प्रतीक थी आत्मा की उस मुक्त उड़ान की जब वह सीमान्त से परे सार्वभौम हो जाती है। साबरमती आश्रम का त्याग महात्मा गांधी के अपरिग्रह का एक उदाहरण था जब वे सांसारिक सुख–साधनों से स्वयं को मुक्त करना चाहते थे। गांधीजी विश्व मानवता के लिये भी चाहते थे कि वह अपरिग्रह के सिद्धान्त को जीवन में अपनाए।

On 12th march 1930, Mahatma Gandhi set forth on the famous Dandi March, from the banks of the river Sabarmati to the sea shore of Dandi, never to return. This journey symbolised the journey of the soul, which broke free of its moorings and became truly universal. By giving up the Sabarmati Ashram, Mahatma Gandhi was only upholding the principle of non-possession and non-attachment to the material world, which he wanted to be inculcated by the entire humanity.



यह कहा जाता है कि साबरमती आश्रम उस पवित्र भूमि पर बना है जहाँ प्राचीन युग में महान् ऋषि दधिचि का आश्रम था, जिन्होंने इन्द्र के वज्रास्त्र के लिये अपनी अस्थियों तक का दान कर दिया था। ऋषि दधिचि की कथा त्याग की परम गाथा है, और आधुनिक युग के उस महात्मा का जीवन भी उतना ही पावन और प्रेरक है जिन्होंने उस भूमि पर अपना आश्रम बनाया।

It is said that Sabarmati Ashram is built on the sacred ground where ages ago stood the ashram of Dadhichi, the hermit who gave up his bones to be made into a thunderbolt for Lord Indra. The story of Dadhichi is an example of supreme sacrifice. But the story of the Mahatma who built his Ashram here in modern times is no less inspiring.

वर्ष 1936 में गांधीजी ने वर्धा के सेगाँव में सेवाग्राम नामक आश्रम की स्थापना की। सत्य से सेवा तक की यह यात्रा गांधीजी के जीवन–आदर्शों की साकार प्रतिमूर्ति तथा परिचायक है। इन दो आश्रमों की स्थापना के बीच के बीस वर्ष द्योतक हैं बापू की उस जीवन यात्रा की जिसमें उनकी जीवन शैली व्यक्तिगत 'स्व' से ऊपर उठकर एक सार्वभौमिक जीवन–कला तथा शैली का परिचय देती है।

In 1936 Gandhiji set up another Ashram at Segaon in Wardha, which he called Sevagram. From Satya(Truth) to Seva (service) is the confirmation that in the 20 years that lies between the setting up of the two Ashrams Gandhiji's life passed beyond the meaning of an individual to the meaning of a way of living which was truly universal in its appeal.

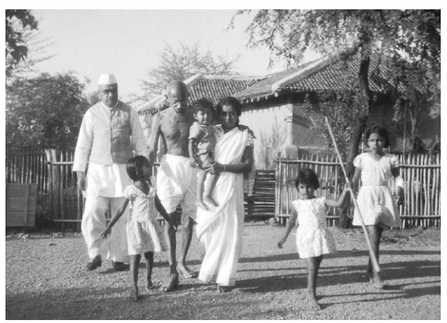

सेवाग्राम में, गांधीजी मुख्यतः एक ऐसी जीवन–व्यवस्था के विकास के लिये प्रयत्नशील थे जो शहरी, औद्योगिक सभ्यता की भौतिकवादिता की चुनौती का सामना कर सके। वे चाहते थे कि आधुनिक जीवन के भोग–विलास से मुक्त ऐसा जीवन जिया जाए जो सादगी तथा आध्यात्मिकता से पूर्ण हो। उनका यह विश्वास था कि यह तभी सम्भव है जब व्यक्ति अपरिग्रह का पालन करे। उन्होंने सदा न्यूनतम् आवश्यकताओं पर आधारित जीवन जीने पर बल दिया जिसमें लोभ के लिये कोई स्थान नहीं है।

गांधीजी द्वारा परिकल्पित समाज–व्यवस्था में आत्मा के नैतिक गुणों के विकास पर ज़ोर दिया जाता है ताकि समाज की नींव सुदृढ़ बन सके। उनका अठारह सूत्री रचनात्मक कार्यक्रम इसी समाज–व्यवस्था के निर्माण का मुख्य आधार था। गांधीजी का श्रीमद्भगवतगीता के मूल मन्त्र **'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'** में दृढ़ विश्वास था और इसे ही वे जीवन के सभी नैतिक मूल्यों का आधार मानते थे। आश्रम जीवन के नियमों में उन्होंने न्यासवाद, ब्रह्मचर्य, नई तालीम, अस्पृश्यता–निवारण, साम्प्रदायिक एकता, स्त्री–सशक्तिकरण, श्रमपूर्ण जीवन जो आडम्बर विहीन हो, आदि को महत्व दिया तथा यही उनके 'कर्मयोग' के व्यावहारिक सिद्धान्त थे जो उन्होंने अपने आश्रमों में प्रतिपालित किये।

At Sevagram, Gandhiji was primarily concerned with evolving a pattern of life that could face the challenges of the urban-industrial civilisation with its concomitant evils of market economy fed on consumerism. He sought to liberate humanity from the external tyranny of modern living and bring back wholeness and integrity to the individual. This is possible only if mankind adopts abandonment of possessions (Aparigraha) and the adoption of simplicity. He laid emphasis on a "need based as against greed based life".



Gandhiji made the inner value orientation of individuals, foundations of the New Social Order, visualised by him. His Eighteen Point Constructive Programme was an integral part of his training with emphasis on spinning and weaving, thus preparing them to take on the work for the regeneration of rural India. It was based on the Eternal philosophy of the Bhagvad Gita "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषू कदाचन" (Man has his rights on his actions only) His principle of Trusteeship, Celibacy, Basic Education, Untouchability, Communal Unity, Upliftment of Women, Bread labour and a simple austere life that, he enumerated at the Sabarmati Ashram were all based on the philosophy of 'Karma or Action'.

सर्वधर्म समभाव

मैं विश्व के हर धर्म में निहित बुनियादी सत्य में आस्था रखता हूँ। मैं मानता हूँ कि यह सब ईश्वर की देन है। मैं यह भी मानता हूँ कि उन लोगों के लिए आवश्यक भी था जिनको ये धर्म पहली बार स्पष्ट हुए थे। साथ ही मैं यह भी मानता हूँ कि यदि हम विभिन्न धर्मों के ग्रन्थों का उनके अनुयायियों के नज़रिये से अध्ययन करें तो पाएंगें कि मूलतः सभी धर्म एक हैं तथा एक दूसरे के पूरक हैं।

मो. क. गांधी



All Faiths are Equal

I believe in fundamental truth of all great religions of the world. I believe that they are all God-given. I believe that they were necessary for the people to whom these religions were revealed and I believe that, if only we could all read the scriptures of the different faiths from the standpoint of the followers of those faiths, we would find that they are all One at bottom and were all helpful to one another.

M. K. Gandhi

शाकाहारवाद

मैं यह महसूस करता हूँ कि हमारी आध्यात्मिक प्रगति का यह तकाज़ा है कि हम अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए अन्य प्राणियों का संहार न करें। मनुष्य जन्म से मांसाहारी पशु की भांति नहीं था अपितु उसका जन्म तो फल एवं कंद–मूल, जो भी पृथ्वी देती है उसी पर निर्वाह करने के लिए हुआ है।

मो. क. गांधी

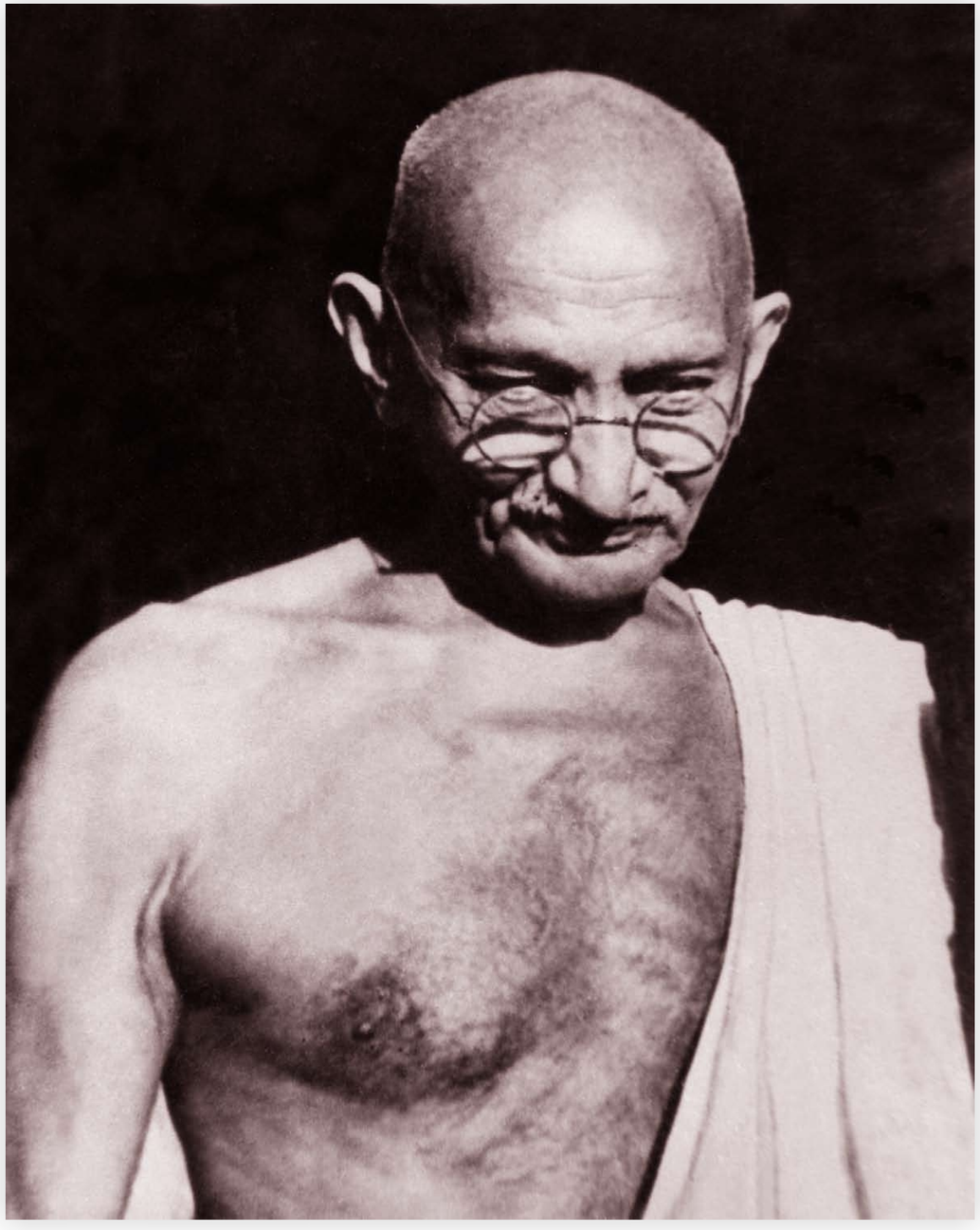

Vegetarianism

I do feel that spiritual progress does demand at some stage that we should cease to kill our fellow creatures for the satisfaction of our bodily wants. Man was not born a carnivorous animal, but born to live on the fruits, and herbs that the earth grows.

M. K. Gandhi

सीमित आवश्यकताओं से जुड़े जीवन की अपील

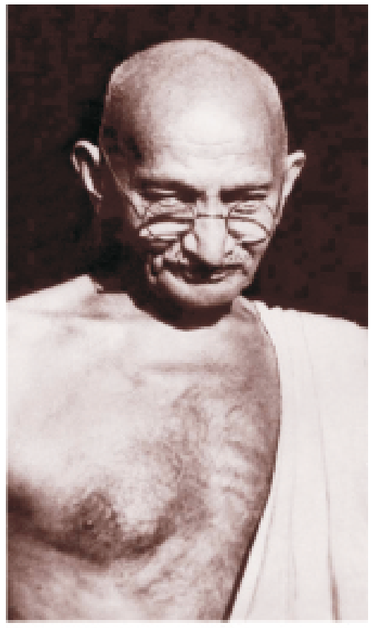

मैं यह समझता हूँ कि यह प्रकृति का मूल सिद्धान्त है कि वह हमारी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति लायक पर्याप्त उत्पादन करती है, और यदि हर व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार ही ले, अधिक नहीं, तो दुनिया में कहीं ग़रीबी नहीं रहेगी। मेरे कथन का सार यह है कि मनुष्य को अपनी ज़रूरतों के हिसाब से ही सन्तुष्ट तथा आत्म–निर्भर रहना चाहिये। यदि वह अपने को संयमित नहीं रख पाता तो वह खुद को नहीं बचा सकेगा।

जैसे सुई की नोक में से ऊँट का निकलना सम्भव नहीं, वैसे ही समाज में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन स्तर ऊंचा होना सम्भव नहीं है। सबके के लिये समृद्ध जीवन शैली ..... किसी भी समाज के लिये एक असम्भव बात है। जब समृद्धि की कोई सीमा नहीं होगी तो हम कहाँ रूकेंगे ?



मैं यह नहीं मानता कि इच्छाओं की वृद्धि और उनकी पूर्ति के लिये बनी मशीनों की वजह से दुनिया अपने लक्ष्य की तरफ एक क़दम भी बढ़ा पा रही है। मैं ह्रदय से इस पागलपन को नापसन्द करता हूँ जो समय और दूरी को मिटाकर पलपल बढ़ती भौतिक भूख को मिटाने के लिये लोग दुनिया के छोर तक अन्धाधुन्ध भाग रहें हैं।

"यदि मैं यह सीख देता हूँ कि आज के आधुनिक, बनावटी भौतिक सुख साधनों से भरे जीवन को त्याग कर स्त्री–पुरूषों को चरखे के प्रतीक स्वरूप सादगी भरे जीवन की ओर लौटना चाहिये तो मैं ऐसा इसलिये करता हूँ क्योंकि मैं जानता हूँ कि यदि हम समझदारी पूर्ण सादगी की ओर नहीं लौटते हैं तो हम स्वयं को पशुस्तरीय जीवन से नहीं बचा सकेंगे।"

मो. क. गांधी

Plea for a need based lifestyle

I venture to suggest that it is the fundamental law of Nature, without exception, that Nature produces enough for our wants from day-to-day, and if only everybody took enough for himself and nothing more, there would be no pauperism in this world. The essence of what I have said is that man should rest content with what are his needs and become self-sufficient. If he does not have this control, he cannot save himself.

That everyone in this world should be able to maintain as high a standard of life as possible with the best possible output of labour is just as fantastic as to expect a camel to pass through the eye of a needle. Luxurious living…is an impossible proposition for any society as a whole. And when there is no limit to luxury, where shall we stop?

I do not believe that multiplication of wants and machinery contributed to supply them, is taking the world a single step near its goals. I whole-heartedly detest this mad desire to destroy distance and time, to increase animal appetite and go to the ends of the earth in search of their satisfaction.

If I preach, said Gandhi, "against the modern artificial life of sensual enjoyment, and ask men and women to go back to the simple life epitomized in the Charkha, I do so because I know that without an intelligent return to simplicity there is no escape from our descent to a state lower than brutes."

M. K. Gandhi



न्यासधारिता का सिद्धान्त

महात्मा गांधी ने लिखा है कि, ''न्यासिता का मेरा सिद्धान्त कोई काम–चालऊ या छद्मावरण नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि मेरा यह एक सिद्धान्त मेरे और सभी सिद्धान्तों से ऊपर है। और मेरे जाने के बाद भी जीवित रहेगा। क्योंकि इसे धर्म एवं दर्शन की मान्यता प्राप्त है। जिनके पास धन है उन्हें ग़रीबों के हित में अपना धन लगा कर उनके न्यासाधिकारी के रुप में अपने को समझना चाहिए।''

महात्मा गांधी ने 'सम्पत्ति को अपनाना' और 'सम्पत्ति के प्रति लोभ' के बीच स्पष्ट अन्तर व्यक्त किया। उन्होंने 'लोभ' को बड़ा पाप बताया। जब उनके एक उद्योगपति मित्र ने उनसे कहा कि वे अपनी समस्त धन–सम्पत्ति का त्याग करना चाहते हैं, तब गांधीजी ने कहा "मैं नहीं चाहता कि अपनी सम्पत्ति अथवा अपने व्यवहार का त्याग करें। मैं इन दोनों का उपयोग दरिद्रनारायण की सेवा में करना चाहता हूँ" गांधीजी का स्वप्न था "व्यक्तिगत सम्पत्ति धारकों की सम्पत्ति का अन्त नहीं बल्कि दरिद्रता दूर करने में उसका उपयोग किया जाए, साथ ही धनी तथा दरिद्र के बीच की वीभत्स दूरी और असन्तोष का भी निवारण हो सके।"

यही आधार था महात्मा गांधी के न्यासधारिता के सिद्धान्त का। अत्यन्त विनम्रता से गांधीजी यह स्वीकार करते थे कि उनकी सलाह को हर कोई नहीं स्वीकार करेगा। "हो सकता है कि मेरे इस विचार को आदर्शवादी होने का ताना दिया जाए और महत्वहीन समझा जाए। यदि यूक्लिड के यूटोपिया सिद्धान्त का अव्यावहारिक समझे जाने पर भी अमिट प्रभाव है तो मेरे इस विचार का भी मानवता के लिये दूरगामी प्रभाव है। चाहे यह विचार सम्पूर्णता में कार्यान्वित न किया जा सके तथापि भारत इस सच्चे विचार के लिये जिये, यह मेरी इच्छा है।"

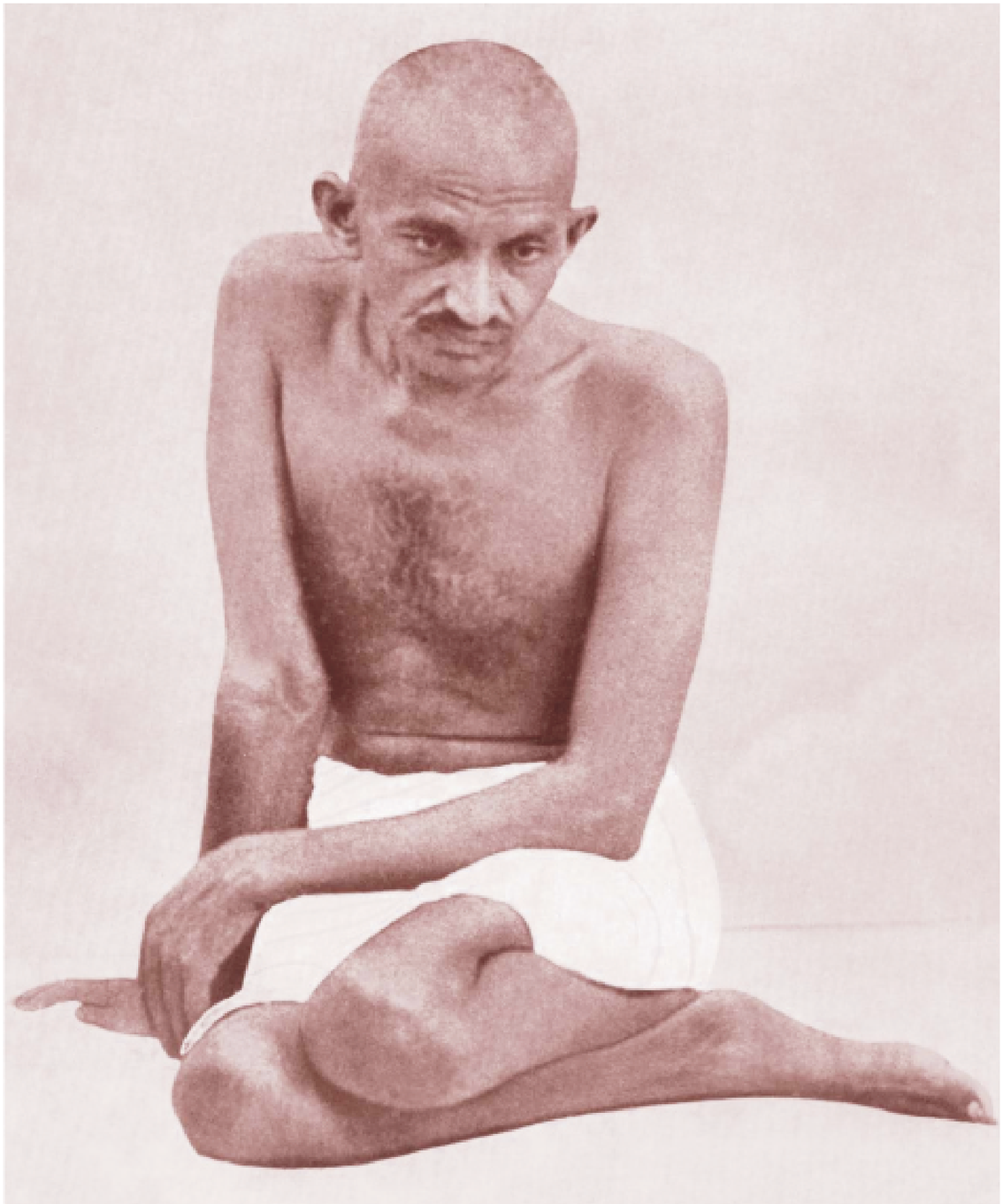

The Gospel of Trusteeship

My theory of trusteeship", said the Mahatma, "is no make-shift certainly no camouflage. I am confident that it will survive all other theories. It has the sanction of philosophy and religion behind it. Those who own money now, are asked to behave like trustees holding their riches on behalf of the poor. A trustee has no heir but the republic."

Mahatma Gandhi made a clear distinction between "possession" and "possessiveness". He described the latter to be a greater evil. When an industrialist friend expressed his desire to renounce his millions. Gandhi said, "I do not want you to renounce either your millions or your business. I want to make use of both for the service of the poor." The dream Gandhi wanted to realise was "not the spoliation of the property of private owners, but to restrict its enjoyment so as to avoid poverty, consequent discontent and the hideously ugly contrast that exists today between the lives and surroundings of the rich and the poor."

This was the basis of Mahatma Gandhi's principle of Trusteeship. He had the humility to acknowledge the truth that his advice will not be accepted at once by all. "I may be taunted with the retort that this is all Utopian and, therefore, not worth a single thought. If Euclid's point, though incapable of being drawn by human agency, has an imperishable value, my picture has its own for mankind to live. Let India live for this true picture, though never realisable in its completeness."

राष्ट्रीय पहनावा

मैं राष्ट्रीय पहनावा इसलिए पहनता हूँ कि यह सबसे स्वाभाविक है और एक भारतीय के लिए सर्वाधिक शोभाप्रद है। मैं मानता हूँ कि पश्चिमी पहनावे की हम जो नकल करते हैं वह हमारे अपकर्ष, अपमान और दुर्बलता का चिह्न है। हम उस पहनावे को अस्वीकार करके एक राष्ट्रीय पाप कर रहे हैं जो भारत की जलवायु के लिये सबसे अधिक अनुकूल है और जो इतना सादा और सस्ता है कि संसार का कोई पहनावा इसका मुकाबला नहीं कर सकता। इसके साथ ही, यह हमें साफ–सुथरा रहने में भी मदद करता है। यदि मिथ्या गौरव और प्रतिष्ठा की मिथ्या भावना बाधक न होती तो अंग्रेज़ों ने बहुत पहले भारतीय पोशाक को अपना लिया होता।

मो. क. गांधी



National Dress

I wear the national dress because it is the most natural and the most becoming for an Indian. I believe that our copying of the European dress is a sign of our degradation, humiliation and our weakness, and that we are committing a national sin in discarding a dress which is best suited to the Indian climate and which for its simplicity, art and cheapness, which is not to be beaten on the face of the earth and which answers hygienic requirements. Had it not been for a false pride and equally false notions of prestige, Englishmen here would long ago have adopted the Indian costume.

M. K. Gandhi







चर्खा एवं खादी

मुझे पूरा विश्वास है कि कताई एवं बुनाई भारतवर्ष के नैतिक एवं आर्थिक उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान देने में समर्थ हैं। जहाँ चर्खा मनुष्य को ईश्वर से मिलाता है वहीं खादी संपूर्ण मानवता को एक सूत्र में बांधती है। यही नहीं खादी की मानसिकता का अर्थ है शक्ति का विकेन्द्रीकरण तथा जनता के लिए आशा की किरण। यह धनवान एवं निर्धन के बीच का सुनहरा सेतु है।

The Spinning-Wheel and Khadi

I feel convinced that the revival of hand-spinning hand-weaving will make the largest contribution to the economic and the moral regeneration of India. Spinning to me is the means to establish communion with God, and Khadi is the symbol of unity of Indian humanity. Moreover, Khadi mentality means decentralization of power and the hope of the masses. It provides the golden bridge between the rich and the poor.

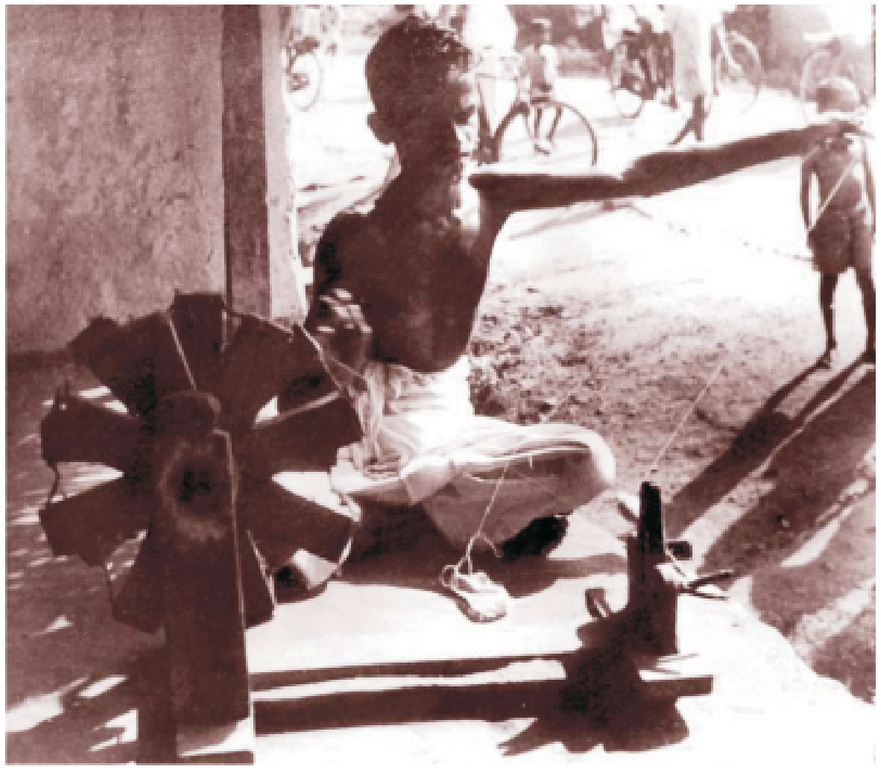

अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र

मैं मानता हूँ कि मैं अर्थशास्त्र और नीतिशास्त्र के बीच कोई सुस्पष्ट या किसी अन्य प्रकार का भेद नहीं करता। वह अर्थशास्त्र अनैतिक और इसीलिए पापयुक्त है जो किसी व्यक्ति अथवा राष्ट्र के नैतिक कल्याण को क्षति पहुँचाता हो। तदनुसार वह अर्थशास्त्र पापयुक्त है जो यह अनुमति देता है कि एक देश दूसरे देश को लूट ले। शोषित श्रम द्वारा तैयार की गई वस्तुओं को खरीदना और उनका इस्तेमाल करना पापयुक्त है।

मो. क. गांधी

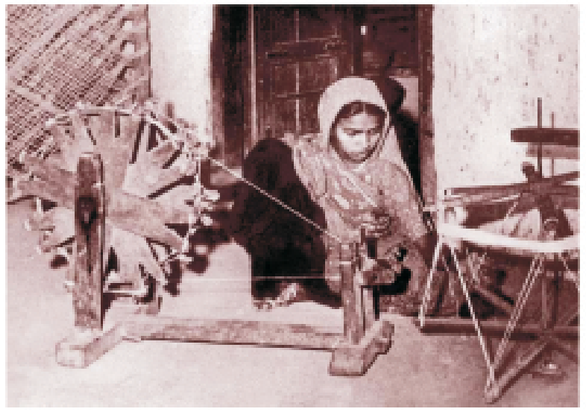





Economics and Ethics

I must confess that I do not draw a sharp or any distinction between economics and ethics. Economics that hurt the moral well-being of an individual or a nation are immoral and, therefore, sinful. Thus, the economics that permit one country to prey upon another are immoral. It is sinful to buy and use articles made by sweated labour.

M. K. Gandhi









मेरा समाजवाद

मेरा समाजवाद अंतिम व्यक्ति तक का हित करने के लिए है। मैं अंधों, बहरों और गूंगों की बलि देकर अपना उत्थान करना नहीं चाहता। उनके समाजवाद में, इनके लिए संभवतः कोई स्थान नहीं है। उनका एकमात्र उद्देश्य भौतिक उन्नति है।

मो. क. गांधी







My Socialism

My socialism means 'even unto this last'. I do not want to rise on the ashes of the blind, the deaf and the dumb. In their socialism, probably these have no place. Their one aim is material progress.

M. K. Gandhi

ग्राम उद्योग और स्वराज

जिन ग्राम उद्योगों का पुनर्जीवन संभव है, उनके पुनर्जीवन का प्रयास करते हुए...मैं वही कर रहा हूँ जो ग्राम जीवन का प्रत्येक प्रेमी, ग्रामों के विघटन का अर्थ समझने वाला प्रत्येक व्यक्ति कर रहा है अथवा करने का प्रयास कर रहा है। मैं ग्रामवासी से



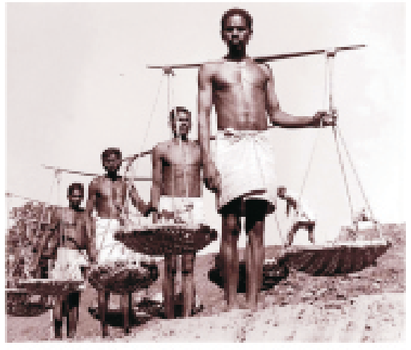

अपना आटा खुद पीसकर उसे पौष्टिक चोकर निकाले बिना इस्तेमाल करने या बिक्री के लिए नहीं तो कम से कम अपनी ज़रूरत लायक गुड़ अपने गन्ने से स्वयं तैयार करने को कहकर आधुनिक सभ्यता के रुख को पीछे की ओर मोड़ने का प्रयास क्यों कर रहा हूँ ? मैं अगर ग्रामवासी से केवल फसल उगाने तक सीमित न रहकर उसे बिक्री योग्य उत्पाद में रूपांतरित करने का आग्रह करता हूँ ताकि वह अपनी दैनिक आमदनी में कुछ और वृद्धि कर सके तो क्या मैं आधुनिक सभ्यता के रूख को पीछे की ओर मोड़ रहा हूँ ?





मो. क. गांधी





Village Industry and Swaraj

In seeking to revive such village industries as are capable of being revived… I am trying to do what every lover of village life, everyone who realizes the tragic meaning of the disintegration of villages is doing or trying to do.





Why am I turning back the course of modern civilization, when I ask the villager to grind his own meal, eat it whole, including the nourishment bran, or when I ask him to turn his sugarcane into gur for his own requirements, if not for sale? Am I turning back the course of modern civilization when I ask the villagers not merely to grow raw produce, but to turn it into marketable products and thereby add a few more pies to their daily income?

M. K. Gandhi









"यदि गांव नष्ट होते हैं तो भारत का भी विनाश हो जाएगा"

भारत अपने सात लाख गांवों में बसता है–इन दीन–हीन, छोटे–छोटे और दूर–दराज़ के गांवों की आबादी मुश्किल से सैकड़ों में और कभी–कभी तो सिर्फ सौ–पचास में होती है। मैं ऐसे ही किसी गांव में जाकर बसना चाहूंगा। असली भारत, मेरा भारत, वही है। हम एक ग्रामीण सभ्यता के उत्तराधिकारी हैं। अतः हमें एक आदर्श नागरिक से पहले एक आदर्श ग्रामवासी बनना होगा।



मान लीजिए, मैं एक कोल्हू लेकर गांव में जाकर बस जाता हूं तो मैं 15–20 रूपये माहवार कमाने वाला कोई साधारण तेली नहीं होऊंगा। मैं तो एक महात्मा तेली होऊंगा। मैंने यहां 'महात्मा' शब्द का प्रयोग विनोद के लिए किया है; मेरा असली आशय तो है कि तेली के रूप में मैं ग्रामवासियों के अनुकरण के लिए एक आदर्श बन जाऊंगा। मैं ऐसा तेली होऊंगा जिसे गीता और कुरान की जानकारी है। मैं इतना पढ़ा–लिखा होऊंगा कि उनके बच्चों को शिक्षा दे सकूं। मैं उन्हें कताई सिखाऊंगा और जब वे मुझ से किसी बुनकर को लाने के लिए आग्रह करेंगे तो मैं उन्हें उसी प्रकार बुनकर लाकर दूंगा जिस प्रकार मैंने उन्हें शिक्षक लाकर दिया है। यह बुनकर उन्हें सिखायेगा कि वे अपना कपड़ा किस प्रकार बुन सकते हैं।







मेरी शिक्षा पद्धति बुद्धि, शरीर और आत्मा, तीनों का विकास करती है। इसकी तुलना में, सामान्य शिक्षा पद्धति केवल बुद्धि की ओर ध्यान देती है। वहां के साधारण लोगों तक आप उच्च योग्यता–प्राप्त चिकित्सक और अस्पताली साज–सामान नहीं पहुंचा सकते। उनकी आशा का आधार तो सरल प्राकृतिक उपचार और रामनाम ही होता है। मैं उन्हें स्वास्थ्य–रक्षा और सफाई के महत्व के प्रति जागरूक करूंगा और जब वे मुझ से कहेंगे कि मैं उनके लिए एक मेहतर की व्यवस्था कर दूं तो मैं कहूंगा, "मैं आपका मेहतर हूँ और आपको इस काम की शिक्षा मैं दूंगा।"

मेरी भौतिक आवश्यकताओं के लिए मेरा गांव ही मेरी दुनिया है, परन्तु मेरी आध्यात्मिक आवश्यकताओं के लिए पूरा विश्व मेरा गांव है।

मो. क. गांधी

"If Villages perish, India will perish too"

India lives in her seven lakhs of villages-obscure, tiny, out-of-the-way villages, where the population in some cases hardly exceeds a few hundred, very often not even a few score. I would like to go and settle down in some such village. That is real India, my India. We are the inheritors of a rural civilisation. We must become ideal villagers before we become ideal citizens.



Supposing I go and settle down in a village with a GHANI (village oil press), I won't be an ordinary GHANCHI (oil presser) earning 15-20 rupees a month. I will be a Mahatma GHANCHI. I have used the word 'Mahatma' in fun, but what I mean to say is that as a GHANCHI I will become a model for the villagers to follow. I will be a GHANCHI who knows the Gita and the Quran. I will be learned enough to teach their children. I will teach them spinning and when they come and ask me for the services of a weaver, I will find them a weaver on the same terms as I found them a teacher. And the weaver will teach them how to weave their own cloth.

My system of education leads to the development of the mind, body and soul. The ordinary system cares only for the mind. You cannot take to these humble people the paraphernalia of highly qualified doctors and hospital equipment. In simple, natural remedies and Ramanama lies their only hope. I will inculcate in them the importance of hygiene and sanitation, and when they come and ask me for a sweeper, I will tell them: "I will be your sweeper and I will train you all in the job."

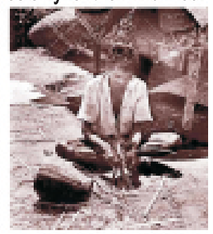

For my material needs village is my world, but for my spiritual needs the whole world is my village.

M. K. Gandhi



ग्राम उद्योग और स्वराज

जिन ग्राम उद्योगों का पुनर्जीवन संभव है, उनके पुनर्जीवन का प्रयास करते हुए...मैं वही कर रहा हूँ जो ग्राम जीवन का प्रत्येक प्रेमी, ग्रामों के विघटन का अर्थ समझने वाला प्रत्येक व्यक्ति कर रहा है अथवा करने का प्रयास कर रहा है। मैं ग्रामवासी से अपना आटा खुद पीसकर उसे पौष्टिक चोकर निकाले बिना इस्तेमाल करने या बिक्री के लिए नहीं तो कम से कम अपनी जरूरत लायक गुड़ अपने गन्ने से स्वयं तैयार करने को कहकर आधुनिक सभ्यता के रुख को पीछे की ओर मोड़ने का प्रयास क्यों कर रहा हूँ ? मैं अगर ग्रामवासी से केवल फसल उगाने तक सीमित न रहकर उसे बिक्री योग्य उत्पाद में रूपांतरित करने का आग्रह करता हूँ ताकि वह अपनी दैनिक आमदनी में कुछ और वृद्धि कर सके तो क्या मैं आधुनिक सभ्यता के रूख को पीछे की ओर मोड़ रहा हूँ ?





मो. क. गांधी

Village Industry and Swaraj

In seeking to revive such village industries as are capable of being revived... I am trying to do what every lover of village life, everyone who realizes the tragic meaning of the disintegration of villages is doing or trying to do. Why am I turning back the course of modern civilization, when I ask the villager to grind his own meal, eat it whole, including the nourishment bran, or when I ask him to turn his sugarcane into gur for his own requirements, if not for sale? Am I turning back the course of modern civilization when I ask the villagers not merely to grow raw produce, but to turn it into marketable products and thereby add a few more pies to their daily income?

M. K. Gandhi





नशाबन्दी

यदि हम अहिंसा के मार्ग पर चलकर 'पूर्ण स्वराज' के अपने लक्ष्य तक पहुंचना चाहते हैं तो नशाबन्दी को अपनाना सबसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक एवं नैतिक सुधार है। नशीले पदार्थों के अभिशाप से ग्रस्त लाखों पुरुष एवं महिलाओं का भविष्य इस पर निर्भर है।

मो. क. गांधी

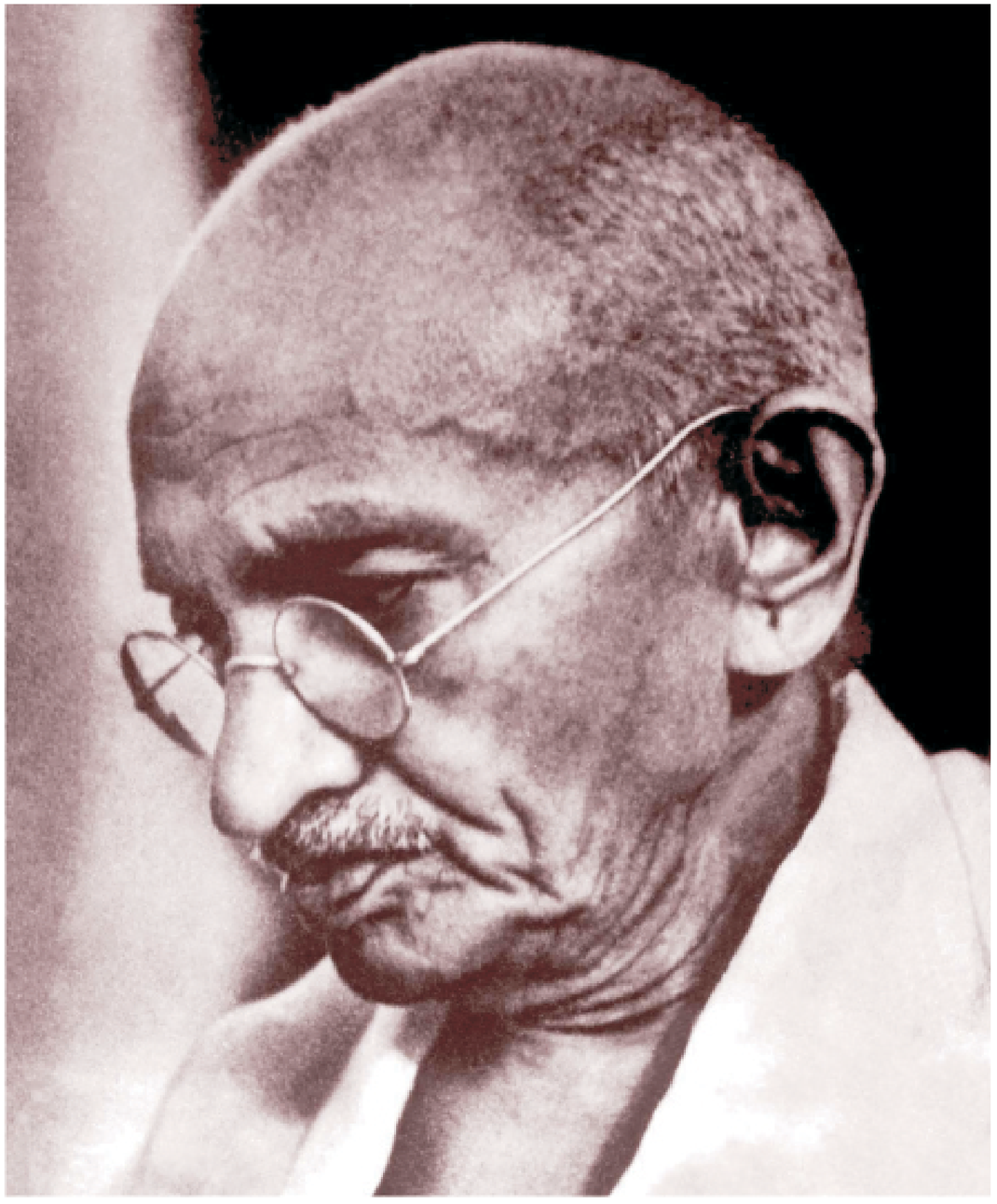

Prohibition

Adoption of Prohibition is the most vital social and moral reform, if we are to reach our goal of poorna swaraj through non-violent efforts. The fate of lakhs of men and women who are labouring under the curse of intoxicants and narcotics, hangs on this.

M. K. Gandhi

INDIA OF MY DREAMS

I SHALL WORK FOR AN INDIA IN WHICH THE POOREST SHALL FEEL THAT IT IS THEIR COUNTRY, IN WHOSE MAKING THEY HAVE AN EFFECTIVE VOICE, AN INDIA IN WHICH THERE SHALL BE NO HIGH CLASS AND LOW CLASS OF PEOPLE; AN INDIA IN WHICH ALL COMMUNITIES SHALL LIVE IN PERFECT HARMONY. THERE CAN BE NO ROOM IN SUCH AN INDIA FOR THE CURSE OF UNTOUCHABILITY, OR THE CURSE OF INTOXICATING DRINK AND DRUGS. WOMEN WILL ENJOY THE SAME RIGHT AS MEN. WE SHALL BE AT PEACE WITH ALL THE REST OF THE WORLD. THIS IS THE INDIA OF MY DREAMS.

M. K. GANDHI



गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूँ। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अह्म तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आज़माओः

जो सबसे ग़रीब और कमज़ोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अह्म समाप्त होता जा रहा है।

मो. क. गांधी

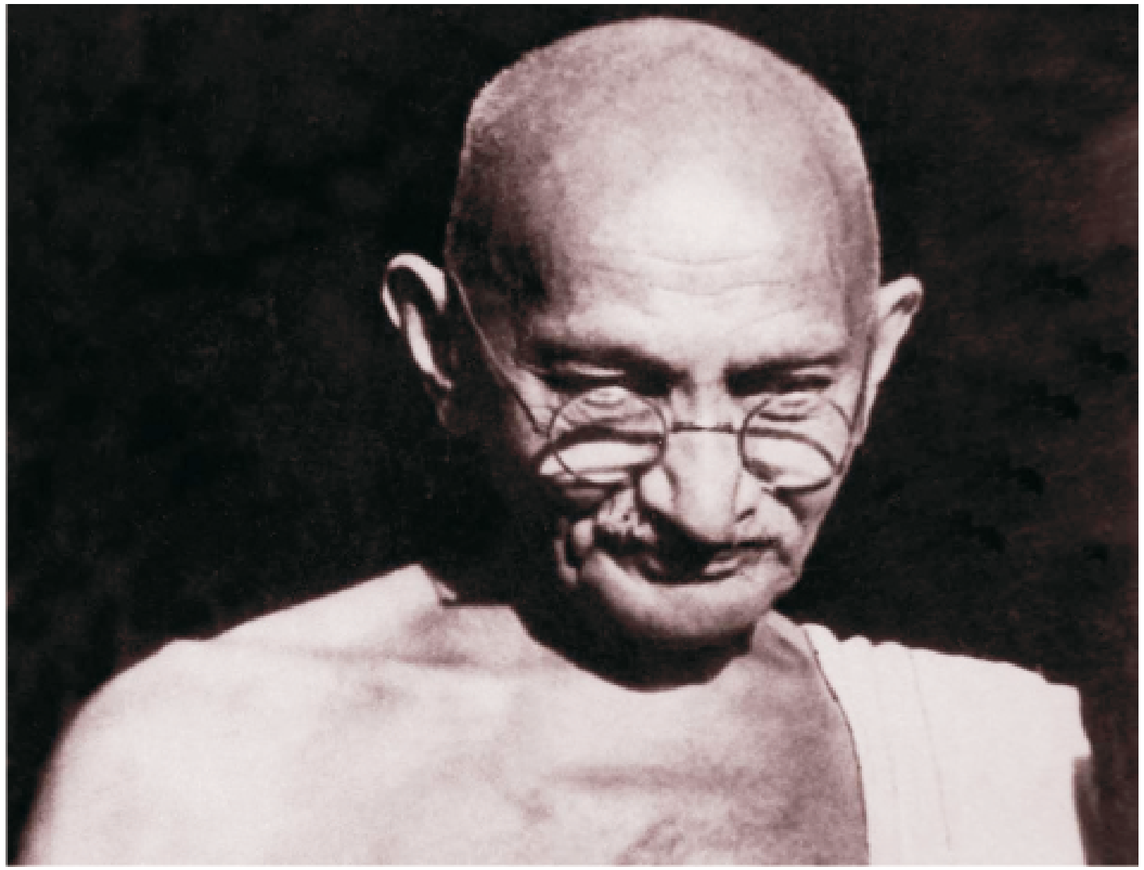

Gandhiji's Talisman

I will give you a talisman. Whenever you are in doubt or when the self becomes too much with you, apply the following test.

Recall the face of the poorest and the weakest man whom you may have seen and ask yourself if the step you contemplate is going to be of any use to him. Will he gain anything by it ? Will it restore him to a control over his own life and destiny ? In other words, will it lead to Swaraj for the hungry and spiritually starving millions ?

Then you will find your doubts and your self melting away".

M. K. Gandhi

सेवक की प्रार्थना

हे! नम्रता के सागर।

दीन, दलित के हीन कुटिया के निवासी।

गंगा, यमुना और ब्रह्मपुत्र के जलों से सिंचित इस सुन्दर देश में तुझे सब जगह खोजने में हमें मदद दे।

हमें ग्रहणशीलता और खुशदिली दे,

तेरी अपनी नम्रता दे,

हिन्दुस्तान की जनता से

एकरूप होने की शक्ति और उत्कण्ठा दे।

हे भगवान! तू तभी मदद के लिए आता है, जब मनुष्य शून्य बनकर, तेरी शरण लेता है। हमें वरदान दे, कि सेवक और मित्र के नाते जिस जनता की हम सेवा करना चाहते हैं, उससे कभी अलग न पड़ जायें। हमें त्याग, भक्ति और नम्रता की मूर्ति बना, ताकि इस देश को हम ज़्यादा समझें और ज़्यादा चाहें।

मो. क. गांधी

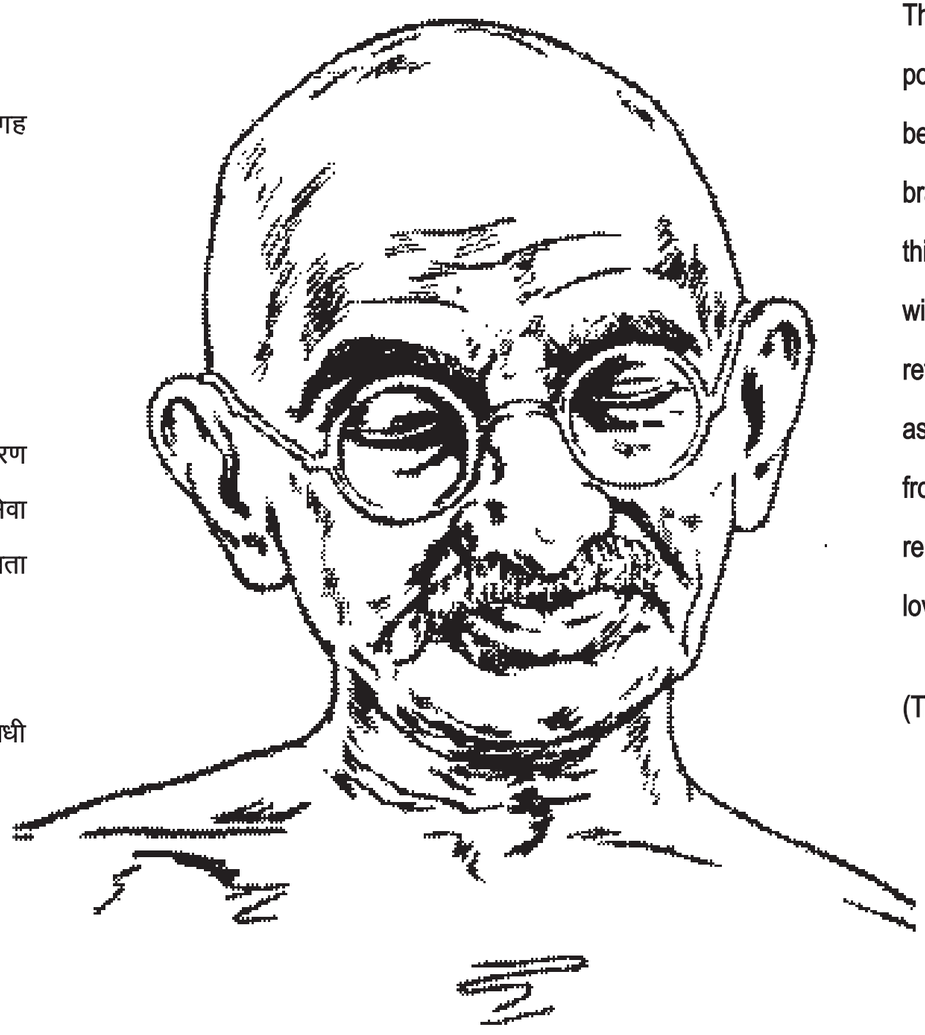

A Servant's Prayer

Thou art the ocean of humility, you abide in the humble homes of the poor and the depressed. Help me in my search for thee in this beautiful land washed by the holy waters of the ganga yamuna and brahmputra. Bestow upon us thine tolerance and happiness, bestow thine humility. Fill my heart with the desire and power to become one with the masses of india. O lord! You help only those who seek thy refuge after reducing oneself to zero, bestow thine blessings so that as a humble servant and a friend of the masses may we never part from those whom we wish to serve. Make us the living symbols of renunciation, devotion and humility, so that we may understand and love this country better.

(Translation of only poem composed by Gandhiji)

क्षमा आत्मा का गुण है, इसलिए यह एक सकारात्मक गुण है। यह नकारात्मक नहीं है। भगवान बुद्ध ने कहा है, 'क्रोध को अ–क्रोध से जीतो।' यह अ–क्रोध क्या है ? यह एक सकारात्मक गुण है और इसका अर्थ है उदारता अथवा प्रेम का सर्वोच्च गुण।

मो. क. गांधी

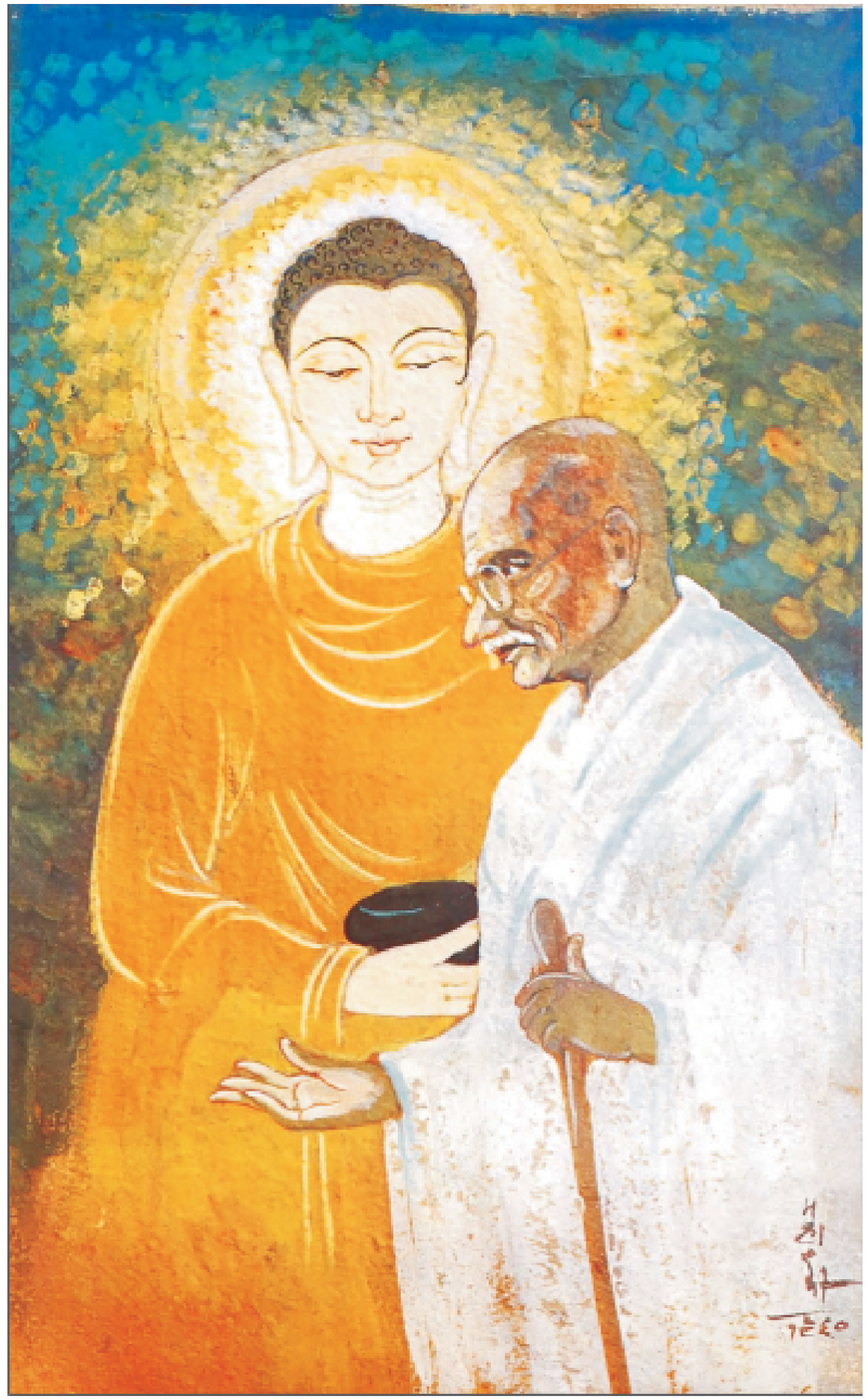

Forgiveness is a quality of the soul, and therefore, a positive quality. It is not negative. 'Conquer anger', says Lord Buddha, 'by non-anger'. But what is that 'non-anger' ? It is a positive quality and means the supreme virtue of charity or love.

M. K. Gandhi

SECTION - III

VAISHNAV JAN

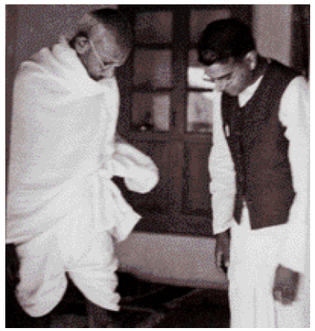

नरसिम्ह मेहता की अमर रचना और बापू के प्रिय भजन का यह चित्रण एक अनाम कलाकार की बापू को श्रद्धान्जलि है। यह कलाकार नकली नोट बनाने के आरोप में अहमदाबाद के एक जेल में सज़ा भुगत रहा था। यहीं पर उसकी मुलाकात गांधीजी के एक अनुयायी श्रीमन् नारायण से हुई जो किसी आयोजन में भाग लेने के लिए जेल में आमंत्रित थे। असली सा दिखने वाला नकली नोट देखकर वे दंग रह गए और उन्होंने इस बन्दी को प्रेरित किया कि वह अपनी कला को किसी सद्कार्य में लगाए। उसी प्रेरणा के फलस्वरुप उस बन्दी ने यह चित्र बनाए थे।



These set of paintings were produced by a man who was arrested on the charges of making counterfeit currency notes. While serving his prison term at the Ahmedabad jail he met a disciple of Mahatma Gandhi, Shri Shriman Narayan who was immensely impressed by his “art work”. The disciple inspired the prisoner to put his talent towards some good work. The meeting changed his life forever as he experienced a deep inner transformation. As a tribute to Mahatma Gandhi the prisoner visualized his favourite hymn- the immortal composition of Saint Narsimha Mehta “Vaishnav Jana to...” It is a homage to the spiritual journey of Indian philosophy through the ages.

मैं स्वयं को आस्था और प्रार्थना का व्यक्ति मानता हूँ, और मुझे टुकड़े–टुकड़े भी कर दिया जाए तब भी मेरा विश्वास है कि मुझे ईश्वर इतनी शक्ति देगा कि मैं उसके अस्तित्व से इंकार न करूं और ज़ोर देकर कहूं कि वह है।

मो. क. गांधी

I CLAIM to be a man of faith and prayer, and even if I were cut to pieces, I trust God would give me the strength not to deny Him and to assert that He is.

M. K. Gandhi

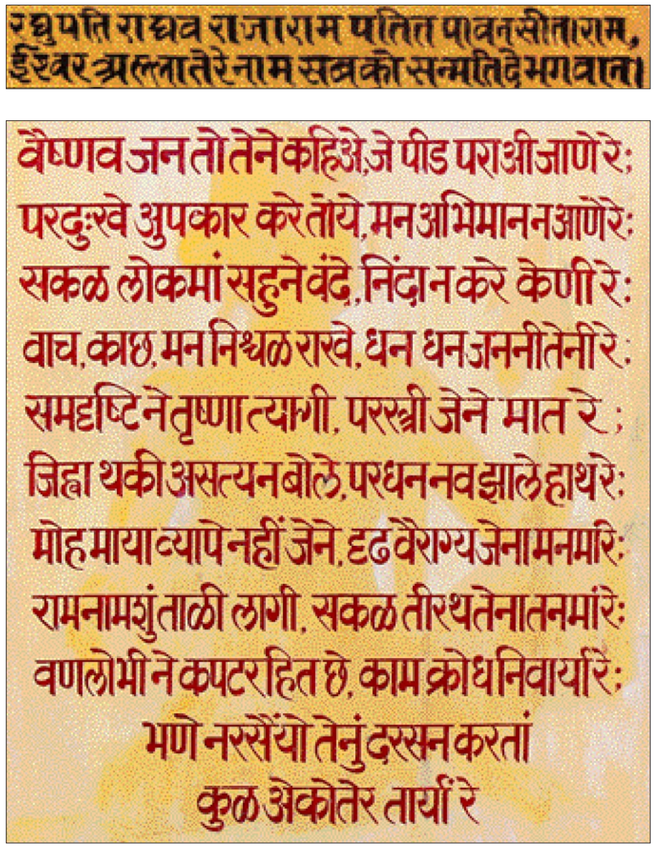

गुजरात के सुप्रसिद्ध सन्त कवि
नरसिम्ह मेहता की यह कालजयी
रचना गांधीजी का सबसे प्रिय भजन था।

This Immortal Composition By
The Renowned Poet Saint Of Gujarat Narsimha Mehta
Was Gandhiji's Favourite Hymn

वैष्णव जन तो तेने कहीये जे पीड़ पराई
जाणे रे;
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान
न आणे रे, द्यु.

सकल लोकमां सहुने बंदे, निंदा न करे
केनी रे;
वाच काछ मन निश्चल राखे, धन–धन
जननी तेनी रे.1

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने
मात रे;
जिह्या थकी असत्य न बोले, परधन नव
झाले हाथ रे. 2

मोह माया व्यापे नहि जेने, दृढ़ वैराग्य
जेना मनमां रे,
रामनामशुं ताली लागी, सकल तीरथ तेना
तनमां रे. 3

वणलोभी ने कपटरहित छे, काम क्रोध
निवार्या रे;
भणे नरसैंयो तेनुं दरसन करता कुल
एकोतेर तार्या रे।

Vaishnava jana to tene kahiye je peera paraee janre,
Pardukkhe upakar kare toye man abhiman na ane re.
Sakala lokama sahune vande ninda na kare keni re,
Wacha kachha mana nishchal rakhe

Dhandhan janani teni re (1)
Sama drushtee ne trishna tyagi parastri jene maat re,
Jiwha thaki asatya na bole
Para dhana nava jhale hath re (2)

Moha maya vyape nahi jene dridha vairagya jena manama re,

Rama-nama sun tali lagi
Sakal tirath tena tanama re (3)

Wana lobhee ne kapat rahit chhe
kamakrodha niwarya re,

Bhane narasaiyyo tenum
darshana karta kulekottera taryya re. (4)

Explanation of the Hymn

Refrain :	He is a vaishnav (god's devotee) who identifies himself. With other's sorrows and so doing has no pride about himself.
First Stanza :	Such a one respects everyone and speaks ill of none. He is compassionat, may his mother be blessed.
Second Stanza :	He is equidisposed towards all, has no desires; regards another's wife as own mother, always speaks the truth and does not touch other people's property.
Third Stanza :	He labours neither under infatuation, nor withdraws his mind from wordly things. He is intent on rama-nama (god's name); his body is the sacred shrine and pilgrimage.
Fourth Stanza :	He is no miser, and he is free from deceit and he has conquered passions and anger. Narasimha mehta says his presence purifies fore fathers also.

SECTION - IV

GANDHIJI'S LITERATURE

गांधी साहित्य

महात्मा गांधी आने वाली पीढ़ियों के लिए अनमोल विरासत छोड़ गए हैं। परन्तु यह विरासत किसी निजी सम्पत्ति के रूप में नहीं है। यह तो निहित है उनके जीवन संदेश में, जीवन के हर पहलू पर, उनकी गहरी सोच में और उनके सम्पूर्ण जीवन–दर्शन में।

गांधी स्वयं तो एक बहुसर्जक लेखक थे ही पर साथ ही शायद वे विश्व के उन प्रसिद्ध हस्तियों में सबसे आगे थे जिन पर अधिकतम् पुस्तकें लिखीं व पढ़ी गईं। आज गांधी पर सात हज़ार से भी अधिक बड़ी व छोटी पुस्तकें उपलब्ध हैं। उनकी आत्मकथा जिसे उन्होंने 'मेरे सत्य के प्रयोग' का उपनाम दिया तथा 'हिन्द स्वराज' जिसे उनके उत्कृष्ट कृत्यों में से माना जाता है, सबसे महत्वपूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त वे रचनाएं है जो उनके सहयोगियों ने लिखीं तथा जो उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का परिचय का देती हैं जैसे चम्पारण सत्याग्रह – 1917, 1921 का उनका मुकदमा, 1924 का उपवास, 1931 का गोलमेज़ अधिवेशन, 1932 का ऐतिहासिक उपवास, द्वितीय युद्ध के दौरान उनकी गतिविधियां, पाकिस्तान को लेकर मुहम्मद अली जिन्ना से उनकी बातचीत, 1946–47 में बिहार और नोआखली में उनकी शांतियात्रा।

गांधीजी का अधिकांश लेखन समाचार–पत्रों, पत्रिकाओं में सम्पादकीय एवं निजी पत्राचार के रुप में था। उन्होंने समाचार–पत्रों का राजनीति में और जिन मुद्दों में उनकी गहरी आस्था थी उसके प्रचार के माध्यम के रुप में प्रयोग किया। साथ ही पत्रकारिता को उन्होंने सत्ता पक्ष तथा जनमानस के साथ सम्वाद स्थापित करने का एक शक्तिशाली ज़रिया बनाया। पत्रकारिता में उनकी यह गहरी आस्था ही थी कि उन्होंने 1903 में दक्षिण अफ्रीका में 'इन्डियन ओपिनियन' नामक साप्ताहिक का प्रकाशन आरम्भ किया और भारत आगमन पर 1919 में 'यंग इंडिया' तथा 1933 में 'हरिजन' की स्थापना की। इसके अतिरिक्त अपने लम्बे कारावास के दौरान अनेकों छोटी पुस्तिकाओं की भी रचना की। समाचार पत्रों में छपे उनके साक्षात्कार तथा लेखों का दायरा सही मायने में व्यापक था। यद्यपि अधिकांश सामग्री आज नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद तथा प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित 'सम्पूर्ण वांड्गमय' के सौ से भी अधिक खण्डों में उपलब्ध है, परन्तु अभी भी ऐसी कितनी सामग्री है जो अप्रकाशित ही है।

आज भी गांधीजी पर पुस्तकें लिखना जारी है। उनका जीवन दर्शन भारत में ही नहीं विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों में विश्लेषण, बहस व अध्ययन का विषय बना हुआ है। सत्य, अहिंसा, ग्रामोद्धार, अस्पृश्यता निवारण, सामाजिक न्याय, नारी उत्थान, पंचायती राज, विद्यार्थी, युवा एवं जीने का सीधा सरल अंदाज़ गांधीजी के जीवन दर्शन में निहित है। यही जीवन दर्शन आज मानव को पर्यावरण के बिगड़ते स्वरुप से उबरे संकट का सामना करने की कुंजी प्रदान करती है । गांधी का जीवन दर्शन गांधीवाद में आस्था रखने वालों के लिए ही नहीं बल्कि आस्था न रखने वालों के लिए भी जिज्ञासा का विषय बन गया है।

महात्मा गांधी पर अनेक जीवनियां भी लिखी गईं जिसमें सबसे महत्वपूर्ण है–1909 में जोसफ जे. डोक द्वारा रचित 'एन इण्डियन पेट्रियाट इन साउथ अफ्रीका' 1924 में छपी रोमां रोलाँ की रचना 'महात्मा गांधी; लुई फिशर की 'द लाइफ आफ महात्मा गांधी'(1953); आठ खण्डों में डी.जी.तेन्दुलकर की महात्मा; बी.आर. नन्दा, जे.बी. कृपलानी, विश्व प्रसिद्ध अन्य लेखकों की विभिन्न रचनाएं; महादेव देसाई की डेली डायरी और चार खण्डों में प्यारेलाल की 'अर्ली फेज़' और 'लास्ट फेज़' और 'यह सब रचनाएं महात्मा गांधी पर लिखी महत्वपूर्ण पुस्तकों की श्रेणी में आती हैं।

आज समस्त विश्व धीरे–धीरे गांधीजी की अनमोल विरासत के प्रति और अधिक जागृत हो रहा है। गांधी को समझने के लिए अनेक गोष्ठियां, कार्यशालाएं एवं नए–नए शोध किए जा रहे हैं भारत और भारत के बाहर, साथ ही फिल्म और वृतचित्र भी बनाए जा रहे हैं।

Gandhi Literature

Mahatma Gandhi has left much to posterity. His legacy consists not only of his personal possession but also of a dramatic life and penetrating ethical insights.

Gandhi was himself a prolific writer and is perhaps one of the most extensively written and read about world leaders. There are today more than, 7,000 major works on him. His autobiography characteristically entitled 'The story of my experiments with truth' and the 'Hind Swaraj' regarded as his seminal work, are of course the most significant volumes written by him. But certain works officially compiled by his close associates describe some of the dramatic events in his life. These include the 'Satyagraha in South Africa' Champaran Satyagraha in 1917, the Great Trial of 1922, The Great Fast of 1942, Round Table Conference-1931, The Epic Fast of 1932, his activities during the World War II, his conferences with MA Jinnah over Pakistan and his Peace Mission in Bihar and Noakhali in 1946-47.

The great bulk of Mahatma Gandhi's writings were in the form of editorials, articles and correspondence both of official and personal nature. He made best use of the newspapers as political tool and an indispensable vehicle to propagate the cause he held dear. He used Press as a medium of dialogue with the authorities and the masses. His weeklies like 'Indian Opinion' (1903) 'Young India' (1919) 'Harijan' (1933) and also his small booklets and pamphlets on various subjects written during his long prison terms, his articles and interviews in other newspapers have enormous range and reach. While quite a substantive work of the Mahatma have been compiled in more than 100 volumes of his 'Collected Works' brought out by the Navjivan Prakashan, Ahmedabad and the Publication Division, Delhi, but it is by no means complete.

Mahatma Gandhi continues to be written about, studied, debated, discussed and analysed. His philosophy of truth, nonviolence, village reconstruction, removal of untouchability, fight for social justice, status of women, panchayati raj, students, youth and his holistic views of life, a key to survival for mankind in the face of the growing environmental crisis, hold great fascination for both the uninitiated, convert and the inquisitive minds alike.

Of the rich biographical material on Mahatma Gandhi by Joseph J. Doke's 'An Indian Patriot in South Africa' published in 1909, the widely known works of Romain Rolland ' Mahatma Gandhi, (1924) Louis Fischer's –The life of Mahatma Gandhi (1953) D.G. Tendulkar's Mahatma in 8 Volumes. Several works of J.B. Kriplani, B.R.Nanda, Mahadeva Desai's Daily dairy and Pyarelal's and the last phase in 4 volumes etc. are all part of the celebrated works on Mahatma Gandhi.

The world is gradually becoming more and more conscious of the Gandhian heritage. There are proceedings of host of seminars, symposia and interactions in India and abroad, newer research is being undertaken on Gandhi in the universities. Films and documentaries are being produced on him across the globe.

हरिजन का पुनर्जीवन

महात्मा गांधी द्वारा सम्पादित हरिजन साप्ताहिक एक बार फिर राष्ट्रीय पटल पर अहम् भूमिका निभाने के लिए तैयार था। गांधीजी और भारत की जनता के बीच सम्वाद सेतु बन हरिजन पत्रिका सबके सामने थी । यह एक सशक्त माध्यम था गांधी जी के लिए सरकार और लोगों तक अपने विचारों को पहुंचाने का, लोगों को दिशा निर्देश देने का और साथ ही गांधी युग के इतिहास का प्रमुख सूचना–स्रोत भी था। साप्ताहिक में गांधीजी के सामाजिक और राजनैतिक सरोकार पर विचार प्रकाशित होते थे। वैसे भी गांधी जी के लिए यह दोनों सिक्के के दो पहलू के समान ही थे। उन्होंने कभी भी इनके बीच फर्क नहीं महसूस किया। यह एक दूसरे के पूरक मात्र थे। परन्तु इन सबसे अहम् बात यह थी कि गांधीजी ने इस साप्ताहिक के माध्यम से भारत की जनता के सामने अपना हृदय खोल कर रख दिया। समाज में, राष्ट्र की राजनीति में बढ़ते साम्प्रदायिक फासले इस प्राचीन देश की एकता और सम्मान के लिए खतरा पैदा कर रहे थे। उन्हें भय था और इसीलिए वे सबको सचेत करने का प्रयास कर रहे थे कि यदि ऐसे ही चलता रहा तो यह सब हमारे प्यारे भारत की उन्नति में बाधक सिद्ध होंगे।

गांधी जी का अपनी अठहत्तरवीं जन्म जयन्ती पर प्रार्थना के दौरान दिया हुआ उनका प्रवचन, या उनकी अन्तिम वसीयत हमें सदा के लिए सन्मार्ग पर चलने का दिशा निर्देश देते हैं। और यह सब हरिजन के अनन्त पृष्ठों में निहित है राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की अनमोल विरासत के रूप में।



Revival of Harijan

Harijan the weekly edited by Mahatma Gandhi was once again playing an important role in the nation's life as Gandhiji declared to continue to write for it. The weekly helped in establishing a meaningful dialogue with the masses. It was a powerful platform for Gandhiji to present his views on important issues and also to give directions to the other people.

The weekly contained Gandhiji's political and social views. He, in any case, never made a distinction between the two, for him they are the two sides of the same coin, one must compliment the other. But more significantly through his weekly columns, the Father of the Nation poured out his heart before the world. The growing communal divide in the society and polity of the Nation posed a threat to the unity and dignity of this ancient land. He rightly feared and warned that it will retard the progress and onward march of his beloved India.

Mahatma Gandhi's address at the prayer meeting on 2nd October, 1947, on his 78th birth anniversary and his 'last will and Testament' are important documents and show the path, we all must follow. These are contained in the innumerable pages of the weekly Harijan that is the immortal legacy of the Father of the Nation-Mahatma Gandhi.

पत्रकार गांधी

महात्मा गांधी स्वयं को सत्य और मोक्ष का खोजी कहते थे। मानवता की सेवा को समर्पित अपनी आत्म–खोजी तीर्थयात्रा के दौरान उन्हें कई भूमिकाएँ निभानी पड़ीं। इनमें से 'पत्रकार गांधी' भी एक भूमिका थी। 'इण्डियन ओपिनियन' में 9 जून 1907 को वे लिखते हैः–

''मैंने पत्रकारिता को अपने जीवन के उद्देश्य प्राप्ति के लिये अपनाया है। मेरा ध्येय है कि घोर दबाव में भी उदाहरण द्वारा मैं सत्याग्रह के बेजोड़ अस्त्र का प्रयोग सिखाऊँ।

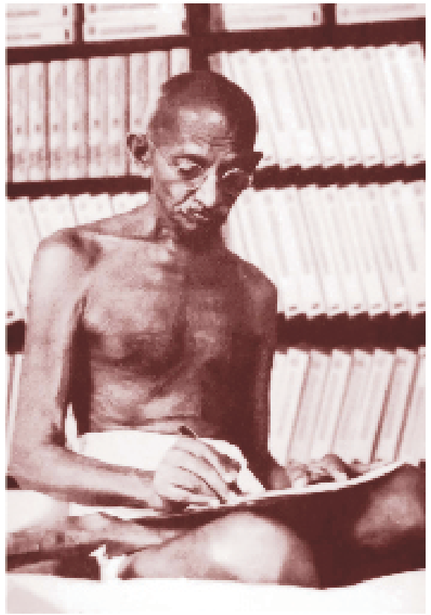



इंडियन ओपीनियन' के प्रथम मास में ही मैं समझ गया था कि पत्रकारिता का एकमात्र ध्येय सेवा होनी चाहिए। समाचारपत्रों के पास बड़ी भारी शक्ति है। लेकिन जिस प्रकार अनियंत्रित बाढ़ का पानी पूरी बस्तियों को डुबा देता है और फसलों को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार अनियंत्रित लेखनी की सेवा भी विनाशकारी होती है। यदि उसका नियंत्रण बाहर से किया जाए तो वह नियंत्रणहीनता से भी अधिक अनिष्टकर सिद्ध होता है। प्रेस का नियंत्रण तभी लाभकारी हो सकता है जब प्रेस उसे स्वयं अपने ऊपर लागू करे। अगर यह तर्क सही है तो दुनिया के कितने पत्र इस कसौटी पर खरे उतरेंगे ? लेकिन जो पत्र–पत्रिकाएं निकम्मी हैं, उन्हें कौन रोके ? अच्छाई और बुराई की तरह, निकम्मी और उपयोगी भी साथ–साथ चलेंगी और मनुष्य को अपना चुनाव खुद करना होगा।

वाणी और लेखनी की स्वतंत्रता स्वराज की आधारशिला है। अगर यह खतरे में है तो तुम्हें अपनी संपूर्ण शक्ति लगाकर इसकी रक्षा करनी चाहिए।





प्रेस को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जा सकता है। उसके शक्तिशाली होने में कोई संदेह नहीं है, लेकिन उस शक्ति का दुरूपयोग करना एक अपराध है। मैं स्वयं एक पत्रकार हूँ और अपने साथी पत्रकारों से अपील करता हूँ कि वे अपने उत्तरदायित्व को समझें और अपना काम करते रहें।

मो. क. गांधी

The Journalist Gandhi

Mahatma Gandhi called himself 'a seeker of truth, and a seeker of *moksha'*. On his pilgrimage to self realization through service to humanity Gandhiji had to assume many roles-'the journalist Gandhi' was one of them. Writing in the Indian Opinion on 9th June, 1907, he says,

"I have taken up journalism, not for its own sake but mainly as an aid to what I have conceived to be my mission in life. My mission is to teach by example and precept under severe restraint the use of the matchless weapon of *Satyagraha".*

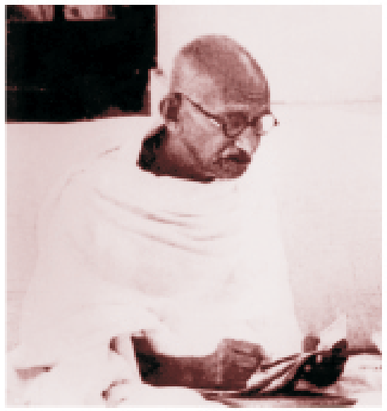

In the very first month of Indian Opinion, I realized that the sole aim of journalism should be service. The newspaper press is a great power, but just as an unchained torrent of water submerges the whole countryside and devastates crops, even so an uncontrolled pen serves but to destroy. If the control is from without, it proves more poisonous than want of control. It can be profitable only when exercised from within. If this line of reasoning is correct, how many of the journals in the world would stand the test? But who would stop those that are useless? The useful and the useless must, like good and evil generally, go on together, and man must make his choice.



Freedom of speech and pen is the foundation of Swaraj. If the foundation stone is in danger, you have to exert the whole of your might in order to defend that single stone.

The Press is called the Fourth Estate. It is definitely a power; but to misuse that power is criminal. I am a journalist myself and shall appeal to fellow-journalists to realize their responsibility and to carry on their work with no idea other than that of upholding the truth.

M. K. Gandhi

SECTION - V

CONTEMPORARIES OF GANDHI



काका कालेलकर



कस्तूर बाई

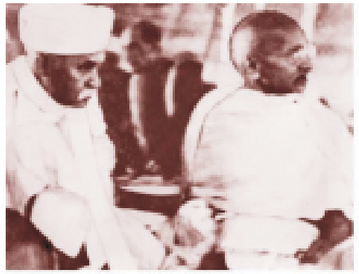

मदनमोहन मालवीय

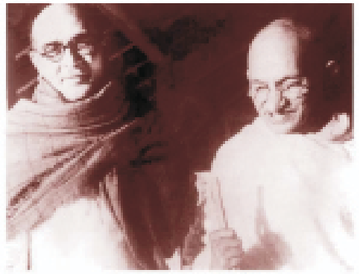

महादेव देसाई



नेताजी सुभाषचंद्र बोस



लाला लाजपत राय

दुनिया बहुत कम जानती है कि मेरी तथाकथित महानता किस कदर मेरे मूक, निष्ठावान, योग्य और शुद्ध कार्यकर्ताओं–स्त्री एवं पुरूषों–के अनवरत कठोर परिश्रम पर और नीरस कामों में भी उनकी लगन पर आश्रित है।

मो. क. गांधी



डा. राजेन्द्र प्रसाद



आचार्य जे. बी. कृपालानी



मीरा बहन

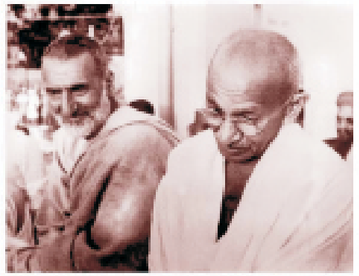

अब्दुल गफ्फार खान

The world knows so little of how much my so-called greatness depends upon the incessant toil and drudgery of silent, devoted, able and pure workers, men as well as women.

M. K. Gandhi

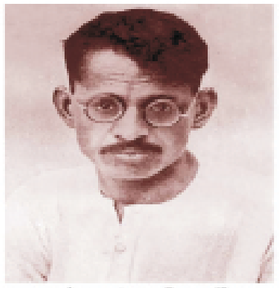

गणेश शंकर विद्यार्थी



डा. बी. सी. राय

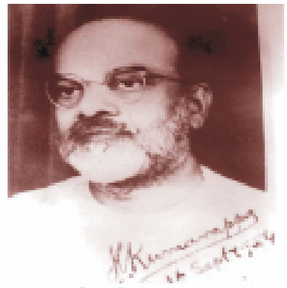

जे. सी. कुमारप्पा



गोविन्द वल्लभ पंत



जमनालाल बजाज

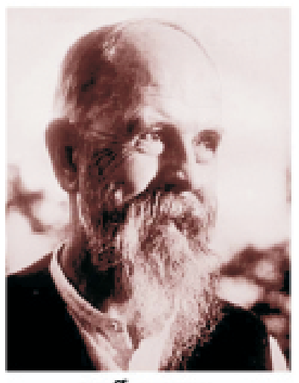

चार्ली एन्ड्रयुज़



कमला नेहरू



कमलादेवी चट्टोपाध्याय



जय प्रकाश नारायण



चितरंजनदास



पंडिता रमाबाई



जी. वी मावलंकार



Sonia Schlesin & Kallenbach



Romain Rolland



Maulana Abul Kalam Azad & Sardar Patel



Sarojini Naidu



Rafi Ahmad Kidwai



Vinoba Bhave



Jawahar Lal Nehru



with senior Co - Workers



with senior Co - Workers



Nandlal Bose



T. Prakasham



Thakkar Bapa



Sucheta Kriplani, Padmaja Naidu, C. Raja Gopalachari



Abha, Dr. Sushila Nayar, Pyare Lal



Prabhavati Devi



Sardar Patel & Maniben



Co - Workers



Indira Gandhi

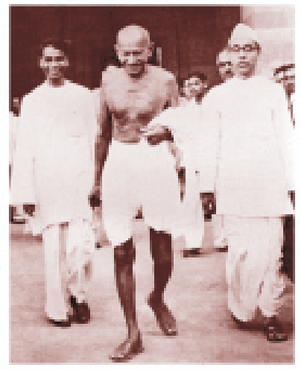

Co - Workers



Dr. Rajkumari Amrit Kaur



Upendra Maharathi



V. S. Srinivasa Shastri

दुनिया बहुत कम जानती है कि मेरी तथाकथित महानता किस कदर मेरे मूक, निष्ठावान, योग्य और शुद्ध कार्यकर्ताओं–स्त्री एवं पुरूषों–के अनवरत कठोर परिश्रम पर और नीरस कामों में भी उनकी लगन पर आश्रित है।

मो. क. गांधी

The world knows so little of how much my so-called greatness depends upon the incessant toil and drudgery of silent, devoted, able and pure workers, men as well as women.

M. K. Gandhi

SECTION - VI

GANDHI IN ART

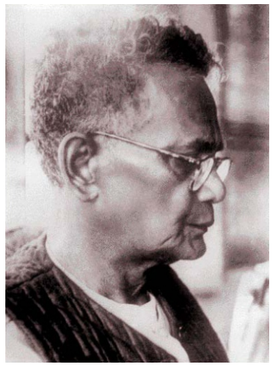

जैसे जैसे मैं अपने जीवन के अन्तिम पड़ाव पर पहुँच रहा हूँ, मैं कह सकता हूँ कि जीवन की पवित्रता ही सबसे श्रेष्ठ और सच्ची कला है।

मो. क. गांधी

बुद्ध के पश्चात् गाँधी के व्यक्तित्व ने भारतीय कलाकारों को सबसे अधिक प्रेरित किया है। गाँधी का प्रभाव भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन पर इतना गहरा और व्यापक था, जिससे कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रह पाया।

इतिहास साक्षी है कि बुद्ध की महाकरूणा ने देश–विदेश के असंख्य कलाकारों एवं शिल्पकारों की कलात्मकता को सदियों तक आलोड़ित किया। परिणामस्वरूप चित्रकला एवं स्थापत्य कला की उत्कृष्टतम् शैलियाँ विकसित हुईं, जिसके सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं अजन्ता एवं एलोरा।

इसी तरह गाँधी ने भी भारतीय संस्कृति की बारीकियों को जितनी गहराई से आत्मसात किया, उतना किसी अन्य ने नहीं। उनका सम्पूर्ण व्यक्तित्व किसी प्राचीन ऋषि के समकक्ष था, जो एकता, सरलता, शक्ति एवं आदर्श के ऐसे प्रेरणादायक प्रतीक के रूप में उभरा, जिसके साथ न केवल बुद्धिजीवी वर्ग वरन् जन–मानस भी जुड़ पाया। साधारण कद–काठीवाले गाँधी के दुर्बल शरीर को चित्रित करना तत्कालीन कलाकारों के लिए एक कलात्मक चुनौती होने के साथ–साथ हर्ष और गौरव का विषय भी था। बंगाल शैली के चित्रकारों ने इस दिशा में पहल की। भारत की पारम्परिक चित्रकला शैली में अंकित इन चित्रों में रेखाओं एवं तूलिका के सूक्ष्म उतार–चढ़ाव द्वारा बाह्य स्वरूप को कुशलतापूर्वक उभारते हुए उनमें छिपे सार की सशक्त अभिव्यक्ति का अद्भुत तालमेल दिखाई देता है। इस दिशा में जहाँ अवनीन्द्र नाथ ठाकुर, नन्दलाल बोस, जामिनी राय और उपेन्द्र महारथी के चित्र उल्लेखनीय हैं वहीं गाँधी को पाषाण में साकार करनेवाले मूर्तिकारों में रामकिंकर बैज, देवी प्रसाद राय चौधरी तथा उसी परम्परा में आधुनिक युग के रामसुतार ने विशिष्ट प्रयास किए।

नन्दलाल बोस के द्वारा चित्रित "दाण्डी एवं नोआखाली पदयात्रा करते हुए गाँधी" के रेखाचित्र की दृढ़ रेखाओं में मूल्यों एवं आदर्शों पर अडिग गाँधी को बड़ी कलात्मकता के साथ साकार किया गया और यह चित्र कलाजगत में मील का पत्थर साबित हुआ।

इसी भाँति बौद्ध एवं गाँधीवादी कलाकार उपेन्द्र महारथी के चित्रों में गाँधी के अलौकिक स्वरूप के चित्रण का उद्देश्य गाँधी को देवत्व प्रदान करना नहीं, वरन् बुद्ध एवं गाँधी के संदेशों में निहित शाश्वत मूल्यों के प्रति अडिग आस्था की अभिव्यक्ति करना है।





Upendra Maharathi



Gandhiji sitting for Joe Davidson, 'the dean of American Sculptors'

As I am nearing the end of my earthly life, I can say that purity of life is the highest and truest art.

M. K. Gandhi



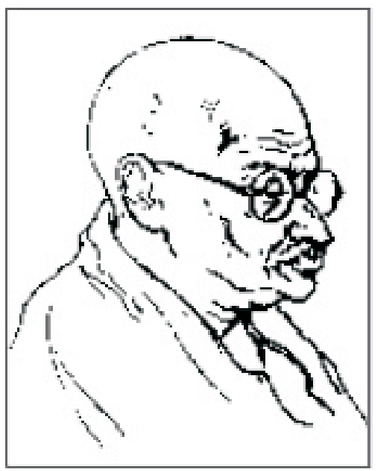



After Buddha, Gandhi has been the greatest inspiration for the artists in India. So overwhelming and encompassing was his impact on the socio-political fabric of the nation that no sphere of activity was left untouched.

History has it that Buddha's Mahakaruna (weapon of compassion) captured the imagination of innumerable artists and sculptors of various countries for centuries, which led to the evolution and spread of greatest forms of art and architecture like Ajanta and Ellora.

In a similar manner no one understood the complexities of Indian culture the way Gandhi did. His entire persona resembled the sages of yore, who inspired and became a symbol of unity, simplicity, courage and conviction with whom not only the intellectual but also the ordinary masses of our country could identify. The diminutive frail frame of Gandhi's physical appearance was both a delight and challenge for the contemporary artists to give it an artistic expression. The rare syntheses of authentic stylization, accurate external details and suitable expressions of inner meanings through minute turn of lines and brush work, sometimes as precise and sophisticated as calligraphy were distinctive features of the artists of Bengal School such as Avanindra Nath Tagore, Nand Lal Bose, Jamini Roy and Upendra Maharathi. The sculpted chiselled form of Gandhi was distinctly unique in the sculptures of Ramkinker Baij, Devi Prasad Roychoudhary down to the present day sculptures of Ramsutar.

The strength of Gandhi's conviction reflective in the emphatic lines of Nand Lal Bose's "Dandi and Noakhali March" became a landmark.

Likewise if in the works of Buddhist and Gandhian Artist Upendra Maharathi, Gandhiji's face appears suffused with a divine glow, it is not an act of idolatry but a continuity of faith in the perennial values expressed in the messages of Buddha and Gandhi.



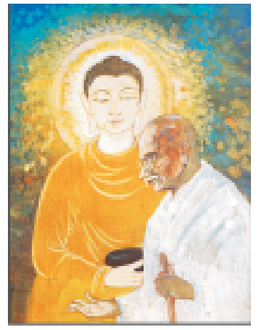

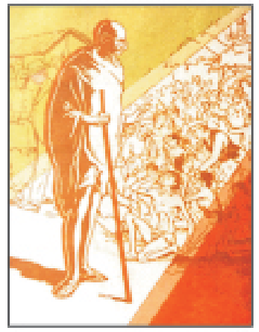

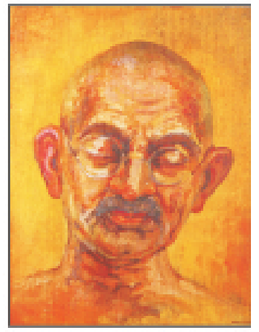

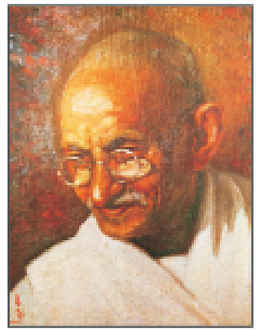

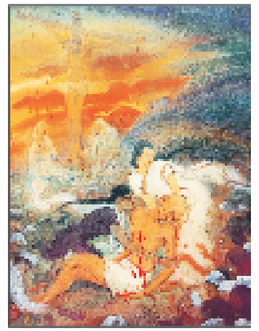



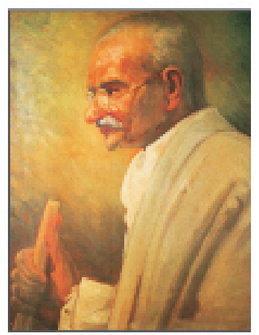



Sketch - Kanu Desai



Oil - Jamini Roy

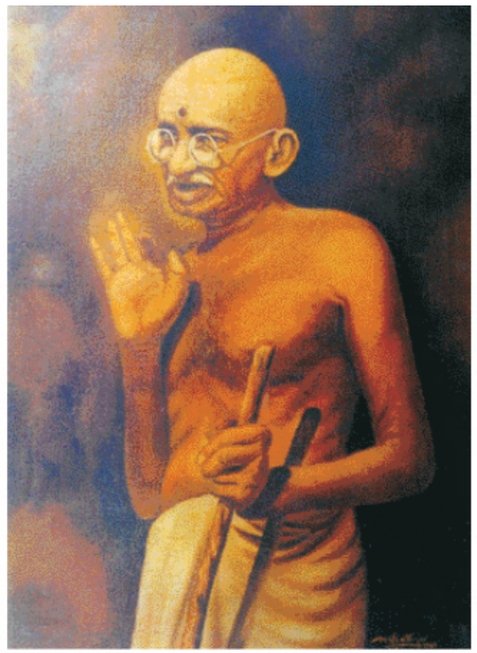

M. Chatterjee



Satyagraha - Ram Kinkar Baiz



Oil - Jamini Roy

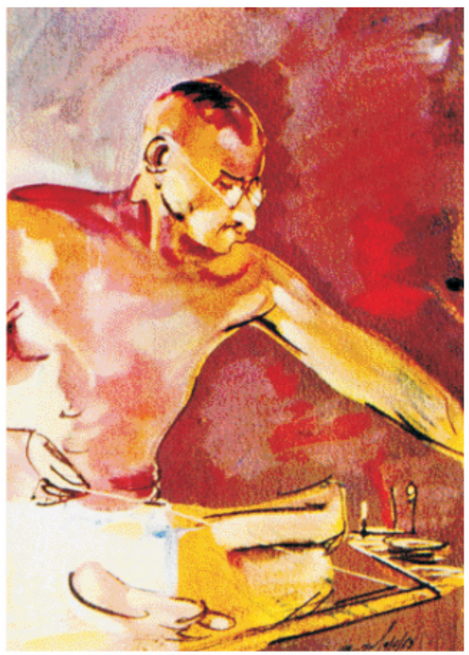

Oil - Gopal Ghosh



Oil - Prof. W. Lang Hammer



Sketch - Satyajit Ray



The Mahatma - V. P. Karmakar

SECTION - VII

GANDHI SPEAKS

यदि हमें इस संसार में सच्ची शांति प्राप्त करनी है और युद्ध के खिलाफ सच्ची लड़ाई लड़नी है तो हमें बच्चों से शुरूआत करनी होगी; और अगर बच्चे अपने सहज भोले–भाले रूप में बड़े हो सकें तो न हमें संघर्ष करना पड़ेगा और न व्यर्थ के प्रस्ताव पास करने पड़ेंगें। तब हम एक प्रेम से दूसरे प्रेम और एक शांति से दूसरी शांति तक बढ़ते चले जाएंगे, यहां तक कि विश्व में सर्वत्र शांति और प्रेम का साम्राज्य छा जाएगा जिसके लिए आज सारी दुनिया तरस रही है।

मो. क. गांधी



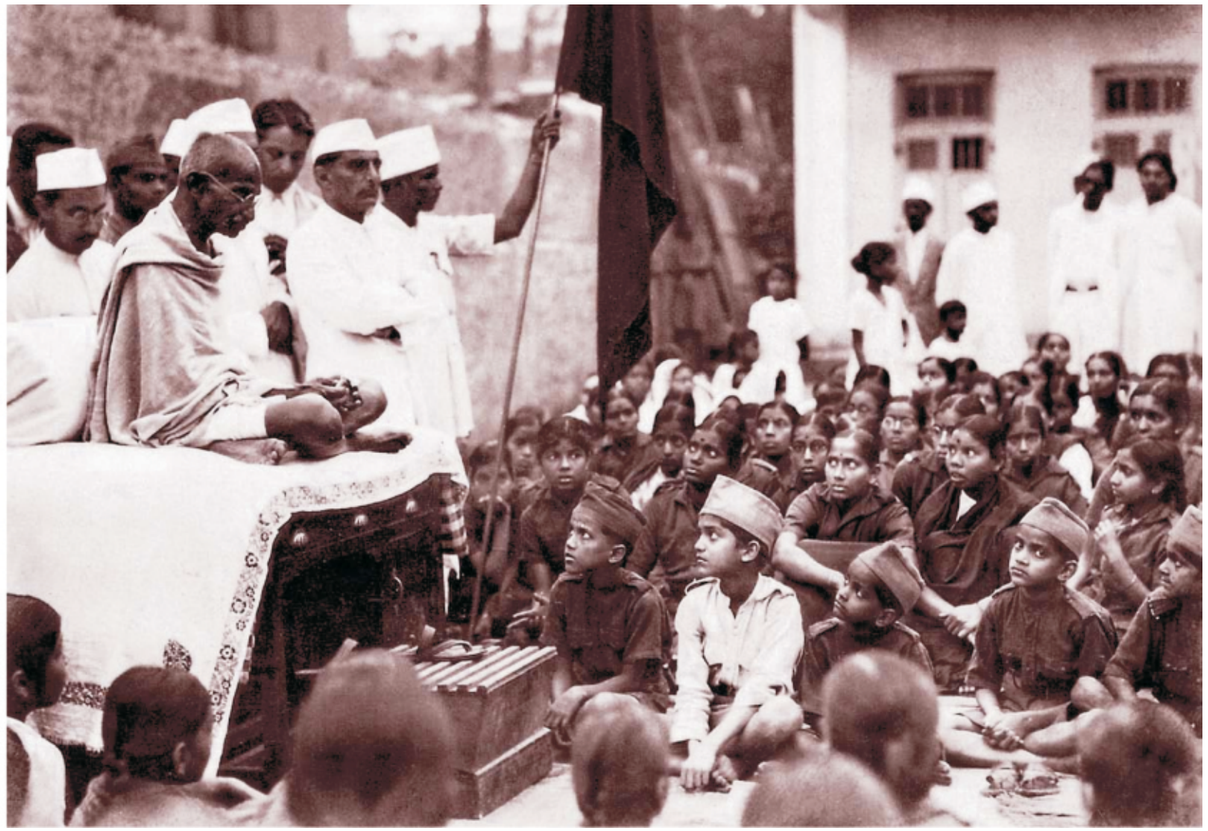

If we are to reach real peace in this world and if we are to carry on a real war against war, we shall have to begin with children; and if they will grow up in their natural innocence, we won't have to struggle, we won't have to pass fruitless idle resolutions. But we shall go from love to love and peace to peace, until at last all the corners of the world are covered with that peace and love for which, consciously or unconsciously, the whole world is hungering.

M. K. Gandhi

मैं नहीं चाहता कि मेरा घर चारों ओर से दीवारों से घिरा हो और उसकी सभी खिड़कियां बंद हों। मैं चाहता हूँ कि सभी देशों की संस्कृतियों की सुवासित हवाएं मेरे घर के चारों ओर बहें। लेकिन मैं ऐसी किसी हवा के झोंके से अपने पांव नहीं उखड़ने दूंगा। मुझे औरों के घर में दखल देना, भिखारी या गुलाम बनकर रहने से इंकार है।

मो. क. गांधी



I do not want my house to be walled in on all sides and my windows to be stuffed. I want the cultures of all lands to be blown about my house as freely as possible. But I refuse to be blown off my feet by any. I refuse to live in other people's houses as an interloper, a beggar or a slave.

M. K. Gandhi

मैंने रिश्तेदारों और अजनबियों, देशवासियों और विदेशियों, श्वेतों और अश्वेतों, हिंदुओं और मुसलमानों, पारसियों, ईसाइयों या यहूदियों आदि अन्य धर्मावलंबी भारतीयों के बीच कभी कोई भेद नहीं किया है। मैं कह सकता हूँ कि मेरा हृदय इस तरह के भेदों को मानने में असमर्थ रहा है। मैं यह दावा नहीं करता कि यह मेरा विशेष गुण है, क्योंकि उसे मैंने प्रयासपूर्वक विकसित नहीं किया है बल्कि यह मेरा स्वभाव ही है। इसके विपरीत, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह और अन्य मूलभूत गुणों का विकास करने के लिए मुझे निरंतर संघर्ष करना पड़ा है।

मो. क. गांधी



I have known no distinction between relatives and strangers, countrymen and foreigners, white and coloured, Hindus and Indians of other faiths, whether Mussalmans, Parsis, Christians or Jews. I may say that my heart has been incapable of making any such distinctions. I cannot claim this as a special virtue, as it is in my very nature, rather than a result of any effort on my part, whereas in the case of AHIMSA (non-violence), BRAHMACHARYA (celibacy), APARIGRAHA (non-possession) and other cardinal virtues, I am fully conscious of a continuous striving for their cultivation.

M. K. Gandhi

क्या हमारी दुनिया में हमेशा हिंसा का बोलबाला रहेगा ? क्या यहां सदा दरिद्रता, भुखमरी और दुःख का साम्राज्य रहेगा ? क्या धर्म में हमारी आस्था और दृढ़ तथा व्यापक होगी या दुनिया नास्तिक हो जाएगी ? अगर समाज में भारी परिवर्तन आता है तो वह किस तरह आएगा ? युद्ध से या क्रांति से ? या शांतिपूर्ण ढंग से ?

हर व्यक्ति के पास इन प्रश्नों के उत्तर अलग–अलग हैं, हर व्यक्ति कल की दुनिया का नक्शा अपनी आशाओं और अभिलाषाओं के हिसाब से बना रहा है। मैं केवल विश्वास के सहारे ही नहीं, बल्कि धारणा के बल पर कहता हूँ। कल की दुनिया अहिंसा पर आधारित समाज होगी–ऐसा ज़रूर होगा। यह प्रथम नियम है; अन्य सभी वरदान इसी में से प्रकट होंगे।

मो. क. गांधी

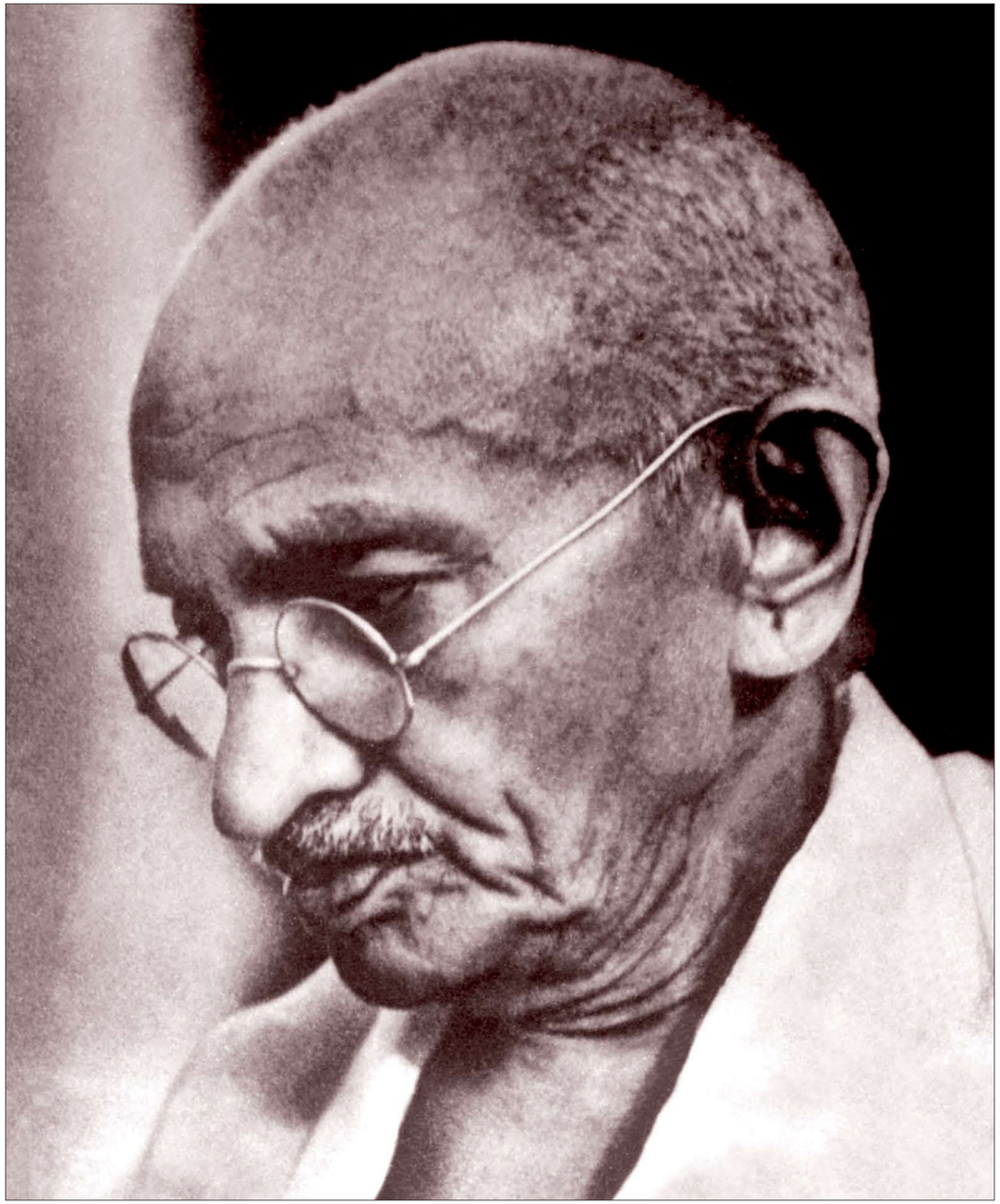

Will our world always be one of violence? Will there always be poverty, starvation, misery ? Will we have a firmer and wide belief in religion, or will the world be godless ? If there is to be a great change in society, how will that change be brought ? By war, or revolution ? Or will it come peacefully ?

Different men give different answers to these questions, each man drawing the plan of tomorrow's world as he hopes and wishes it to be. I answer not only out of belief but out of conviction. The world of tomorrow will be, must be, a society based on non-violence. That is the first law; out of it all other blessings will flow.

M. K. Gandhi



राष्ट्रनिर्माण और युवा

मैं आप युवाओं (युवक–युवतियों) से कहता हूँ कि आप लोग गांवों में जाइये और वहाँ स्वयं को काम में लीन कर दीजिये, ग्रामवासियों के मालिक बनकर नहीं बल्कि उनके विनम्र सेवक बनकर। उन्हें अपने दैनिक आचरण और जीवन शैली की सहायता से मदद कीजिये कि वे किस प्रकार अपनी जीवन पद्धति का विकास कर सकते हैं। केवल सेवा की भावना पर्याप्त नहीं, जिस प्रकार भाप स्वयं में व्यर्थ है जब तक उसे नियंत्रित कर एक शक्ति के रुप में परिवर्तित नहीं किया जाता। मैं आपसे कहता हूँ कि भारत की व्यथित आत्मा के लिये आप ईश्वर के दूत बनकर मरहम लेकर वहाँ जाइये।

मो. क. गांधी





Nation Building and Youth

I ask you (young men and women) to go to the villages and bury yourselves there, not as their masters or benefactors but as their humble servants. Let them know what to do and how to change their mode of living from your daily conduct and way of living. Only feeling will be of no use, just like steam, which by itself is of no account unless it is kept under proper control when it becomes a mighty force. I ask you go forth as messenger of God carrying balm for the wounded soul of India".

M. K. Gandhi









वकील गांधी

मैंने सच्ची वकालत करना सीखा; मनुष्य के गुण–उसके उज्जवल पक्ष को खोजना सीखा; मनुष्य के हृदय में प्रवेश करना सीखा। मैंने देखा कि वकील का कर्तव्य है कि वादी और प्रतिवादी के बीच की खाई को पाट दे।

मो. क. गांधी



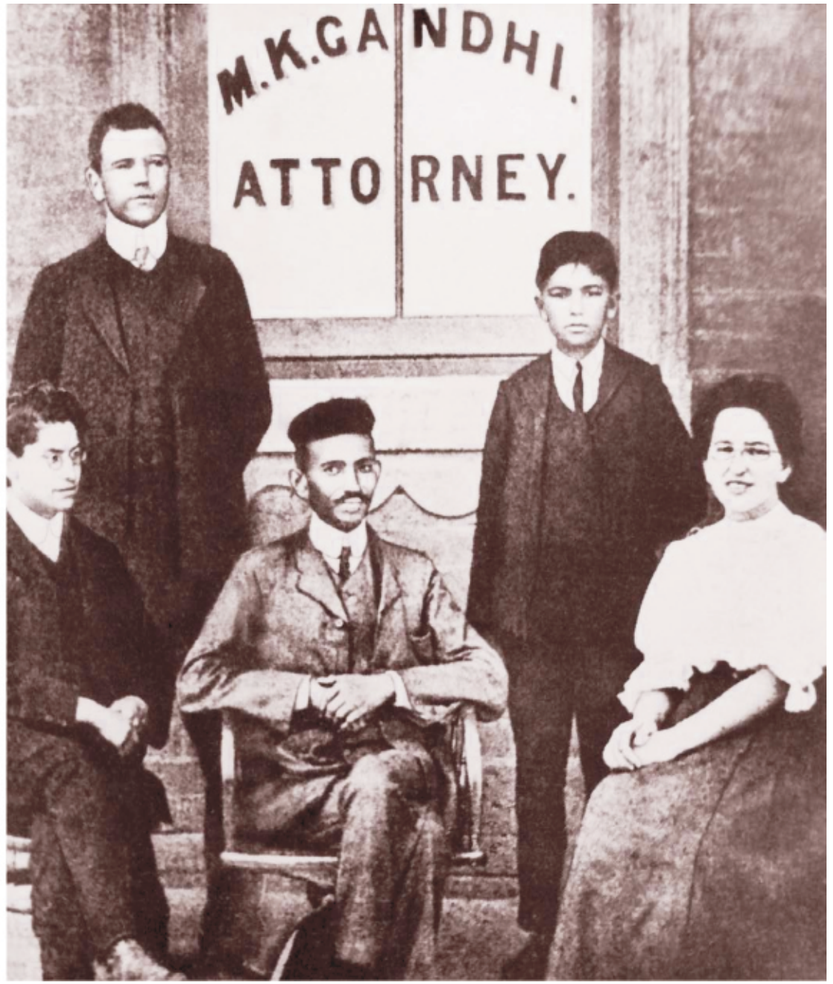

Lawyer Gandhi

I had learnt the true practice of law. I had learnt to find out the better side of human nature and to enter men's hearts. I realized that the true function of a lawyer was to unite parties driven asunder.

M. K. Gandhi

कर्तव्य एवं अधिकार

जो व्यक्ति अपने कर्तव्यों का भली प्रकार निर्वाह करता है, उसे अधिकारों की प्राप्ति स्वतः हो जाती है। सच पूछा जाए तो अपने कर्तव्य–पालन का अधिकार ही एक ऐसा अधिकार है जिसके लिए जीना और मर जाना उचित है। यह सभी वैध अधिकारों को स्वयं में समाहित करता है। शेष सभी किसी–न–किसी रूप में छीना–झपटी है और उसमें हिंसा के बीज विद्यमान हैं।

मो. क. गांधी



Rights and Duties

Rights accrue automatically to him who duly performs his duties. In fact, the right to perform one's duties is the only right that is worth living for and dying for. It covers all legitimate rights. All the rest is garb under one guise or another and contains in it seeds of himsa.

M. K. Gandhi

मेरे जीवन में अनेक बाह्य त्रासदियां घटी हैं और यदि उन्होंने मेरे ऊपर कोई प्रत्यक्ष या अमिट प्रभाव नहीं छोड़ा है तो मैं इसका श्रेय 'भगवद्गीता' के उपदेशों को देता हूँ।

मो. क. गांधी

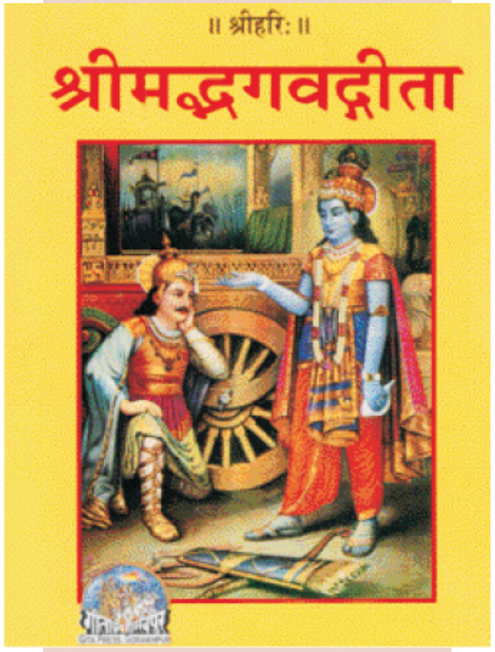

My life has been full of external tragedies, and if they have not left any visible and indelible effect on me, I owe it to the teachings of the Bhagavad Gita.

M. K. Gandhi

ईश्वर की अपने शाश्वत् स्थान पर पुनः प्रतिष्ठा तो मानवता को बुद्ध की महान् देन थी ही, मेरी विनम्र सम्मति में उनकी उससे भी बड़ी देन थी सभी प्राणियों–निम्नतम् भी–के प्रति दृढ़ प्रेम की स्थापना।

मो. क. गांधी



Great as the Buddha's contribution to humanity was in restoring God to His eternal place, in my humble opinion, greater still was his contribution to humanity in his exacting regard of all life, be it ever so low.

M. K. Gandhi

मैं सांप्रदायिक अर्थ में ईसाई होने का दावा नहीं कर सकता, लेकिन ईसा की पीड़ा के उदाहरण का अहिंसा के प्रति मेरी अटूट आस्था के निर्माण में योगदान है। अहिंसा ही मेरे समस्त लौकिक कार्यों का नियमन करती है।

मो. क. गांधी



Though, I cannot claim to be a Christian in the sectarian sense, the example of Jesus' suffering is a factor in the composition of my undying faith in non-violence which rules all my actions, worldly and temporal.

M. K. Gandhi

मैंने कुरान का एक से अधिक बार अध्ययन किया है। मेरा धर्म मुझे सिखाता है, बल्कि बाध्य करता है, कि मैं विश्व के सभी धर्मों की अच्छी बातों को आत्मसात करूं।

मो. क. गांधी



I have more than once read the Koran. My religion enables me, obliges me, to imbibe all that is good in all the great religions of the earth.

M. K. Gandhi

मैं इस्लाम को भी ईसाई धर्म, बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म की तरह शांति का धर्म मानता हूं। इनमें शांति पर दिए गए बल की मात्रा में अंतर ज़रूर है, पर इन सभी धर्मों का ध्येय शांति ही है।

मो. क. गांधी

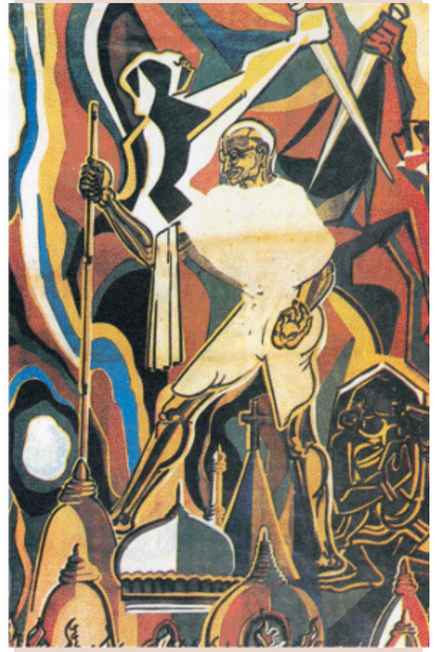

I do regard Islam to be a religion of peace in the same sense as Christianity, Buddhism and Hinduism are. No doubt there are differences in degree, but the object of these religions is peace.

M. K. Gandhi

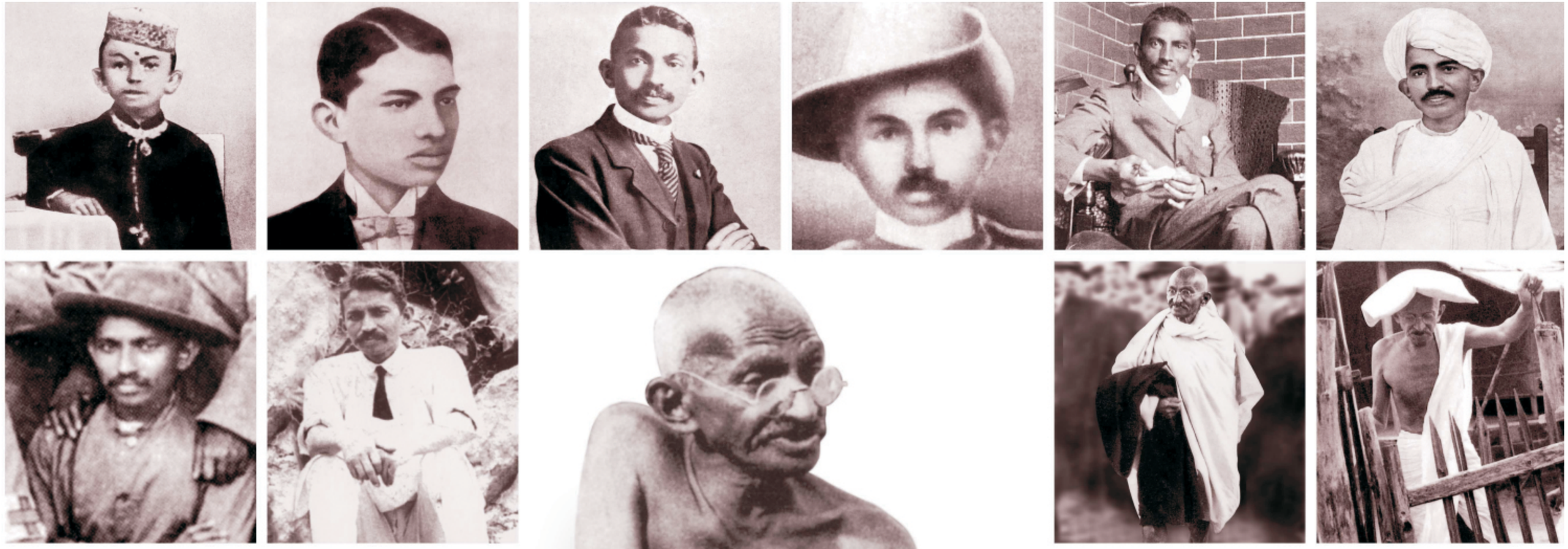

मेरी लंगोटी मेरे जीवन का सहज विकास है। यह अपने आप आ गई, न मैंने इसके लिए कोई प्रयास किया, न पहले से सोचा।

मो. क. गांधी

मुझे संन्यासी कहना ग़लत है। मेरा जीवन जिन आदर्शों से संचालित है, वे आम आदमियों द्वारा अपनाए जा सकते हैं। मैंने उन्हें धीरे–धीरे विकसित किया है। हर कदम अच्छी तरह सोच–विचार कर और पूरी सावधानी बरतते हुए उठाया गया है।

मो. क. गांधी

अपनी सारी संपत्ति का त्याग कर देने पर दुनिया....मेरे ऊपर हंस सकती है। पर मेरे लिए यह त्याग निश्चित रूप से लाभदायक सिद्ध हुआ है। मैं चाहूंगा कि लोग मेरे इस संतोष से स्पर्धा करें। यह मेरा सबसे कीमती खजाना है। इसलिए यह कहना शायद ठीक है कि यद्यपि मैं ग़रीबी का प्रचार करता हूँ, पर मैं सबसे धनवान् व्यक्ति हूँ।

मो. क. गांधी

मेरे लिए सत्य 'महात्मापन' से कहीं अधिक प्रिय है। 'महात्मापन' तो मेरे ऊपर सिर्फ एक बोझ है। यह अपनी सीमाओं और अकिंचनता का बोध ही है जिसने मुझे 'महात्मापन' के अत्याचारी स्वरूप से बचाये रखा है।

मो. क. गांधी

My loin cloth is an organic evolution in my life. It came naturally, without effort, without premeditation.

M. K. Gandhi

It is wrong to call me an ascetic. The ideals that regulate my life are presented for acceptance by mankind in general. I have arrived at them by gradual evolution. Every step was thought out, well considered, and taken with greatest deliberation.

M. K. Gandhi

It is open to the world...to laugh at my dispossessing myself of all property. For me the dispossession has been a positive gain. I would like people to compete with me in my contentment. It is the richest treasure I own. Hence it is perhaps right to say that, though I preach poverty, I am a rich man!

M. K. Gandhi

Truth to me is infinitely dearer than the 'mahatmaship', which is purely a burden. It is my knowledge of my limitations and my nothingness which has so far saved me from the oppressiveness of the 'mahatmaship'.

M. K. Gandhi

मैं दिव्यद्रष्टा नहीं हूँ। मैं संत होने के दावे से भी इंकार करता हूँ। मैं तो पार्थिव शरीरधारी हूँ—मैं भी आपकी तरह अनेक दुर्बलताओं का शिकार हो सकता हूं। लेकिन मैंने दुनिया देखी है। मैं आंखें खोलकर जिया हूँ। मनुष्य को जिन–जिन अग्निपरीक्षाओं से होकर गुज़रना पड़ सकता है, उनमें से अधिकांश से मैं गुज़रा हूँ। मैं इस साधना से गुज़र चुका हूँ।

मो. क. गांधी



I deny being a visionary. I do not accept the claim of saintliness. I am of the earth, earthly . . . I am prone to as many weakness as you are. But I have seen the world. I have lived in the world with my eyes open. I have gone through the most fiery ordeals that have fallen to the lot of man. I have gone through this discipline.

M. K. Gandhi











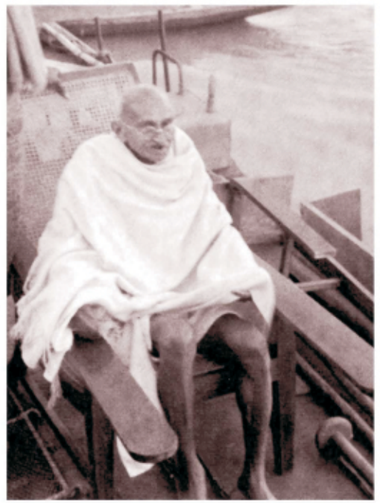



अनवरत काम के बीच मेरा जीवन आनंद से परिपूर्ण रहता है। मेरा कल कैसा होगा, इसकी कोई चिंता न करने के कारण मैं स्वयं को पक्षी के समान मुक्त अनुभव करता हूँ....मैं शरीर की भौतिक ज़रूरतों के ख़िलाफ निरंतर ईमानदारी के साथ संघर्षरत हूँ, यही विचार मुझे जीवित रखता है।

मो. क. गांधी

क्या तेज़ गति से दौड़ने वाले वाहनों की वजह से संसार कोई बेहतर जगह बन गया है ? क्या इससे मनुष्य की भौतिक उन्नति हुई है ? क्या अंततः ये उस उन्नति में बाधक नहीं हैं ? और, क्या मनुष्य की महत्वाकांक्षा की कोई सीमा है ? एक समय था जब हम कुछ घंटे प्रति मील की रफ्तार से सफर करके संतोष का अनुभव करते थे; आज हम एक घंटे में सैकड़ों मील तय करना चाहते हैं; एक दिन शायद अंतरिक्ष में भी उड़ना चाहेंगे। परिणाम क्या होगा ? केवल अव्यवस्था।

मो. क. गांधी

Mine is a life full of joy in the midst of incessant work. In not wanting to think of what tomorrow will bring for me, I feel as free as a bird….. The thought that I am ceaselessly and honestly struggling against the requirements of the flesh sustains me.

M. K. Gandhi

Is the world any better for quick instruments of locomotion ? How do these instruments advance man's spiritual progress? Do they not in the last resort hamper it ? And is there any limit to man's ambition ? Once we were satisfied with travelling a few miles an hour; today we want to negotiate hundreds of miles an hour; one day we might desire to fly through space. What will be the result ? Chaos.

M. K. Gandhi



मैं सार्वभौम अहिंसा की बात तो करता हूँ, पर मेरा प्रयोग भारत तक सीमित है। अगर मैं कामयाब हो जाता हूँ तो पूरी दुनिया इसे सहज ही स्वीकार कर लेगी। लेकिन यह 'अगर' बहुत बड़ा है। ठहराव की चिंता मैं नहीं करता। अभेद्य अंधकार में मेरा विश्वास सर्वाधिक प्रकाशमान रहता है।

मो. क. गांधी

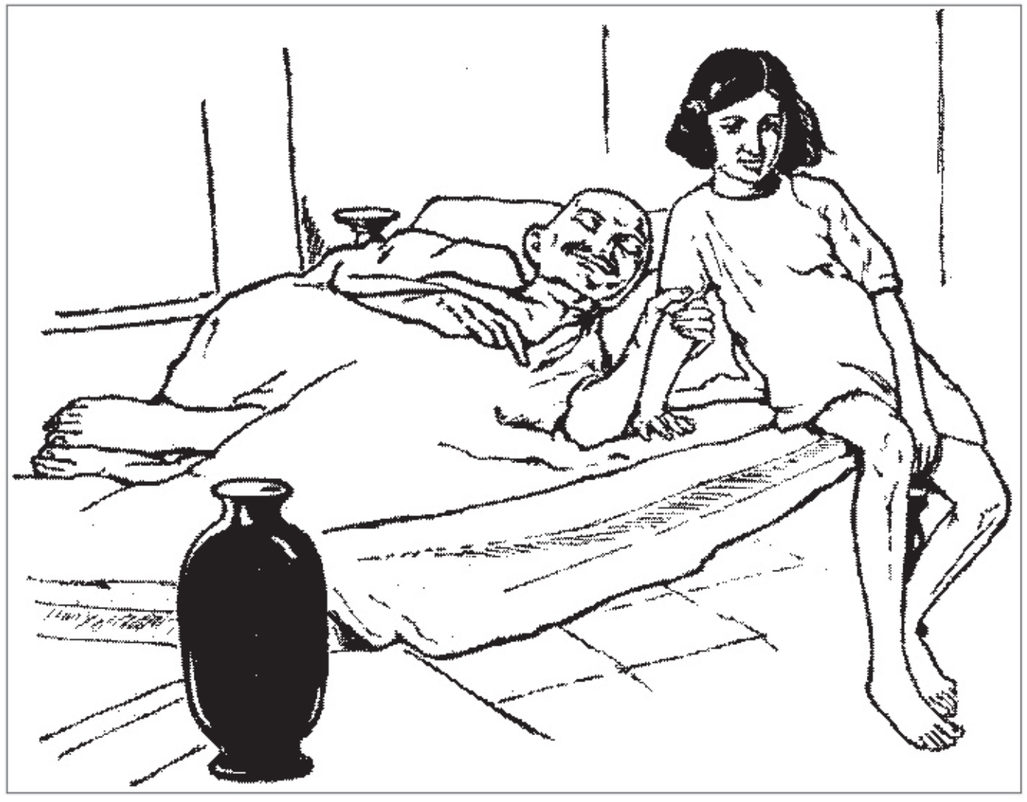



While I prate about Universal Non-violence, my experiment is confined to India. If it succeeds, the world will accept it without effort. There is, however, a big BUT. The pause does not worry me. My faith is brightest in the midst of impenetrable darkness.

M. K. Gandhi

मुझे पता है कि मेरी सादगी, मेरे उपवास और मेरी प्रार्थनाओं का तब कोई मूल्य नहीं रहेगा जब मैं अपने को सुधारने के लिए उन्हीं पर आश्रित हो जाऊंगा। लेकिन यदि वे आत्मा की इस ललक का प्रतिनिधित्व करते हैं कि वह अपने सृजनहार की गोद में अपने श्रांत सिर को रखकर आराम और ताज़गी पाये तो यह उनका अपरिमेय मूल्य है।

मो. क. गांधी

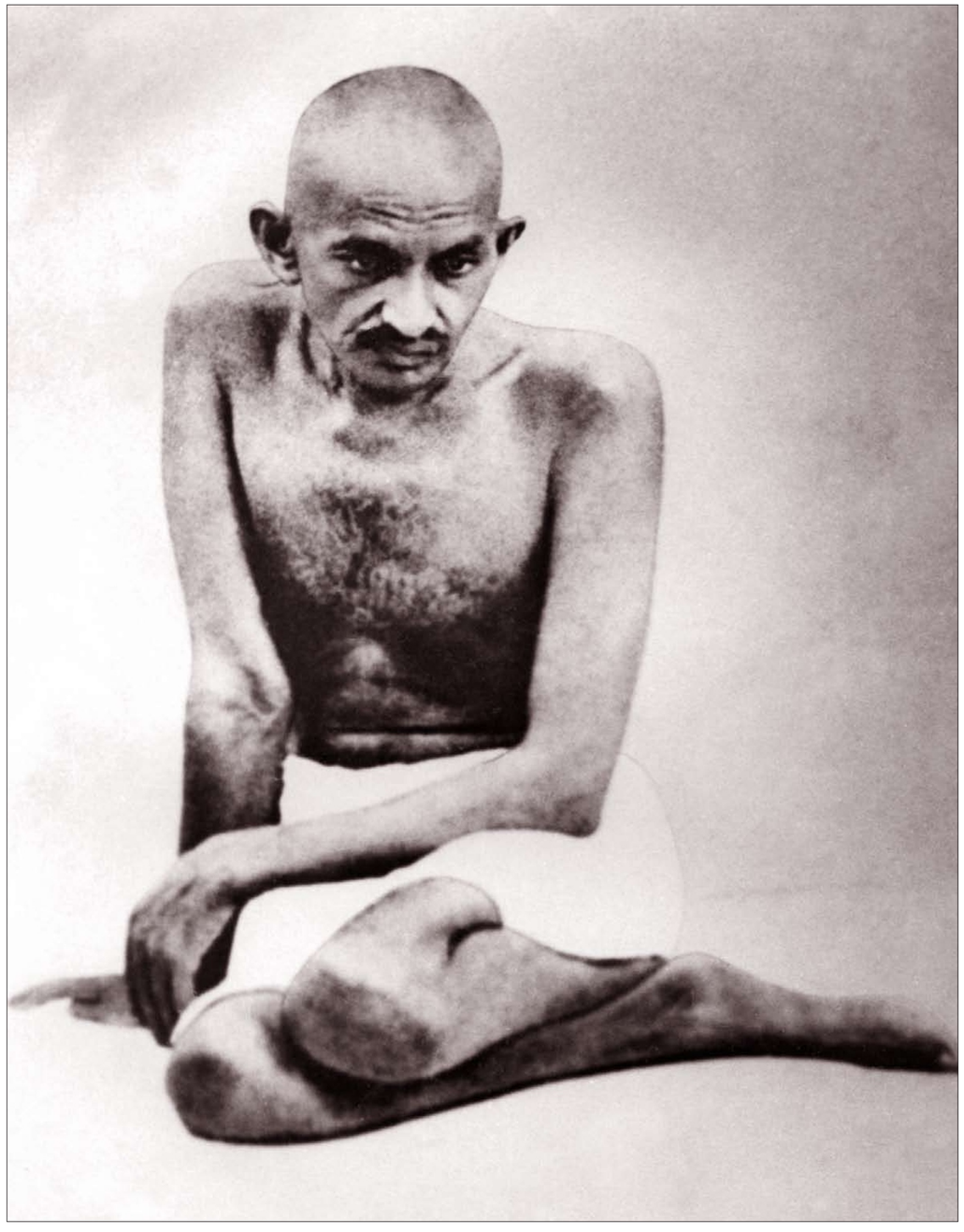

My austerities, fastings and prayers are, I know, of no value if I rely upon them for reforming me. But they have an inestimable value, if they represent, as I hope they do, the yearnings of a soul striving to lay his weary head in the lap of his Maker.

M. K. Gandhi

मेरा लक्ष्य विश्व–मैत्री है और मैं ग़लत काम का अधिकतम् विरोध करते हुए भी अधिकतम् प्रेम का परिचय दे सकता हूँ।

मुझे अपने लक्ष्य में इतनी अडिग आस्था है कि यदि यह सफल हो गया–जो ज़रूर होगा, इसे सफल होना ही है–तो इतिहास इसे एक ऐसे आंदोलन के रूप में दर्ज करेगा जिसका उद्देश्य दुनिया के सभी लोगों को एक सूत्र में बांधना है जिनमें एक–दूसरे के प्रति आक्रामक भाव नहीं होगा, बल्कि वे स्वयं को एक समष्टि का अंश मानकर चलेंगे।

मो. क. गांधी



My goal is friendship with the world and I can combine the greatest opposition to wrong.

I have that implicit faith in my mission that, if it succeeds-as it will succeed, it is bound to succeed-history will record it as a movement designed to knit all people in the world together, not as hostile to one another but as parts of one whole.

M. K. Gandhi

दुनिया भारत से क्षुद्रता और हठधर्मिता की आशा नहीं करती....वह भारत से महानता और साधुता की आशा करती है जिससे समूची दुनिया सीख ले सके और अपने वर्तमान अंधकारमय वातावरण में प्रकाश पा सके।

मो. क. गांधी

The world expects no littleness and fanaticism from India... It expects greatness and goodness from which the whole world can derive a lesson and light in its prevailing darkness.

M. K. Gandhi

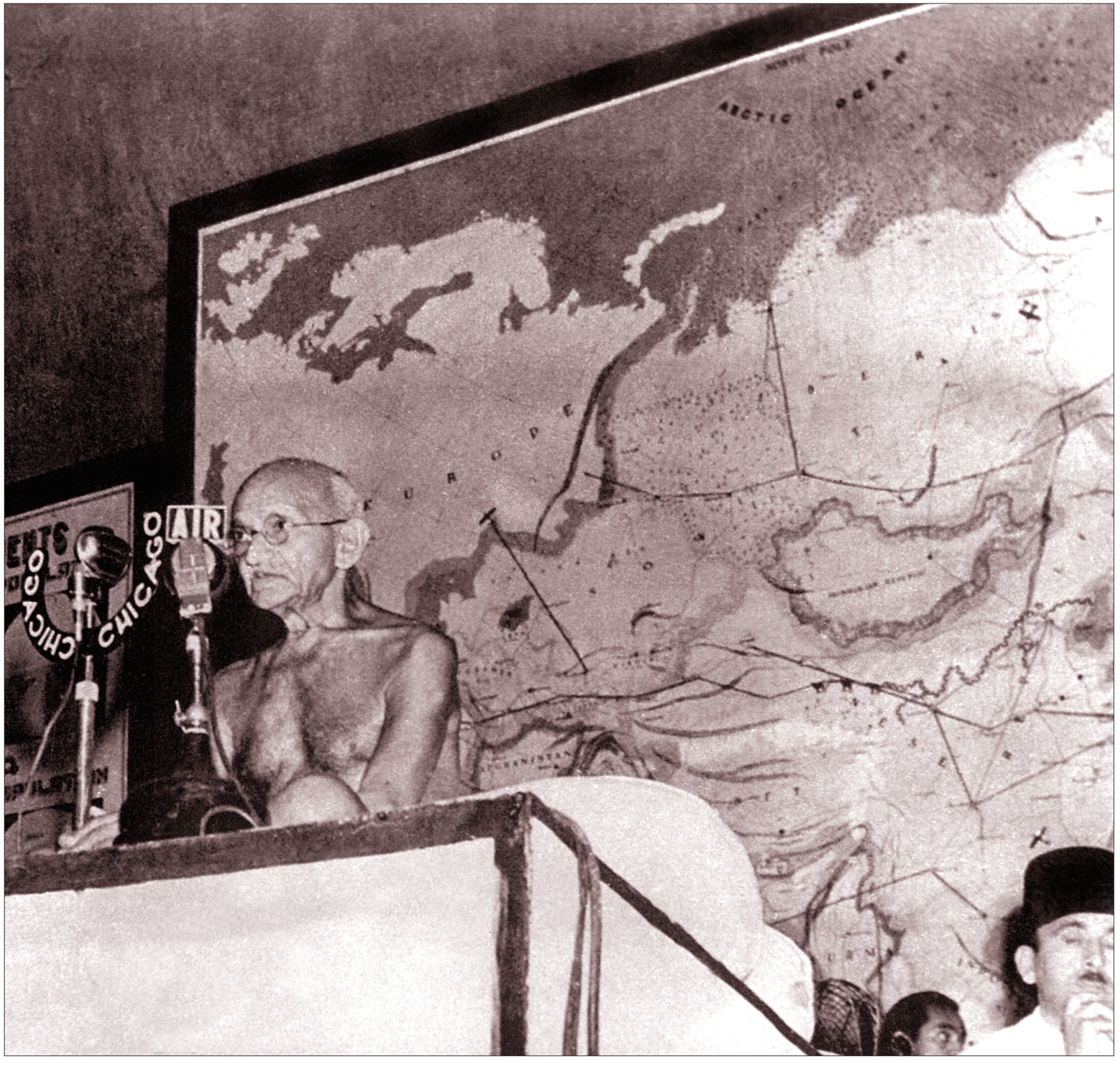

मेरा राष्ट्रप्रेम अनन्य नहीं है; इसमें न केवल किसी अन्य राष्ट्र को हानि न पहुंचाने की बात है, बल्कि सच्चे अर्थों में सभी का हित करना भी शामिल है। भारत की स्वतंत्रता की मेरी जो धारणा है, उसके अनुसार वह दुनिया को कष्ट देने वाली कभी सिद्ध नहीं होगी।

मो. क. गांधी

My patriotism is not exclusive, it is calculated not only not to hurt any other nation, but to benefit all in the true sense of the word. India's freedom as conceived by me can never be a menace to the world.

M. K. Gandhi

मैं एक शान्ति पसन्द इन्सान हूँ, मेरी शान्ति में गहरी आस्था है। परन्तु मैं किसी भी क़ीमत पर शान्ति का इच्छुक नहीं हूँ। मुझे कब्र की शान्ति की चाह नहीं है अपितु मुझे उस शान्ति की चाह है जो मानव हृदय में वास करती है, जो पूरे विश्व के निशाने पर होते हुए भी जिसे ईश्वर की अदृश्य शक्ति का संरक्षण प्राप्त है।

मो. क. गांधी



I am a man of peace. I believe in peace. But I do not want peace at any price. I do not want peace that you find in the grave; but I do want that peace which you find embedded in the human heart, which is exposed to the arrows of a whole world, but which is protected from all harm by the power of the almighty God.

M. K. Gandhi

मैं ईश्वर का साक्षात् करना चाहता हूँ। मैं जानता हूँ कि ईश्वर सत्य है। मेरी दृष्टि में, ईश्वर को जानने का एकमात्र निश्चित् साधन अहिंसा अर्थात् प्रेम है। मैं भारत की आज़ादी के लिए ही जी रहा हूँ और उसी के लिए मरूंगा, क्योंकि वह सत्य का अंश है। केवल स्वतंत्र भारत ही सच्चे ईश्वर की आराधना कर सकता है।

मो. क. गांधी

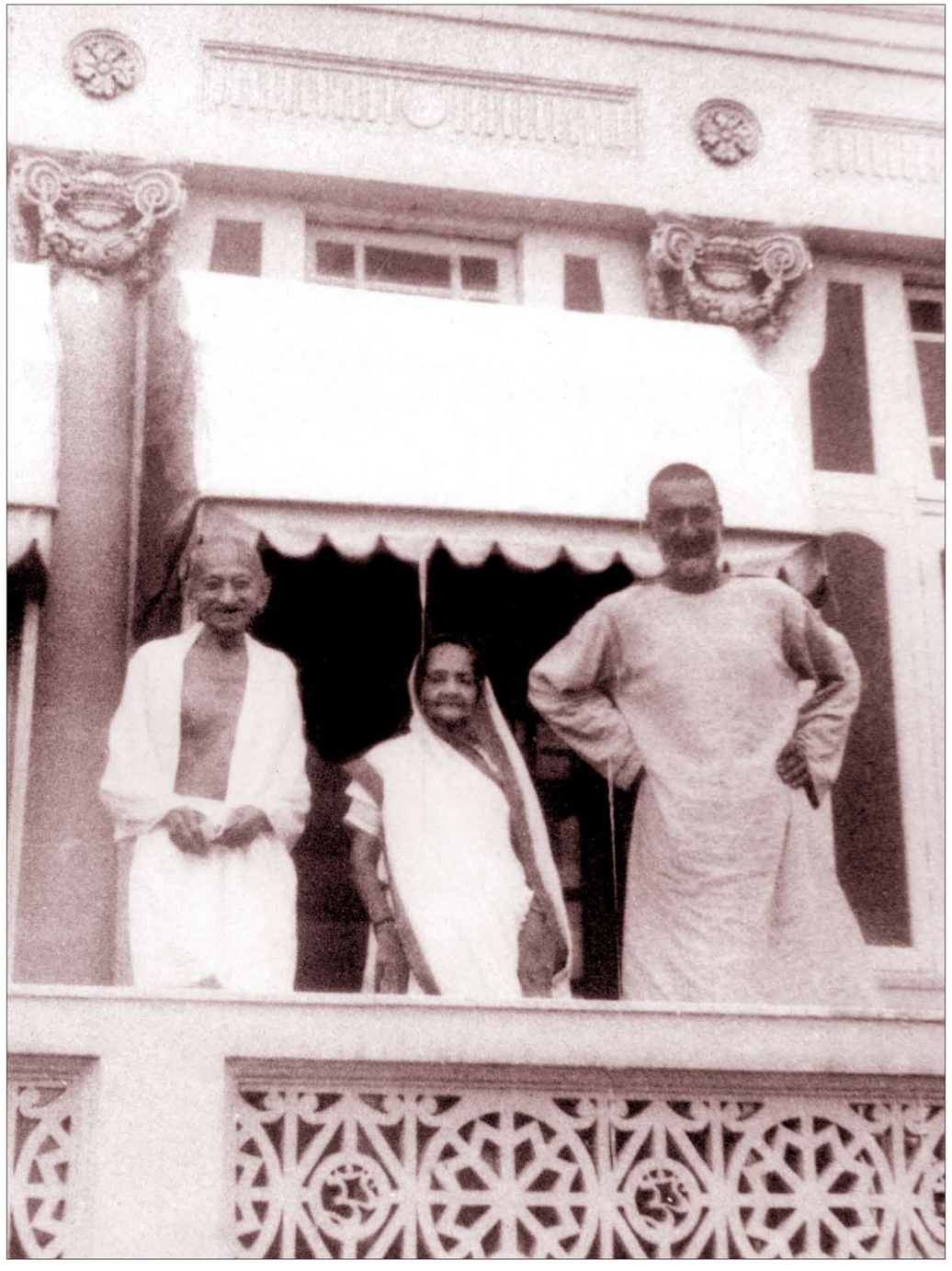

I want to see God face to face. God, I know, is Truth. For me the only certain means of knowing God is non-violence—AHIMSA-love. I live for India's freedom and would die for it, because it is part of Truth. Only a free India can worship the true God.

M. K. Gandhi

मैं मार्ग जानता हूँ। वह सीधा और संकरा है। वह तलवार की धार की तरह है। मुझे उस पर चलने में आनंद आता है। जब मैं उससे फिसल जाता हूँ तो रोता हूँ। ईश्वर का वचन है : जो प्रयास करता है, वह कभी नष्ट नहीं होता। मुझे इस वचन में पूरी आस्था है। इसलिए अपनी कमज़ोरी की वजह से मैं चाहे हज़ार बार नाकामयाब रहूं पर मेरी आस्था कभी नहीं डिगेगी। बल्कि यह आशा कायम रहेगी कि जिस दिन यह शरीर पूरी तरह नियंत्रण में आ जाएगा, उस दिन मुझे ईश्वर की अलौकिक आभा के दर्शन हो जाएंगे। और ऐसा होगा ज़रूर।

मो. क. गांधी



I know the path. It is straight and narrow. It is like the edge of a sword. I rejoice to walk on it. I weep when I slip. God's word is: 'He who strives never perishes.' I have implicit faith in that promise. Though, therefore, from my weakness I fail a thousand times, I will not lose faith, but hope that I shall see the Light when the flesh has been brought under perfect subjection, as some day it must.

M. K. Gandhi

मैं केवल मानव जाति के बीच ही भाईचारे अथवा उसके साथ समरुपता स्थापना करना नहीं चाहता, बल्कि पृथ्वी पर रेंगने वाले जीवों सहित समस्त प्राणिजगत के साथ तादात्म्य स्थापित करना चाहता हूँ। यदि आपको सुनकर धक्का न लगे तो मैं कहना चाहूंगा कि मैं पृथ्वी पर रेंगने वाले जीवों के साथ भी अभेद पहचान स्थापित करना चाहता हूँ, क्योंकि हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं। इसलिए जीवन जितने रूपों में है, सब मूलतः एक ही है।

मो. क. गांधी



I want to realize brotherhood or identity not merely with the beings called human, but I want to realize identity with all life, even with such things that crawl on earth, I want, if I don't give you a shock, to realize identity with even the crawling things upon earth, because we claim descent from the same God, and that being so, all life in whatever form it appears must be essentially one.

M. K. Gandhi

SECTION - VIII

GANDHI IN BIRLA HOUSE

अल्बुकर्क रोड, नई दिल्ली स्थित ''बिड़ला हाउस प्रासाद'' में महात्मा गांधी



9 सितम्बर, 1947 को जब गांधीजी कलकत्ता से नये स्वाधीन भारत की राजधानी दिल्ली पहुँचे तब वह दंगों की आग में झुलस रही थी। कलकत्ता में उन्होंने शान्ति प्रयास का अद्‌भुत चमत्कार सम्भव कर दिखाया था। शाहदरा स्टेशन पर गांधीजी को लेने सरदार वल्लभभाई पटेल, डॉ. राजकुमारी अमृत कौर तथा अन्य व्यक्ति आए थे। यह वह समय था जब पूरा उपमहाद्वीप बंटवारे की पीड़ा से जूझ रहा था। दिल्ली में उनका 'घर' बाल्मीकि बस्ती अब 'उस पार' से आए शरणार्थियों के लिये 'सुरक्षित घर' बन गया था। इन परिस्थितयों में गांधीजी से अनुरोध किया गया कि वे 'बिड़ला हाउस' को दिल्ली में अपना अस्थायी निवास स्थान बनाएं क्योंकि राष्ट्रीय नेताओं के लिये भी वह उनसे मिलने के लिये अधिक सुविधाजनक स्थान था।



समय की नज़ाकत को समझते हुए गांधीजी ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया। उन्हें उनके 'जीवन पर हमले' की बात भी बताई गई और उस दृष्टि से भी उन्हें बताया गया कि बिड़ला हाउस सुरक्षित था। इस बात पर वे हँस कर बोले "क्या तुम लोग समझते हो कि यदि मेरा समय आ गया हो तो भी मुझे बचा सकोगे?"



बिड़ला हाउस के इस कमरे को, जो अब गांधी स्मृति (स्मारक) हैं, काफी सोच विचार के बाद उनके लिये चुना गया। कमरे के भीतर ही बाथरूम भी है। इसके नए निवासी की आवश्यकता के अनुसार इस कमरे के फर्नीचर को हटा दिया गया। स्वाधीनोत्तर भारत की अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का साक्षी है यह कमरा। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से लोग यहाँ महात्मा गांधी की सलाह लेने आते थे, चाहे वे भारत के गवर्नर जनरल हों, प्रधानमंत्री हों, मंत्रिमंडल के सदस्य हों, परन्तु जो बापू के हृदय के सबसे नज़दीक थे वे थे भारत के दीन, दुखी दरिद्रनारायण। उनके पास से कोई निराश नहीं लौटता था। गांधीजी के हृदय में गम्भीर मन्थन हो रहा था। वे उन रास्तों को ढूंढ रहे थे जो देश के नेताओं के लिये नए भारत के निर्माण में सहायक हों; 'उनके सपनों का भारत' जो विश्व में स्वराज का आदर्श बने। इस दौरान जो भी अन्तर्राष्ट्रीय गणमान्यजन, लेखक, बुद्धिजीवी, मीडिया कर्मी उनसे मिले, उन सबने 'मानवता के विवेक का एक पल' के रूप में श्रद्धेय महात्मा गांधी से अपनी मुलाकतों का मार्मिक, सजीव चित्रण किया है।







गांधीजी भविष्य की ओर देख रहे थे, परन्तु उनका जीवन ख़तरे में था और उन्हें इसका एहसास था।

यही वह कमरा था जहाँ बापू ने पथ से भटके लोगों के विवेक को जागृत करने के उद्देश्य से 'आत्मशुद्धि' स्वरूप 13 जनवरी, 1948 से 18 जनवरी, 1948 तक उपवास रखा। घृणा और प्रतिशोध की आग में जलते लोगों को सही रास्ता दिखाने का प्रयास था उनका यह अन्तिम उपवास। इससे समाज के कुछ वर्ग के लोगों में राष्ट्रपिता के प्रति क्रोध और बढ़ गया—क्यों गांधीजी साम्प्रदायिक सद्‌भावना के लिये अपनी जान दाँव पर लगा रहे थे? 18 जनवरी को मौलाना आज़ाद के हाथों से सन्तरे का जूस लेकर अपना उपवास तोड़ा। इसके दो दिन बाद ही 20 जनवरी, 1948 को उनकी प्रार्थना सभा में बम—विस्फोट हुआ परन्तु वे विचलित नहीं हुए। धीरे—धीरे उनकी शान्त उपस्थिति से दिल्ली साम्प्रदायिक अशान्ति से पुनः शान्ति की ओर लौटने लगी।

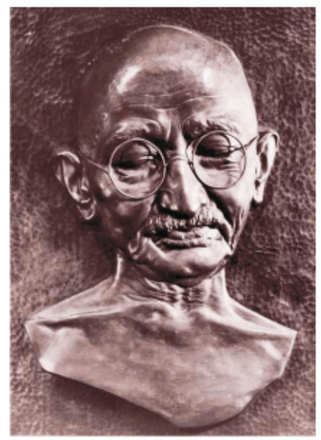



शुक्रवार, 30 जनवरी 1948 को यही कमरा था जिसमें से वे शाम 5.00 बजे अन्तिम बार प्रार्थना स्थल के लिये निकले अपने 'परमात्मा' से मिलने। कुछ ही पलों बाद उनका घायल रक्ताक्त शरीर इसी कमरे में वापस लाया गया। 31 जनवरी, 1948 को फिर इसी कमरे से बापू की अन्तिम यात्रा आरम्भ हुई जो इस भवन के गलियारों से होती हुई यमुना के किनारे पर समाप्त हुई जहाँ उनका अन्तिम संस्कार सम्पन्न हुआ।

इस कमरे में भले ही सशरीर बापू 9 सितम्बर, 1947 से 30 जनवरी, 1948 तक रहे जो उनके जीवन के अन्तिम 144 दिन थे। परन्तु आत्मा स्वरूप में, अपने जीवन सन्देश में, अपने उन आदर्शों में जिन्हें वे प्रत्येक मानव हृदय में स्थापित करना चाहते थे, वे आज भी हमारे बीच जीवित हैं। भारत के विभिन्न भागों से, जीवन के हर क्षेत्र से तथा विदेशों से आनेवाले हज़ारों लोग जो इस पावन स्थल पर आते हैं, यह सत्य सिद्ध करते हैं कि वे कभी हमें छोड़ कर गए ही नहीं। जीवन की तरह ही उन्होंने मृत्यु पर भी विजय पाई हैं — वे हैं कालजयी शाश्वत गांधी।

Mahatma Gandhi in the “Palatial Birla House” on Albuquerque Road, Delhi



Gandhiji arrived in the strife torn Delhi the capital of newly independent India on September 9, 1947 from Calcutta, where he had performed a miracle of peace-making. He was received at the Shahadra station by Sardar Vallabhai Patel, Dr. Rajkumari Amrit Kaur and others. It was the time when India was passing through its most turbulent period in the wake of the partition of the sub-continent. His earlier 'home' in Delhi, the Balmiki Basti, had now been turned into a camp for the refugees from “across the border”. Under the circumstances Gandhiji was persuaded to stay at the 'Birla House' which was considered to be the most suitable place for him because of its location and easy accessibility for the national leaders. Appreciating the compulsion of the times Gandhiji agreed to the suggestion. He was also apprised about the 'threat to his life' and that the Birla House would be safe. This he laughingly dismissed, saying “do you think if my time comes you will be able to save me”.





This room in, the erstwhile 'Birla House', now Gandhi Smriti (Memorial), on the ground floor was carefully selected. A bathroom adjoined it. All the furniture was specially removed to meet the needs of its new occupant. This room has been witness to some of the most historic moments in the history of post independence India. People from all walks of life would come to seek Mahatma Gandhi's counsel, be it the Governor-General of India or the Prime Minister and his cabinet colleagues but more important the people closest to Bapu's heart the poor, the deprived and the displaced. He always had time for them. No one was ever sent away disappointed. Gandhiji was experiencing a deep churning within him. He was searching for ways to guide the leaders towards rebuilding a new India an 'India of his Dreams', so as to present an ideal model of Swaraj to the world. Several International luminaries, writers and the media persons, who met him during this period have left behind a graphic and poignant accounts of their meetings with the Mahatma – the man who has been revered as the 'moment in the conscience of mankind'.







Gandhiji was looking to the future but his life was in danger and he knew it.

From this room, Gandhiji endeavoured to stir the conscience of his people by observing a fast from 13 January to 18 January 1948 “for self purification”. On January 18, he broke his fast by accepting a glass of orange juice from Maulana Abul Kalam Azad. His last fast was also an attempt to bring sanity amongst the people gone insane with hatred and revenge. This further enraged some section of the society who were harbouring a grudge against the Father of the Nation for staking his life for communal harmony. Two days later on 20 January 1948, while he was deep into prayer an aborted attempt on his life was made. But, because of his saintly presence the situation in Delhi was prevented from going out of control and slowly, but firmly normalcy returned to the city.

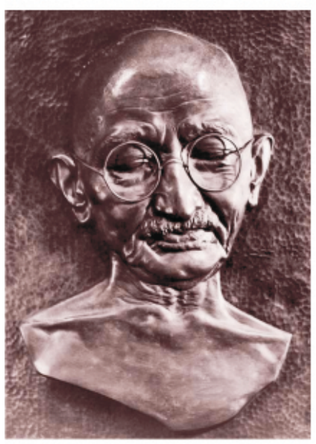



On Friday, the 30th January, 1948, it was from this room at 5.00 p.m. taking long strides Gandhiji set out, for the last time, towards the prayer ground 'to meet his creator'. A few moments later his wounded and bleeding body was brought back into the room. Again, on 31 January, 1948 it was from this very room, Bapu's last journey started and passed through these corridors to his final resting ground on the banks of the river Yamuna.

Mahatma Gandhi lived in this room in flesh and blood for 144 days from September 9, 1947 to January 30, 1948. But in spirit, in his life's message, in the ideals he sought to instill in every human heart, he continues to live here. Thousands of people, from all walks of life, from different parts of India and beyond her shores, who visit this place, everyday bear testimony to the fact that he never left us. He is the victorious one in death as in life – he is the Eternal Gandhi.

बुराई पर विजय

9 सितम्बर 1947 को दिल्ली रवाना होने से पूर्व गांधीजी कलकत्ते में नफ़रत को मुहब्बत से मिटाने के काम में लगे थे जबकि पूरा उपमहाद्वीप बंटवारे को अन्तिम स्वरुप देने में व्यस्त था। कलकत्ते में गांधीजी बेलियाघाट में स्थित एक मुस्लिम बहुल इलाके में एक जीर्ण शीर्ण मकान हैदरी मेन्शन में रह रहे थे। वे नोआखली प्रस्थान करने के विचार से ही 13 अगस्त 1947 को बेलियाघाट आए थे। किन्तु यहां के बिगड़ते हालात को देखते हुए वहीं रहने का निश्चय किया। कलकत्ते में एकता के स्तम्भ गांधीजी की उपस्थिती से 14 अगस्त 1947 का दिन शान्तिपूर्वक बीता। गांधीजी ने 1947 को भारत स्वतन्त्र हुआ। 1 सितम्बर 1947 को गांधीजी विरोध में कलकत्ते में आवाज़ें उठने लगी थीं, उन्हें फिर से प्यारेलाल को नोआखली भेज दिया। गांधीजी ने हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए एक बार फिर 31 अगस्त से अनिश्चित काल के लिए उपवास करने का निश्चय किया। तिहत्तर घन्टे के पश्चात 4 सितम्बर को गांधीजी ने इस आश्वासन पर कि अब शहर में साम्प्रदायिक सौहार्द को कोई मिटा नहीं सकेगा, उपवास तोड़ा। गांधीजी के उपवास ने लोगों के हृदय को झिंझोड़ कर सन्मार्ग पर उन्मुख होने की प्रेरणा दी। मुस्लिम लीग के समाचार पत्र 'मार्निंग न्यूज़' ने गांधीजी के प्रति मुसलमानों की ओर से अपने उद्गार कुछ इन शब्दों में व्यक्त किए – ''वे मृत्यु का भी आलिंगन करने को तत्पर थे ताकि मुसलमान इस देश में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके।''



कलकत्ते के कई मुहल्लों का दौरा किया। 15 अगस्त नोआखली जाने वाले थे। परन्तु उनकी ''शान्ति यात्रा''के दंगे भड़कने का अन्देशा था। अतः उन्होंने अपने सचिव











बंगाल के तत्कालीन राज्यपाल चक्रवर्ती राजागोपालाचारीजी के शब्दों में ''गांधीजी को जीवन में कई उपलब्धियां प्राप्त हैं। यद्यपि भारत की आज़ादी उनकी बड़ी उपलब्धि है परन्तु कलकत्ते में बुराई पर उनकी जीत उनकी सबसे अद्भुत उपलब्धि है। बंगाल के बाद अब शान्तिदूत गांधीजी की पंजाब और दिल्ली में आवश्यकता थी। बढ़ते हुए कौमी तनाव के कारण गांधीजी बहुत व्यथित थे। कलकत्ते से दिल्ली के लिए प्रस्थान से पूर्व जब उनसे संदेश मांगा गया तो उन्होंने बंगला में लिखा, ''मेरा जीवन ही मेरा संदेश है''।

Victory Over Evil

Before returning to Delhi on 9th September 1947, Gandhiji was in Calcutta dispelling hate with love while the work of partition was proceeding at break – neck speed. In Calcutta Gandhiji opted to stay at Haidari Mansion, a dilapidated house in the Muslim dominated locality of Beliaghat. He had come here on 13th August with the plan of going to Noakhali. But the growing communal tensions led him to stayput on in Calcutta. 14th August 1947 passed off peacefully because of Gandhiji's presence in the city who was the pillar of unity. He toured different parts of Calcutta. But once again peace was disturbed as Gandhiji revived his plan to go to Noakhali on 1st September. There were protests against his proposed peace pilgrimage. Fearing eruption of violence he again changed his plan but sent his secretary Pyarelal to Noakhali instead. He also decided to go on indefinite fast for communal harmony from 31st August. Gandhiji explained, 'My fast isolates the forces of evil'. He broke his fast on 4th September after fasting for 73 hours but only after peace returned in the city and the people gave him an assurance that peace will be maintained at all cost.

The Muslim League paper 'Morning News' paying tribute to Gandhiji on behalf of the Calcutta Muslims wrote, "He was ready to die so they might live peacefully." "Gandhiji has achieved many things", said the then Governor of Bengal C. Rajagopalachari, "but there has been nothing not even independence which is so truly wonderful, as his victory over evil in Calcutta". After Bengal Mahatma Gandhi set on a peace pilgrimage to Delhi and Punjab. The continuing tension agonized Gandhiji. Before leaving for Delhi on 7th September, on being approached for a message he wrote in Bengali, **"My Life is My Message".**

दिल्ली में गांधीजी

दिल्ली पहुंचते ही गांधीजी को शहर में हो रहे दंगों के बारे में सुनकर गहरा आघात पहुंचा और उन्होंने इसकी भर्त्सना करते हुए एक वक्तव्य जारी किया।

''गत रविवार को कलकत्ते से दिल्ली के लिए रवाना होते समय यहां के चिन्ताजनक हालात के विषय में मुझे कोई जानकारी नहीं थी। मैं आज पूरे दिन लोगों की दुखभरी दास्तान सुनता रहा हूं। कितने ही मुसलमान बन्धु अपनी दर्द भरी कहानी लेकर मुझसे मिलने आए। ऐसे हालात में मैं दिल्ली छोड़कर पंजाब नहीं जा सकूंगा। मुझे पहले दिल्ली में ही हालात को सुधारने के लिए भरपूर प्रयास करने होंगे''।

इसके साथ ही गांधीजी अपने सद्भाव और विवेकपूर्ण तर्क की शक्ति के साथ दंगों की लपटों को बुझाने के लिए आग में कूद पड़े। दस सितम्बर को दिल्ली के विभिन्न इलाकों में फैले शरणार्थी कैम्पों का दौरा करते हुए गांधीजी ने करीब चालीस मील की दूरी तय की।

दिल्ली में बिड़ला भवन में अगले 144 दिन के अपने पड़ाव के दौरान गांधीजी निरन्तर प्रार्थना प्रवचनों से लोगों की आत्मा को झिंझोड़ते हुए हर संध्या को उन्हें आपसी भाईचारे बनाए रखने के लिए समझाते जो बाद में रेडियो के माध्यम से पूरे राष्ट्र में प्रसारित किया जाता था। शायद केवल 21 सितम्बर की संध्या को यह कड़ी टूटी थी क्योंकि प्रार्थना सभा में उपस्थित कुछ लोगों ने पवित्र कुरान से पाठ पर आपत्ति जताई। इस पर गांधीजी ने कहा कि किसी को अपने विचारों को दूसरों पर थोपने का प्रयास करना उचित नहीं है। प्रार्थना प्रवचन के अतिरिक्त गांधीजी नियमित रुप से अस्पतालों का, जामा मस्जिद, पुराना किला, रिज, ईदगाह, मोतिया खान, हुमांयु का मकबरा तथा अन्य जगहों में स्थित विस्थापितों के कैम्पों का दौरा करते, या जहाँ भी उनकी आवश्यकता होती वे पहुंच जाते।

Gandhiji in Delhi

On reaching Delhi Mahatma Gandhi was shocked to hear of the riots raging in the city and issued the following statement:

I knew nothing about the sad state of affairs in Delhi when I left Calcutta on Sunday last. On reaching Delhi, I have been listening to the whole daylong tale of woes that is Delhi today. I saw several Muslim friends who recited their pathetic stories. I heard enough to warn me that I must not leave Delhi for the Punjab until it had regained its former self."

Gandhiji immediately plunged into action to quell the fire with his love and voice of sanity.

On September 10, Gandhiji covered forty-miles and visited refugee centres spread across in Delhi and at Okhla. During his stay in Birla House for the next 144 days Gandhiji regularly delivered soul stirring speeches at the prayer meetings held every evening on the lawns of this house which were later broadcast to the nation. There was an exception on September 21 when he stopped the prayers as some one from the audience took objection to the recitation from the Holy Quran. "One must not seek to impose one's views on others' he said. Gandhiji would visit hospitals, refugee camps at Jama Masjid, Purana Qila, Ridge, Idgah, Motia Khan, Humayun's Tomb or wherever his presence was required.













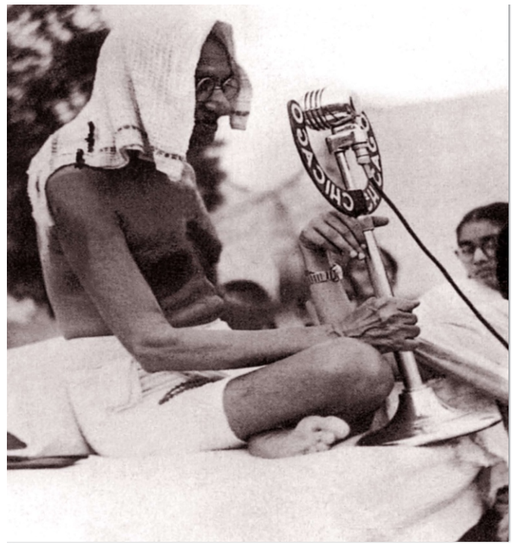

10 सितम्बर 1947 – 29 जनवरी 1948 के बीच दिए गए प्रार्थना प्रवचनों के कुछ अंश

अपने प्रार्थना प्रवचन के दौरान गांधीजी उन सभी विषयों पर अपने विचार व्यक्त करते थे जो राष्ट्र, आम इन्सान, उनके दुखः और त्रासदी, बदलते राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिक आयामों से जुड़े थे। संक्षेप में कहें तो ऐसा कोई विषय नहीं था जो गांधीजी के ध्यान के योग्य नहीं था। यदि किसी दिन वे शरणार्थी कैम्प में व्याप्त गंदगी पर लोगों का ध्यान–आकर्षित करते तो दूसरे दिन 'सनातन' शब्द की व्याख्या करते। लोगों को समझाते किस प्रकार कालान्तर में हिन्दू धर्म ने दुनिया के सभी धर्मों को अपने में समाहित कर लिया। अतः हिन्दू धर्म का किसी भी धर्म के अनुयायियों से चाहे–वे मुसलान हों, सिख हों या ईसाई कोई विरोध हो ही नहीं सकता, जैसी अब दुर्भाग्य से वस्तुस्थिति बन गई है। वे खाद्यान्न आपूर्ति, भाषा, जम्मू–कश्मीर के हालात, शरणार्थियों से जुड़ी सभी समस्याएँ, नए विश्वविद्यालय, कपड़े पर सरकारी नियंत्रण, जूनागढ़ और हैदराबाद की घटनाओं पर अपनी चिन्ता लोगों के सामने रखते थे।

Prayer Speech : between September 10, 1947- January 29, 1948 some excerpts

During his prayer Gandhiji dealt with almost every subject and issues that concerned the nation, the ordinary people-their trials and tribulations, the fast changing national and international political scenario. There was practically no subject, which was not worthy of his attention. If, on one occasion he talked about the sanitary conditions of the refugee camps, at another he was at pains to define the true meaning of *'Sanatan'*. He tried to make people understand as how Hinduism had absorbed the best of all the faiths of the world and in that sense Hinduism was not an exclusive religion. Hence, there could be no quarrel with the followers of Islam, Sikhism, Christianity, as unfortunately is the case today. He shared his concerns about food shortage, language issue, developments in Jammu and Kashmir, all aspects of the refugee problems, on New Universities control on cloth, events in Junagadh and Hyderabad etc,

स्वराज के लिये पथ निर्माण

दिसम्बर 1947 में बिड़ला भवन में रहने के दौरान महात्मा गांधी ने भारत नवनिर्माण के विभिन्न पहलूओं पर अनेक चर्चाएँ की जिसमें हिन्दुस्तानी तालीमी संघ और रचनात्मक कार्यकर्ता समिति भी थी। एकत्रित लोगों में ऐसे अहिंसक संघर्ष के अनुभवी सिपाही शामिल थे जिनका महात्मा गांधी ने अपने जीवन के पिछले 30 वर्षों में नेतृत्व किया था। असली स्वराज की ओर एक कदम के रुप में गांधीजी ने ग्रामों के पुनरुत्थान के लिये नागरिकों के दायित्व पर इस सभा में विचार रखे।

इन कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए गांधीजी ने कहा, "आज हमारे अधिकतर कार्यकर्ता शहरों से लिये गये हैं वास्तव में गरीब ग्रामीण अभाव ग्रस्त जीवन जी रहा है। वह अपनी मूलभूत आवश्यताओं को पूरा करने से आगे और कुछ नहीं सोच सकता। ग्रामीण अहिंसा को नहीं समझता और मैं इस बारे में उनसे बात भी नहीं करता। किन्तु मेरी यह कोशिश है कि वह एक अच्छा कत्तन और बुनकर बन जाये और उन्हें जीवन यापन के उचित पारिश्रमिक मिले। कार्य बेशक छोटा हो किन्तु वास्तव में ठोस होना चाहिये। कुछ ही महीने में संविधान निर्माण का कार्य पूरा हो जाएगा। उसके बाद क्या। इस को लागू करने और इसकी सफलता की जिम्मेदारी आप पर होगी।"

Preparing the pathway to Swaraj

During his stay in this house in December 1947, Mahatma Gandhi held a series of discussions—one with the Hindustani Talimi Sangh group, the other with the members of the Constructive Programme Committee. The gathering included seasoned soldiers of many a non-violent struggle that he had led during the last thirty years of his life. Spelling out the duties of the citizens towards the regeneration of our villages as a step towards real Swaraj.

"Today, most of our workers are drawn from the cities. The really poor villager is haunted by the specter of destitution. I cannot see beyond the satisfaction of his primary needs. The villager does not understand nonviolence, nor do I talk to him of it, but I try only to see that he becomes a good spinner and gets a fair minimum subsistence wage. I do not mind if the volume of our work is small, so long as it is truly solid. Constitution-making will be over in a few months. What next? The responsibility of implementing it and making a success of it will rest on you."





दीपावली का महत्व

इस दिन का हिन्दू पंचांग में एक महत्वपूर्ण स्थान है। परन्तु हिन्दुओं को यह बात भली भांति समझनी चाहिये कि इस दिन रौशनी क्यों की जाती है। राम और रावण के बीच हुए भीषण युद्ध में श्री राम सात्विक शक्तियों का प्रतिनिधत्व कर रहे थे और रावण बुराइयों का। इस युद्ध में विजय ने रामराज को स्थापित किया। पूरे देश में शान्ति और सद्भावना स्थापित करने के लिए हम सभी का यह कर्तव्य बनता है कि हम अपने हृदय से घृणा और शंकाओं को मिटा दें। कश्मीर या जूनागढ़ में विजय सार्थक तब ही मानी जाएगी जब हम अपने हृदय में ईश्वर के अस्तित्व को अनुभव करें और आपसी मतभेद को भुला दें। दीपावली का उत्सव सही मायने में उस दिन माना जाएगा जब हम उन सभी मुसलमान परिवारों को स्वदेश लौटा लाएं जो यहां से डरकर पलायन कर गए हैं। पाकिस्तान का अस्तित्व भी सिखों और हिन्दुओं के साथ इसी प्रकार के व्यवहार पर निर्भर करेगा।

Significance of Diwali

Significance of Diwali. It is a great day in the Hindu calendar year. They should understand why it is celebrated by illuminations. In the deadly battle between Rama and Ravana, the former, the representative of the forces of good, overcame the latter, who represented the forces of evil. This victory established Ram Raj. In order to bring about peace and goodwill throughout the land, it was the duty of everyone to banish hatred and suspicion from his or her heart. No victory in Kashmir or in Junagadh would avail, if they did not feel the existence of God within them and forget all their petty internal differences. Diwali could never be properly celebrated, until they had brought back to India all those Muslims who had fled from here out of fear. Nor could Pakistan live, unless it did likewise for the Hindus and the Sikhs.

जम्मू – कश्मीर

जम्मू कश्मीर रियासत ने हिन्दुस्तान या पाकिस्तान में रहने का फैसला करने में जब देर की तो तलवार के बल पर उसे निर्णय लेने में मजबूर करने के लिये पंजाब और सीमाप्रान्त के कबाइलियों ने उस पर हमला कर दिया।

राष्ट्रीय परिषद की राहबरी में, कश्मीरियों ने एक बनकर बहादुरी से अपनी भूमि और संस्कृति की रक्षा की। 26 अक्टूबर को लोगों की सहमति से रियासत संघ में शामिल हुई और उसने विनाशक हमले का सामना करने के लिये फौज की मदद मांगी। हिन्दुस्तानी फौजों ने हमला रोक दिया।

कश्मीर गांधीजी के दिमाग पर छाया हुआ था। हालांकि वे हमलावर और मुहाफिज़ का फर्क समझते थे, उनके ख़्याल से कश्मीर में फौज भेजना मुनासिब नहीं था। उनका कहना था कि कश्मीरियों की बात इतनी वाजिब थी कि उन्होंने अगर हमले का सामना अहिंसक तरीके से किया होता तो सारी दुनिया उनकी तारीफ करती।

Jammu – Kashmir

Because of the delay in taking the decision by the Princely State of Jammu and Kashmir about accession to either the Dominion of India or Pakistan, freebooters from North West and Punjab invaded the state to force accession by swords.

Under the guidance of the National Conference, the people of the valley defended their soil and their common heritage with courage and unity.

On October 26, the state acceded to the Indian Union with the consent of the people and sought military aid against the wanton aggression. India troops stemmed the tide of invasion.

Kashmir occupied Mahatma Gandhi's thoughts. Though he did distinguish between an aggressor and a defender. Sending troops to Kashmir was not his way. The case of the defenders, he felt was so manifestly just that if the people had resisted the unprovoked invasion non-violently, it would have won the admiration of the world.



प्रार्थना प्रवचनः गांधी जयन्ती 2 अक्टूबर 1947 के अवसर पर

दो अक्टूबर को अपने जन्म दिवस पर गांधी जी को शुभकामनाएं देने वालों का दिन भर तांता लगा रहा। आने वालों में कई राष्ट्रों के राजदूत समेत भारत के वाइसराय की पत्नी लेडी माउंट बेटन भी थीं। ये सब गांधी जी को उनके अड्तत्तरवें जन्मदिन पर उन्हें बधाई देने आऐ थे। गांधी जी को देश विदेश से बधाई के सैकड़ों तार भी प्राप्त हुए थे। उनके लिये हरेक को इसके उत्तर देना असम्भव था। परन्तु इन सब के बीच गांधी जी मानों अपने आप से पूछ रहे थे।

"ये शुभकामनाएं कहाँ से आ रही हैं। इन्हें शोक सन्देश कहना क्या अधिक उचित नहीं होगा? यहां तक कि सैकड़ों विस्थापितों ने भी पैसों और फूलों के साथ मुझे अपनी शुभकामनाएं भेजी हैं। किन्तु मेरे अन्तर् में गहन क्षोभ और दुख के सिवा कुछ नहीं है। एक समय था जब इस देश में मेरे सैकड़ों अनुयायी थे। आज मेरी वाणी सुनने वाला कोई नहीं है। मैं एकाकी हो गया हूं। मुझे केवल एक ही बात सुननी पड़ रही है कि मेरे हिन्दू बन्धु भारत में एक भी मुसलमान को नहीं रहने देगें। यदि आज यह आवाज़ मुसलमानों के खिलाफ़ है तो कल इस देश में पारसियों और ईसाइयों या योरोपियन के विरूद्ध आवाज़ उठने लगेगी। मेरे अनेकों शुभचिन्तकों ने मेरे लिए 125 वर्ष जीवित रहने की कामना की है। परन्तु अब तो मैं 125 वर्ष तो क्या एक दिन और जीवित नहीं रहना चाहता। मेरे अन्दर अब और जीने की चाह नहीं रही। मैं अपने चारों ओर फैले घृणा और हिंसा के इस माहौल में जीना नहीं चाहता अतः मैं आप सब से प्रार्थना करता हूँ कि यह पागलपन छोड़ दें। पाकिस्तान में हिन्दुओं और सिखों के साथ यदि अमानवीय व्यवहार हो रहा है तो भी हमें संयम से काम लेना चाहिये। यदि एक समूह अपना विवेक खोकर गर्त में गिरता है तो यह आवश्यक नहीं कि सब वैसा ही करें। मैं फिर आप सब से प्रार्थना करता हूँ ज़रा गम्भीरता से इन बुरे कर्मों के दूरगामी दुष्परिणामों के विषय में विचार करें। अपने हृदय को घृणा के ज़हर से मुक्त करें।"



Prayer Speech on Gandhi Jayanti : 2 October 1947

On October 2, Mahatma Gandhi referred to the stream of visitors he had had all day, including representatives of the foreign embassies and Lady Mountbatten. They had come to congratulate him on his seventy-eighth birthday. He had received scores of telegrams also both from home and abroad. It was indeed impossible to send individual replies.

"Where did the congratulations come in? Would it not be more appropriate to say condolences?" Flowers have even been sent by the refugees and many tributes, both in money and good wishes. There was nothing but agony in my heart. Time was when whatever I said the masses followed. But, today, mine is a lone voice. All I hear from my people is that they would not allow the Muslims to stay in the Indian Union. And if their cry was against the Muslims today, what might be the fate of the Parsis and the Christians and even the Europeans tomorrow? Many friends had hoped I would live to be 125, I have lost all desire to live long, let alone for 125 years. I am utterly unable to appreciate any of the congratulations showered on me. I can not live while hatred and killing marred the atmosphere. I, therefore, plead with all of you to give up the present madness. It did not matter what was being done to non-Muslims in Pakistan. If one party had sunk low, the other could not afford to do likewise. I request all of you to pause and consider the evil consequences of such misdeeds. You should purge your hearts of hatred."

हिन्दू क्या है?

प्रार्थना सभा में उपस्थित एक व्यक्ति ने गांधी जी से प्रश्न किया कि हिन्दू किसे कहेंगे ? इस शब्द की उत्पत्ति कैसे हुई। क्या हिन्दू धर्म का कोई आधार है ?

गांधी जी ने उत्तर देते हुए कहा कि यह सभी अहम् प्रश्न हैं। 'मैं कोई इतिहासविद् नहीं हूँ न ही मैं कोई विद्वान हूँ। किन्तु मैंने हिन्दू धर्म पर कुछ प्रामाणिक पुस्तकों का अध्ययन किया है जिससे यह ज्ञात होता है कि हमारे वेदों में कहीं भी हिन्दू शब्द का उल्लेख नहीं है। परन्तु जब सिकन्दर महान् ने भारत पर आक्रमण किया तब सिन्धु नदी के पूर्व में रहने वाले लोगों को हिन्दू कहा गया है। असल में ग्रीस वासियों ने 'स' अक्षर को 'ह' में परिवर्तित कर दिया। और इसी के बाद सिन्धु नदी के उस पार रहने वालों को हिन्दू कह कर पुकारने लगे और इनके धर्म को हिन्दू धर्म का नाम दे दिया गया। परन्तु हिन्दू धर्म सहिष्णुता पर आधारित रहा है। इस धर्म ने प्राचीन ईसाई धर्म को संरक्षण दिया जब यहूदियों के अत्याचार से बचने के लिए ईसाई भारत में शरण लेने आए। यही सब पारसियों के साथ भी हुआ। मुझे गर्व है कि मैं हिन्दू हूँ और मेरी इस उदार हिन्दू धर्म में गहरी आस्था है जिसमें सभी धर्मों का मूल रूप समाहित है और सहिष्णुता जिसका आधार स्तम्भ है। आर्यों की वैदिक धर्म पर आस्था थी और हिन्दूस्तान को भी तब आर्यावर्त के नाम से जाना जाता था। मेरी ऐसी कोई चाहत नहीं है। मेरे सपनों के हिन्दुस्तान में यह सब मौजूद हैं। इसमें वेदों का भी स्थान है परन्तु इसमें और भी बहुत कुछ है। मैं इसमें किसी प्रकार की असंगति नहीं देखता। हिन्दू धर्म के प्रति सम्मान को किसी प्रकार ठेस पहुंचाए बिना मैं यह कह सकता हूँ कि मैं इस्लाम, ईसाई, यहूदी और पारसी धर्मों का भी इसी प्रकार सम्मान करता हूँ। और यही हिन्दू धर्म जब तक आकाश में सूर्य चमकता रहेगा तब तक शाश्वत रहेगा। तुलसी दास ने इस भाव को एक दोहे मे बड़ी खूबसूरती से समझाया है, "धर्म की जड़ें दयाभाव में निहित हैं, जबकि अहंकार देह के प्रति मोह में। तुलसी दास कहते हैं, तुलसी दया न छोड़िये जब तक तन में प्राण।"

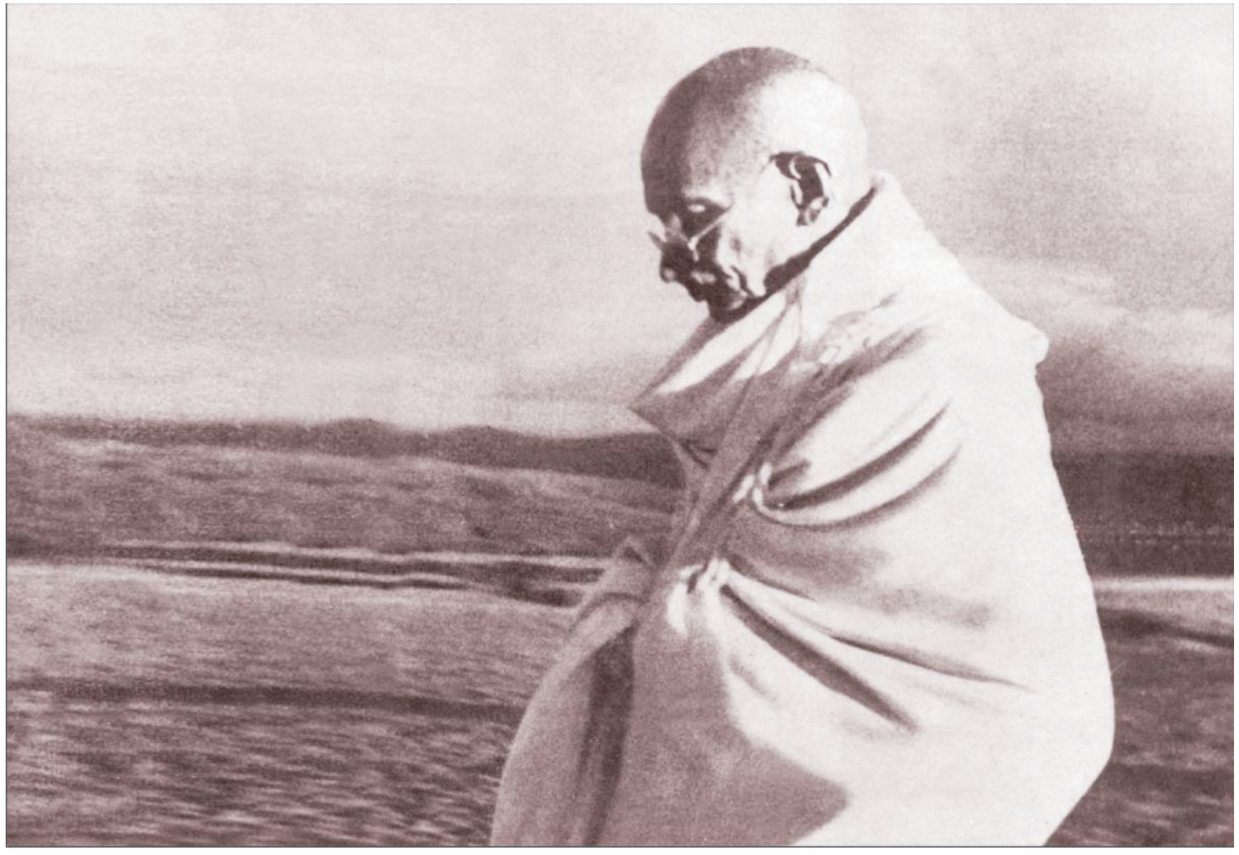

मो. क. गांधी
21 नवम्बर 1947

Who is a Hindu?

To a question that was sent to him by one of the members of the audience: What is a Hindu? What is the origin of the word? Is there any thing called Hinduism?

"These were pertinent questions for the time, Gandhiji stated. "I am not a historian, I lay no claim to intellect. But I have read in some authentic book on Hinduism that the word "Hindu" did not occur in the Vedas, but when Alexander the Great, invaded India, the inhabitants of the country to the east of the Sindhu were described as Hindus. The letter "S" had become "H" in Greek. The religion of these inhabitants became Hinduism and, as they knew it, it was a most tolerant religion. It gave shelter to the early Christians who had fled from persecution, also to the Jews known as Beni-Israel, as also to the Parsis. I am proud to belong to that Hinduism, which was all-inclusive and which stood for tolerance. The Aryan scholars swore by what they called Vedic religion, and Hindustan was otherwise known as Aryavarta. I have no such aspiration. Hindustan of my conception was all-sufficing for me. It certainly included the Vedas, but it included also much more. I could detect no inconsistency in declaring that I could, without in any way whatsoever, imparing the dignity of Hinduism, pay equal homage to the best of Islam, Christianity, Zoroastraianism and Judaism. And such Hinduism will live, as long as the sun shines. Tulsidas summed it up in one *doha*: "The root of religion is embedded in mercy, whereas egotism is rooted in love of the body. Tulsi says that mercy should never be abandoned, even though the body perishes."

M. K. Gandhi
21 November, 1947



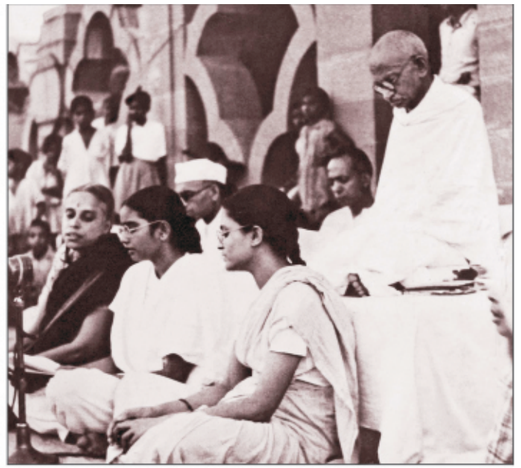





बिड़ला हाउस क्यों ?

"मेरे एक मित्र ने मुझको लिखा है कि बहुत सारे ग़रीब लोग बिड़ला हाउस में प्रार्थना में शामिल होने के लिये नहीं आ सके। उन्होंने पूछा कि मैं पहले की तरह भंगी बस्ती में क्यों नहीं रहने गया। दिल्ली आने पर मैंने इसका कारण बताया था किन्तु मैं इसे दोहराना चाहूँगा। जब मैं दिल्ली पहुँचा तो वह एक मृत शहर की तरह थी। अभी अभी दंगे भड़के थे और भंगी बस्ती शरणार्थियो से भरी हुई थी। अतः सरदार पटेल ने मुझे भंगी बस्ती के बजाय बिड़ला हाउस में रखने का निर्णय किया। मुझे नहीं पता कि भंगी बस्ती अब खाली है या नहीं। अगर यह खाली भी हो तो भी मैं नहीं समझता कि वहाँ रहना मेरे लिये उचित था। दिल्ली में रहने का मेरा मुख्य उद्देश्य मुसलमानों को ज़्यादा से ज़्यादा सुविधा और सहायता उपलब्ध कराना था। बिड़ला हाउस में रहकर यह उद्देश्य बेहतर ढंग से पूरा हो रहा है। मेरे मुस्लिम मित्र अन्य स्थान पर जाने के बजाय यहाँ आना ज़्यादा सुरक्षित समझते थे। दूसरे, केबिनेट के सदस्यों के लिये मुझसे बिड़ला हाउस में मिलना सुविधाजनक था क्योंकि उनमें से अधिकतर पास में ही रह रहे थे। वे वर्तमान परिस्थिति में बहुत व्यस्त लोग हैं और उन्हे भंगी बस्ती जाने में बिड़ला हाउस आने की अपेक्षा काफी अधिक समय लगता।"

मो. क. गांधी
9 दिसम्बर, 1947

Why Birla House?

"A friend had written to me that many poor people could not come to attend the prayers on the Birla House grounds. They asked me why I was not staying at the Bhangi Colony, as before. I had given the reasons on my arrival at Delhi. But I would like to repeat it. When I arrived in Delhi, Delhi was like a dead city. The riots had just broken out and the Bhangi Colony was full of refugees. Sardar Patel therefore, had decided to put me up at the Birla House instead. I do not know if the Bhangi Colony is vacant now. Even if it is, I do not think it would be right for me to shift there. My main objective in staying in Delhi, is to give to the Muslims whatever comfort I can. That objective was served better by my staying at the Birla House. Muslim friends felt safer in coming here than in the poor quarters of Delhi. Moreover, it was much easier for the members of the Cabinet to come to see me at the Birla House, as most of them were staying close by. They are very busy men and going to the Bhangi Colony would require much more time, than coming to the Birla House".

M. K. Gandhi
9 December, 1947

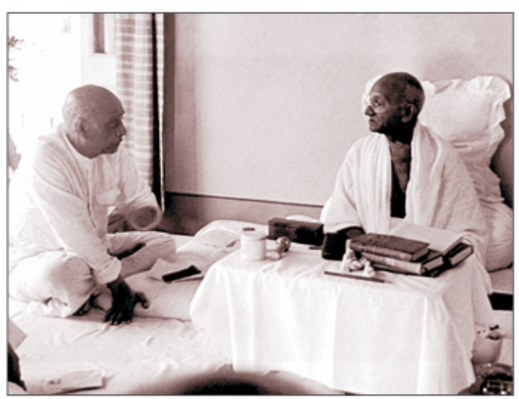







मेरा ध्येय अत्यंत संयम के साथ, उदाहरण और उपदेश देते हुए सत्याग्रह के बेजोड़ अस्त्र के प्रयोग की शिक्षा देना है—सत्याग्रह जो अहिंसा तथा सत्य की प्रत्यक्ष परिणति है। मैं यह प्रदर्शित करने के लिए उत्सुक ही नहीं अपितु आतुर हूँ कि जीवन की बहुत—सी बुराइयों का इलाज केवल अहिंसा है...

मो. क. गांधी



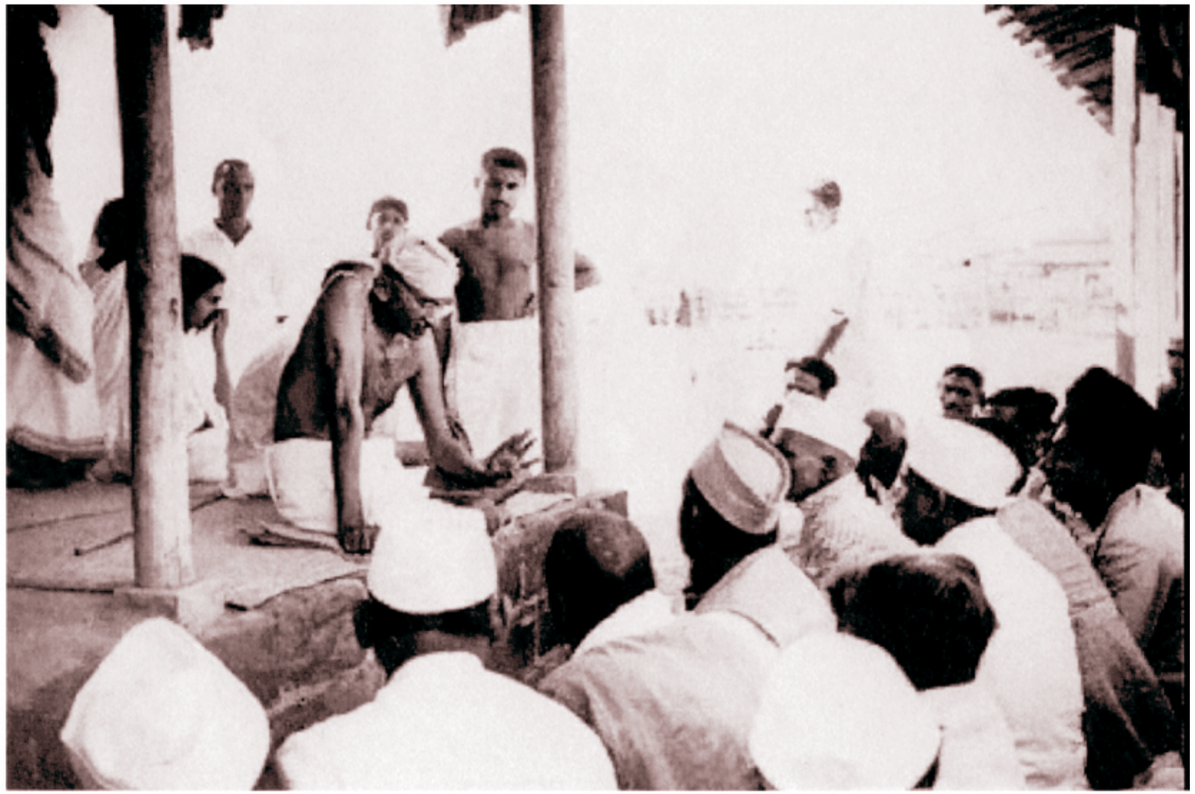

My mission is to teach by example and precept under severe restraint the use of the matchless weapon of Satyagraha; which is a direct corollary of non-violence and truth. I am anxious, indeed I am impatient, to demonstrate that there is no remedy for the many ills of life save that of non-violence…

M. K. Gandhi

मैं स्वयं को भारत और मानवता का एक अदना सेवक मानता हूँ और इसी प्रकार सेवा करते हुए मर जाना पसंद करूँगा। मुझे कोई संप्रदाय चलाने की कामना नहीं है। मैं सचमुच इतना महत्वाकांक्षी हूँ कि मेरा अनुगमन केवल एक संप्रदाय करे, इससे मुझे संतोष नहीं होगा। चूंकि मैं किन्हीं नये सत्यों का प्रतिनिधित्व नहीं करता, मैं (चिरंतन) सत्य का, जैसा कि उसे जानता हूँ, अनुगमन और प्रतिनिधित्व करने का प्रयास करता हूँ। हाँ, यह अवश्य है कि मैं अनेक पुराने सत्यों पर नयी रोशनी डालता हूँ।

मो. क. गांधी

I claim to be a humble servant of India and humanity, and would like to die in the discharge of such service. I have no desire to find a sect. I am really too ambitious to be satisfied with a sect for a following. For I represent no new truths. I endeavor to follow and represent Truth, as I know it. I do claim to throw a new light on many old truths.

M. K. Gandhi

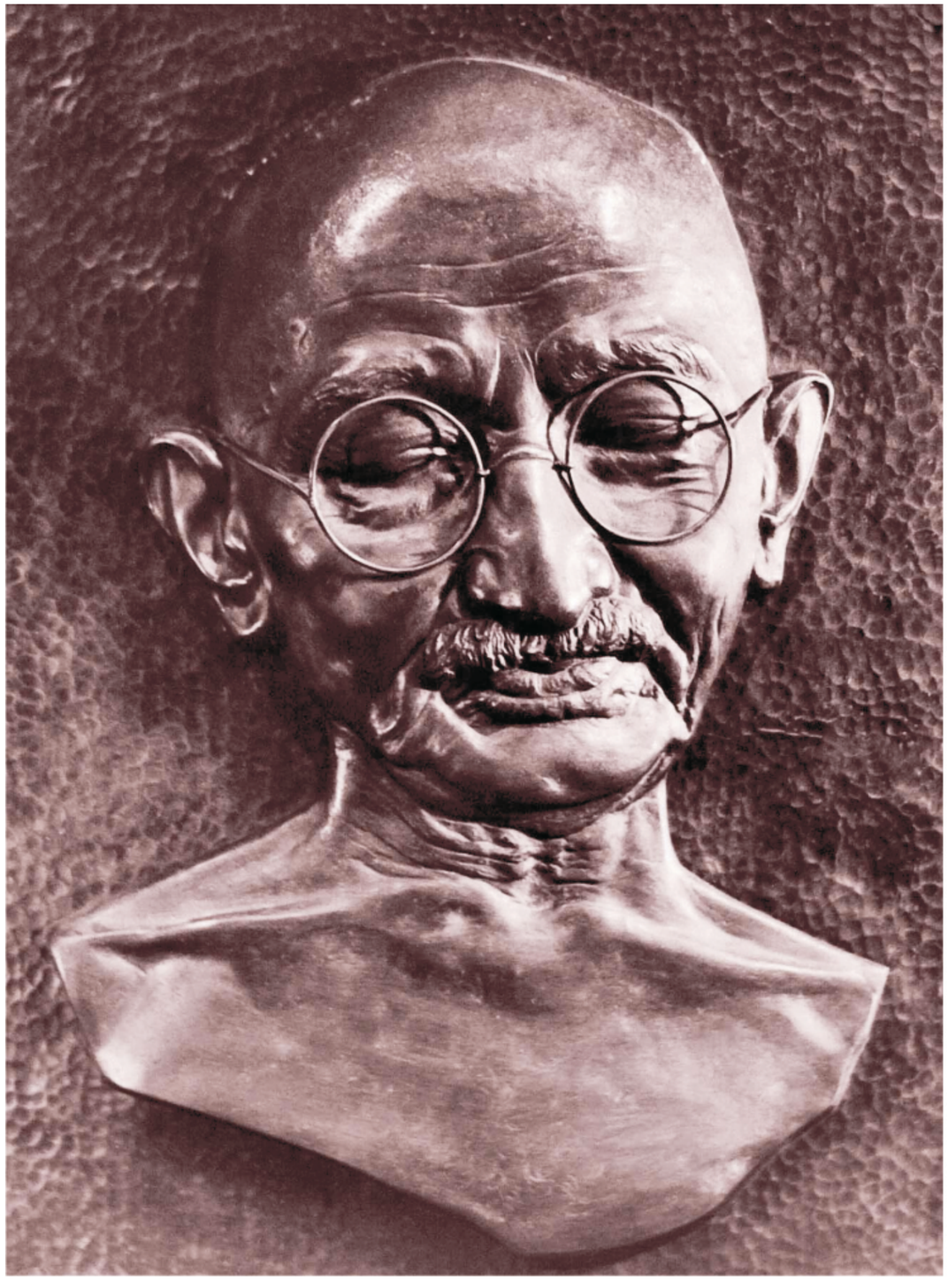

सत्य ही ईश्वर है।

TRUTH IS GOD

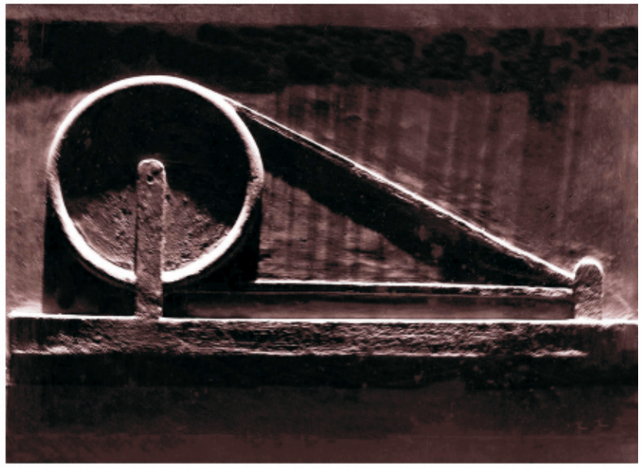

मेरा जीवन एक खुली किताब रहा है। मेरे न कोई रहस्य हैं और न मैं रहस्यों को प्रश्रय देता हूँ।

मो. क. गांधी

My life has been an open book. I have no secrets and I encourage no secrets.

M. K. Gandhi

अन्तिम उपवास

दिल्ली में महात्मा गांधी की उपस्थिति के बावजूद कौमी दंगे थमने का नाम नहीं ले रहे थे। रोज़ किसी न किसी मोहल्ले से फसाद होने की ख़बर आती। "बड़ी तेज़ी से दिल्ली हमारे हाथ से निकलती जा रही है।" गांधीजी ने अपने एक मित्र को भरे मन से बताया "यदि ऐसा ही चलता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया के नक्शे से विलुप्त हो जाएगा और उसके साथ ही ख़त्म हो जाएगी विश्व की शान्ति के लिए आशा की अन्तिम किरण।"

गहरी आन्तरिक पीड़ा और मनोव्यथा के बीच दिल्ली शहर को कौमी नफरत से बचाने के लिए गांधी जी ने आमरण उपवास का निर्णय लिया। यह सब कुछ इतना अचानक हुआ कि किसी को कुछ भी कहने का अवसर ही नहीं मिल पाया। यहाँ तक की जवाहर लाल नेहरू या सरदार पटेल को भी इसका कोई पूर्व आभास नहीं था। गांधीजी से कुछ ही घण्टे पहले यह लोग मिले थे परन्तु वे नहीं जानते थे कि गांधी जी उपवास की घोषणा कर पूरे देश को चौंका देंगे। 12 जनवरी 1948 को अपने प्रार्थना प्रवचन के दौरान गांधीजी ने साम्प्रदायिक सद्भावना कायम करने के उद्देश्य से आमरण उपवास के अपने निश्चय की घोषणा कर अपने आपको ईश्वर के हवाले कर दिया। उस दिन प्रवचन में गांधी जी ने कहा कि ''व्यक्ति स्वास्थ्य लाभ के लिए उपवास करता है, पश्चाताप के लिए उपवास करता है या अन्य किसी की भूल को सुधारने के उद्देश्य से उपवास रखता है। इन सभी प्रकार के उपवास में कभी अहिंसा का साधक समाज द्वारा की गई गल्तियों के विरोध में उपवास रखने पर बाध्य हो जाता है क्योंकि अहिंसा के पुजारी के पास और कोई विकल्प नहीं बचता। एक ऐसी ही कठिन घड़ी मेरे सामने उपस्थित हो गई है। मैं 9 सितम्बर को कलकत्ते से दिल्ली, पंजाब जाने के उद्देश्य से ही आया था। परन्तु ऐसा हो नहीं सका। मेरी खुशहाल दिल्ली मृतप्रायः सी हो गई है। जब मैं रेलगाड़ी से उतरा तो मैंने सबके चेहरों पर उदासी देखी। सदा खुशहाल दिखने वाले सरदार पटेल भी मानो हंसी मज़ाक करना भूल गए हों। मुझे आश्चर्य तो हुआ परन्तु इसका कारण मालूम नहीं था। सरदार पटेल ने रेलवे स्टेशन पर ही बिना समय खोए मुझे भारत संघ की राजधानी दिल्ली में हो रहे कौमी दंगों से अवगत कराया उसी समय मैं समझ गया था कि अब मुझे दिल्ली में ही 'करो या मरो' के मन्त्र के साथ इस नफरत की आग को बुझाने के लिए अपने आप को इस महायज्ञ में उत्सर्ग करना होगा।

मेरी यही लालसा है कि मैं हिन्दुओं, सिखों और मुसलमानों के बीच हार्दिक मैत्री भाव स्थापित करवा सकूं। आज यह कहीं दिखाई नहीं दे रही है। यह एक ऐसी अवस्था है जो किसी भारतीय के लिए जो अपने आप को देशभक्त कहने का दम्भ भरता हो इसे शान्तिपूर्वक सहन नहीं कर सकता। मैं आप सबसे अपने लक्ष्य में सफल होने के लिए आशीर्वाद की कामना करता हूं। आप मेरे लिए और मेरे साथ प्रार्थना करें। मेरा उपवास कल प्रातः के भोजन के उपरान्त प्रारम्भ होगा। यह अनिश्चित काल का उपवास है। परन्तु यदि पूरा भारत या केवल दिल्ली मेरी प्रार्थना स्वीकार करे तो यह उपवास शीघ्र समाप्त हो सकता है।

अपने भारत, हिन्दू धर्म, सिख धर्म और इस्लाम धर्म के सर्वनाश का मूक और असहाय साक्षी बनने से तो अच्छा होगा मृत्यु आकर मुझे एक गौरवमयी मुक्ति प्रदान करे।'' गांधी जी का यह अन्तिम उपवास 13 जनवरी 1948 से प्रारम्भ होकर 18 जनवरी 1948 को सम्पन्न हुआ।


HARIJAN

January 30, 1948

THE BREAKING OF THE FAST













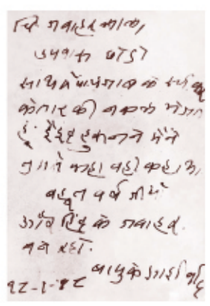




The Bombay Chronicle

INDIA RALLIES TO MAHATMA

Mahatma Opens Out His Heart



Last Fast

"We are steadily losing hold on Delhi," Mahatma Gandhi mentioned to a friend. "If it goes, India goes and with that goes the last hope of world peace."

He felt helpless and so came his decision to fast in a flash. It left no room for argument, so much so that he gave no inkling either to Jawaharlal Nehru and Sardar Patel, who saw him only a couple of hours before the announcement of his fast.

In his prayer discourse on the evening of January 12th, 1948, Gandhi announced his decision to fast from the 13th, for an indefinite period, to bring about a reunion of hearts of all communities:

"One fasts for health's sake, under laws governing health, fasts as a penance for a wrong done and felt as such. In these fasts which a votary of Ahimsa sometimes feels impelled to undertake by way of protest against some wrong done by society and this he does when he as a votary of ahimsa, has no other remedy left. Such an occasion has come my way.

"When on September 9th, I returned to Delhi from Calcutta, it was to proceed to the West Punjab. But, that was not to be. Gay Delhi looked a city of the dead. As I alighted from the train, I observed gloom on every face I saw. Even the Sardar whom humour and the joy that humour gives, never desert, was no exception, this time. The cause of it, I did not know. The Sardar was on the platform to receive me. He lost no time in giving me the sad news of the disturbances that had taken place in the metropolis of the Indian Union. At once I realized that I had to be in Delhi, and 'do or die'. I yearn for heart friendship between the Hindus and the Sikhs and the Mussalmans. It subsisted between them only the other day. Today, it is non-existent. It is a state that no Indian patriot worthy of the name, can contemplate with equanimity."

"I ask you all to bless the effort and to pray for me and with me. The fast begins from the first meal tomorrow. The period is indefinite."

'If whole India responds or at least Delhi does, the fast might be soon ended.' The Mahatma added.

Death for me would be a glorious deliverance rather than that I should be a helpless witness of the destruction of India, Hinduism, Sikhism and Islam".





20 जनवरी को, गांधीजी की प्रार्थना सभा में उनको मारने के लिये एक क्रुद्ध शरणार्थी के फेंके हुए बम से विस्फोट हुआ। गांधीजी सुरक्षित एवं तटस्थ बने रहे। इस घटना के पश्चात् भी ईश्वर पर श्रद्धा रखकर उन्होंने किसी भी तरह का मानवीय रक्षण लेने से इन्कार किया।

On January 20, a bomb planted by an angry young refugee to kill Gandhi exploded during his post prayer discourse. Gandhiji remained unruffled. Relying on God, he refused to accept any kind of human protection.





ख़्वाजा कुतुबुद्दीन चिश्ती साहब के मज़ार पर गांधीजी

27 जनवरी 1948 को गांधीजी के सम्बोधन को प्रार्थना सभा में पढ़ा गया–यहां से शायद आठ मील की दूरी पर स्थित कुतुबुद्दीन चिश्ती साहब की मज़ार है। इस मज़ार को अजमेर शरीफ़ के बराबर ही पवित्र माना जाता है। इस मज़ार पर हज़ारों मुसलमानों के साथ हिन्दू भी इसी आदर भाव से मन्नत मांगने जाते हैं। गत सितम्बर में कुछ दंगाइयों ने वहां रहने वाले मुसलमानों के साथ दुर्व्यवहार किया जिसके चलते वहां से वे चले गए और फिर लौट कर नहीं आए। मैं हिन्दुओं और सिखों से निवेदन करता हूँ कि उन सभी मुसलमान परिवारों को फिर से उनके घर में लौटा कर अपने माथे पर लगे कलंक को मिटा दें।

Visit to the Mausoleum of Qutubuddin Chishti Saheb

On January 27, 1948, his address was read out at the prayer meeting: "Not even eight miles from here is the mausoleum of Qutubuddin Chishti Saheb which is reputed to be second in sanctity to the one in Ajmer. Both are visited not only by Muslims but by thousands of Hindus and other non-Muslims in equal veneration. The Hindu wrath visited the sacred place last September. The Muslims in the surrounding area felt compelled to vacate their homes. It behoves the Hindus and Sikhs to wipe out the disgrace and reinstate the place in all its original glory.

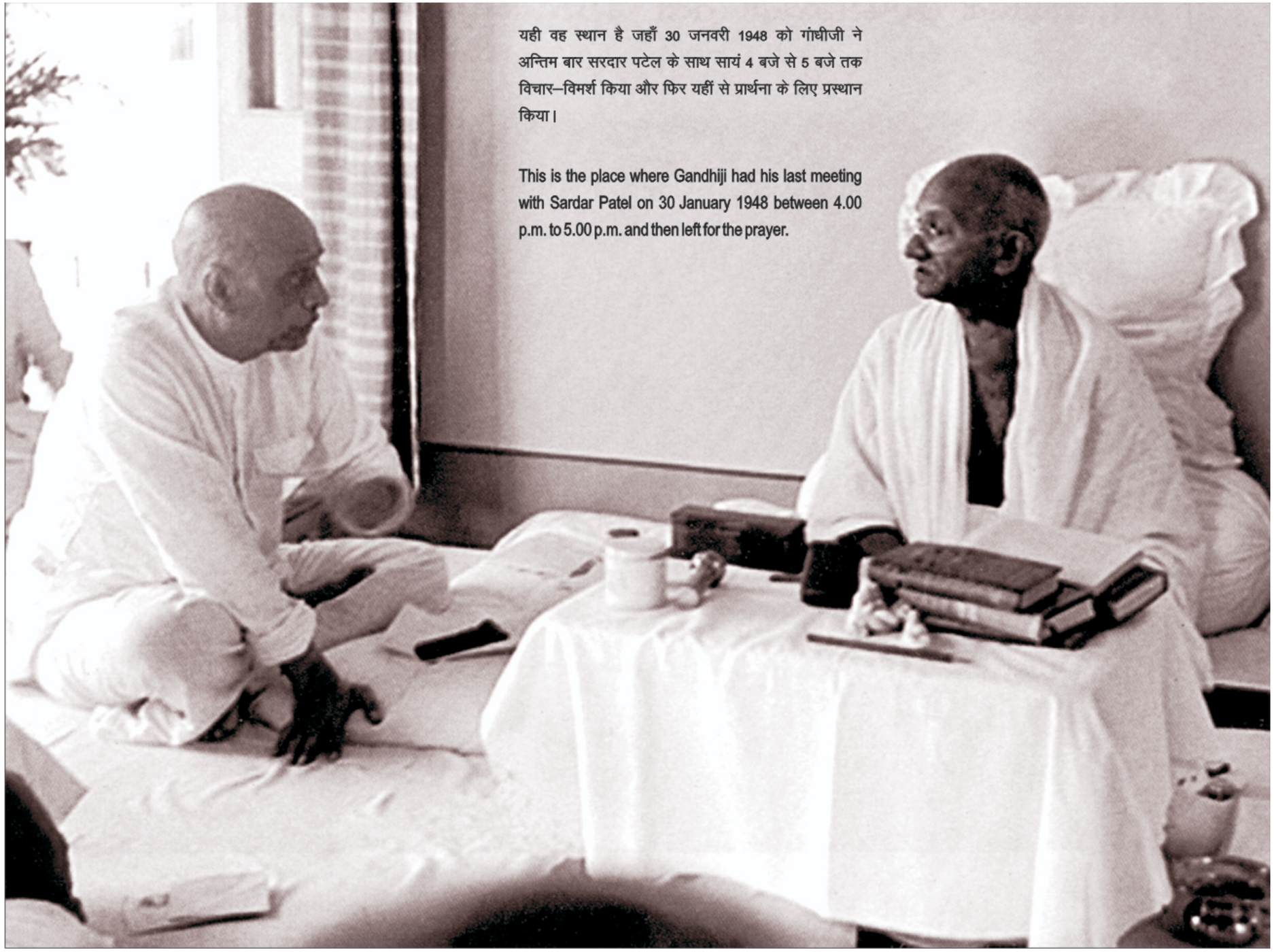

यही वह स्थान है जहाँ 30 जनवरी 1948 को गांधीजी ने अन्तिम बार सरदार पटेल के साथ सायं 4 बजे से 5 बजे तक विचार–विमर्श किया और फिर यहीं से प्रार्थना के लिए प्रस्थान किया।

This is the place where Gandhiji had his last meeting with Sardar Patel on 30 January 1948 between 4.00 p.m. to 5.00 p.m. and then left for the prayer.

मृत्यु का भय

अगर कोई मुझसे यह कहे कि मौत से बचने के लिए मुझे इस वर्ष के अंत तक हिमालय में जाकर वास करना चाहिए तो मैं ऐसा बिलकुल नहीं करूँगा। कारण यह है कि मैं जानता हूँ कि आदमी कितनी ही सावधानियां बरत ले, पर मृत्यु तो अवश्यंभावी है। मैं चाहूँगा कि आप इस बात को समझें कि मैं भारत के उन इने–गिने सार्वजनिक व्यक्तियों में से एक हूँ जो अपने स्वास्थ्य की रक्षा करना जानते हैं। ईश्वर ही जानता है कि उसे मुझसे क्या काम लेना है। उसे अपने काम के लिए मेरी जब तक आवश्यकता है, उससे एक क्षण भी अधिक वह मुझे जीवित नहीं रहने देगा।

मो. क. गांधी



Fear of Death

If someone were to tell me, in order to avoid death, to retire to the Himalayas until the end of this year, I should not do so. For I know that death is inevitable, no matter what precautions man deludes himself with. I would like you to appreciate that I am one of the very few among the public men in India who know how to preserve their health. God knows what work to take out of me. He will not permit me to live a moment longer than He needs me for His work.

M. K. Gandhi

हे राम



विन्सेन्ट शीन
इतिहास के साक्षी
30 जनवरी, 1948

महात्मा की मृत्यु

मैं एक टैक्सी में शाम की प्रार्थना सभा के समय के आसपास बिड़ला हाउस गया। इस बार मैं अकेला था। मैने बिड़ला हाउस के गेट के सामने एक पेड़ के नीचे टैक्सी को खड़ा करवाया और प्रार्थना सभा स्थल की ओर चलने लगा। अभी शाम के पाँच नहीं बजे थे और बड़ी संख्या में लोग पैदल गाड़ियों और तांगों में आते जा रहे थे। जब मै बग़ीचे में अन्त की तरफ बने प्रार्थना स्थल पर पहुँचा तो वहाँ मुझे बी.बी.सी. के दिल्ली संवाददाता बॉब स्टिमसन मिले।

बॉब ने कहा कि उन्होंने बी.बी.सी. के लिये महात्मा से कुछ प्रश्न पूछे हैं और परिसर में होने के कारण उन्होंने सोचा कि प्रार्थना सभा में भी भाग लें। उन्होंने अपनी घड़ी देखी और कहा: "अरे, आश्चर्य है गांधीजी को देर हो गई है। वे तो कभी भी देर से नहीं आते।"

हम दोनों ने फिर अपनी घड़िया देखीं। मेरी घड़ी में 5.12 हुए थे जब बॉब ने कहा 'वे आ रहे हैं'। हम दोनों बगीचे की दीवार के किनारे खड़े हो गए जहाँ वे आ रहे थे और संध्या के प्रकाश में उनके चमकते भूरे माथे को देख रहे थे। वे आज शाम ढकी हुई वीथि से नहीं बल्कि फूलों की क्यारियों की दूसरी तरफ के घास के लॉन से आ रहे थे।

यह दिल्ली की एक सुहावनी शाम थी जिसमें आने वाले वसन्त का आभास था। मुझे यहाँ होना बहुत आनन्ददायक और सौभाग्यपूर्ण लग रहा था। बॉब और मैं आराम से खड़े होकर बातें करते रहे और दो बालिकाओं के कन्धों पर हाथ रखकर महात्मा को अपनी ओर आते देखते रहे।

यहाँ, हमेशा की तरह लोगों का एक बड़ा समूह था, जिनमें कुछ तो खड़े थे और कुछ घुटनों के बल उनके आगे झुके हुए थे। बॉब और मैं सीढ़ियों से करीब दस फीट की दूरी पर थे और अब हम गांधीजी को नहीं देख पा रहे थे क्योंकि वे लोगों के उस समूह से घिरे हुए थे। और तब मैने चार छोटे, बेरंग, अंधेरे धमाकों की आवाज़ सुनीं। अनजाने भय से घबरा कर मैंने बॉब से पूछा 'यह क्या है?' मैं नहीं जानता। उसने कहा और मुझे याद है कि उसके चेहरे का रंग उड़ गया था। 'महात्मा तो नहीं।' मैंने कहा और तभी मुझे जवाब भी मिल गया।

मेरे मस्तिष्क में मानो समुद्र की अशान्त लहरें उठने लगीं, समुद्री तूफान जैसा झंझावात फैलने लगा। मुझे यह सब साफ याद है: मैं नहीं मानता की मैंने एक पल के लिये भी चेतना खोई हो हालांकि हो सकता है कि अर्धचेतना के दो एक पल रहें हों। मैं ईंट की दीवार का सहारा लेकर दोहरा हो गया। मुझे लगा कि महात्मा मुझे छोड़ रहे हैं, मैं इसे और किसी प्रकार से व्यक्त नहीं कर सकता। उन्होंने मुझे छोड़ दिया.... मेरे दिमाग़ में उठता हुआ तूफान कुछ समय तक जारी रहा शायद, मुझे ध्यान नहीं है।

..... इन्हीं कुछ पलों में, कई बातें एक साथ हुई, और यह सब मेरे आसपास ही होता चला गया, फिर भी मुझे उनका पता नहीं चला। एक डॉक्टर सभा में मिल गया, पुलिस ने चार्ज ले लिया, महात्मा का शरीर वहाँ से उठा ले जाया गया, भीड़ छंट गईं, शायद पुलिस के आग्रह पर। मैंने यह सब कुछ नहीं देखा। महात्मा की अन्तिम छवि मेरे मन में वही थी जब मैंने उन्हें संध्या के प्रकाश में घास के ऊपर चलते हुए सीढ़ियों की ओर आते देखा था। जब मैं खड़ा हुआ तो पाया कि मेरे चारों ओर पुलिस, सैनिक फैले हुए थे, थोड़े बहुत लोग थे और थे बी.बी.सी. संवाददाता बॉब स्टिमसन। वह हाँफ रहे थे: वे बी.बी.सी. को फोन करके आए थे। लॉन में वे मेरे साथ सीढ़ियों से उतर कर आए और हम दोनों कुछ देर फूलों की क्यारियों के पास अनमने से टहलते रहे। गुलाब की क्यारियों के पास, बगीचे के दूसरे छोर पर, काँच के खिड़की और दरवाजों वाले कमरे के बाहर भीड़ जमा थी। लोग रो रहे थे। पुलिस उनसे जाने को कह रही थी।

"बॉब मुझे केवल यही बता पा रहे थे कि गांधीजी को उस कमरे में ले जाया गया था। अगले दिन उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने महात्मा को ले जाते हुए देखा था और जो खादी वस्त्र उनके शरीर पर थे वे पूरी तरह खून से सने थे।"

शहादत
30 जनवरी, 1948

शाम के भोजन के बाद सायं 5.00 बजे संध्या की प्रार्थना की धुन में लीन गांधीजी जीवन भर अपने को प्रकाशित करनेवाले ईश्वर से लौ लगाने चल पड़े। वह चलते रहे जब तक कि उनके कदम रुक न गये। प्रार्थना स्थल पर कदम रखते ही युग–युग का दुष्ट हत्यारा मन में पाप लिये आया और उसने अजातशत्रु गांधीजी के कोमल शरीर में आग बरसाती हुई तीन गोलियां दाग दीं।

फिर एक बार मानवता की मुक्ति के लिये शहीद का खून बहा। 'हे राम' कहते हुए गांधीजी का रक्तरंजित शरीर पृथ्वी पर गिर गया।

और इस प्रकार मोहनदास करमचंद गांधी के अभूतपूर्व जीवन का अंत हुआ। उन्होंने अज्ञान और द्वेष के परिबलों का दया और प्रेम से सामना करते हुए अपना बलिदान दे दिया। भारत के इतिहास में यह शायद सबसे अशुभ दिन था परन्तु गांधीजी के लिए उनके जीवन की यह धन्य घड़ी थी।

उन्होंने कहा था, ''मैं चाहता हूं कि मुझे अगर किसी पागल की गोली से मरना पड़े तो मैं हंसते हंसते मरुं, परन्तु मेरे दिल में रोष न हो और मेरे मन में तथा अधरों पर रामनाम हो''। उन्होंने अपने हत्यारे की वंदना स्वीकार की और रामनाम लेते हुए मृत्यु की शरण में चले गए। जीवन की तरह मृत्यु पर भी विजयी होकर महात्मा मुक्तात्मा बने।

Martyrdom
January 30, 1948

After the evening meals at 5.00 pm at the sunset hour, with thoughts of prayer in his mind, Gandhiji walked along to seek communion with God who had illumined his path all through life till his progress was interrupted...

The perverse assassin of the ages came with his unholy design and accomplished the foul deed, he lodged hot lead in the soft flesh of the man who had known no enemy...

Once again blood had flown for the salvation of mankind. He fell here with Ram's name on his lips.

The epic life of Mohandas Karamchand Gandhi came to an end. He met his death facing the forces of darkness and hatred with compassion and love. It was perhaps the blackest day in India's history, but for the Mahatma, it was the supreme moment of his life.

He had said, "If I am to die by the bullet of a mad man. I must do so smiling. There must be no anger with me. God must be in my heart and on my lips". He bowed to his assassin and died with the name of God on his lips. He was the Victorious one in death as in life.
















Vincent Sheean
An eyewitness to history
30th January 1948

Death of the Mahatma

"I got a taxi and went out to Birla House in time for the prayer-meeting. This time I was alone. I stationed my taxi under a tree opposite the gate of Birla House and walked down the drive to the prayer-ground. It was not yet five o'clock and people were still streaming in on foot, in cars and with tongas. As I came on to the prayer-ground at the end of the garden I ran into Bob Stimson, the Delhi correspondent of the B.B.C.

Bob explained that he had submitted some questions to the Mahatma for the B.B.C. and thought he might as well stay for the prayers since he was on the premises. He looked at his watch and said: 'Well, this is strange. Gandhi's late. He's practically never late.'

We both looked at our watches again. It was 5:12 by my watch when Bob said: 'There he is.' We stood near the corner of the wall, on the side of the garden where he was coming, and watched the evening light fall on his shining dark-brown head. He did not walk under the arbor this evening but across the grass, in the open lawn on the other side of the flower-beds. It was one of those shining Delhi evenings, not at all warm but alight with the promise of spring. I felt well and happy and grateful to be here. Bob and I stood idly talking, watching the Mahatma advance toward us over the grass, leaning lightly on two of 'the girls.'

Here, as usual, there was a clump of people, some of whom were standing and some of whom had gone on their knees or bent low before him. Bob and I turned to watch - we were perhaps ten feet away from the steps-but the clump of people cut off our view of the Mahatma now; he was so small. Then I heard four small, dull, dark explosions. 'What's that?' I said to Bob in sudden horror. 'I don't know,' he said. I remember that he grew pale in an instant. 'Not the Mahatma!' I said, and then I knew.

Inside my own head there occurred a wavelike disturbance which I can only compare to a storm at sea - wind and wave surging tremendously back and forth. I remember all this distinctly; I do not believe that I lost consciousness even for a moment, although there may have been an instant or two of half-consciousness. I recoiled upon the brick wall and leaned against it, bent almost in two. I felt the consciousness of the Mahatma leave me then-I know of no other way of expressing this: he left me. ...The storm inside my head continued for some time-minutes, perhaps; I have no way of reckoning.

...It was during this time, apparently, that many things happened: a whole external series of events took place in my immediate neighborhood - a few yards away - and I was unaware of them. A doctor was found; the police took charge; the body of the Mahatma was carried away; the crowd melted, perhaps urged to do so by the police. I saw none of this. The last I saw of the Mahatma-he was advancing over the grass in the evening light, approaching the steps. When I finally took my fingers out of my mouth and stood up, dry-eyed, there were police and soldiers and not many people, and there was Bob Stimson. He was rather breathless; he had gone somewhere to telephone to the B.B.C. He came with me down the steps to the lawn, where we walked up and down beside the flower-bed for a while. The room with the glass doors and windows, by the rose garden at the end of the arbor, had a crowd of people around it. Many were weeping. The police were endeavoring to make them leave. Bob could not tell me anything except that the Mahatma had been taken inside that room. On the following day he told me that he had seen him carried away and that the khadi which he wore was heavily stained with blood."

मेरे जैसे सैकड़ों लोग नष्ट हो जाएं, पर सत्य की विजय हो। मेरे जैसे त्रुटिप्रवण मनुष्यों का मूल्यांकन करने के लिए सत्य के मानदंडो को लेशमात्र भी नीचा करने की आवश्यकता नहीं है।

मो. क. गांधी

Let hundreds like me perish, but let Truth prevail. Let us not reduce the standards of Truth even by a hair's breadth for judging erring mortals like myself.

M. K. Gandhi

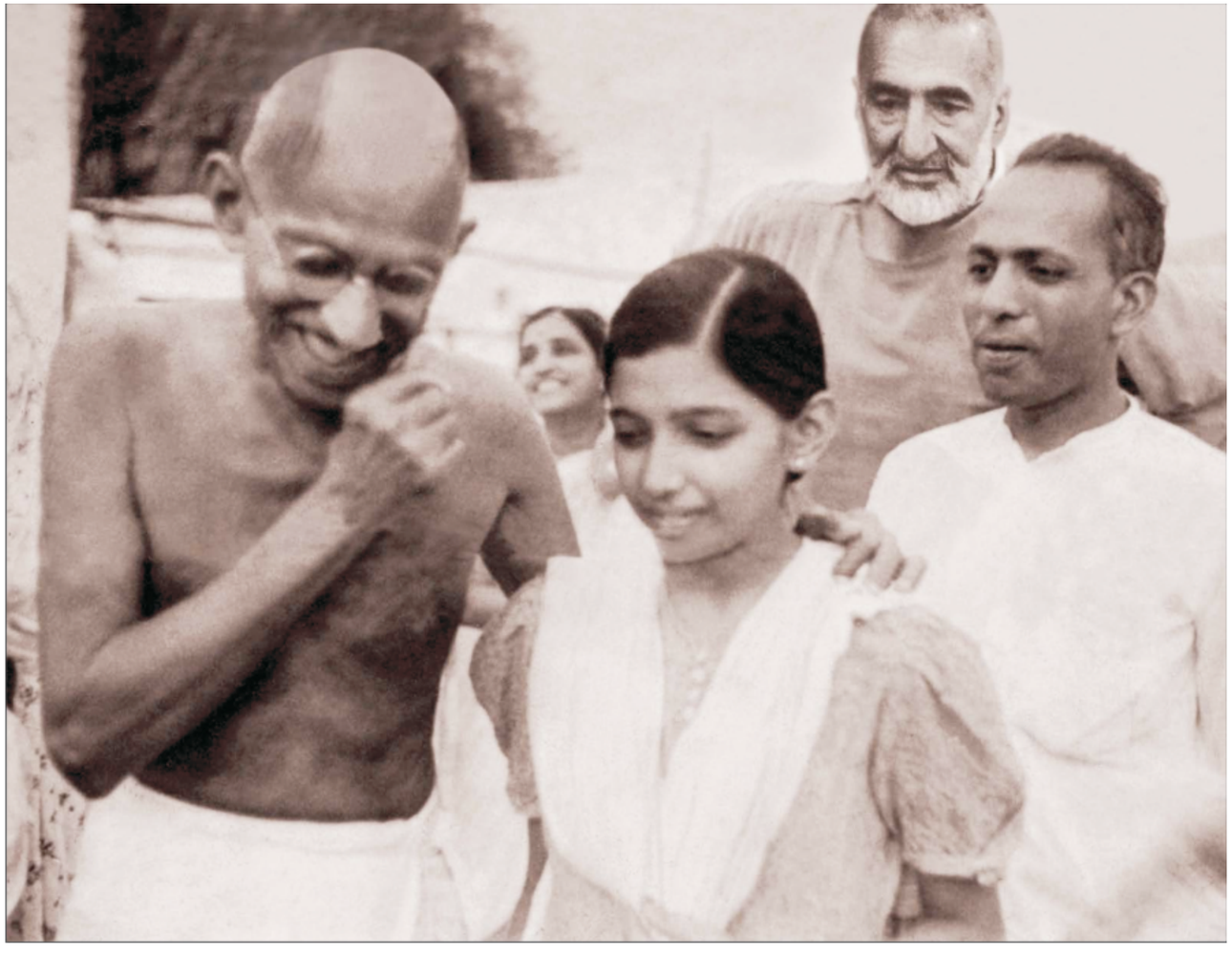

मुझे मार भी दिया जाए तब भी मैं राम और रहीम के नामों का जाप नहीं छोडूंगा, जो मेरे लिए एक ही ईश्वर के दो नाम हैं। होठों पर इन नामों को लेते हुए मैं प्रसन्नतापूर्वक मर सकता हूँ।

मो. क. गांधी

Even if I am killed, I will not give up repeating the names of Rama and Rahim, which mean to me the same God. With these names on my lips, I will die cheerfully.

M. K. Gandhi

"अन्तिम यात्रा" 31 जनवरी, 1948

गांधीजी के सबसे छोटे पुत्र देवदास गांधी ने अपने संस्मरण में लिखा है "भोर के साथ ही हम सब के लिये सबसे मार्मिक क्षण आ उपस्थित हुआ।" उन लोगों को गांधीजी के शरीर से लिपटी शॉल, धोती सब़ उतारने थे। यह सारे सफेद कपड़े खून के धब्बों से भर गए थे। जब वे शॉल को हटाने लगे तो उसमें से एक कारतूस नीचे गिर गया।

हिन्दू रीति–रिवाजों के अनुसार भोर की बेला में उनके अनुयायियों ने उनके शरीर को नहला धुलाकर नए वस्त्र पहनाए तथा गले में हाथ से कते सूत की माला तथा रूद्राक्ष की माला पहनाई। उनके शरीर को ढकने वाले कम्बल पर गुलाब और फूलों की पंखुड़ियाँ बिछा दी गईं थी। कम्बल में से केवल उनका चेहरा, छाती तथा हाथ बाहर निकले हुए थे। देवदास बताते हैं कि "मैंने कहा था कि उनकी छाती को खुला रखा जाए क्योंकि किसी सिपाही की छाती बापू की छाती से बढ़कर नहीं हो सकती थी।" उनकी नश्वर देह के पास सुगन्धित धूप निरन्तर जलती रही।

रात में ही सेना की शस्त्र वाहक विशाल गाड़ी के स्थान पर एक ऊँचे प्लेटफार्म वाली अन्य सेना गाड़ी की व्यवस्था कर ली गई थी ताकि अन्तिम यात्रा में सब अच्छी तरह उनके दर्शन कर सकें। चार मज़बूत रस्सियों की सहायता से जल थल तथा वायुसेना के दो सौ सैनिक इसे खींच कर चला रहे थे। गाड़ी की मोटर नहीं चलाई गई थी। जवान नाइक राम चन्द स्टियरिंग पर बैठे थे। वाहन में जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल तथा अन्य नेतागण, गांधीजी के युवा सहयोगी भी बैठे थे।

दो मील लंबी बापू की अन्तिम यात्रा नई दिल्ली के अल्बुकर्क रोड स्थित बिड़ला हाउस से सुबह 11.45 पर आरम्भ हुई। विशाल जनसमूह से धीरे–धीरे गुज़रती हुई यह साढ़े पाँच मील दूर स्थित यमुना नदी के किनारे शाम 4.20 पर पहुँची।

सायं 4.45 पर रामदास ने पिता की चिता को अग्नि दी। ढलते सूरज की आभा में यमुना नदी का किनारा चिता की धधकती ज्वाला से आलोकित हो उठा। उपस्थित जनसमुद्र से सम्मिलित शोकध्वनि निकल पड़ी। लोग विलाप करने लगे और स्वतः ही सेना का घेरा तोड़कर आगे बढ़ने लगे। परन्तु शीघ्र ही उन्हें आभास हुआ कि वे क्या करने लगे थे तथा उनमें एक शोकाकुल स्थिरता व्याप्त हो गई। मौन प्रार्थना के साथ उन्होंने अपने प्रिय बापू महात्मा गांधी को चिरविदा दी जो भौतिक रूप से पंचतत्व में विलीन हो रहे थे परन्तु वास्तव में जीवन–मृत्यु की परिधि से परे इतिहास–पुरूष का स्वरूप ले रहे थे।



















अस्थिविसर्जन इलाहाबाद Immersion of Ashes in Allahabad



जवाहरलाल नेहरू, Jawaharlal Nehru

The Last Journey January 31, 1948

With the arrival of dawn 'the most unbearably poignant moment came for all of us', Devadas Gandhiji's youngest son wrote later. They had to remove the large woollen shawl and the cotton shoulder wrap which Bapu was wearing for warmth when he was shot. These pure white clothes showed clots and blotches of blood. As they unfolded the shawl the shell of a cartridge dropped out.

In the early hours of morning disciples washed the body according to ancient Hindu rites and placed a garland of handspun cotton strands and a chain of beads around its neck. Roses and rose petals were strewn over the blanket that covered all but the head, arms and chest. "I asked for the chest to be left bare," Devadas explains. 'No soldier ever had a finer chest than Bapu's.' A pot of incense burned near the body.

During the night the chassis of a Dodge 15-hundred-weight army weapon-carrier had been replaced by a new superstructure with a raised floor so that all spectators could see the body in the open coffin. Two hundred men of the Indian Army, Navy and Air Force drew the vehicle by four stout ropes. The motor was not used. Noncommissioned officer Naik Ram Chand sat at the steering wheel. Jawaharlal Nehru, Sardar Patel several other leaders and several of Gandhiji's young associates rode on the carrier.

The cortege two miles long, left Birla House on Albuquerque Road in New Delhi 11.45 a.m., and, moving forward inch by inch through dense masses of humanity, reached the banks of River Yamuna, five and a half miles away, at 4.20 p.m.

At 4.45 p.m., Ramdas set fire to his father's funeral pyre. The logs burst into flame against the setting Sun on the banks of Yamuna. A groan went up from the vast assemblage. People wailed. With elemental force the crowd surged towards the fire and broke through the military cordon. But in a moment they seemed to realize what they were doing and dug in their bare toes and stood still in silent prayers – a final farewell to their Bapu – Mahatma Gandhi who slowly passed into ages as his earthly remains merged with the five elements.

यह मेरा दुर्भाग्य अथवा सौभाग्य रहा है कि मैं दुनिया को हैरत में डाल देता हूँ। नये प्रयोगों, या नये तरीके से किए गए पुराने प्रयोगों से कभी–कभी भ्रांत धारणा उत्पन्न हो ही जाती है।

मो. क. गांधी



It has been my misfortune or good fortune to take the world by surprise. New experiments, or old experiments in new style, must sometimes engender misunderstanding.

M. K. Gandhi



मैं शहादत के लिए आतुर नहीं हूँ। लेकिन अपनी आस्था की रक्षा को मैं सर्वोच्च कर्तव्य मानता हूँ और उसे निभाते हुए यदि शहादत मिले....तो मैं समझूँगा कि मैं इसके योग्य था।

मो. क. गांधी

I am not aching for martyrdom, but if it comes in my way in the prosecution of what I consider to be the supreme duty in defense of the faith I hold. . . I shall have earned it.

M. K. Gandhi

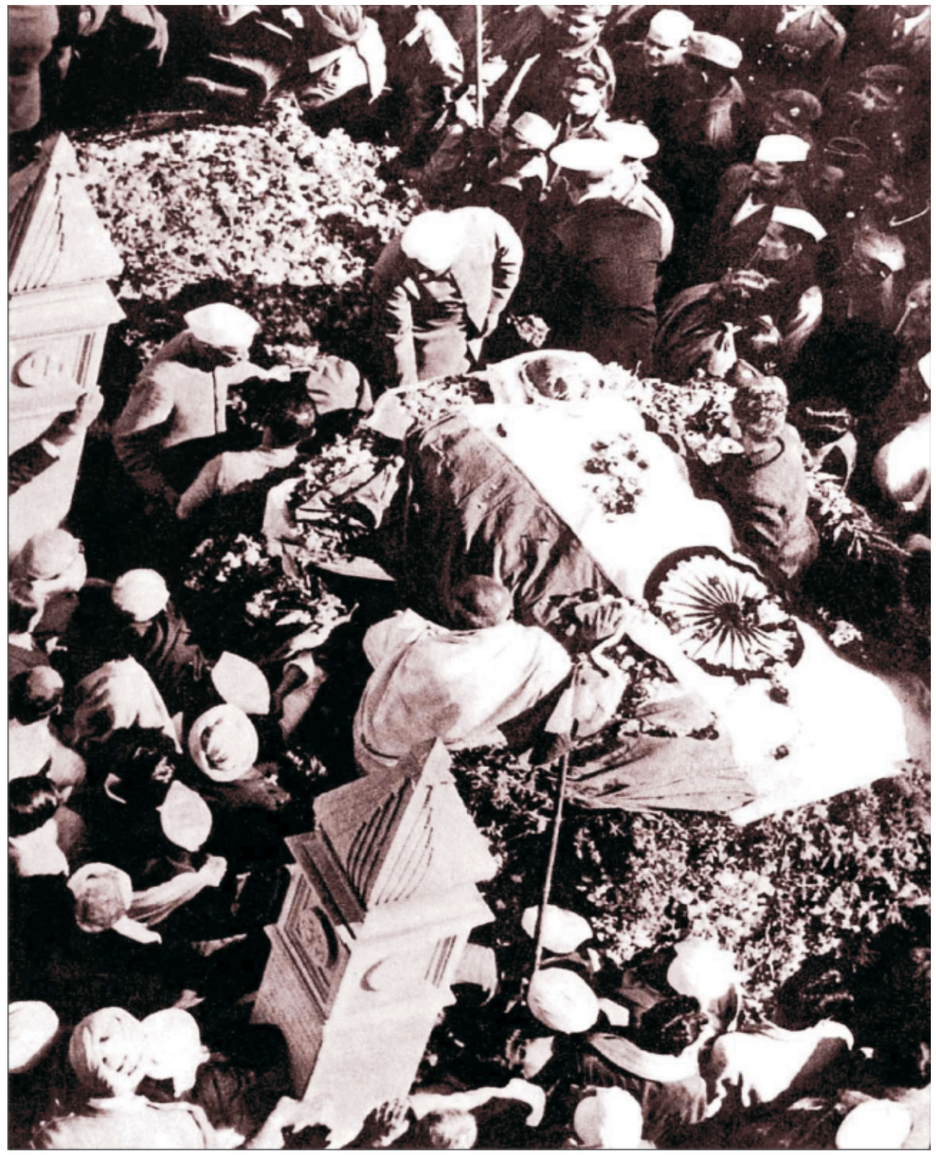

SECTION - IX

GLIMPSES OF THE LAST 48 HOURS OF GANDHIJI'S LIFE

महात्मा गांधी के जीवन के अन्तिम अड़तालीस घंटों की झलकियां

बृहस्पतिवार, 29 जनवरी, 1948 गांधीजी के लिये गतिविधियों से भरा व्यस्त दिन था। दिन ढलने तक वे थक कर निढाल हो गए थे। उन्हें चक्कर आ रहे थे। "फिर भी मुझे यह पूरा करना ही है," उन्होंने कांग्रेस के संविधान के मसौदे की ओर इशारा करते हुए कहा। लगभग सवा नौ बजे वे सोने के लिये उठे। आज बापू बहुत ही अनमने से थे और मनु से उन्होंने एक उर्दू का शेर कहा जिसका अर्थ था : "दुनिया के बग़ीचे की बहार बहुत थोड़े दिनों के लिये होती है। थोड़े दिनों के लिये ही इसे देखो।"







हिन्दी राष्ट्रीय कांग्रस का नैतिक नवनिर्माण करने के लिये गांधीजी ने संविधान का एक मसविदा तैयार किया जिसमें यह सूझाव रखा कि कांग्रेस अपने आपको लोकसेवक संघ में बदल दे और हिन्दुस्तान के सात लाख गांवों की सामाजिक, आर्थिक और नैतिक प्रगति के लिये प्रयत्न करें।

Giving a moral orientation to the Indian National Congress, Gandhi suggested in a draft constitution that it should transform itself into a Lok Sevak Sangh striving for the social, economic and moral independence of the country in terms of its seven hundred thousand villages...



Glimpses of the last Forty Eight hours of Mahatma Gandhi's Life...

Thursday, the 29 January, 1948 was a day full of activities for Gandhiji. At the end of the day he was utterly fagged out. His head was reeling. "And yet I must finish this," he remarked, pointing to the draft constitution for the Congress. He rose at quarter past nine to retire to bed. He was feeling very much disturbed and he recited to Manu a Urdu couplet, meaning:

"The spring of the garden of the world lasts for a few days; Have a look at its show for a few days."

शुक्रवार 30 जनवरी को वे सदा की तरह सुबह 3.30 बजे प्रार्थना के लिये उठ गए। महात्मा गांधी के जीवन का अन्तिम दिन भी उनके अन्य दिनों जैसा ही सुव्यवस्थित और व्यस्त रहने वाला था। अपनी लकड़ी की चौकी से उठकर उन्होंने अपने दल के अन्य सदस्यों को जगाया। दल के साथी थे बृजकृष्ण, चांदीवाला, मनु तथा आभा उनकी प्रपौत्रियाँ। उनकी चिकित्सक डॉ. सुशीला नैयर जो अक्सर उनके साथ होती थीं, पाकिस्तान में थीं। गांधीजी ने एक सामान्य भारतीय के ही समान दातुन से दाँत साफ किये।

प्रार्थना के बाद अपनी प्रिय "लाठियां", मनु और आभा का सहारा लेकर वे धीरे–धीरे अन्दर के कमरे में आ गए जहाँ मनु ने उनके पैरों को कम्बल से ढक दिया। बाहर अभी भी अन्धेरा ही था मगर गांधीजी की दिनचर्या आरम्भ हो चुकी थी। पिछली रात के लिखे कांग्रेस के संविधान के मसौदे को उन्होंने ठीक किया। यही वह दस्तावेज़ था जो उनकी अन्तिम वसीयत और वक्तव्य कहलाया। प्रातः 4.45 बजे उन्होंने एक गिलास नींबू, शहद और गुनगुने पानी का सेवन किया और एक घंटे बाद अपना दैनिक सन्तरे का रस पिया। काम करते हुए, उपवास के कारण आई कमज़ोरी की वजह से वे थक गए और थोड़ी देर के लिये सो गए।

आधे घंटे बाद ही उठकर गांधीजी ने अपनी पत्राचार की फाइल मांगी। पिछले दिन उन्होंने किशोरलाल मशरूवाला को एक पत्र लिखा था। अपने उपवास के दौरान ही गांधीजी को बहुत खांसी हो गई थी। उसको ठीक करने के लिये वे लौंग के चूर्ण के साथ गुड़ की गोली ले रहे थे। लेकिन सुबह तक लौंग का चूर्ण ख़त्म हो गया था। बापू के साथ कमरे में टहलने की जगह मनु खांसी की गोलियाँ बनाने बैठ गईं। "मैं अभी आपके साथ आती हूँ," उन्होंने गांधीजी से कहा, "वरना रात के लिये ज़रूरत पड़ने पर कोई दवा नहीं होगी।" मगर सदा वर्तमान को महत्व देने वाले गांधीजी ने कहा "कौन जाने रात से पहले क्या होने वाला है। मैं ही जीवित रहूँगा या नहीं। यदि रात को मैं जीवित रहा तो तुम उस समय दवाई आसानी से बना लेना।"

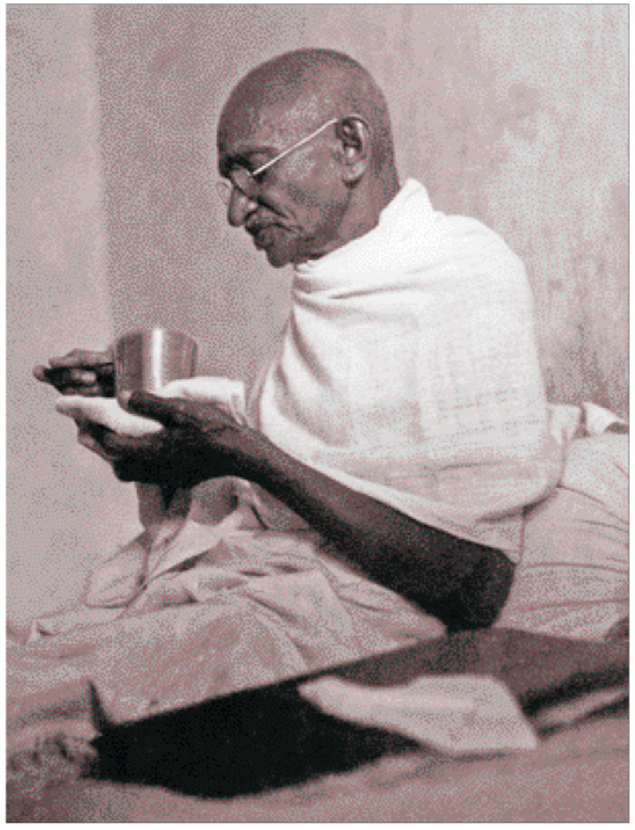



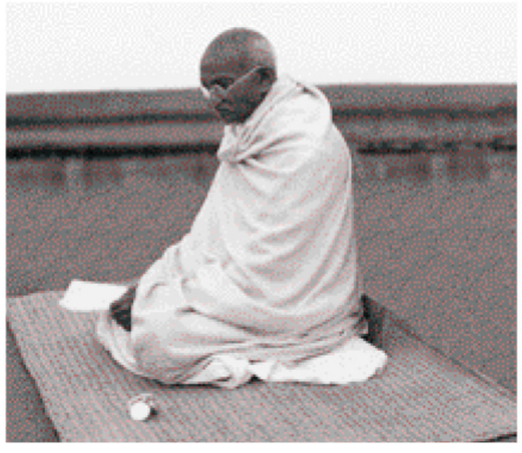

29th January, 1948

My dear Kishorlal,

I am utilising the time after the morning prayer to write this. You did well to give me the news about the death of Shankaranji's daughter. I have written to him. The plan about my going to Sevagram is still indefinite. If I could be said to have "done" in Delhi, it might not be necessary for me to be here to keep my pledge (of "do or die"). But that is for the people here to judge. The question will perhaps be decided tomorrow. . . .

Yours
Bapu


HIS LAST WILL AND TESTAMENT

On Friday morning, January 30, he woke up as usual at half past three for the prayer. The Mahatma's last day would be as methodical and crowded as any other. Upon getting up from his wooden plank, he roused the other members of his party. They included attendants Brij Krishna Chandiwala and Manu and Abha, his grand-nieces. His physician, Dr Sushila Nayar, who was normally with him, was away in Pakistan. He brushed his teeth with a neem twig like any ordinary Indian.

After prayers, leaning on his "walking sticks", Manu and Abha, he moved slowly into the inner room where Manu covered his legs with a warm blanket. It was still dark outside as Gandhiji began his day's work. He corrected the draft of his proposal for a new Congress constitution written the previous night. This document was to become known as his **Last Will and Testament** to the nation. At 4.45 he drank a glass of lemon, honey and hot water, and an hour later, his daily glass of orange juice. While working, because of weakness caused by the fast, he became tired and allowed himself a sleep.

Waking after only half an hour, Gandhiji asked for his correspondence file. The previous day he had written a letter to Kishorlal Mashruwala. Also as a consequence of his fast, Gandhiji suffered from a bad cough. To treat it he would take palm-jaggery lozenges with powdered cloves. But by this morning the clove powder had finished. Instead of joining him in his morning walk, a stroll up and down the room, Manu sat down to prepare some more. "I shall join you shortly," she said to Gandhiji. "Otherwise there will be nothing at hand at night when it is needed." ***But always focusing on the here-and-now, Gandhiji replied, "Who knows what is going to happen before nightfall or even whether I shall be alive. If at night I am still alive you can easily prepare some then."***

गांधीजी की पहली भेंट सुबह 7 बजे राजन नेहरू से थी जो अमेरिका जा रही थीं। गांधीजी ने उनसे अपने कमरे में दैनिक कामकाज के बीच ही बातचीत की। अभी उनमें अपने नियमित खुली हवा में सैर करने की शक्ति वापस नहीं आई थी।

प्रातः आठ बजे, वे अपनी मालिश के लिये तैयार हुए। प्यारेलाल के कमरे के सामने से गुज़रते हुए उन्होंने अपने द्वारा पिछली रात को तैयार किया हुआ कांग्रेस का नया संविधान उन्हें संशोधन के लिये दिया। उन्होंने कहा "जहाँ ज़रूरत हो खाली स्थानों को भर दो," साथ ही यह भी जोड़ा "इसे मैंने बहुत भारी तनाव में लिखा है।"

इसके बाद गांधीजी ने अपना स्नान संपन्न किया। स्नान के बाद मनु ने बापू का (जो लगभग पाँच फुट पाँच इंच लम्बे थे) वजन लिया। वे 109 1/2 पाउन्ड के थे। उपवास के बाद से उनका ढाई पाउन्ड वज़न बढ़ गया था। उनकी ताकत भी धीरे–धीरे लौट रही थी। प्यारेलाल को भी ऐसा लगा कि स्नान के बाद बापू तरोताज़ा लग रहे थे। पिछली रात का तनाव मानो ख़त्म हो गया था।

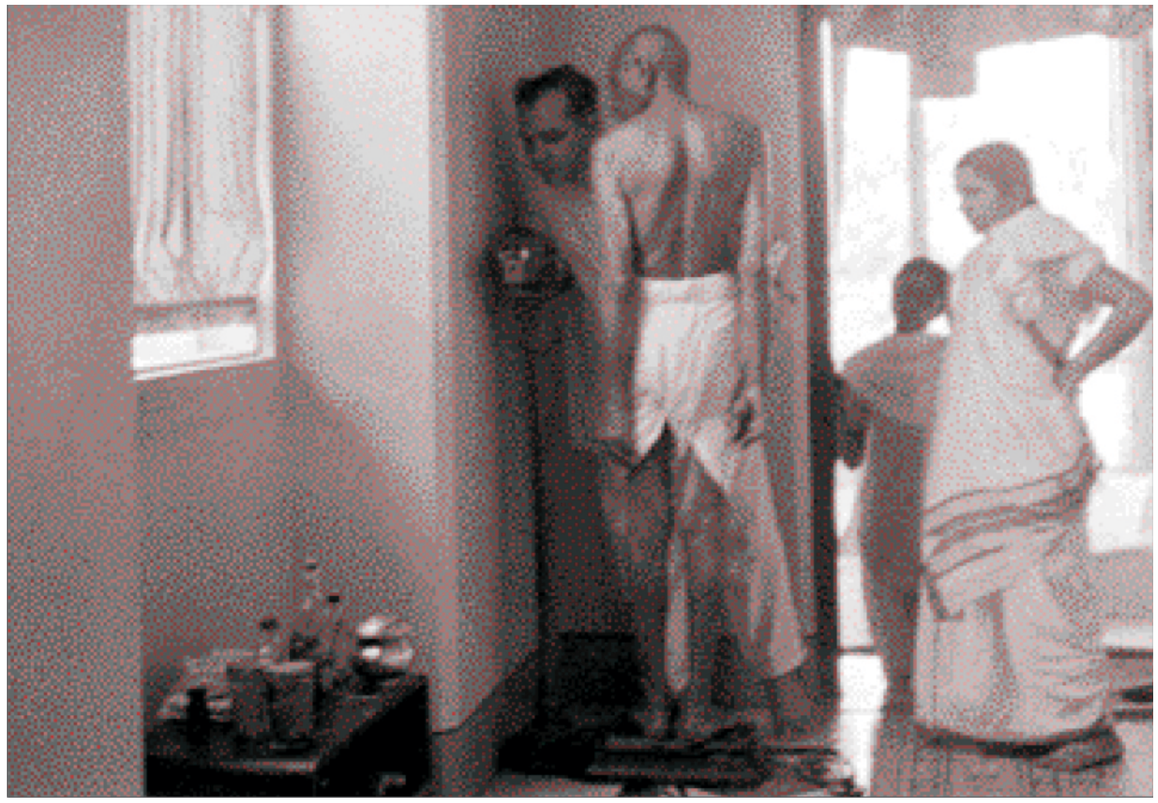

The Mahatma's first appointment for the day was at 7 am, with Rajen Nehru who was going to America. Gandhiji spoke with her while taking his morning daily routine in the room. He had not yet regained enough strength for his customary long walk in the open air.

At eight, he got ready for his massage. Passing through Pyarelal's room, he handed him the draft of a new constitution for the Congress, which he had partly prepared on the previous night, and he asked Pyarelal to revise it. "Fill in any gaps in the thought that there might be," he added. "I wrote it under a heavy strain."

Gandhiji then proceeded to take his bath. After the bath Manu weighed Bapu (who was about five feet and five inches tall). He was 109 1/2 pounds. He had regained two-and-a-half pounds since ending his fast. His strength was returning. Pyarelal thought he looked refreshed after his bath. The strain of the previous night had disappeared.



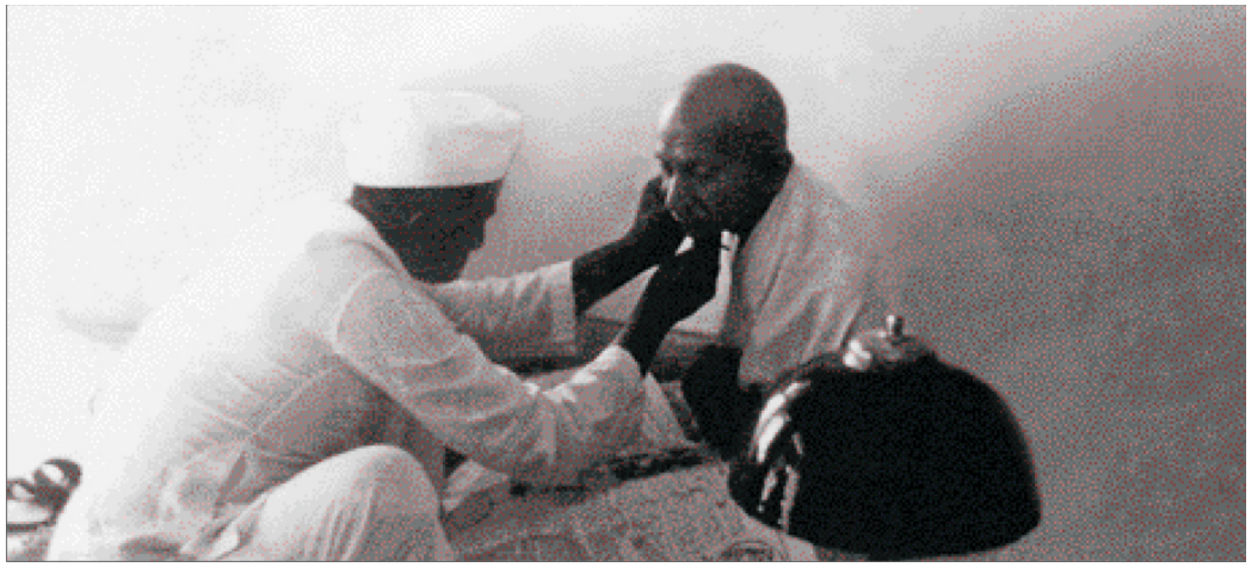



HIS LAST WILL AND TESTAMENT

ASHRAM BHAJANAWALI

सुबह साढ़े नौ बजे उन्होंने अपना सुबह का भोजन लिया, जिसके पहले उन्होंने बंगला लेखन का दैनिक अभ्यास किया। अपनी ऐतिहासिक नोआखली यात्रा के दौरान उन्होंने बंगला भाषा सीखने का प्रयास आरम्भ किया था जिसे उन्होंने जीवन के अन्तिम दिन तक जारी रखा। आज उन्होंने लिखा "भैरव का घर नैहाटी में है। शैल उसकी बड़ी पुत्री है। आज शैल का कैलाश के साथ विवाह है।"

अभी वे अपना प्रातः का भोजन कर ही रहे थे, जिसमें 12 आउंस बकरी का दूध, कच्ची और पकी सब्जियाँ, सन्तरे, चार टमाटर, गाजर का रस, अदरक, नींबू और एलो का निचोड़ था, जब प्यारेलाल उनके पास कांग्रेस के संविधान का मसौदा लेकर आए। गांधीजी ने ध्यान से हर संशोधन को देखा और पंचायत नेताओं की संख्या में गिनती के दोष को सुधारा।

वर्ष 1920 में जब कांग्रेस की बागडोर गांधीजी को सौंपी गई थी तब उन्होंने सबसे पहले इसके लिये एक संविधान तैयार किया, जिसके साथ कांग्रेस स्वाधीनता संग्राम के निर्णायक दौर में पहुँची। जीवन के अन्तिम दिन भी वे कांग्रेस के लिये नया संविधान तैयार करने में लगे हुए थे जिसके आधार पर स्वाधीन भारत का संचालन होना था। आज मानो उनका जीवन चक्र पूर्णता को प्राप्त कर रहा था।

थोड़ी देर विश्राम के बाद उन्होंने मिलने आनेवालों से भेंट की। दिल्ली से कुछ मौलवी आए हुए थे, जिन्होंने उनके वर्धा जाने के विचार को अपनी सहमति दी। गांधीजी ने उन लोगों से कहा कि वे थोड़े ही समय के लिये अनुपस्थित रहेंगे: "हाँ, यह और बात है कि ईश्वर की इच्छा कुछ और हो और कोई अनसोची घटना घट जाए।"

उन्होंने बिशन से कहा: "मेरे ज़रूरी पत्र मुझे दे दो। मुझे उनके जवाब आज ही देने चाहिये, क्या पता कल मैं रहूँ न रहूँ।"





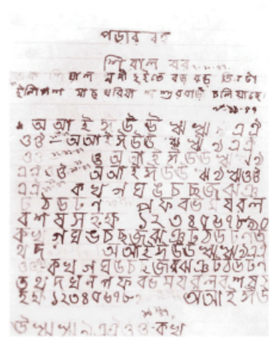

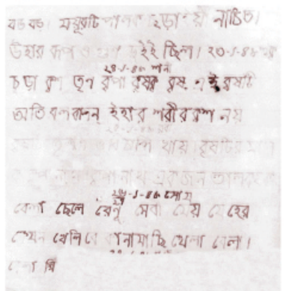

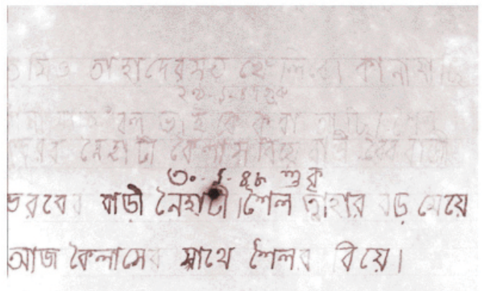



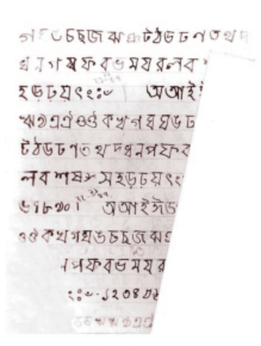

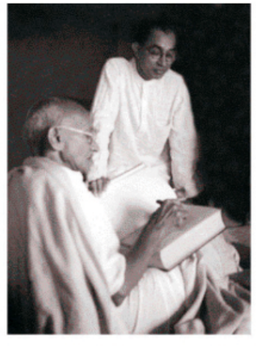











At half past nine, he took his morning meal, after going through his daily practice in Bengali writing–a practice he had invariably followed ever since he embarked on the epic tour in Noakhali. Today he wrote, ***"Bhairab's home is in Naihati. Shaila is his eldest daughter. Today Shaila is getting married to Kailash."***

He was still at his meal, consisting of 12 ounces of goat's milk and cooked and raw vegetables, oranges, four tomatoes, carrot juice and decoction of ginger, sour lemons and aloes, when Pyarelal took to him the draft constitution of the Congress. He carefully went through the additions and alterations, point by point, and removed an error of calculation that had crept in with regard to the number of the panchayat leaders.

In 1920 when the reign of the congress was handed over to Gandhiji his first act was to give it a constitution with which the Congress entered the decisive phase of the struggle for India's independence. On the last day of his life he was once again devoted to preparing a new constitution of the Congress for the post independence India. Life for Bapu had come full circle.

After his midday nap, he saw visitors. Some Muslim priests from Delhi, had come who gave their consent to his going to Wardha. He told them that he would be absent for a short while only, unless God willed it otherwise and something unforeseen happened.

He told Bishan: "***Bring me my important letters. I must reply to them today, for tomorrow I may or may not be alive."***

अपने जीवन के अन्तिम दिन में गांधीजी ने अपने अतिप्रिय स्वर्गीय सचिव श्री महादेव देसाई का भी स्मरण किया। महादेव भाई की जीवनी लिखी जानी थी, परन्तु कुछ आर्थिक पहलुओं पर असहमति हो रही थी। गांधीजी ने इस बारे में अपनी खिन्नता प्रकट की। महादेव की डायरियों का संपादन और संकलन भी होना था। इस कार्य के लिये आदर्श व्यक्ति, श्री नरहरि पारीख अस्वस्थ थे। गांधीजी ने निर्णय किया कि यह कार्य श्री चन्द्रशेखर शुक्ल को सौंपा जाए। श्री मशरूवाला भी इस कार्य के लिये योग्य दावेदार थे।

महात्मा गांधी श्री सुधीर घोष से भी मिले, जिन्होंने उन्हें बताया कि किस प्रकार ब्रिटिश प्रेस में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू तथा उप–प्रधानमंत्री श्री सरदार वल्लभभाई पटेल के बीच के मतभेदों को उछाला जा रहा था। गांधीजी इस विषय में आज दोपहर को सरदार पटेल से मिलने वाले थे और आज ही शाम सात बजे नेहरू तथा मौलाना आज़ाद से बातचीत करने वाले थे।

गांधीजी से मिलने एक सिन्धी प्रतिनिधिमण्डल आया। उनके कष्टों से उन्हें बहुत पीड़ा पहुँची। गांधीजी ने उन लोगों को बताया कि किस प्रकार एक शरणार्थी ने उन्हें संसार छोड़कर हिमालय में बसने की सलाह दी। हँसते हुए उन्होंने कहा कि यह तो एक दृष्टि से बहुत अच्छा होगा क्योंकि फिर वे दोहरे महात्मा बन जाएंगे और अपनी ओर और भी बड़ी भीड़ को आकर्षित कर सकेंगे। लेकिन वे प्रसिद्धि नहीं चाहते थे, वे एक ऐसी शक्ति और शान्ति चाहते थे जिससे लोगों को चारों ओर फैले अंधकार और दुःख में से बाहर निकाल सकें।

गांधीजी जनवरी की सुहानी धूप में लेट गए और अपने पेट पर मिट्टी का लेप लगाया। अपने चेहरे को उन्होंने नोआखली से लाई हुई बाँस की टोपी से ढक लिया। मनु और आभा उनके पैर दबाने लगीं।

दोपहर 1.30 बजे के लगभग बृजकृष्ण ने गांधीजी को मास्टर तारा सिंह का सन्देश पढ़कर सुनाया जिसमें उन्हें हिमालय जाकर बसने को कहा गया था। पिछले दिन ही एक शरणार्थी ने उनसे ऐसी बात कही थी, जिससे उन्हें चोट पहुँची थी। गांधीजी ने इसके बाद गाजर और नींबू का रस लिया। कुछ दृष्टिहीन और बेघर शरणार्थी उनसे मिलने आए। उन्होंने बृजकृष्ण को उनके बारे में कुछ हिदायते दीं। इसके बाद उन्हें इलाहाबाद मे हुए दंगों की रिपोर्ट पढ़ कर सुनाई गई।

समय बीतता जा रहा था। अब मध्यदोपहरी थी।













On his last day Gandhiji also spoke about his late beloved secretary Mahadev Desai. A biography of Mahadev's was to be written, but there was disagreement over financial terms. Gandhiji expressed his frustration at this. Mahadev's diaries also needed to be edited and compiled. The ideal candidate for the job, Narhari Parikh, was in poor health. The task, Gandhiji decided, should fall to Chandrashanker Shukla. Mashruwala had also been considered as another candidate for the same.

The Mahatma also met with Sudhir Ghosh, who mentioned an apparent campaign in the British press to highlight a rift that had developed between Prime Minister Jawaharlal Nehru and Deputy Prime Minister Vallabhbhai Patel. Gandhiji was going to raise their matter with Patel when he was meeting this afternoon, and with Nehru who along with Maulana Azad, was calling at 7.00 pm this evening.

A Sindhi deputation called on Gandhiji. Their sufferings greatly moved him. He referred to the advice offered to him by one refugee to retire to the Himalayas. Chuckling with laughter, Gandhiji observed that nothing would be better in one sense–he would develop into a double Mahatma and attract larger crowds. But what he wanted was not vainglory or ease, but such comfort and strength so that he could extract out people from the prevailing darkness and misery.

Gandhiji laid down in the afternoon January sunshine and had his abdominal mud pack. To shade his face he donned the peasant's bamboo hat he had brought from Noakhali. Manu and Abha again pressed his feet.

At about 1.30 p.m., Brij Krishna read out to Gandhiji a statement by Master Tara Singh which angrily advised the Mahatma to retire to the Himalayas. A similar attack by a refugee yesterday had shocked him, and this had left its mark. Gandhiji then took a few ounces of carrot and lemon juice. Some blind and homeless refugees came to meet him. He gave instructions to Brij Krishna about them. Then the Allahabad Riot report was read to him.

Time was ebbing away. It was now mid-afternoon.

दैनिक साक्षात्कारों का सिलसिला लगभग 2.15 बजे फिर आरम्भ हुआ। भारतवर्ष से तथा विदेशों से भी आए अनेक लोग उनसे मिलना चाहते थे। दो पंजाबी उनसे अपने ज़िले में हरिजनों के विषय में बोले। फिर बारी आई दो सिन्धियों की। श्रीलंका के एक प्रतिनिधि अपनी बेटी के साथ उनसे मिलने आए और उनसे श्रीलंका के स्वाधीनता दिवस (14 फरवरी) के लिये संदेश देने का अनुरोध किया। उनकी बेटी ने गांधीजी के हस्ताक्षर लिये, जो उनका अन्तिम हस्ताक्षर सिद्ध हुआ। दोपहर तीन बजे उनसे एक प्रोफेसर मिलने आए और उन्होंने गांधीजी से कहा कि जो वे आज सीख दे रहे हैं वह बुद्ध के समय में दी गई थी। लगभग 3.15 बजे फ्रांस के प्रसिद्ध फोटोग्राफर हेनरी कार्टियर–ब्रेसन ने उन्हें अपने चित्रों की एल्बम भेंट दी। गांधीजी एक पंजाबी तथा एक सिंधी प्रतिनिधिमंडल से मिले जिन्होंने उनसे दिल्ली में 15 फरवरी को आयोजित होने वाले सम्मेलन के लिये अध्यक्ष पद के लिये सुझाव मांगा। गांधीजी ने कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद का नाम सुझाया तथा अपने संदेश देने की बात भी की।

चार बजे तक गांधीजी ने अन्तिम साक्षात्कार समाप्त किया। अब सरदार पटेल के आने का समय भी हो गया था। ठीक चार बजे सरदार पटेल अपनी पुत्री तथा सचिव मणिबेन के साथ आ गए। गांधीजी और सरदार पटेल तत्काल ही विचार–विमर्श में लीन हो गए।

गांधीजी के उपवास से आई स्थिति में नरमी के बावजूद सरदार पटेल तथा नेहरूजी के बीच आए मतभेदों से गांधीजी अवगत थे तथा इसी कारण से चिन्तित भी थे। वे चाहते थे दोनों के विचारों में मेल रहे।

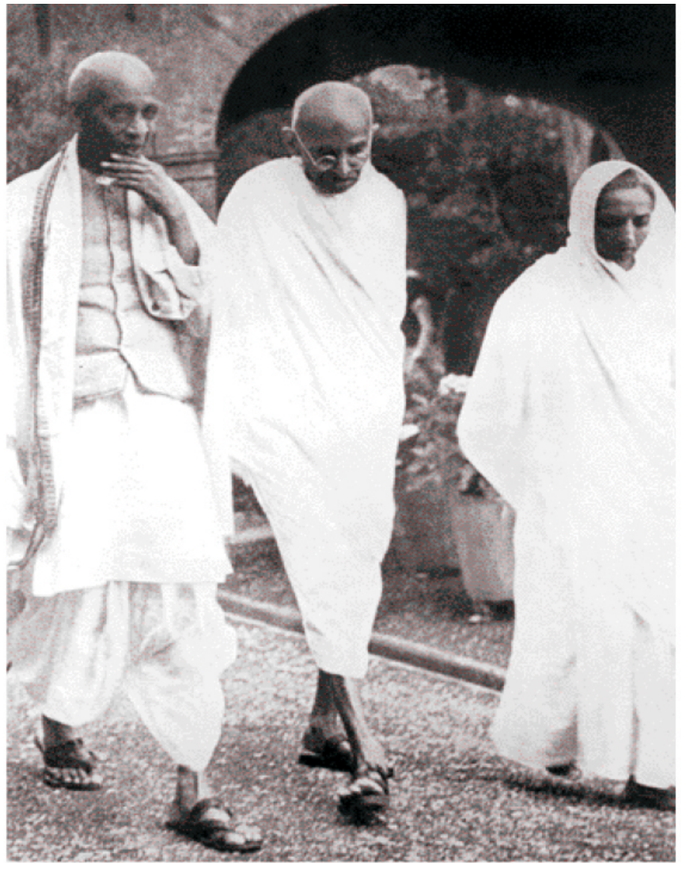

The usual daily round of interviews began at about 2.15 p.m. Representatives from all over India - and beyond - sought an audience with him. Two Punjabis spoke about the Harijans of their province. Two Sindhis followed. A representative of Ceylon accompanied by his daughter asked Gandhiji to give a message for Ceylon's Independence day on February 14. The girl obtained Gandhiji's autograph, which is considered his last autograph. At about 3.00pm, a professor who called in told Gandhiji that what he was preaching had been advocated in Buddha's time. At about 3.15 pm Henri Cartier-Bresson, the French photographer presented him with an album of his photographs. He met a Punjabi delegation, and a Sikh delegation who asked him to suggest a President for a conference to be held in Delhi on February 15. Gandhiji suggested the name of Congress President Dr. Rajendra Prasad, and added he would give a message himself.

Gandhiji finished the last interview by 4.00 pm, when Sardar Patel was due to arrive. Sardar Patel arrived at 4.00pm with his daughter and secretary Maniben. Gandhiji and Sardar Patel immediately got busy in conversations.

Despite the relaxation that followed his recent fast, Gandhiji knew of the friction between Sardar Patel and Jawaharlal Nehru, and it worried him. He wanted them to hold together.





गांधीजी ने सरदार पटेल से कहा कि यद्यपि उन्होंने पहले सोचा था कि सरदार पटेल अथवा नेहरूजी, दोनों में से किसी एक को मंत्रिमण्डल छोड़ना होगा, परन्तु अब वे भारत के नए गवर्नर जनरल माउन्टबैटेन से सहमत थे कि दोनों ही का होना ज़रूरी था। उन्होंने सरदार पटेल से कहा कि 'वे शाम की प्रार्थना सभा में यह कहेंगे और नेहरू से भी यही कहेंगे। उन्होंने कहा कि दोनों के बीच किसी मुश्किल स्थिति में वे अपना वर्धा जाना भी स्थगित कर सकते हैं।

सायं 4.30 बजे आभा उनका अन्तिम भोजन लेकर आई : उसमें बकरी का दूध, पकी तथा कच्ची सब्ज़ियाँ, सन्तरे और अदरक, नींबू, मक्खन और एलो का जूस था। अपने कमरे में फर्श पर बैठकर उन्होंने अपना अन्तिम भोजन लिया तथा सरदार पटेल से बातचीत भी जारी रखी। मणिबेन, सरदार की पुत्री तथा सचिव भी इस बातचीत के दौरान उपस्थित थीं।

अभी गांधीजी और सरदार पटेल की बातचीत चल ही रही थी कि दो काठियावाड़ी नेता आए और मनु से गांधीजी से मिलने की इच्छा प्रकट की। मनु के पूछने पर गांधीजी ने सरदार पटेल के सामने कहा, "उनसे कहो कि मैं उनसे मिलूँगा, लेकिन प्रार्थना सभा के बाद और वह भी तब यदि मैं जीवित रहा। हम तब बातचीत करेंगे।" मनु ने गांधीजी का उत्तर अतिथियों को दे दिया और उनसे प्रार्थना सभा के लिये रूकने को कहा। फिर से गांधीजी ने अपनी मृत्यु की संभावना की बात की थी और इस बार तो उन्होंने यह बात अपनी सुरक्षा के लिये मुख्य रूप से ज़िम्मेदार व्यक्ति के सामने ही कही थी।

उसके बाद गांधीजी ने अपना प्रिय चर्खा मांगा और अन्तिम बार बड़े प्रेमपूर्वक चर्खा काता। मौलाना आज़ाद और जवाहरलाल नेहरू उनसे प्रार्थना के बाद मिलने वाले थे।

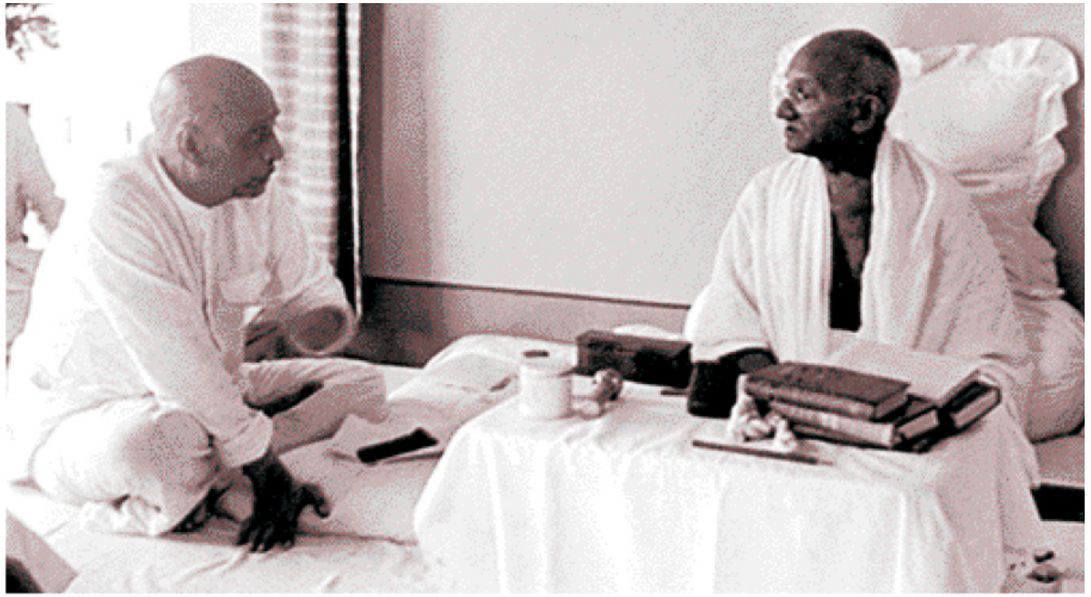





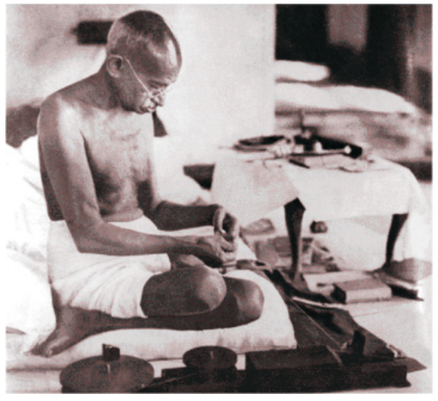



Gandhiji told Sardar Patel that although earlier he had believed either Patel or Nehru would have to withdraw from Cabinet, he now agreed with Lord Mountbatten, the new Governor-General, that both were indispensable. He told Sardar Patel that he would make a statement to this effect at the prayer meeting, and he would say this to Jawaharlal Nehru when he called that evening. He might even postpone his departure for Wardha if he felt there was any trouble between the two.

At 4.30 p.m., Abha brought in the last meal he was ever to eat; it consisted of goat's milk, cooked and raw vegetables, oranges and a concoction of ginger, sour lemons and butter with juice of aloe. Sitting on the floor of his room, Gandhiji ate and talked with Sardar Vallabhbhai Patel. Maniben, Patel's daughter and secretary, was also present.

As Gandhiji and Sardar Patel were speaking, two Kathiawad leaders came and told Manu they wished to see Gandhiji. She enquired of Gandhiji whether he would see them. Gandhiji said in Patel's presence, ***"Tell them that I will, but only after the prayer meeting, and that too if I am still living. We shall then talk things over."*** Manu conveyed Gandhiji's reply to the visitors and invited them to stay for the prayer meeting. ***Yet again, Gandhiji had spoken of his possible imminent demise, and on this occasion in front of the man with prime responsibility for his safety.***

Gandhiji then asked for his charkha, which he plied lovingly for the last time. Maulana Azad and Jawaharlal Nehru were to see him after the evening prayers.

सायं 5.00 बजे आभा ने गांधीजी को घड़ी दिखाई। गांधीजी उठे, अपनी चप्पल पहनी और कमरे के किनारे वाले दरवाज़े से शाम के धुंधलके में बाहर निकल आए। उन्होंने ठंड के कारण गरम शॉल ओढ़ रखी थी। आभा और मनु के साथ वे प्रार्थना स्थल की ओर बढ़ने लगे, जिन्हें वे अपनी 'लाठियां' कहते थे। आज उन्हें प्रार्थना में देर हो गई थी। उन्होंने कहा "मैं दस मिनट लेट हो गया हूँ, और मुझे देरी बिल्कुल नापसन्द है। मुझे ठीक पाँच बजे यहाँ होना चाहिये।"

मनु उनकी दायीं तरफ तथा आभा बायीं तरफ थी।

और इस तरह महाप्रयाण की ओर निकल पड़े महात्मा गांधी। जीवन–यात्रा का आरम्भ उन्होंने पोरबन्दर से किया और वह राजकोट, इंग्लैण्ड के इनरटेम्पल, मुम्बई, डरबन, पीटर मारित्ज़बर्ग, जोहान्सबर्ग, फीनिक्स आश्रम, टॉलस्टॉय फार्म, चम्पारण, साबरमती, यरवदा, दांडी, किंग्स्ले हॉल, सेन्ट जेम्स पैलेस, स्विट्ज़रलैण्ड, रोम, सेवाग्राम, आग़ा ख़ा महल, नोआखली, कोलकाता होते हुए अन्तिम पड़ाव दिल्ली तक आ पहुँचे।

आज वे बग़ीचे के दायीं ओर लताओं से घिरे परगोलों के रास्ते से नहीं आ रहे थे। देर के कारण उन्होंने बग़ीचे के बीच का रास्ता लिया था जो सीधा प्रार्थना स्थल को जाता था।

उपस्थित भीड़ हज़ारों की संख्या में थी जिसमें साधारण वस्त्रों में 20 पुलिसकर्मी भी मौजूद थे। सीढ़ियों पर पहुँचकर गांधीजी ने भीड़ के अभिवादन के लिये हाथ जोड़े। सदा की तरह लोगों ने उनके लिये रास्ता बनाया। संयोगवश आज गांधीजी के आगे कोई नहीं था।


Watch


Gandhiji's house, Porbandar


Karamchand's house, Rajkot


Street scene in Durban


Palace of Westminster, London


Hriday Kunj, Sabarmati Ashram


Planter's Residence, Champaran

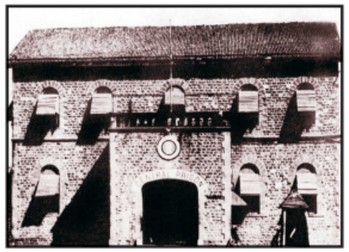
Yeravada Jail


Kingsley Hall, London


Gandhiji with Romain Rolland


Gandhiji in Rome


Bapu Kutir, Wardha Ashram


Aga Khan Palace, Poona


Noakhali


Birla House

At 5.00 pm. Abha showed the watch to him. Gandhiji got up, put on his chappals and stepped through the side door out of the room into the twilight. He wore a shawl for warmth. 'I must tear myself away' Gandhiji remarked and started towards the prayer ground with Abha and Manu, 'whom he called his walking sticks'. He was late for the prayer. 'I am late by ten minutes' Gandhiji mused aloud. I hate being late I should be here at the stroke of five. Manu was on his right and Abha on his left. Thus, Mahatma Gandhi set out on his final 200 yard journey, his final track, his final month. A journey which took him from Porbandar to Rajkot, then the Inner Temple in England, Mumbai, Durban, Pieter-Maritzburg, Johannesberg, Phoenix Ashram, Tolstoy Farm, Champaran, Sabarmati, Yervada, Dandi, Kingsley Hall, St. James Palace, Switzerland, Rome, Sevagram, Aga Khan Palace, Noakhali, Kolkatta, and finally brought him to Delhi.

Today he did not walk as usual through the leafy pergola to the right side on the grounds. As he was being late he took a short cut directly across the lawn to the steps leading to the garden where prayers were held.

The hushed crowd was several hundred thick (including possibly about 20 plainclothes policemen). At the top of the steps Gandhiji brought his palms together to greet the gathering. As usual, the people parted to make a passage for him to the platform. Incidentally, today there was no-one in front of Gandhiji.

और अब वह चरम मुहुर्त आ गया था जब गांधीजी ने अमरत्व की ओर अन्तिम पग लिये।

छटी हुई भीड़ में से हत्यारे ने गांधीजी को अपनी ओर आते देखा। उसने हत्या की योजना को बदलते हुए उसी समय निर्णय लिया कि वह उनको इसी समय एकदम नज़दीक से गोलियों का निशाना बनाएगा। गांधीजी सीढ़ियों से दो चार कदम आगे आ गए थे। हत्यारा राह बनाता हुआ हाथ जोड़े हुए उनकी ओर बढ़ने लगा। उन जुड़े हाथों के भीतर छोटी सी विदेशी बेरेटा पिस्तौल छुपी हुई थी। वह झुका और बोला, "नमस्ते गांधीजी।" गांधीजी ने उत्तर में हाथ जोड़े। मनु को लगा कि वह व्यक्ति गांधीजी के पैर छूने जा रहा था, जो बापू को पसन्द नहीं था। मनु ने उससे कहा "भाई, बापू को पहले ही प्रार्थना के लिये देर हो गई है। आप क्यों उन्हें परेशान कर रहे हैं?"

गांधीजी को अपने जीवन पर और एक हमले का पूर्वाभास था। जब यह सब हो रहा था वे शायद समझ गए हों कि ..... यही वह क्षण है।

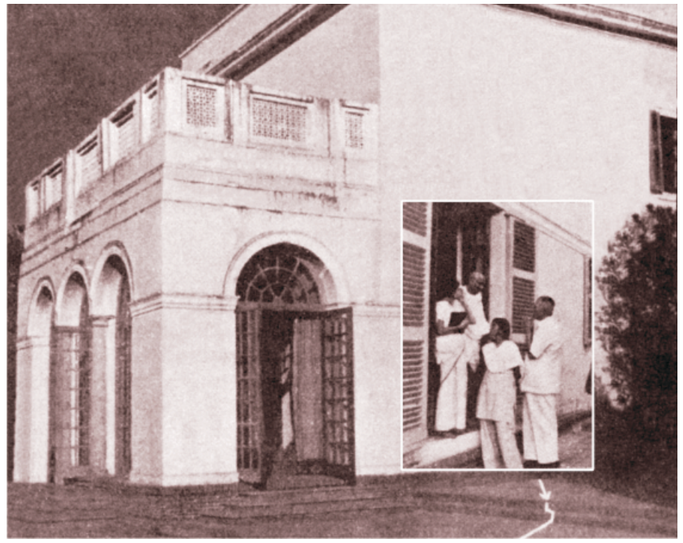

हत्यारे ने बाएँ हाथ से मनु को ज़ोर से धकेल दिया और तभी उसके दाएँ हाथ में छुपी पिस्तौल भी दिख गई। मनु के हाथ से सभी चीज़ें नीचे गिर गईं। कुछ समय तक वह इस अनजान हत्यारे से बहस करती रही। पर तभी हाथ से पूजा की माला गिर जाने पर वह उसे उठाने के लिये जैसे ही झुकी उसी समय ..... शान्त वातावरण को भेदती हुई तीन गोलियों की भयानक आवाज़ ने सबको स्तब्ध कर दिया। आततायी ने गांधीजी के शरीर में तीन गोलियाँ उतार दी थी। तीसरी गोली लगने तक गांधीजी खड़े ही थे, हाथ भी जुड़े हुए थे, और फिर उनके मुँह से काँपते स्वरों में निकला "हे राम, हे राम।" फिर व्यक्तिगत अहिंसा के अन्तिम चरण में वे धीरे–धीरे धरती पर गिर गए। हाथ अब भी जुड़े हुए ही थे। वातावरण में धुआँ भर गया था। चारों ओर दहशत भरी भगदड़ सी मच गई थी। दोनों पोतियों की गोद में सिर रखे महात्मा गांधी धरती पर गिरे हुए थे। उनका चेहरा विवर्ण हो गया था और सफेद शॉल धीरे–धीरे रक्त–रंजित होती जा रही थी। वेदना के इस असहनीय क्षण को झेलने में असमर्थ कुछ ही पलों में महात्मा गांधी का देहावसान हो गया था। सूर्य भी अपनी अन्तिम किरणों को समेट क्षितिज के उस पार विलुप्त हो गया मानो इस मर्मान्तक घटना के साक्षी होने के अपराध–बोध को सहन नहीं कर पा रहा हो।

The supreme moment had come. Gandhiji trod his final steps to eternity.

Through the parting, his assassin saw Gandhiji coming straight towards him. He then made an instant decision to completely change "the plan", and to shoot Gandhiji there and then from point-blank range. The Mahatma had taken just few paces from the steps. He elbowed his way through, parting from the other two, and approached the Mahatma with his palms joined. The tiny black Italian Beretta pistol was concealed between them. He bowed low and said, "Namaste, Gandhiji." Gandhiji joined his palms in acknowledgement. Manu thought the man was going to touch Gandhiji's feet, a practice the Mahatma did not like. She motioned him away. "Brother, Bapu is already late for prayers. Why are you bothering him?" she said.

Gandhiji had been expecting another attempt on his life. As this incident occurred, he might have understood... this was it.

The assassin pushed Manu forcefully aside with his left hand, momentarily exposing the gun in his right hand. The items in her hands fell to the ground. For a few moments she continued arguing with the unknown assailant. But when the rosary dropped she bent down to pick it up, at this precise moment, a burst of deafening blasts ripped apart the peaceful atmosphere as he fired three bullets into Gandhiji's abdomen and chest. As the third shot was fired Gandhiji was still standing, his palms still joined. He was heard to gasp, "He Ram, He Ram" ("Oh God, Oh God"). Then he slowly sank to the ground, palms joined still, possibly in a final ultimate act of Ahimsa. Smoke filled the air. Confusion and panic reigned. The Mahatma was slumped on the ground, his head resting in the laps of both girls. His face turned pale, his white shawl was turning crimson with blood. Within seconds Mahatma Gandhi was dead.



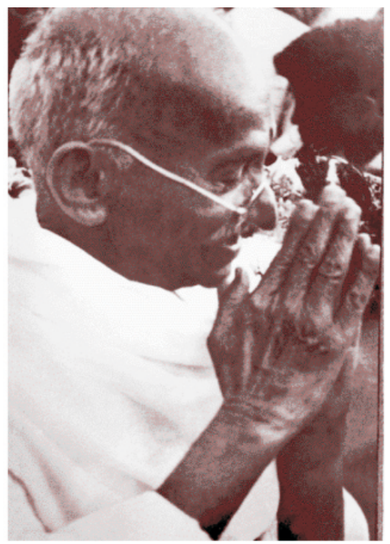





शाम के 5.17 हुए थे। भारत और विश्वभर में फैले उनके असंख्य मित्र, सहयोगी इस विश्वास के साथ निश्चिन्त थे कि उनके प्रिय बापू जीवित हैं।

आभा और मनु अन्य लोगों की सहायता से गांधीजी को बिड़ला हाउस स्थित उनके कमरे में ले गईं। उनके नेत्र अधखुले थे और ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे जीवित हों। सरदार पटेल जो कुछ ही समय पहले गांधीजी के पास से गए थे, वापस फिर उनके पास आ गए थे। नब्ज़ देखते हुए उन्हें लगा मानो साँसें चल रहीं हों। दवाई के बक्से में एड्रिनेलिन ढूंढी गई पर नहीं मिली।

एक व्यक्ति डॉ. डी. पी. भार्गव को साथ लेकर आया। गोली लगने के दस मिनट बाद जब डॉ. भार्गव ने गांधीजी की जाँच की तो कहा "दुनिया की कोई शक्ति उन्हें नहीं बचा सकती थी। उनकी मृत्यु दस मिनट पहले हो चुकी थी।"

गांधीजी के नियमित युवा परिचारक उनके शरीर के पास बैठ कर सुबक रहे थे। डॉ. जीवराज मेहता आए और बापू की मृत्यु की पुष्टि की। तभी भीड़ में आवाजें उभरी "जवाहरलाल नेहरू जी आ गए हैं।" वे गांधीजी के पास बैठे और उनके खून से सने वस्त्रों में मुँह छुपा कर रोने लगे। इसके बाद वहाँ बापू के सबसे छोटे पुत्र देवदास, शिक्षा मंत्री मौलाना आज़ाद और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी पहुँचने लगे।

देवदास ने पिता के शरीर को छूकर देखा तो पाया कि वह अभी भी गर्म था। उनका सिर आभा की गोद में था और चेहरे पर एक शान्त मुस्कान थी। ऐसा लग रहा था मानो वे सो रहे हों। उस पल को याद करते हुए देवदास ने बाद में लिखा "हम लोग रात भर उनके पास बैठे रहे। उनका चेहरा इतना शान्त था और शरीर को घेरती हुईं ऐसी सौम्य दिव्य ज्योति व्याप्त थी कि शोक मनाना मानो अपराध हो।"

बाहर, एक विशाल जनसमूह एकत्रित हो गया था जो अपने प्रिय बापू के अन्तिम दर्शन को व्याकुल था। बिड़ला हाउस की छत पर उनके नश्वर शरीर को उज्जवल प्रकाश में इस प्रकार रखा गया कि नीचे सभी लोग उनके दर्शन कर सकें। हज़ारो लोग वहाँ मौन होकर, विलाप करते हुए गुज़रे।

मध्यरात्रि के आसपास उनके शरीर को पुनः नीचे कमरे में ले जाया गया। सारी रात शोकाकुल लोग सुबकियों के बीच श्रीमद् भगवतगीता तथा अन्य धर्मग्रन्थों का पाठ करते रहे। इस प्रकार 30 जनवरी 1948 की उस कालरात्रि का अन्त हुआ । परन्तु "मेरा जीवन ही मेरा सन्देश है" की वाणी में कालजयी हो गए हैं महात्मा गांधी।















It was 5.17 pm. Around India and the world, Gandhiji's numberless friends and co-workers, old and new, were carrying on in the knowledge that Mahatma Gandhi was alive.

Abha and Manu lifted Gandhiji's head and with the help of others with tender hands raised him from the ground and carried him into his room in Birla House. The eyes were half closed and he seemed to show signs of life. Sardar Patel, who had just left the Mahatma, was back at Gandhiji's side; he felt the pulse and thought he detected a faint beat. Someone searched frantically in a medicine chest for adrenalin but found none.

An alert spectator fetched Dr. D. P. Bhargava. He arrived ten minutes after the shooting. 'Nothing on earth could have saved him,' Dr. Bhargava reported. 'He had been dead for ten minutes'.

The young men and women who had been Gandhiji's constant attendants sat near the body and sobbed. Dr. Jivraj Mehta arrived and confirmed the death. Presently a murmur went through the group: 'Jawaharlal.' Nehru had rushed from his office. He knelt beside Gandhiji, buried his face in the bloody clothes and cried. Then came Devadas, Gandhiji's youngest son, and Maulana Abul Kalam Azad, Minister of Education, followed by many prominent people.

Devadas touched his father's skin and gently pressed his arm. The body was still warm. The head still lay in Abha's lap. Gandhiji's face wore a peaceful smile. He seemed asleep. 'We kept vigil the whole of that night,' Devadas wrote later. 'So serene was the face and so mellow the halo of divine light that surrounded the body that it seemed almost sacrilegious to grieve....'

Outside, a vast multitude gathered and asked for one last view of the Mahatma-their beloved Bapu. The body was accordingly placed in an inclined position on the roof of Birla House and a searchlight played upon it. Thousands passed in silence, wrung their hands and wept.

Near midnight the body was lowered into the house. All night mourners sat in the room and, between sobs, recited from the *Bhagavad Gita* and other Holy Scriptures. Thus, ended the long night of 30 January 1948.

But Mahatma Gandhi continues to live in our midst with his immortal message '**My Life of My Message**'.



If not during my life-time, I know that after my death both Hindus and Mussalmans will bear witness that I had never ceased to yearn after communal peace. My longing is to be able to cement the two Hindus and Muslims with my blood, if necessary.

M. K. Gandhi



मैं जानता हूँ कि यदि मेरे जीवनकाल में नहीं तो मेरी मृत्यु के बाद हिंदू और मुसलमान, दोनों इसके साक्षी होंगे कि मैंने सांप्रदायिक शांति की लालसा कभी नहीं छोड़ी थी। मेरी लालसा है कि, यदि आवश्यक हो तो, मैं अपने रक्त से हिंदू और मुसलमानों के बीच संबंधों को दृढ़ कर सकूँ।

मो. क. गांधी

मुझे संसार के नाशवान् साम्राज्य की कोई कामना नहीं है। मैं तो स्वर्ग के साम्राज्य के लिए प्रयासरत हूं, जोकि 'मोक्ष' है। मुझे इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए गुफा में जाकर वास करने की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता होती तो मैं ऐसा ही करता।

मो. क. गांधी

I have no desire for the perishable kingdom of earth. I am striving for the Kingdom of Heaven which is 'Moksha'. To attain my end it is not necessary for me to seek the shelter of a cave. I carry one about me, if I would but know it.

M. K. Gandhi



मेरा जीवन एक अविभाज्य समष्टि है, और मेरे सभी कार्यकलाप परस्पर गुंफित हैं; ये सभी कार्यकलाप मानवता के प्रति मेरे असीम प्रेम से उद्‌भूत हैं।

मो. क. गांधी

My life is an indivisible whole, and all my activities run into one another; and they all have their rise in my insatiable love of mankind.

M. K. Gandhi

प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरु का राष्ट्र के नाम संदेश 30 जनवरी 1948

''दोस्तों और सहभागियों, हमारे जीवन से रोशनी लुप्त हो गई है और हर जगह अंधेरा छा गया है, मैं नहीं जानता मैं आप लोगों से क्या कहूँ और कैसे कहूँ, हमारे प्रिय नेता, हमारे 'बापू' जैसा हम उन्हें पुकारते थे, हमारे राष्ट्रपिता, अब नहीं रहे। शायद मैं गलत कह रहा हूँ। फिर भी, अब हम उन्हें वैसा कभी नहीं देख पाएंगे जैसा इतने बरसों से देखते आ रहे थे। अब हम दौड़कर उनके पास सलाह लेने, दिलासा लेने नहीं जा पाएंगे और यह एक गहरी चोट है, सिर्फ मेरे लिये ही नहीं बल्कि हमारे करोड़ों देशवासियों के लिये और इस गहरी पीड़ा को कम करना मेरे या किसी अन्य के द्वारा दी गई किसी भी सलाह से, मुश्किल है।



रोशनी चली गई है, मैंने कहा, परन्तु मैं ग़लत था। क्योंकि जो रोशनी इस देश को आलोकित कर रही थी वह कोई साधारण रोशनी नहीं थी। इस रोशनी ने इस देश को कई वर्षों तक प्रकाशित किया है और आने वाले सालों में भी प्रकाशित करती रहेगी, आज से हज़ार साल बाद भी यह रोशनी इस देश में दिखाई देती रहेगी और दुनिया भी इसे देखेगी, साथ ही यह अनगिनत दिलों को दिलासा देती रहेगी। क्योंकि यह रोशनी केवल वर्तमान की नहीं, बल्कि जीवित, शाश्वत सच की रोशनी है जो हमें हमेशा सही राह दिखाती है, गलतियों से बचाती है, इस प्राचीन देश को आज़ादी की ओर ले जाती है।

यह तब हुआ है जब उन्हें अभी और बहुत कुछ करना था। हम ऐसा कभी नहीं सोच सकते थे कि उनकी ज़रूरत नहीं है या उन्होंने अपने काम कर लिये हैं। लेकिन अब, ख़ास तौर से जब हम कई मुश्किलों का सामना कर रहे हैं तब उनका हमारे साथ न होना हमारे लिये असहनीय आघात है।

एक पागल इन्सान ने उनके जीवन को ख़त्म कर दिया है, मैं उसे पागल ही कह सकता हूँ जिसने ऐसा किया। फिर भी पिछले कुछ सालों से हमारे देश में बहुत ज़हर फैला है जिसका लोगों के दिमाग़ पर बहुत बुरा असर पड़ा है। हमें इस ज़हर को जड़ से ख़त्म करना होगा, और उन सारी मुसीबतों का दृढता से सामना करना होगा जिनसे हम आज घिरे हुए हैं और यह सब हमें पागलों की तरह या बुरे तरीकों से नहीं बल्कि उन तरीकों से करना है जो हमारे प्रिय नेता ने हमें सिखाए हैं। पहली बात जो हमें ध्यान में रखनी है वह है कि हम क्योंकि नाराज़ हैं, हम बुरा व्यवहार न करें। हमें मज़बूती और दृढ़ता से चारों ओर घिरी मुसीबतों से जूझना है, उस ताकत के साथ जो हमारे महान् शिक्षक और महान् नेता ने हमें दी है, और सदा यह ध्यान रखना है कि उनकी आत्मा हमें देख रही है। उनकी आत्मा को बहुत दुःख और तकलीफ होगी, अगर हम कोई छोटी या हिंसक हरकत करेंगे।

इसलिए हमें ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिये। लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि हम कमज़ोर पड़ जाएं बल्कि हमें ताक़त और एकता से अपने सामने की मुसीबतों का सामना करना चाहिये। हमें इस दुःखद घटना के सामने एक जुट होना होगा, अपनी छोटी छोटी मुसीबतों, संघर्षों को भुलाना होगा, ख़त्म करना होगा। यह बड़ी घटना एक प्रतीक है जो हमें याद दिलाती है कि जीवन में महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिये और उन छोटी बातों को भुला देना चाहिये जिनमें हम उलझे रहते हैं..... ।

कल का दिन हम सब के लिये उपवास और प्रार्थना का दिन होना चाहिये।

.....और जब हम प्रार्थना करें, हमारी सबसे बड़ी प्रार्थना यह होनी चाहिये कि हम शपथ लें कि हम खुद को सच के लिये समर्पित करेंगे और उन सभी उद्देश्यों के लिये समर्पित होंगे जिनके लिये हमारे यह महान् देशवासी जिये और अपने प्राण दिये...''

Prime Minister Jawaharlal Nehru's Address to the Nation 30 January, 1948

"Friends and Comrades, the light has gone out of our lives and there is darkness everywhere, I do not know what to tell you and how to say it. Our beloved leader, Bapu as we called him, the Father of the Nation, is no more. Perhaps I am wrong to say that. Nevertheless, we will not see him again as we have seen him for these many years. We will not run to him for advice and seek solace from him, and that is a terrible blow, not to me only but to millions and millions in this country. And it is a little difficult to soften the blow by any other advice that I or anyone else can give you.

The light has gone out, I said, and yet was wrong. For the light that has shone in this country was no ordinary light. The light that has illumined this country for these many years, will illumine this country for many more years, and a thousand years later, that light will still be seen in this country and the world will see it and it will give solace to innumerable hearts. For that light represented something more than the immediate present; it represented the living, the eternal truths, reminding us of the right path, drawing us from error, taking this ancient country to freedom.

All this has happened when there was so much more for him to do. We could never think that he was unnecessary or that he had done his task. But now, particularly, when we are faced with so many difficulties, his not being with us is a blow most terrible to bear.

A mad man has put an end to his life, for I can only call him mad who did it and yet there has been enough of poison spread in this country during the past years and months, and this poison has had an effect on people's mind. We must face this poison, we must root out this poison, and we must face all the perils that encompass us, and face them not madly or badly, but rather in the way that our beloved teacher taught us to face them. The first thing to remember now is that no one of us dare misbehave because we are angry. We have to behave like strong and determined people, determined to face all the perils that surround us, determined to carry out the mandate that our great teacher and our great leader has given us, remembering always that if, as I believe, his spirit looks upon us and sees us, nothing would displease his soul so much as to see that we have indulged in any small behavior or any violence.

So we must not do that. But that does not mean that we should be weak but rather that we should in strength and in unity face all the troubles that are in front of us. We must hold together and all our petty troubles and difficulties and conflicts must be ended in the face of this great disaster. A great disaster is a symbol to us to remember all the big things of life and forget the small things, of which we have thought too much....

Tomorrow should be a day of fasting and prayer for all of us.

.....And while we pray, the greatest prayer that we can offer is to take a pledge to dedicate ourselves to the truth and to the cause for which this great countryman of ours lived and for which he had died...."

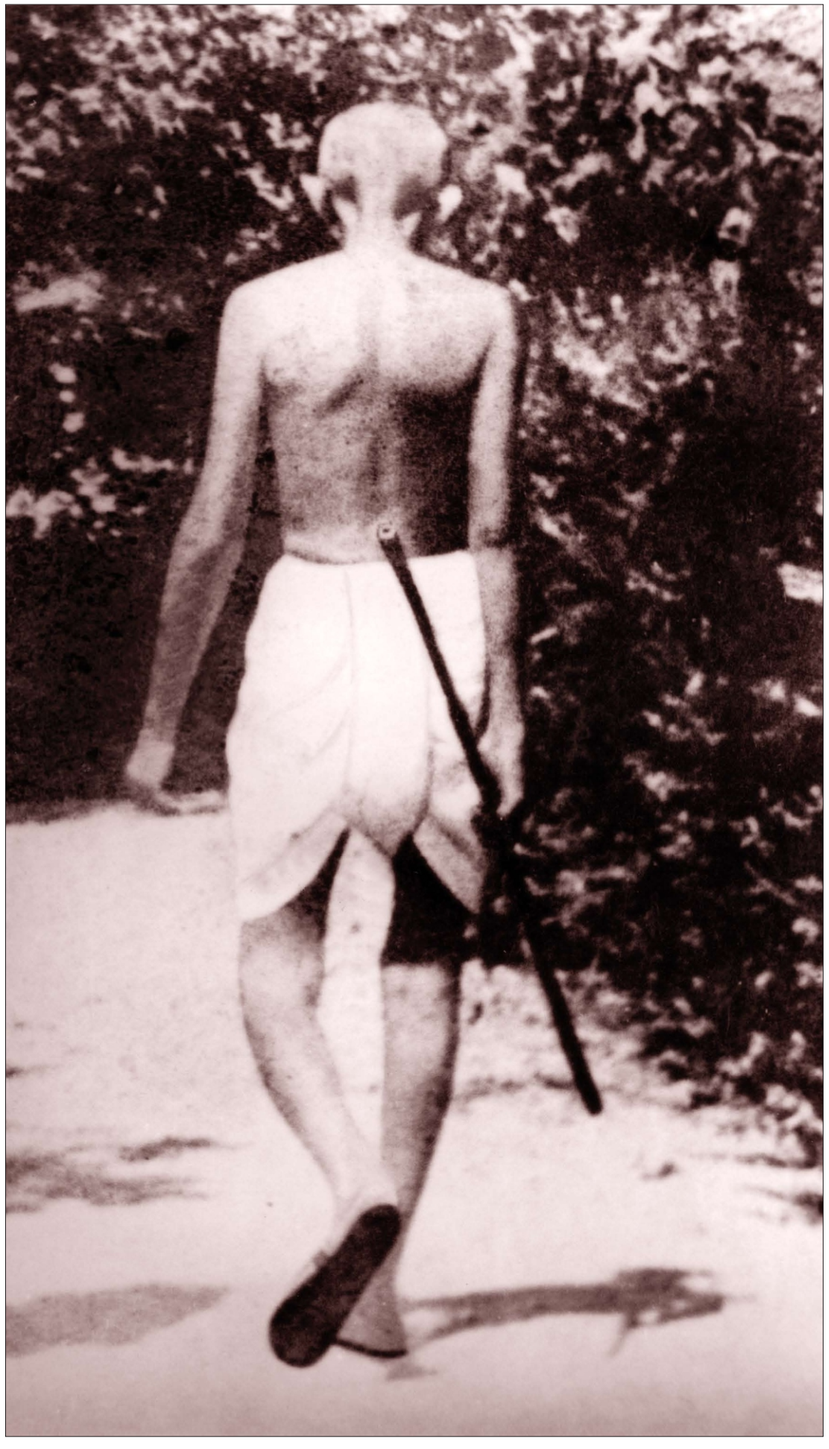

घर वापसी

''किसी ऋषि ने कहा है हम सब केवल एक राहगीर हैं और वास्तव में हम हैं भी। हम इस क्षण भंगुर संसार में केवल कुछ समय के लिये आते हैं और उसके बाद हमारी मृत्यु नहीं होती बल्कि हम अपने घर लौट जाते हैं। कितना सुन्दर और सत्य विचार है यह''।

मो. क. गांधी

Going Home

"A SEER has called us wayfarers. And so, indeed, we are: We are here for only a few days. Thereafter, we do not die, but only go home. What a beautiful and true thought!"

M. K. Gandhi